श्री

राम-पत्र

अर्थात्

श्रीस्वामी रामतीर्थजी

गुरु प्रति लिखित पत्रों का हिंदी अनुवाद



प्रकाशक

श्री रामतीर्थ पब्लिकेशन लीग।

लखनऊ

जून] द्वितीय संस्करण [१९३७

मूल्य

साधारण संस्करण, बिना जिल्द १) } { विशेष संस्करण, सजिल्द १॥)

Printed by B. Dulareylal Bhargava at the Ganga Fine Art Press, Lucknow.

शुभ समाचार

यों तो श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ, समय-समय पर अधिकारी सज्जनों व धार्मिक पुस्तकालयों में यथाशक्ति अपनी पुस्तकें बिना दाम अथवा आधे दाम पर बाँटती ही है, किंतु धर्ममूर्त्ति सज्जनों को इस धर्मकार्य में हाथ बटाने का शुभ अवसर देने के लिये लीग ने यह निश्चय किया है कि जो सज्जन इस शुभ उद्देश्य से स्थायी रूप से जितनी रक़म लीग के पास जमाकर देंगे, लीग उसके व्याज से (जो अधिक-से-अधिक ॥) प्रति सैकड़ा तक होगा) प्रतिवर्ष उनके नाम से पुस्तकें बिना दाम लिए अधिकारी सज्जनों व सार्वजनिक पुस्तकालयों में निरंतर वितरण करती रहेगी। आशा है, धर्ममूर्त्ति महाशय प्रसन्नतापूर्वक इस शुभ कार्य में हाथ बटायेंगे और इस रीति से यश व पुण्य दोनों के भागी होंगे।

भवदीय

मंत्री, श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ।

परम हंस स्वामी रामतीर्थ

अमरीका (अध्ययन गृह में) १९०३



SWAMI RAMA TIRTHA

(In study room)

America 1903

निवेदन

बड़े हर्ष की बात है कि आज लीग ग्रन्थावली के १७ व १८ भागों की पुनरावृत्ति जनता के सम्मुख रख रही है। उक्त भागों में परमहंस स्वामी राम के लगभग समस्त पत्र, जो उस समय तक प्राप्त हुए थे, राम-भक्तों के सम्मुख रखे गये थे। उनकी संख्या उस समय २७२ थी, जिनमें से २६४ गुरु भक्त धन्नाराम के नाम थे और शेष ८ अन्य प्रेमियों के पास लिखे गये थे। इस नवीन आवृत्ति के प्रकाशन के पूर्व अकस्मात् एक उर्दू आवृत्ति प्राप्त हुई, जिसका उल्लेख भूमिका में किया गया है। उक्त उर्दू आवृत्ति में ११०० से ऊपर पत्र हैं और यह सब ही गुरु भक्त धन्नारामजी के नाम हैं। पत्रों की संख्या सौभाग्यवश बढ़ जाने से हमने जल्वाये-कुहसार का भाग, जो पूर्व राम-पत्र में दिया गया था, पृथक कर दिया है। और इसी कारण स्वामी राम ने जो पत्र अन्य प्रेमियों को लिखे थे, वे भी इस नवीन संस्करण में नहीं दिये गये हैं, यद्यपि लेखोपदेश की तीसरी जिल्द के निवेदन में उनके यहाँ देने का विचार प्रकट किया था। अब ये सब अन्य पत्र रामकृपा से लेखोपदेश के किसी दूसरे भाग में प्रकाशित किये जायेंगे। यद्यपि इस आवृत्ति में जल्वाये-कुहसार के लगभग १०० पृष्ठ व अन्य पत्र नहीं दिये गये हैं और केवल गुरुजी के नाम लिखित पत्र ही सम्मिलित किये गये हैं, तथापि पृष्ठों की संख्या पूर्व आवृत्ति से लगभग १५० बढ़ गई है। परन्तु जन साधारण का विचार रखते हुए मूल्य पूर्ववत् साधारण संस्करण का १) व विशेष संस्करण का १॥) ही रखा गया है। यहाँ पर यह बतला देना उचित होगा कि राम के निज शब्द बड़े टाइप में दिये गये हैं और सम्पादक के शब्द छोटे टाइप में ।

पत्रों के अवलोकन से मालूम होता है कि हमारे राम अपने गुरुजी को प्रति दूसरे या तीसरे दिन पत्र लिखा करते थे। और श्रीमान् आर० एस० नारायण स्वामीजी की भूमिका से यह भी स्पष्ट है कि गुरुजी अपने भक्तों को वे पत्र समय-समय पर दे देते थे, अतः संख्या ११०० से ऊपर होते हुए भी अभी सम्पूर्ण नहीं कही जा सकती। क्या ही अच्छा हो, यदि राम-प्यारे इस बात का यत्न करें कि जहाँ कहीं भी राम-लिखित पत्र हों, लीग के पास भेज दें जिससे जो कमी है, वह भी यथा सम्भव पूर्ण हो सके।

इन पत्रों के पढ़ने से राम-प्रेमियों को राम के हार्दिक जीवन का एक मूर्तिमान् चित्र मिल सकता है। राम भगवान् को अपने आरम्भिक जीवन में जिन-जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, जिन परिस्थितियों से युद्ध करना पड़ा, जैसे उनके भावों की दशा थी, और जिस प्रकार उनके मानसिक जीवन की वृद्धि हुई, इन सब बातों का सच्चा इतिहास इन पत्रों के अन्तर्गत है। जो स्वामी राम के जीवन का पूरा पता लगाना चाहते हैं, जो स्वयं आशा-निराशा के पाश से मुक्त होकर संसार क्षेत्र में राम समान होने के इच्छुक हैं, उनके लिये राम-पत्र किसी धार्मिक ग्रन्थ से किसी बात में कम नहीं। आशा है रामोपदेश-प्रेमी इस आवृत्ति को शीघ्र हाथों हाथ लेकर लीग का उत्साह बढ़ायेंगे।

ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

जून, १९३७

मंत्री
श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ

——:o:——

श्रीनारायण स्वामी

(शिष्य श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज)



R. S. NARAYANA SWAMI

(Chief disciple of Swami Rama Tirtha)

ॐ

भूमिका

(द्वितीय संस्करण)

लगभग १५ वर्ष हुए उर्दू राम-पत्र के हिंदी अनुवाद का संपादन-कार्य मेरे सिपुर्द हुआ था, जिसे नवंबर, १६२२ में श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग ने पुस्तकाकार में प्रकाशित किया था। उस आवृत्ति की भूमिका में यह स्पष्ट कर दिया था कि इन थोड़े से रामपत्रों के पाने में मुझे किन किन कठिनाईयों का सामान पड़ा और किस रीति से मैं इन को उर्दू में प्रकाशित करा सका। अब रामकृपा से न वह समय रहा और न वैसी कठिनाइयाँ ही रहीं। इसलिए पहले की अपेक्षा अब सुगमता से यह कार्य समाप्त हो सका।

ब्रह्मलीन श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज के गृहस्थाश्रम के गुरु भगत धन्नारामजी, जिनके नाम ये समस्त पत्र स्वामी राम ने बाल्यावस्था से देहत्याग पर्यंत लिखे थे, देहान्त से पूर्व अपनी सारी संपत्ति बेचकर यह वसीयत कर गये थे कि उक्त पत्र विना कुछ घटाये बढ़ाये जैसे के तैसे प्रकाशित किये जायें। तदनुसार उक्त वसीअत के ट्रस्टियों ने उक्त पत्र कुछ वर्ष हुए उर्दू में प्रकाशित करके वितरण किये। उस आवृत्ति की कुछ कापियाँ उन्होंने प्रेम पूर्वक मेरे पास भी भेज दीं। उन समस्त पत्रों को आद्योपांत पढ़ने से जो आनंद प्राप्त हुआ वह लेखनी की सीमा से बाहर है और उनसे जो उपदेश मिल रहे हैं उनका जितना भी वर्णन किया जाय वह थोड़ा है।

पहली आवृत्तियों में केवल २७२ पत्र थे, और वे भी अपूर्ण, क्योंकि जिस पत्र में जो अंश प्राइवेट या व्यक्तिगत पाया गया अलग कर दिया गया था।

परंतु इस नवीन उक्त उर्दू-आवृत्ति में पत्र ११०० से ऊपर पाये गये और वे भी पूरे के पूरे, कोई अंश किसी भी पत्र का नहीं छोड़ा गया था।

इस नवीन आवृत्ति के निकलने के बाद यह विचार हो रहा था कि हिंदी में भी ये समस्त पत्र प्रकाशित कर दिये जायें। आज यह देखकर हर्ष हो रहा है कि मुझे ही पुनः इस द्वितीयावृत्ति के संपादन का सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

स्वामीराम प्रायः पत्रों पर तारीख न देकर केवल दिन लिखते थे। उक्त उर्दू-आवृत्ति में पत्रों का क्रम डाक की मोहर से रक्खा गया है, और मोहरों के मंद पड़ने से तारीख और सन् में कई जगह भूलें पाई गई हैं। अतः ५० वर्षों के पंचांग मँगवा कर प्रत्येक पत्र के वार के साथ उसकी तारीख का मुक़ाबला किया गया और तदनुसार पत्रों का क्रम रक्खा गया है। जो पत्र बिना डाक मोहर वा वार के पाये गये, उनको यथासाध्य विषयानुसार देकर उनके नीचे टिप्पणी दे दी है।

स्वामीराम बहुधा कार्ड लिखते थे, एक ही पत्र कई कार्डों में समाप्त करते थे। उक्त उर्दू-आवृत्ति में पत्रों की संख्या कार्डों की संख्या के अनुसार है। पर हमारी संख्या पत्र-संख्या के अनुसार है। अतः हमारी पत्र-संख्या कुछ कम दीखती है। पर हैं वास्तव में अधिक, क्योंकि हमने उन पत्रों को भी दे दिया है जिनकी असल अब नहीं मिलती, किंतु जो पहली हिंदी-आवृत्ति में उद्धृत हैं। हमें कुछ पत्र औरों से भी मिले हैं, जो भगतजी ने अपनी यादगार में उन्हें दिये थे। वे भी इसमें सम्मिलित हैं। अब सब रामप्यारों से नम्र निवेदन है कि जिस किसी के पास कोई पत्र स्वामीराम का लिखा हुआ हो, हमें कृपापूर्वक भेज दें। यदि वे चाहेंगे तो हम रजिस्टरी द्वारा उन्हें लौटा देंगे। जिन सज्जनों का नाम इन पत्रों में आया है, उनसे भी सविनय प्रार्थना है की वे राम संबंधी अपना पूर्ण परिचय दे कर कृतार्थ करें और स्वामीराम के विषय में जो कुछ उनका अनुभव वा जानकारी हो उसे लिखकर हमें अनुग्रहीत करें, जिससे स्वामीराम की जीवनी पर अधिक प्रकाश पड़ सके।

जून, १८३७ — आर, ऐस, नारायणस्वामी

ॐ

भूमिका

(प्रथम संस्करण)

बहुत काल से यह विचार उमड़ रहा था कि अपने परमात्मस्वरूप ब्रह्मलीन श्रीस्वामी रामतीर्थजी महाराज की जीवनी का सविस्तर परिचय जनता को दिया जाय। पर कई कारणों से यह विचार अब तक ठीक-ठीक पूर्ण न हो सका। प्यारे सरदार पूर्णसिंहजी ने भी अपनी आँखों देखे समाचारों को इस जीवनी में प्रकाशित करने के लिये भेजने का वचन दिया था, पर वह भी कई कारणों से न भेज सके। इसलिये आज तक पूर्ण विस्तार के साथ पूज्य स्वामीजी की जीवनी न प्रकाशित हो सकी। केवल संक्षिप्त जीवनी सन् १९१० में रामवर्षा भाग द्वितीय की प्रस्तावना में दे दी गई थी।

इस संक्षिप्त जीवनी के प्रकाशित होने के बाद सन् १९११ में पता लगा कि श्रीस्वामी रामतीर्थजी के पूर्वाश्रम के गुरु भगत धन्नारामजी महाराज के पास राम के हस्त-लिखित पत्र ११०० से ऊपर की संख्या में मौजूद हैं, जिनसे राम के हृदय की क्रमशः उन्नति, गति व स्थिति का परिचय स्पष्ट मिल सकता है, और जो पत्र वास्तव में राम की सच्ची-सच्ची जीवनी व आत्मवृत्तांत (autobiography) का फ़ोटो हो सकते हैं।

इतना मालूम होते ही लेखक तुरंत गुजराँवाले नगर में जाकर भगतजी की सेवा में उपस्थित हुआ, और राम के पत्रों को देखने की जिज्ञासा प्रकट की। बहुत टाल-मटोल के बाद अन्त में भगतजी ने कृपापूर्वक एक मट्टी का घड़ा सामने रख दिया, जो पत्रों से लबालब भरा हुआ था। भगतजी उन पत्रों को अपने घर से बाहर ले जाकर पढ़ने की आज्ञा कदापि नहीं देते थे,

अतएव वहीं उनके सामने सब पत्रों को वर्ष, मास और तिथि के अनुसार कई दिन तक छाँटकर क्रमशः पढ़ना आरंभ किया। उनमें से लेखक ने लगभग २७० पत्र प्रकाशनार्थ चुने। इतने पत्रों को भी बाहर ले जाकर छपवाने की आज्ञा भगतजी नहीं देते थे। लेखक की पुनः-पुनः प्रार्थनाओं पर और उससे प्रतिज्ञा-पत्र लेकर उन पत्रों को केवल नक़ल करने की आज्ञा भगतजी ने अपने बहुत प्यारों के कहने पर कठिनता से कुछ काल के लिए दी। इस पर भी जब नियत काल से किंचित् विलम्ब सा हो गया, तो झट भगतजी स्वयं देहली में आये और पत्रों की नक़ल होते ही उन्हें वापस ले गये। इस तरह सन् १९१२ में उर्दू भाषा में राम के उक्त पत्र लेखक से संपादित होकर प्रकाशित हो सके। आज धन्यवाद का समय है कि इतने काल के बाद इनका हिंदी-अनुवाद भी पुनः लेखक से संपादित होकर प्रकाशित हो रहा है।

इस समय भी भगतजी से बार-बार प्रार्थना की गई कि वह कृपया असली पत्रों को तथा स्वामीजी की जन्म-पत्री इत्यादि आवश्यक वस्तुओं को थोड़े काल के लिये भेज दें, जिससे यह हिन्दी प्रति पहले से भी अधिक सविस्तर और बाद देख-भाल के छपे, और श्रीस्वामी राम की जीवनी पर उनकी ओर से भी कोई टिप्पणी दी जा सके। पर भगतजी ने एक न मानी और सब प्रार्थनाएँ निष्फल कर दीं, जिससे लाचार होकर उर्दू राम-पत्र का केवल अनुवाद-मात्र ही हिन्दी-जनता की भेंट करना पड़ा। ईश्वर भगतजी के चित्त में उदारता उत्पन्न करें और राम की जीवनी के कार्य को सफल करने में वह इस विषय में हम सब लोगों से अधिक उत्सुक हों। ॐ तथास्तु।

भवदीय

आर० एस० नारायण स्वामी

ॐ

भगत धन्नारामजी

की

संक्षिप्त जीवनी

भगत धन्नारामजी, जिन्हें तीर्थरामजी के बचपन (बाल्यावस्था) में ही उनके गुरु होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था, जाति के अरोड़ा और अल्ल में मनोचे थे। भारत में (विशेष कर पंजाब में) यह जाति अपने को क्षत्रिय-वंश से निकली मानती है। पर जिन-जिन नगरों में यह जाति क्षत्रिय मानी जाती है, वहाँ-वहाँ भी उच्च वा उत्तम श्रेणी के क्षत्रियों में इसकी गणना नहीं होती, बल्कि क्षत्रिय-वंश के अन्तर्गत खत्रियों से भी कुछ नीचे मानी जाती है, और द्विजों (ब्राह्मणों) से तो कई ही गुना नीचे समझी जाती है।

तीर्थरामजी जाति के ब्राह्मण और उत्तम कुल के गोस्वामी थे, जो पंजाब में द्विजों के गुरु-घराने से प्रसिद्ध हैं। ऐसी उत्तम द्विजकुल की सन्तान का गुरु बनना भगत धन्नारामजी के लिये कुछ कम सौभाग्य का अवसर नहीं था। इसलिए ऐसी अवस्था में यदि वह बड़े भारी भाग्यशाली कहे वा समझे जायँ, तो अनुचित न होगा।

भगत धन्नारामजी के पिता का नाम लाला जवाहरमल था। भगतजी का जन्मकाल कार्त्तिक संवत् १९०० बतलाया जाता है। भगतजी के जन्म लेने के कुछ काल पश्चात् ही उनकी पूज्य माता का देहान्त हो गया,

अर्थात् भगतजी अभी किञ्चित् सचेत भी होने न पाये थे कि उन्हें अपनी परम प्यारी माता के प्रेम-भरे आँचल से सदा के लिये पृथक् हो जाना पड़ा और माता की प्रेम-भरी गोद देर तक नसीब न हुई।

इस छोटी सी आयु में भगतजी को उनकी प्रेम भरी भूआ (पिता की भगिनी) और दादी ने पाला-पोसा। बाल्यावस्था में वहाँ की रीति-रिवाज के अनुसार वह पाधा के पास पढ़ने को बिठाये गये, अर्थात् हिन्दी वा देशी भाषा की पाठशाला में प्रविष्ट किये गये। दो चार वर्ष तक निरन्तर उन्होंने वहाँ लण्डे (सराफ़ी अक्षर जिससे दुकानदार लोग अपना हिसाब-किताब लिखते और पत्र-व्यवहार करते हैं) और देशी हिसाब-किताब खूब सीखा, मानो दुकानदारी के हिसाब-किताब में अच्छे दक्ष (प्रवीण) हो गये।

भगतजी के मुखारविन्द तथा गुसाईं तीर्थरामजी की अपनी नोटबुक से मालूम हुआ कि बाल्यावस्था में ही भगतजी बड़े होनहार और करामाती थे। उनका पाधा जब लड़कों को छुट्टी दिया करता था, तो वह प्रायः कुछ होनहार लड़कों को गणित के कुछ प्रश्नों को मुखाग्र पूछने के लिये रोक लिया करता था, और जो लड़का उसके प्रश्न का पहले उत्तर देता, उसे तत्काल छुट्टी मिल जाती और शेष लड़के तत्पश्चात् बारी बारी छुट्टी पाते थे। प्रत्येक बार भगतजी ही इन प्रश्नों के उत्तर देने में प्रथम रहते और सब लड़कों से पहले छुट्टी पाया करते थे, मानों अपने सब सहपाठियों में प्रथम थे।

एक बार सहपाठियों ने परस्पर मिलकर भगतजी पर कोई झूठा दोष आरोपण करना चाहा, ताकि भगतजी सबसे पहिले घर जाने न पावें। इस प्रकार एक विद्यार्थी ने भगतजी के विरुद्ध एक झूठी शिकायत की और शेष सब विद्यार्थियों ने उसका समर्थन किया। इस पर पाधाजी ने दूसरे लड़के से भगतजी की पीठ पर पाँच चपत ज़ोर से लगवाये, जिनके चिह्न बहुत काल तक उनके शरीर पर बने रहे। पाधाजी का

नाम बाशी पाधा था। चूँकि यह सब दण्ड भगतजी को विना अपराध और विना ठीक-ठीक जाँच के मिला था, इसलिए वह हताश चित्त से घर पहुँचे। और घर में प्रविष्ट होते ही रोकर अपने पिताजी से यों कहने लगे:—"देखो! बाशी पाधाजी ने विना किसी अपराध के नाहक़ सख़्त चपत दूसरों से मेरी पीठ पर लगवाये हैं, इसलिये मैं भविष्य को पाधे (पाठशाला) में कभी नहीं जाऊँगा। यदि आप मेरा इस पाठशाला में जाना बन्द कर दोगे, तो मैं घर में रहूँगा, अन्यथा नित्य के लिये घर से बाहर चला जाऊँगा।" इस पर पिता ने उन्हें सन्तुष्ट किया और प्रतिज्ञा की कि "हम तुम्हारा पाधे (पाठशाला) जाना नितान्त रोक देंगे, तुम घर से बाहर कहीं मत जाओ।" तदनुसार भगतजी का पाधे जाना बिल्कुल बन्द हो गया।

पाठशाला जाना तो बंद हो गया, पर जैसा भगतजी का अपना कथन है, उस अनपराधी को अन्यायपूर्वक दण्ड देने का फल पाधाजी को यह मिला कि उसका बड़ा पुत्र शीतला के रोग से ग्रस्त होकर मर गया, और तत्पश्चात् पाधा के शेष पुत्र भी बारी-बारी एक के बाद दूसरे उसी रोग से मृत्यु को प्राप्त हो गये। फिर उनकी प्यारी अर्धाङ्गी भी परलोक सिधार गईं, और अर्धाङ्गी की मृत्यु के थोड़े काल पीछे आप स्वयं भी स्वर्गवास हो गये। तात्पर्य यह कि दो मास के भीतर-भीतर ही पाधाजी का सारा वंश नष्ट हो गया।

इन्हीं दिनों में गुजराँवाले के एक और धनाढय पाधा रत्न ने भी अपने पुत्र के कहने पर भगतजी को विना उनके अपराध के मारा था, जिसका फल उसे भी यह मिला कि पाधाजी का इकलौता पुत्र (सर्वदयाल) हैज़ा (विषूचिका) की बीमारी से मर गया। और शेष वंश का भी वही हाल हुआ, जो बाशी पाधा के वंश का हुआ था।

पाधे से उठने अर्थात् पाठशाला छोड़ने के बाद भगतजी को उनके

पिता ने ठठेरे (कसेरा) का काम सीखने के लिए एक अच्छे अभ्यासी (प्रवीण) ठठेरे के सिपुर्द कर दिया। थोड़े काल के भीतर ही भगतजी ने उस काम में अच्छी मुहारत हासिल कर ली और अपनी रोज़ी (जीविका) कमाने के योग्य हो गये। उन्हीं दिनों में भगतजी को व्यायाम और कुश्ती से बड़ी रुचि थी। सायंकाल जब ठठेरे के कार्य से अवकाश पाते, झट अखाड़े में पहुँच जाते और वहाँ प्रत्येक प्रकार का व्यायाम करते थे। जो रुपया या सवा रुपया प्रतिदिन कमाते वह सब इसी पहलवानी (मल्ल-युद्ध) में ख़र्च कर देते थे। इस प्रकार जब युवावस्था को पहुँचे, अर्थात् जब वह लगभग १६ वर्ष के हुए, तो एक बार वैशाखी के मेले पर पञ्जाब के कटासराजतीर्थ की यात्रा को गये। यह तीर्थ भारतवर्ष का नेत्र कहलाता है, और पिंडदादनख़ाँ नगर से लगभग १५ मील की दूरी पर है। वैशाखी के दिन हिन्दुओं का मेला यहाँ बड़ी धूम-धाम से लगता है और इस मेले पर अनेक साधु-महात्मा आते हैं। इस तीर्थ-यात्रा को समाप्त करके भगतजी जब कटासराज से पिंडदादनख़ाँ को वापिस आये तो उनका चित्त वहाँ ही रह जाने को चाहने लगा। और वहाँ ठठेरे का काम अधिक देखकर उन्होंने उसी व्यवासय की दुकान खोल ली, और स्थायी रूप से वहाँ बसना शुरू कर दिया।

इस नगर (पिंडदादनख़ाँ) में कुश्ती (मल्ल-युद्ध) का रिवाज नहीं था। वहाँ केवल मुंगलियों और मुगदर इत्यादि से व्यायाम करते थे। भगतजी इस कुश्ती के व्यवसाय में अति निपुण तो थे ही, अपने अभ्यास (शौक़) के कारण इस नगर में भी कुश्ती (मल्ल-युद्ध) का रिवाज डाल दिया और इस काम के लिये एक बड़ा अखाड़ा बनवा डाला। इस अखाड़े में वह आप भी प्रतिदिन मल्ल-युद्ध करते और कई एक अन्य युवकों को भी ख़ूब वर्ज़िश कराते थे। इनकी देखादेखी इनके अखाड़े की तर्ज़ पर उस नगर में कई एक और अखाड़े भी बन गये।

थोड़े काल के बाद उन्हें एक बड़े शक्तिशाली मल्ल (पहलवान) से मल्ल-युद्ध करना पड़ा। यह मल्ल भगतजी से द्विगुणे क़द का और मोटा-ताज़ा था, तथापि अखाड़े में भगतजी ने उसे खूब पिछाड़ा। और एक घंटे के अंदर अंदर चित कर दिया। यह आश्चर्यजनक जीत भगतजी को शारीरिक बल से नहीं हुई थी, बल्कि जैसा उन्होंने स्वयं वर्णन किया, यह सब परमात्मा पर पूर्ण विश्वास रखने का परिणाम था।

इस युवावस्था में भगतजी जैसे कि बलवान् और पहलवान (मल्ल) थे, वैसे ही चित्त के बड़े शूरवीर और उदार थे। जो कुछ कमाते वह कुछ तो स्वयं खाते और बहुत सी रक़म साधु-महात्माओं की सेवा में ख़र्च कर देते थे। और इरादे (संकल्प) या हठ के भी इतने पक्के थे कि मन में जो ठान लेते, उसे ज़रूर निभाकर दिखा देते थे। इस पक्के इरादे की मदद से उन्होंने ऐसे ऐसे अजीब स्वभाव डाल लिये कि जो दूसरों को आश्चर्यित किए विना न रहते। दृष्टान्त रूप से कितने समय तक वह केवल पाखाने जाते और पेशाब (लघुशंका) कदापि न जाते थे। ऐसे ही भोजन करते तो पानी नितान्त न पीते थे। एक बार ऐसा स्वभाव डाला कि दिन भर हँसते ही रहे, और फिर ऐसा मौन साधा कि नितान्त चुप रहे। कभी शीतकाल में नितान्त कपड़े न पहन कर नंगे तन जीवन व्यतीत करने लगे, और कभी गरम ऋतु में कपड़ों के भार से अपने को लाद लिया करते। तात्पर्य यह कि अपने अत्यन्त विचित्र स्वभाव भगतजी डाले हुए थे, जिनसे उनके संकल्प की दृढ़ता का काफ़ी प्रमाण मिलता है।

बाल्यावस्था में ही भगतजी की रुचि कथा सुनने की थी। जहाँ कहीं कथा होती, वहाँ वह अपने साथियों समेत जाते, और जब उनके साथी कथा के समय बातचीत करते या शोर मचाते, तो भगतजी उनको चुप करा देते थे; बहुत ध्यान से आप कथा सुनते और दूसरों को भी चित्त लगाकर सुनने के लिये कहते थे। संक्षेप से यह कि उनकी रुचि धर्म के

कार्यों में पहिले ही से थी। और प्रेम व भक्ति की कथा से उनके चित्त पर इतना प्रभाव पड़ता था कि एक बार रासमण्डल में सुदामा भक्त की बेपरवाही और उस पर कृष्ण महाराज की अधीनता को देखकर उनकी आँखों में प्रेम के आँसू भर आये।

इसी प्रकार जब एक ओर से शारीरिक बल और दूसरी ओर से चित्त की कोमलता, निर्मलता व दृढ़ता में उन्नति पाने लगे, तो भगतजी में कविता लिखने की योग्यता (शक्ति) प्रकट होने लगी। जब किञ्चित् भी वह समाहित चित्त होते तो झट कविता उनके मुख से विना यत्न निकल पड़ती। इन्हीं दिनों उनकी लेखनी से दो सीहरफ़ियाँ (कवितायें) निकली थीं, जिनके विषय में गोस्वामी तीर्थराम (पीछे स्वामी रामतीर्थ) जी अपनी लेखनी से यों लिखते हैं:—"यद्यपि इन सीहरफ़ियों (कविताओं) के पद्यों में मधुर स्वर और छन्द (Metre and Bright muse) इत्यादि अधिक नहीं हैं, तथापि प्रशंसनीय बात यह है कि इनमें परिश्रम का तो नाम तक भी ख़र्च नहीं हुआ, जैसा कि अन्य कवियों के विषय में देखा जाता है। दृष्टान्त रूप से फ़िरदौसी को लीजिये कि तीस वर्ष में केवल साठ हज़ार कविता बनाने पर भी, जिनका परिमाण (अन्दाज़ा) पाँच या छै पद्य प्रतिदिन होता है, फिर भी उनमें यह गुण वा लक्षण नहीं पाये जाते।"

इन्हीं दिनों भगतजी को योगवाशिष्ठ की कथा सुनने का समागम हुआ, जिससे उन्हें प्रथम ही प्रथम यह पता लगा कि "मनुष्य सब कुछ कर सकता है और यह कि जीव वास्तव में ब्रह्मरूप है।" इस रहस्य को पाते ही भगतजी प्रत्येक को कभी सुन्दर, कभी ईश्वर, कभी ब्रह्म के नाम से पुकारते, और लोग उनको भी इन्हीं नामों से बुलाते थे। उस समय के परिचित लोग अभी तक भगतजी को ईश्वर (ख़ुदा) के नाम से पुकारते हैं।

इस प्रकार बातचीत में तो वह यद्यपि प्रत्येक को ईश्वर के नाम से पुकारते या स्वयं भी ईश्वर कहलाते थे, पर भीतर की आँख (हृदय-नेत्र) पूर्ण रूप से खुली नहीं थी, अर्थात् उक्त रहस्य का पूरा-पूरा साक्षात्कार अभी तक हुआ नहीं था। इसलिये उनके चित्त में समय समय पर अशान्ति सी बनी रहती थी। और जब पिंडदादनखाँ में बहुत काल रहने पर भी किसी से उनके चित्त की शान्ति न हुई, तो फिर वह उस नगर को छोड़कर शान्ति(आनन्द) की ढूँढ में गुजराँवाले आये, और यहाँ उनको कुछ महात्माओं के दर्शन हुए। भगतजी को बड़ा अशान्त व अस्थिर-चित्त देखकर एक महात्मा ने पूछा कि "ऐ प्यारे! तुम विस्मित और अशान्त क्यों और किसलिये हो?" भगतजी ने सविनय उत्तर दिया—"महाराज! सांसारिक सुख के सब साधन तो प्राप्त हैं, पर चित्त फिर भी अस्थिर और अशान्त रहता है।" महात्माजी ने कहा कि "मन को तुम अपने साक्षी आत्मा में स्थिर करो।" उसी वक्त भगतजी ने मन को अपने स्वरूप के ध्यान में लगाया और (भगतजी के कथनानुसार) उनका मन इस ध्यान में ऐसा लीन हो गया कि तीन चार घंटे तक उनको किसी प्रकार की सुध-बुध न रही। जब चार घंटे के बाद मन ध्यान से उतरा, तो महात्माजी को सामने उपस्थित न पाया। जब भगतजी ने साथ के दुकनादार से पूछा तो उत्तर मिला कि "आप तो चार घंटे के बाद होश में आये हैं, और महात्माजी तो केवल थोड़ी देर बैठ कर चले गये थे। हम हैरान (विस्मित) हैं कि आप इतनी देर तक कैसे लीन व समाहित चित्त बैठे रहे।" यह उत्तर सुन कर भगतजी ख़ुश हुए और महात्मा के चले जाने का किञ्चित् शोक न किया, बल्कि दिल में यह विचार जमाने लगे कि "चलो, अब मन के एकाग्र करने का उपाय तो अच्छी तरह आ ही गया है, अब किसी और बात की हमें परवाह नहीं।" तब से भगतजी एकाग्रचित्त रहने के बड़े उत्सुक हो गये,

और प्रतिदिन नियमपूर्वक अभ्यास में बैठने लगे। इस प्रकार अभ्यास करते करते उन्हें थोड़ा ही काल बीता था कि उन महात्माजी के पुनः दर्शन हुए, जिनकी आज्ञानुसार चलने से उनका चित्त समाहित हो गया था। अब तो भगतजी उनके साथ हो लिये और उनके सहचारी बन कर जंगलों में जाकर खूब एकान्त अभ्यास करने लगे।

अधिकतर अभ्यास भगतजी को अनाहत शब्द का रहता था। जब जंगलों में उक्त महात्माजी की संगति देर तक की और एकान्त अभ्यास खूब किया, तो उन्हें मन, वाणी की कुछ सिद्धियाँ प्राप्त हो गईं, अर्थात् जिसको वह जो कुछ कहते या जिसके विषय में जैसा भी ख्याल करते, वह तत्काल पूरा हो जाता था, और जिस किसी को वह कोई शाप देते, वह भी तत्काल फल ले आता था। तत्पश्चात् भगतजी जंगल को छोड़कर अपने सांसारिक घर (गुजराँवाले) में आ गये, और शनैः शनैः इन सिद्धियों के कारण अपने नगर में प्रख्यात होने लगे।

लगभग इन्हीं दिनों में गोस्वामी तीर्थरामजी को उनके पूज्य पिताजी गुजराँवाले हाईस्कूल की स्पेशल क्लास (Special class) में पढ़ने के लिये अपने परम मित्र भगत धन्नारामजी के निरीक्षण में छोड़ गये। भगतजी की अनोखी व निराली प्रकृति और वाणी की सिद्धियों ने भोले भाले बालक तीर्थरामजी के चित्त पर कुछ अजीब प्रभाव डाला। भगतजी से वह ऐसा डरने लगे जैसे साक्षात् परमेश्वर से कोई आस्तिक पुरुष डरता है, और प्रतिदिन भगतजी की वाणी की सिद्धि और अन्य गुणों को देख कर बालक तीर्थरामजी के चित्त में यह ख्याल पक्का जम गया कि भगतजी साक्षात् ईश्वर का अवतार हैं।

भगतजी यद्यपि सर्वसाधारण की दृष्टि में जाति के अरोड़े और छोटे व्यवसायवाले ठठेरा थे, पर तीर्थरामजी के चित्त को वह परम ज्ञानी और भगवान् के साक्षात् अवतार भान होते थे। भगत धन्नाराम की

जीवनी के विषय में जो नोट गोस्वामी तीर्थरामजी ने अपनी नोटबुक में दर्ज कर रक्खे हैं, उनसे स्पष्ट सिद्ध हो रहा है कि गोस्वामीजी अपने गृहस्थाश्रम के समय भगतजी को केवल अपना गुरु ही नहीं मानते थे, बल्कि साक्षात् ईश्वर का अवतार भी उन्हें समझते थे। और यह गुरु-शिष्य-भाव गोस्वामीजी के चित्त में तब तक ही बना रहा, जब तक उनके भीतर निजानन्द ने अपना रंग व सिक्का जमाना शुरू नहीं किया था। जब अनन्य गुरु-भक्ति से अन्तःकरण शुद्ध होकर तीर्थरामजी के चित्त में निजानन्द तरंगायित हुआ, तो फिर कहाँ का गुरु और कहाँ का चेला, कहाँ का ईश्वर, और कहाँ का ईश्वर-अवतार, सबके सब द्वैत ख़्याल स्वतः दुम दबाये अपने-अपने घोंसलों (आलनों, विश्राम-स्थानों) में छुप गये। और छुपे भी ऐसे कि नितान्त शश-शृंगवत् लुप्त हो गये। स्वामी राम के चित्त की यह उन्नति का क्रम उनके अपने पत्रों से स्पष्ट विदित हो रहा है, और पाठकों को पूर्ण निश्चय दिला रहा है कि जब तीर्थरामजी का चित्त निजानन्द में तरंगायित होने लगा तो फिर प्रतिदिन भगतजी को पत्र लिखने स्वतः बन्द हो गये। और कभी कभी भगतजी के पत्र के उत्तर में यदि कुछ लिखा भी जाता, तो वह उपदेश के रूप में निकलता, गुरु-शिष्य के भाव से या भगतजी से किसी प्रकार के उपदेश या आज्ञा की आशा रखते हुए नहीं लिखा जाता था। प्रथम तो पत्र लिखने ही बंद हो गये। द्वितीय यदि भगतजी के अनेक पत्रों के उत्तर में राम कुछ लिखते भी, तो अति संक्षिप्त वा उपदेश-युक्त। दृष्टांत रूप से ८ नवंबर, १८९७ का पत्र लो। जब भगतजी ने तीर्थरामजी से शायद लगातार पत्र न लिखने या प्रत्येक पत्र का उत्तर न भेजने का कारण पूछा, तो राम ने उत्तर दिया कि:—"......यद्यपि मैंने इतने दिन कोई पत्र नहीं लिखा, पर आपके स्वरूप में लीन रहने के सिवा कोई और काम भी मैंने नहीं किया। जब अपना आप हो गये, तो पत्र किस को लिखें ?"

इस तिथि (तारीख़) के बाद तीर्थरामजी के भीतर त्याग और वैराग्य की उमंगे जोश मारने लगीं और उन पर हार्दिक संन्यास आच्छादित हो गया। इसके बाद जो पत्र भगतजी को लिखे गये, उनमें या तो भगतजी की युक्तियों और प्रश्नों के प्रबल उत्तर हैं या दिल पर चोट लगानेवाले प्रेम भरे उपदेश; पर किसी प्रकार का सांसारिक उद्देश्य वा संबंध उनमें नहीं झलक मारता। इसके अतिरिक्त जो मासिक भेंट सहायता के रूप में पहले भगतजी की सेवा में भेजी जाती थी, जिसे स्वामीजी अर्ज़ करूँगा वा भेंट करूँगा के वाक्य से अपने पत्रों में संकेत करते थे, वह भी भेजना अब स्वतः बंद हो गई। और जब भगतजी ने इस सबका कारण पूछा, तो मार्च सन् १८६६ में उनकी सेवा में रामजी यों लिखते हैं कि—

"अर्ज़ (निवेदन) यों है कि यहाँ किसी प्रकार का अनुमान तो दौड़या नहीं गया। सत्तर से भी एक दो कम रुपये महीने के मिले, उसमें से कौड़ी तो एकत्र करनी नहीं, जो जो आवश्यकताएँ सामने आईं, भुगत गईं। बाक़ी आवश्यकताओं को जवाब देना अर्थात् परे हटाना पड़ा। केवल १२) रुपये घर भेजे गये, जहाँ आठ मनुष्य खानेवाले हैं। गृहस्थों, स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों को अधिक ज़रूरत होती है और साधुओं की अपेक्षा अत्यंत हाजतमंद (इच्छाओं व आवश्यकताओं के दास) होते हैं, जिन साधुओं के लिये मधुमक्खियों के समान अनेक पुष्पों से मधुकरी लाना भूषण है। और जो हो रहा है अति उत्तम और उचित हो रहा है।"

अब अवस्था नितांत उलट गई। गोस्वामी तीर्थरामजी को भगतजी से उपदेश वा शिक्षा मिलने के स्थान पर उलटा भगतजी को तीर्थरामजी से उपदेश वा शिक्षा मिलने लगे। अर्थात् जो नदी कि पहिले किंचित् सूखी और किंचित् पानी की धारा लिये तीर्थरामजी की ओर बहती थी, वह अब अनंत उपदेशों के जल से परिपूर्ण होकर उलटी भगतजी की ओर बहने

लगी । पंजाबी रवायत (आख्यान) के अनुसार "हेठले ऊपर और ऊपरले हेठ हो गए ।" अर्थात् जो नीचे थे वह ऊपर और जो ऊपर थे वह नीचे हो गए ।

गुरु जो कि था वह तो गुड़ ही रहा ।
वले (परंतु) उसका चेला शकर हो गया ॥

जिस प्रकार स्कूल में जो लड़के कि अभी प्रविष्ट ही हुए होते हैं, उनको लोअर प्राइमरी (छोटी कक्षाओं) के अध्यापक भारी विद्वान् और ज्ञानी बल्कि देवता नज़र आते हैं। परंतु जब उनमें से कुछ चतुर (होनहार) लड़के शिक्षा पाते वा उसमें उन्नति करते करते हाईस्कूल वा कालिज तक पहुँच जाते हैं, तो फिर उनको अपने पूर्व अध्यापकों की योग्यता वा विद्या से पूर्ण परिचय मिल जाता है। यद्यपि प्रणाम व नमस्कार करना तो कुछ काल तक पूर्ववत् वैसे ही चला जाता है, परंतु भीतरी विचार का रंग ढंग कुछ और ही हो जाता है; और यद्यपि छोटी श्रेणी के अध्यापकों का अहंकार विद्या में उन्नति न पाने के कारण कम नहीं होता (चाहे उनका विद्यार्थी लोअर प्राइमरी से उत्तीर्ण होता हुआ एम्० ए० पास भी क्यों न कर ले), परन्तु विद्यार्थी के चित्त की अवस्था विद्या में उन्नति पाने के कारण नितान्त बदल जाती है। और यदि ऐसा कोई एम्० ए० पास हुआ विद्यार्थी कदाचित् निरीक्षक (Inspector) के पद पर नियुक्त हो जाय और निरीक्षक की अवस्था में वह अपने लोअर प्राइमरी के पुराने अध्यापकों की परीक्षा निमित्त उन छोटी कक्षाओं में जावे, तो उन्हीं अध्यापकों को अपने भूतपूर्व शिष्य के आगे सिर झुकाना पड़ता है। और चाहे वे अध्यापक महोदय निरीक्षक को चित्त से अपना पुराना शिष्य ही समझते हों और अपनी अध्यापकता के अहंकार में फूले न समाते हों, पर वास्तव में प्रत्यक्ष रूप से वे सब अध्यापक उस अपने भूतपूर्व शिष्य के सामने छोटी पाठशाला के अध्यापक ठहरते हैं, और उसके

अधीन होते व सेवक कहलाते हैं। ठीक यही हाल भगतजी और गोस्वामी तीर्थरामजी के विषय में देखा जाता है। जब तीर्थरामजी धार्मिक शिक्षा में अभी बच्चे थे, उस समय नितान्त निराली और अजीब प्रकृति तथा ऋद्धि सिद्धिवाला पुरुष उन्हें पूर्ण महात्मा और भगवान् का अवतार दिखाई देता था, इसी से भगत धन्नारामजी को वह अपना परम गुरु समझते और साक्षात् भगवान् के अवतार के समान उनकी प्रतिष्ठा, पूजा और सेवा करते थे। पर यों-यों इस गुरु-भक्ति से होनहार राम ने आध्यात्मिक और मानसिक शिक्षा में उन्नति पाई, और उन्नति करते करते आध्यात्मिक शिक्षा का एम्० ए० पास कर लिया (अर्थात् निजानन्द में मस्त व मग्न होकर संन्यासी भी हो गये,) और भगतजी अपनी उसी ऋद्धि-सिद्धि की कुरसी पर ही जमे रहे, तो परिणाम यह निकला कि शिष्य महाराज तो विरक्तात्मा और मस्त स्वरूप हुए समस्त जगत् के स्वामी वा सम्राट् हो गये, और भगतजी जैसे लाखों उनकी मस्ती (निजानन्द) से आकर्षित होकर उनके शिष्य वा भक्त हो गये।

यद्यपि भगतजी अपनी पूर्व स्थिति में ही स्थित रहे जिससे राम के समान मस्त व उदार होने न पाये, तथापि उनकी सादगी, संकल्प में दृढ़ता, साहस और बाल-ब्रह्मचारी अवस्था को देखा जाय तो लाखों पंडितों, और महात्माओं से वह कम न थे। और देहांत से पूर्व तो अपनी सारी सम्पत्ति को बेच कर धर्म कार्यों में लगाने से वह करोड़ों से श्रेष्ठ हो गये। लगभग ८६ वर्ष की आयु में उन्होंने देह त्याग किया और राम के कारण सर्वत्र पूजनीये हो गये। धन्य है उनका जन्म कि जिनके शिष्य राम हुए, और धन्य हैं राम जो भगतजी की छत्रछाया में उन्नति करते करते इस उच्चावस्था को पहुँचे कि अपना व गुरु दोनों का जन्म सफल कर दिया।

आर० एस्० नारायण, स्वामी

गुरु भगत धन्नारामजी

गुजराँवाला (पंजाब)



GURU BHAGAT DHANNA RAMA

Gujranwala (Punjab)

ॐ

राम-पत्र

अर्थात्

स्वामी रामतीर्थजी के समग्र पत्र

(जो उन्होंने अपने पूजनीय गुरु भगत धन्नारामजी को समय-समय पर लिखे)

* सन् १८८६ ईस्वी

(१) † ग्राम वैरोके, २४ मई, १८८६

तीर्थराम जी की गुरुभक्ति ।

रहनुमा-ए-सालिकाँ व पेशवा-ए-आरिफ़ाँ ! सलामत

(मुमुक्षुओं के मार्गदर्शक और ब्रह्मवेत्ताओं में नेता वा शिरोमणि ! प्रणाम ।)

आपका कृपा-पत्र मुझे वहाँकी के मेले से एक दिन पहले मिला

* मई सन् १८८६ ईस्वी में तीर्थरामजी की आयु बारह वर्ष और सात मास थी। इस काल में वह गुजराँवाले नगर के हाईस्कूल की मिडिल कक्षा (क्लास) में अध्ययन करते थे । यहाँ यह बात विचारणीय है कि इस बाल्यावस्था में भी तीर्थरामजी की अपने गुरुजी के साथ कैसी तीव्र भक्ति थी।

† वैरोके में तीर्थरामजी का श्वशुरालय (सुसुराल) था। इस ग्राम से वजीराबाद डाकख़ाना लगभग तीन मील की दूरी पर है। बाल्यावस्था में ही तीर्थरामजी का विवाह हुआ था, जबकि वह अपने ग्राम मुरालीवाला की प्राइमरी पाठशाला में पढ़ते थे। अब किसी आवश्यक कार्यार्थ तीर्थरामजी गुजराँवाले से वहाँ गये थे। और शायद पहली बार ही भगतजी से वह किञ्चित् अलग हुए थे। और भगतजी को मिले अथवा गुरु धारण किये भी अभी थोड़ा काल ही हुआ था। पर वाह री गुरु-भक्ति! जो उनकी बाल्यावस्था में भी इतनी उमड़ी कि केवल कार्ड लिखने निमित्त तीर्थरामजी को इतनी दूर ले आई और बालक का भावुक हृदय प्रकट किये बिना न रही।

था। उसमें लिखा था कि "हम मेले को आवेंगे", इसवास्ते मैं भी मेले को गया, मगर मुझे आपके दर्शन न हुए। और यहाँ लिफ़ाफ़े नहीं मिलते, इसवास्ते ख़त में देर हुई। आज केवल इस कार्ड निमित्त वज़ीराबाद आया हूँ। और मैं तो यहाँ से ही आपके चरणों में उपस्थित हो जाता, परन्तु सदा किसी न किसी कारण से रुक गया। और मैं यहाँ बड़ा उदास रहता हूँ। [और लाला रामचंद्र साहब यहाँ नहीं हैं। आशा है कि आज कल आ जावेंगे। जब वह आयँगे मैं वहाँ आ जाऊँगा। और अगर कोई अपराध हुआ हो, तो क्षमा करें। आपका दास तीर्थराम

——:०:——

* सन् १८८८ ईस्वी

(मार्च में तीर्थरामजी की आयु चौदह वर्ष और पाँच मास थी)

(२) लाहौर, २० मार्च, १८८८

तीर्थरामजी की एंट्रैंस परीक्षा

जनाब महाराज बरगज़ीदह-ए-साधुवाँ व चीदह-ए-आरिफ़ाँ जी !

(श्रीमान् सन्तशिरोमणि व परम ज्ञानीजी महाराज !)

हाथ जोड़े सादर प्रणामोत्तर प्रार्थना है कि आज सोमवार के दिन हमारा अंग्रेज़ी का इम्तहान हुआ है। परचे (प्रश्न-पत्र) न तो बहुत मुश्किल (कठिन) थे और न बहुत सहल। अच्छा जो आप करेंगे, हो जायगा। और हमारा इम्तहान २९ मार्च को ख़तम

* इस वर्ष एंट्रैंस इम्तिहान (प्रवेश परीक्षा) देने को तीर्थरामजी गुजराँवाले से लाहौर गये थे, और वहाँ से अपने प्रतिदिन का समाचार गुरुजी को देते रहे। यहाँ विचारणीय बात यह है कि इतनी छोटी सी आयु में तीर्थरामजी को अपने गुरुजी पर इतना भारी विश्वास वा पूर्ण श्रद्धा थी कि प्रत्येक कार्य की पूर्ति वे अपने गुरुजी महाराज की कृपा-दृष्टि वा दया के आश्रय ही रखते थे और विना उनकी आज्ञा के कोई भी काम करना नहीं चाहते थे।

(समाप्त) होगा। जबकि मंगल या बुद्धवार होगा। आपकी दया चाहिए, मेहरबानी करके अच्छा ख़्याल करना और इनायत की निगाह (कृपा-दृष्टि) रखनी। यह शरीर आपका ग़ुलाम (दास) है। और हमारा इम्तहान बड़ी दूर होता है, कोई तीन-चार मील के फ़ासले पर।

आपका दास तीर्थराम

—:o:—

(३) लाहौर, २३ मार्च, १८८८

जनाब महाराज, सत्‌गुरुजी, बरगज़ीदह-ए-साधुवाँ व चीदह-ए-आरिफ़ाँ जी! (सन्तशिरोमणि व परमज्ञानी श्रीसत्‌गुरुजी महाराज !)

बाद दस्तबस्ता नमस्कार के वाज़य राय आली हो (सविनय हाथ जोड़े नमस्कारोत्तर विदित हो) कि आज हम अंग्रेज़ी, फ़ारसी तथा उर्दू के इम्तहानों से फ़ारग़ हो (निपट) चुके हैं, अब तवारीख़ (इतिहास), जुग़राफ़िया (भूगोल), रियाज़ी (अंकगणित), अलजबरा (बीजगणित), और साइन्स (विज्ञान) आदि विषय बाक़ी हैं, जो बहुत मुश्किल (कठिन) हैं। आपकी कृपा चाहिये, दया-दृष्टि रखनी, मैं आपका ग़ुलाम हूँ। मेहरबानी करके यह ख़्याल करना कि जैसे मैं चाहता हूँ, वैसे परचे (प्रश्न-पत्र) कर आऊँ॥ ॐ॥

आपका दास तीर्थराम

—:o:—

(४) लाहौर, ८ मई, १८८८

एंट्रैंस परीक्षा का परिणाम और कालिज-प्रवेश

श्रीमान् सत्‌गुरुजी महाराज भगत साहब ! मुझ पर ख़ुश रहो।

मैं सोमवार के दिन मिशन-कालिज में दाख़िल (प्रविष्ट) हो गया, और एक मकान बच्छोवाली में एक रुपया मासिक किराया पर लिया है। उस मकान का मालिक महताबराय मिश्र है, इसलिये मुझे पत्र उसके पते पर लिखा करो। और मेरा वज़ीफ़ा (छात्रवृत्ति) नहीं लगा,

और न मैं अव्वल दर्जे में पास हुआ हूँ। मेरा नंबर पञ्जाब में अड़तीसवाँ है। यहाँ मिशन-कालिज में साढ़े चार रुपये फ़ीस है, इति। ज़्यादा आदाब (विशेष सादर प्रणाम)। आपका दास तीर्थराम

——:o:——

(५) * लाहौर, १३ मई, १८८८

गुरु की अप्रसन्नता का भय

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

मत्था टेकना के बाद बिनती है कि मैंने आपको एक पत्र लिखा था, मगर आपका कोई कृपा-पत्र प्राप्त नहीं हुआ। कहीं आप मुझ पर ख़फ़ा (रुष्ट) तो नहीं हो गये ? आप मुझ पर नज़र इनायत (कृपा-दृष्टि) रक्खा करो। और अगर कभी-कभी मुझे पत्र लिखकर याद फ़रमाते रहा करो, तो (आपकी) बड़ी कृपा-दृष्टि है। मैं बहुत मशकूर (कृतज्ञ) हूँगा। और आप कृपा करके लिखें कि आप लाहौर में कब आवेंगे। मैं बच्छोवाली में महताब राय मिश्र के घर में रहता हूँ। इति।

आपका दास तीर्थराम, एफ़० ए० क्लास

——:o:——

(६) १५ मई, १८८८

गुरु-कृपा पर अपनी प्रसन्नता

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

आज आपका मेहरबानीनामा (कृपा-पत्र) मिला, अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ। यदि आप इसी प्रकार कृपा करते रहोगे, तो मैं बड़ा ख़ुश रहूँगा। और आप अगर मुझे कृपा-पत्र कालिज के पते पर भेजा करें

* इसके बाद सभी पत्र प्रायः लाहौर से भेजे गये हैं, इसलिए लाहौर का मुक़ाम तारीख़ के साथ लिखना बंद कर दिया गया है। लाहौर से इतर और जिस मुक़ाम से पत्र भेजा गया है, उसका नाम वहाँ तारीख़ के साथ दे दिया गया है।

तो अच्छा हो। आप अब यह लिखें कि आप यहाँ लाहौर में कब पधारोगे, इति। अनेक प्रणाम।* आपका दास तीर्थराम, एफ़० ए०

—:o:—

(७) १ जून, १८८८

निवासस्थान की चिंता

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

आपके तीन कार्ड पहुँचे। मैं कल समाधि † को गया था। भाई गुरुदित्तसिंह ने कहा था कि वह मकान (जिसकी हमने तजवीज़ की थी) मुझे नहीं मिल सकता। और उसने अपने रहने का मकान दिखाया था। पर मैं अति विनय-पूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि उस मकान में रहने को मेरा जी (चित्त) नहीं चाहता। उसकी निस्बत (अपेक्षा) मुझे बच्छोवालीवाला मकान ज़्यादा पसंद है। आशा करता हूँ कि आप मुझे क्षमा करेंगे, क्योंकि एक तो वह मकान किंचित् खुला भी नहीं है और दूसरे मैं बच्छोवालीवाले मकान में तंग (दुःखी) नहीं हूँ। इति। अनेक प्रणाम। आपका दास तीर्थराम

—:o:—

(८) ५ जून, १८८८

जनाब महाराज श्रीभगतजी साहब!

आपकी नित्य कृपा बनी रहे। मत्था टेकना के बाद निवेदन यह है कि मैंने (कोई दो-तीन दिन हुए हैं) आपकी सेवा में एक कार्ड भेजा था,

---

* इस पत्र के बाद २० मई का पत्र देना छूट गया था जो इस वर्ष के अंत में नं० ४० पर दिया गया है।

† समाधि से तात्पर्य यहाँ महाराजा रणजीतसिंहजी की समाधि है, जो लाहौर में क़िले के समीप बनी हुई है। इसमें कुछ कोठरियाँ रहने के लिए खाली थीं, और बहुत थोड़े मासिक किराये पर मिलती थीं। भगतजी ने वहाँ रहने के लिए लिखा होगा, पर जब वहाँ एकान्त न देखा, तो नगर के अन्दर तीर्थरामजी ने रहना स्वीकार किया, इस बात को भगतजी के पत्रों के उत्तर में वह दर्शाते हैं।

जिसमें समाधि में न जाने का जिक्र (वर्णन) था। मगर आपने कुछ नहीं लिखा। आप मुझ पर कहीं ख़फ़ा (रुष्ट) तो नहीं हो गये? अगर ऐसा है तो मुआफ़ (क्षमा) फ़रमाइयेगा, क्योंकि मैं आपका ग़ुलाम (दास) हूँ। इति। बहुत-बहुत प्रणाम। आपका ग़ुलाम तीर्थराम

——:०:——

(९) १० जून, १८८८

तीर्थरामजी की एकान्त प्रीति

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

मत्था टेकना। अर्ज़ (बिनती) है कि दो-तीन दिन हुए, आपका कृपा-पत्र पहुँचा, जिसमें मेरे समाधि में न जाने का कारण पूछा है। सो सबसे मुख्य कारण तो यह है कि वहाँ ऐसा एकान्त* स्थान और स्वतंत्रता नहीं है, जो यहाँ पर है। इसके अतिरिक्त और भी कई बातें हैं जो आपके सम्मुख बताई जायँगी। मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करो॥ ॐ॥ न्याज़मंद (दीन दास) तीर्थराम

——:०:——

(१०) १२ जुलाई, १८८८

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज! आपकी नित्य कृपा बनी रहे।

मत्था टेकना। अब मेरा इरादा (विचार) छुट्टियों से पहले-पहले वहाँ आने का नहीं रहा, क्योंकि २७ जुलाई को हमें छुट्टियाँ हो जाती हैं। और ख़र्च के लिए मैंने तीन रुपये अयोध्यादास से उधार ले लिये हैं। और आप जब कृपा-पत्र भेजो, तो कालिज के पते पर लिखना। इति। अनेक प्रणाम। आपका दास तीर्थराम

——:०:——

* इस पत्र से स्पष्ट हो रहा है कि तीर्थरामजी इस छोटी-सी आयु में भी कैसे एकान्त-प्रेमी और विरक्त थे।

(११) ८ जुलाई, १८८८

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे ।

मत्था टेकना के उपरांत बिनती है कि आपका कृपा-पत्र पहुँचा था। बड़ी खुशी प्राप्त हुई। और लाला अयोध्यादास की ज़बानी मालूम हुआ कि आप किसी दिन यहाँ आओगे। मैं अब आपसे यह दर्याफ़्त किया चाहता हूँ कि आप कृपया मुझे लिखो कि किस दिन को आपके आने का विचार है। इति।

आपका दास तीर्थराम

——:०:——

(१२) २४ जुलाई, १८८८

श्रीमान् श्रीभगतजी महाराज ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे ।

मत्था टेकना। मैं शायद शुक्रवार को आऊँगा और ज्यादा इरादा गुजराँवाले के मार्ग से ही आने का है। और आपका पत्र लाला अयोध्यादास को पहुँच गया है। और एक लड़का गुसाईं ईश्वरदास मुरालीवाले का यहाँ किसी काम निमित्त आया हुआ है। वह भी शायद मेरे साथ ही यहाँ से जायगा। और वह रोटी और जगह खाया करता है। मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करो। इति।

दास तीर्थराम

——:०:——

(१३) *हाँसी, २० अगस्त, १८८८

श्रीमान् महाराज श्रीभगतजी साहिब ! नित्य कृपा-दृष्टि बनी रहे ।

मत्था टेकना। आपका पत्र आज पहुँचा। मैं कल मंगलवार रात के नौ बजे की गाड़ी में यहाँ से रवाना हूँगा। एक दिन फ़िरोज़पुर और एक दिन लाहौर ठहरने का विचार है। आगे जैसा हो जाय। और मैंने एक पत्र आपको लाहौर भी भेजा था। वंशीधर यहीं रहेगा। और यह बड़ा अच्छा मुक़ाम है। इति।

दास तीर्थराम

——:०:——

* हाँसी में तीर्थरामजी के मौसा रघुनाथ मल रहते थे, और इन्हें कालिज की पढ़ाई में धन से सहायता देते थे जिससे तीर्थरामजी गरमियों की छुट्टियों में प्रायः वहाँ जाया करते थे।

(१४) १७ अक्तूबर, १८८८

श्रीमान् महाराज श्रीभगतजी साहब ! नित्य कृपा बनी रहे ।

मत्था टेकना । मैं इतवार की सुबह (प्रातः) को यहाँ पहुँच गया हूँ । और आपकी कृपा का नित्य इच्छुक हूँ । और आप अपने आने की सूचना दें कि यहाँ कब तशरीफ़ लाओगे (पदार्पण करोगे) । लाला अयोध्यादास यहाँ पहुँच गया है । और मकान के बाबत आपका क्या विचार है । नित्य मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करो । इति । दास तीर्थराम

——:○:——

(१५) १९ अक्तूबर, १८८८

तीर्थरामजी का हिन्दी*भाषा सीखना

श्रीमहाराज भगतजी साहब !

मैं आपको बारंबार प्रणाम करता हूँ, आपकी पत्रिका ने कृतकृत्य कर दिया । परमात्मा अब इस कार्य को सम्पूर्ण करे । अब मैं हिन्दी भाषा लिख पढ़ सकता हूँ । आप कृपा-दृष्टि रक्खा करो ॥ ॐ ॥

आपका दास तीर्थराम

——:○:——

(१६) २५ अक्तूबर, १८८८

जनाब महाराज श्रीभगतजी साहब ! आपकी नित्य कृपा बनी रहे । बारंबार नमस्कार । आपका ख़त (पत्र) लाला सरदारीमल साहब के हाथों का लिखा हुआ पहुँचा । बहुत ख़ुशी हुई । मैं नौ रुपये लाला भगवानदास से जाकर ले आया हूँ । आप जब इमारत शुरू करेंगे, मुझे लिखना । और यह भी लिखना कि आया इमारत बड़े दिनों की छुट्टियों से पहले ख़तम (समाप्त) हो जायगी कि नहीं । लाला सरदारीमल साहिब को

* तीर्थरामजी का हिंदी भाषा में लिखा हुआ यह पहला पत्र है । इस मास से जुलाई सन् १८८९ तक के लगभग सारे पत्र हिंदी भाषा में लिखे हुए हैं ।

बंदगी (नमस्कार) । मुझ पर कृपा-दृष्टि रखनी, मैं आपका नौकर (सेवक) हूँ । इति । आपका दास तीर्थराम

——:०:——

(१७) ३१ अक्तूबर, १८८८

श्रीमान् महाराज श्रीसच्चिदानंदस्वरूप, सर्वप्रकाशक, सर्वशक्तिमान्जी !

मैं अपने आपको आपके अर्पण करता हूँ । आज बुद्धवार प्रातः सात बजे लाला अयोध्यादास जंड़याले* गये हैं । जब वापिस आयेंगे, आपको लिखूँगा । हमारी त्रैमासिक परीक्षा १६ नवंबर सोमवार, जब मग्घर (मार्ग शीर्ष) की छठी होगी, आरंभ होगी; २६ नवंबर तक होती रहेगी । आप कृपा-दृष्टि रक्खें । और नवंबर के अंत में हमारी परीक्षा का परिणाम निकलेगा । अब इस मकान में मैं और वह हिंदुस्तानी लड़का† रहते हैं । लाला महेशदास रात को आता है । और वह लड़का अब स्कूल में दाखिल (प्रविष्ट) हो गया है । इति । अनेक प्रणाम । आपका दास तीर्थराम

——:०:——

(१८) १ नवंबर, १८८८

श्रीमान सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान ,सर्वप्रकाशजी !

मै अपने आपका आपके अर्पण करता हूँ । मुझे अब वह हिंदुस्तानी लड़का यहीं डेरे में रोटी पका दिया करेगा । आज से शुरू (आरंभ) किया है । और वह आटा इत्यादि अपनी रसद से (जो उसे राजा हरबंससिंह से मिलती है) दिया करेगा, और मैं उसे आठ आने महीना दिया करूँगा । अगर आपकी मरज़ी न हो, तो बंद कर दूँगा । मुझ पर आप कृपा-दृष्टि रक्खा करें । मैंने आपको दो कार्ड लिखे हैं, पर आपकी

* जंडयाला गुजराँवाले ज़िले का एक क़स्बा है ।

† पंजाब में संयुक्त प्रांत के निवासी को ही उन दिनों प्रायः हिंदुस्तानी कहा करते थे । अतः हिंदुस्तानी लड़के से अभिप्राय तीर्थरामजी का संयुक्त प्रांत-निवासी है ।

तरफ़ से एक भी नहीं आया। और जिस दिन मैं आपसे आया था, केवल उसी दिन मुझे पाख़ाना आया था। उसके बाद आज तक बिलकुल नहीं आया। यह बीमारी हो गई है। आप मुझे फ़रामोश (विस्मरण) न करना।

आपका ग़ुलाम तीर्थराम

——:०:——

(१६) ६ नवंबर, १८८८

तीर्थरामजी का संस्कृत सीखना

श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वघटपूर्ण, सर्व-शक्तिमान्‌जी !

मैं आपके चरणों में अपने आपको अर्पण करता हूँ। मैं और दो-तीन अन्य विद्यार्थियों ने एफ़्० ए० के इम्तहान के लिये कालिज के पंडितजी से संस्कृत आरंभ की है। केवल दो-तीन पुस्तकें हैं, अगर तब तक तय्यार हो गईं, तो इम्तहान में ले लूँगा। अगर न हुईं, तो न लूँगा। पुरुषार्थ करूँ तो कुछ बात ही नहीं। पर मैं आपकी आज्ञा विना कुछ करना नहीं चाहता। केवल आपकी आज्ञा का भूखा हूँ, और आपकी कृपा-दृष्टि का चाहनेवाला। मुझे उत्तर ज़रूर भेजना। आपका दास तीर्थराम

——:०:——

(२०) ७ नवंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वघटव्यापक, सर्वशक्तिमान्, पूर्ण ब्रह्मजी !

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपकी पत्रिका भी पहुँची, और भाई साहब ने भी संदेसा दिया। आज मेरा भाई गुरुदास* यहाँ आ गया है। मैं अब राज़ी हूँ। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करें।

आपका दास तीर्थराम

——:०:——

* गुरुदासजी तीर्थरामजी के सगे बड़े भाई थे।

(२१) ६ नवंबर, १८८८

श्री महाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, विभु, अनंतजी !

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। लाला अयोध्यादास आया हुआ है। मैंने रुपये आपके वास्ते पूछे थे, पर वह लाया नहीं है। बहाने बहुत बताता है।

आपका दास तीर्थराम

—:o:—

(२२) १२ नवंबर, १८८८

श्री सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वज्ञ, विभु, नित्य, अनंतजी !

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैंने पत्रिका इस लिए देर से लिखी है कि आपके पत्र को देख रहा था, पर आपने बिलकुल कोई भी पत्र नहीं लिखा, नहीं मालूम क्या हेतु है। और आप लिखें कि इमारत कब शुरू करवाओगे।

आपका दास तीर्थराम

—:o:—

(२३) १४ नवंबर, १८८८

तीर्थरामजी को छात्र-वृत्ति की नित्य लगन

श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, पूर्णब्रह्म, सर्वज्ञ, विभु, नित्यजी !

मैं आपके चरणों में सब कुछ अर्पण करता हूँ, आपकी पत्रिका पहुँची, बड़ी खुशी प्राप्त हुई। अब हमारी त्रैमासिक परीक्षा इस सोमवार को होने वाली है। आपकी दया चाहिये। आपने चाहा, तो छात्र-वृत्ति* मिल जायगी।

आपका दास तीर्थराम

—:o:—

* इस छात्र-वृत्ति मे अभिप्राय म्युनिसिपल कमेटी गुजराँवाले की छात्र-वृत्ति से है कि जो गुजरांवाले हाई स्कूल के छात्र को एंट्रैंस-परीक्षा में उतने नम्बर पा लेने पर मिलती थी कि जो सरकारी छात्र-वृत्ति पानेवाले विद्यार्थियों के नम्बरों मे कुछ कम हों।

(२४) २३ नवंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, पूर्णब्रह्म, सर्वशक्तिमान्, सर्व व्यापकजी !

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैंने आपको इतने पत्र भेजे हैं, आपने कोई भी नहीं लिखा। हमारा इम्तहान शुक्रवार और सोमवार को और होगा। मैं आपकी खुशी (प्रसन्नता) चाहता हूँ। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करो। आपका दास तीर्थराम

——:०:——

(२५) २४ नवंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, नित्य, अनंतजी !

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। हमारी अंग्रेजी की परीक्षा मंगलवार को होगी, और फिर नतीजा निकलेगा। आपका एक भी पत्र नहीं आया। आप दया-दृष्टि रक्खा करें। आपका दास तीर्थराम,

——:०:——

(२६) २६ नवम्बर, १८८८

तीर्थरामजी की शारीरिक दशा

श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, पूर्ण ब्रह्म, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञजी !

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपकी कोई पत्रिका नहीं आई। आप अब इमारत का हाल लिखें। आपके दर्शनों को जी (चित्त) बड़ा चाहता है। आप खुशी रक्खा करें। हमारी परीक्षा अब केवल कल मंगलवार ही को होगी। मेरी शारीरिक दशा ऐसी है कि यदि एक दिन शौच आता है, तो तीन दिन तक बिलकुल नहीं आता। आपका दास तीर्थराम

——:०:——

(२७) २७ नवंबर, १८८८

बार-बार छात्र-वृत्ति की उत्कण्ठा

(विषय घना होने के कारण पत्र फ़ारसी अर्थात् उर्दू में लिखा गया)

श्रीमहाराज सच्चिदानन्दस्वरूप, पूर्णब्रह्म, सर्वशक्तिमान्‌जी !

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपके दो पत्र एक मेरे नाम और दूसरा लाला अयोध्यादास* के नाम मुझे आज मंगलवार को मिले। अत्यन्त ख़ुशी प्राप्त हुई। हमारी परीक्षा आज समाप्त हो गई है। वह लड़का जमीअत राय†, जिसे कमेटी से वज़ीफ़ा (छात्र-वृत्ति) मिला था, अब पढ़ना छोड़ बैठा है। सुना गया है कि कमेटी का मंत्री भी मास्टर चन्दूलाल‡ हो गया है। इसलिये मैं आपकी सेवा में प्रार्थना करता हूँ कि आप लाला सरदारीमल आदि के द्वारा लाला शङ्करदास आदि के सम्मुख मेरे वज़ीफ़े की कुछ फ़िक्र (ख़्याल) रक्खें। और वज़ीफ़े का मेरा

* लाला अयोध्यादासजी ज़िला गुजरांवाले के एक क़स्बे (शेरखाँ जांडयाला) के रहनेवाले थे। जब तीर्थरामजी लाहौर में पढ़ते थे तो उस समय यह लालाजी लाहौर में शेख़ुपुर के राजा हरवंश के वकील थे, और तीर्थरामजी की देखभाल करते थे। यह भी बड़े शुद्धात्मा, सत्संगी और सज्जन पुरुष थे और तीर्थरामजी के साथ अति स्नेह रखते थे। और इनकी भक्ति व श्रद्धा भी भगत धन्नाराम में वैसी ही थी, जैसी कि तीर्थरामजी की। इसलिये तीर्थरामजी ने अपने पत्र में इन के विषय में बार-बार वर्णन किया है।

† सुना गया है और कुछ इस पत्र से भी स्पष्ट होता है कि जमीअत राय को छात्र-वृत्ति कुछ पक्षपात से कमेटी से मिली थी, पर कालिज में प्रविष्ट होने के पश्चात् यह निरुद्योगी और आलसी पाया गया, जिससे कालिज के अध्यापकों ने इस विद्यार्थी के विरुद्ध रिपोर्ट कर दी, तिस पर इसने कालिज में पढ़ना छोड़ दिया।

‡ मास्टर चन्दूलालजी पहले गुजरांवाले के हाईस्कूल में सैकंड मास्टर थे और तीर्थरामजी को पढ़ाया करते थे, वह तीर्थरामजी की विद्या और योग्यता से पूरे-पूरे परिचित थे, और अब वह म्युनिसिपल कमेटी गुजरांवाले के मंत्री नियत हुए थे, और कमेटी की ओर से जो छात्र-वृत्ति विद्यार्थियों को मिलती थी, इसके देने का अधिकार उनको हो गया था, इसलिये इस पत्र में तीर्थरामजी ने उनके नाम का वर्णन किया है।

हक़ अधिकार भी है, क्योंकि जिन लड़कों को सरकार से वज़ीफ़ा मिला था, मेरा ही नाम परीक्षा में उनके पीछे आता है। मैं इस शनिवार को आपके चरणों में उपस्थित हूँगा। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करें। मैं आपका दास हूँ। इति। विशेष सादर प्रणाम॥ ॐ॥

आपका दास तीर्थराम

—:०:—

(२८) ३० नवंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंद स्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, नित्य, अनंतजी!

मैं आपके चरणों के सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैंने एक अर्ज़ी (प्रार्थना पत्र) अंग्रेज़ी में लिखकर उस पर अपने कालिज के बड़े साहब की एक बड़ी उमदा (उत्तम) सिफ़ारिश लिखवाकर गुजराँवाले की कमेटी में वज़ीफ़ा के लिए इस कार्ड के साथ भेजी है, और एक दूसरा पत्र मास्टर चंदूलाल के नाम भी लिखा है। मैं आपके चरणों का आश्रय रखता हूँ। आप मेरे लिए कमेटी के मेम्बरों को अगर चाहे लाला सरदारी मल के द्वारा या आप (स्वयं) अगर कहें तो बड़ा अच्छा हो। मैं आपका नौकर हूँ। इति। बार-बार प्रणाम।

आपका एक कार्ड पहुँचा। मैं शनिवार आपके चरणों में पहुँचने का इरादा (संकल्प) रखता हूँ। आपका दास तीर्थराम

—:०:—

(२९) ३ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, नित्य, अनंतजी!

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैं राज़ी ख़ुशी यहाँ पहुँच गया हूँ। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करें।

आपका दास तीर्थराम

(३०) ५ दिसंबर, १८९८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, नित्य, विभु, अनंतजी !

मैं आपके चरणों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया-दृष्टि रक्खा करें। आपका पत्र कोई नहीं आया ! आप मेरा ख़याल रखना। और इमारत का हाल भी लिखना। आपका दास तीर्थराम,

——:o:——

(३१) ६ दिसंबर, १८९८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, नित्य, विभु, अनंतजी !

मैं आपके चरणारविन्दों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका पत्र कोई नहीं आया। आप दया दृष्टि रक्खा करें। मैं आपका दास हूँ। मेरा ख़याल भुला न देना। आपका टैहलुवा (सेवक) तीर्थराम

——:o:——

(३२) ८ दिसंबर, १८९८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, अंतर्यामी, सर्वप्रकाशक, नित्य, विभु, अनंतजी।

मैं आपके चरणारविन्दों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका कोई पत्र नहीं आया, आप इमारत का हाल लिखें, और यह भी लिखें कि कमेटी अभी हुई है कि नहीं, और मुझ पर कृपादृष्टि रक्खा करें।

आपका दास तीर्थराम

——:o:——

(३३) १० दिसंबर, १८९८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, नित्य, अनंत, विभुजी !

मैं आपके चरणारविन्दों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आज लाला अयोध्यादास जंडयाले से वापिस आ गये हैं। आप मुझ पर दया-दृष्टि रक्खा करें। और वहाँ का हाल लिखें। आपका दास तीर्थराम

——:o:——

(३४) १३ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्व प्रकाशक, नित्य, विभु, अनंतजी !

मैं आपके पद-पंकजों के सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप कृपा-दृष्टि रक्खा करें, और लिखें कि अब लवपुर आने का कब इरादा है।

आपका दास तीर्थराम

—:o:—

(३५) १३ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ, विभु, नित्य, अनंतजी !

मैं आपके चरणारविन्दों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया-दृष्टि रक्खा करें। हमारा साहब कहता है कि मैं कमेटी को लिख दूँगा कि जमीअतराय को वज़ीफ़ा न मिलना चाहिए, और वह यह तब लिखेगा, जब उसे नंदलाल का पत्र पहुँचेगा। आपका दास तीर्थराम

—:o:—

(३६) १६ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वप्रकाशक, नित्य, विभु, अनंत, सर्वज्ञजी !

मैं आपके चरण-कमलों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपकी दया चाहता हूँ। मैं (अगर शनिवार को छुट्टियाँ हो गईं) तो उस दिन आपके चरणों में हाज़िर हूँगा। आपका दास तीर्थराम

—:o:—

(३७) १८ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, सर्वप्रकाशक, नित्य, विभु, अनंतजी !

मैं आपके चरण-कमलों के सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें और लिखें कि क्या हेतु है, जो आपका कोई पत्र मुझे आज तक नहीं मिला, और बाक़ी सब तरह का हाल भी विस्तार-पूर्वक मुझे लिखें।

आपका दास तीर्थराम

——:०:——

(३८) १६ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान, नित्य, विभु, अनंत, सर्वज्ञजी!

मैं आपके चरण-कमलों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका पत्र मिला, बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ। मैंने तो आपके चरण-कमलों में कई पत्र भेजे हैं। वह आपको मिले न होंगे। आप मुझ पर कृपादृष्टि रखा करें, और मेरे पत्रों में आपकी सब बातों का उत्तर लिखा है। आपका दास तीर्थराम

——:०:——

(३९) २१ दिसंबर, १८८८

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, नित्य, विभु, अनंत, बुद्ध, पूर्णजी!

मैं आपके चरण-कमलों के सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया-दृष्टि रखा करें। मैं अगर सोमवार की छुट्टी हो गई, तो शनिवार को आपके चरणों में आ जाऊँगा। अगर न हुई, तो सोमवार को आऊँगा। आपका एक पत्र आया था, फिर और कोई नहीं आया।

आपका दास तीर्थराम

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४०)* २० मई, १८८८

जनाब श्रीभगतजी महाराज! नित्य कृपा बनी रहे। आपका कृपापत्र

* यह पत्र नं० ६ के बाद छपना चाहिये था, पर वहाँ देना छूट गया था, इसलिए इसी वर्ष के अंत में यहाँ दे दिया गया है।

मिला। अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ। आप यह लिखें कि अब आप किस जगह रहते हैं और आपका पता क्या है, ताकि उस पते पर पत्र-व्यवहार किया जाय। और मुझ पर दयादृष्टि रखें। इति।

ज्यादह हद्देअदब (बहुत बहुत प्रणाम)। आपका दास तीर्थराम

एफ़्० ए० क्लास मिशन कालिज, लाहौर

—:०:—

सन् १८८९ ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े पंद्रह वर्ष के लगभग थी)

(४१) ५ जनवरी, १८८९

*श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान, नित्य, अनंत, परमानंद, विभु, अनिर्वाच्यजी !

मैं आपके चरणारविंदों को सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप मुझ पर दयादृष्टि रखा करें। आपका पत्र कोई नहीं आया। और महाराजजी ! आप यहाँ लाहौर में कब चरण पायेंगे। आपका दास तीर्थराम

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४२) ८ जनवरी, १८८९

मैं आपके चरणारविंदों में सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप मुझ पर कृपादृष्टि रखा करें। आपका पत्र कोई नहीं आया। आपका दास तीर्थराम

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४३) ११ जनवरी, १८८९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। अभी ठाकुरदास संतराम को नहीं मिला। आपका दास तीर्थराम, लवपुर

—:०:—

* इस पत्र के बाद प्रायः सभी पत्रों के आरंभ में यही संबोधन दिया हुआ है, इसलिए आगे इसे बार-बार न लिखकर संबोधन पूर्वोक्त लिखा गया है।

संबोधन पूर्वोक्त, (४४) १४ जनवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। मैं आपकी दया से राजी हूँ। लाला अयोध्यादास अभी नहीं आया, और ठाकुरदास भी अभी संतराम को नहीं मिला। आपका पत्र भी कोई नहीं मिला। मैं इस शनिवार को अगर हो सका, तो आपके चरणों में आऊँगा।

आपका दास तीर्थराम, लवपुर

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४५) १५ जनवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। आपका पत्र मिला। लाला अयोध्यादास आ गया है, ठाकुरदास अभी नहीं मिला।

मैं (अगर हो सका) तो सनीचर (शनिवार) को आपके चरणों में आऊँगा।

आपका दास *

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६) १७ जनवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। ठाकुरदास ने रुपया दे दिया है। मैं सनीचर को अब आऊँगा, अगर हो सका तो।

आपका दास

——:o:——

उँगली पर चाकू का ज़खम

संबोधन पूर्वोक्त, (४७) २२ जनवरी, १८८६

मैं आपको प्रणाम करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। और इस जगह मुझे उँगली पर चाकू का एक बड़ा भारी ज़खम लगा है। आज एक अँगरेज़ी दवाई लगाई है। आप पत्र भेजते रहा करें।

आपका दास

——:o:——

* यहाँ से तीर्थरामजी ने "आपका दास तीर्थराम" के स्थान पर केवल "आपका दास" कहीं-कहीं लिखा है।

संबोधन पूर्वोक्त, (४८) २३ जनवरी, १८८६

मैं आपको प्रणाम करता हूँ, आप दया रखा करें। मेरी उँगली को किसी क़दर आराम है। आप पत्र भेजते रहा करें। आपका दास

——:०:——

मुँह पर फोड़ा

संबोधन पूर्वोक्त, (४६) २५ जनवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें। मैंने दो पत्र भेजे हैं। उत्तर कोई नहीं आया। अब मेरी उँगली को तो असल में आराम है, पर मुँह पर एक बड़ा फोड़ा हो गया था। अब उस पर भी कुछ आराम आया है। आशा है कि कल परसों तक बिलकुल राज़ी हो जायगा। आप दया रखा करें। आपका दास

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०) ३१ जनवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें। और पत्र मुझे अपने हाथों से लिखना। आपका दास

——:०:——

वज़ीफ़े की लगन

संबोधन पूर्वोक्त, (५१) १ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें। हमारे साहब को अभी मास्टर चंदूलाल की तरफ़ से डाकट मेरे वज़ीफ़े का नहीं आया, आपने भी कोई पत्र नहीं भेजा। आपका दास

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५२) ३ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप दया रखा करें। आपको मालूम

हो कि सेठ रामरत्न कहीं बड़े अर्से का गया हुआ है। आपका पत्र कोई नहीं आया। वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५३)　　४ फ़रवरी, १८८९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप दया रखा करें। आप यहाँ कब आवेंगे। मुझे वज़ीफ़ा (छात्र-वृत्ति) अभी कुछ देर से मिलेगा।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५४)　　७ फ़रवरी, १८८९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका पत्र आया, जो आपके अपने हाथों का लिखा हुआ था, बड़ी ख़ुशी हुई; अगर इस सनीचर (शनिवार) को मुझे वज़ीफ़ा मिल गया, तो उस दिन को आपके चरणों में हाज़िर हूँगा; और अगर तब तक न मिला, तो मैं आपके पास नहीं आऊँगा। तब अगर आप ही दया करें, तो बड़ी अच्छी बात हो।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५५)　　१२ फ़रवरी, १८८९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ, आप दया-दृष्टि रखा करें। वज़ीफ़ा अभी देर से मिलेगा। आपका भेजा हुआ पत्र मिल गया है। आप पत्र लिखते रहा करें।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५६)　　१३ फ़रवरी, १८८९

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका कोई पत्र नहीं मिला। आज हमारे साहब ने मेरे वज़ीफ़े का बिल बनाकर गुजराँवाले भेजा है। अब जब मास्टर चंदूलाल रुपये भेजेंगे, मुझे मिल

जायेंगे। अब आप अगर यहाँ आने की दया करें, तो निहायत अच्छी बात हो।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७) १४ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप कृपादृष्टि रखा करें। मुझे आशा है कि मेरा पत्र आपको आज मिल गया होगा। पर मैं इस सोच में हूँ कि आप आज यहाँ आने से किस हेतु करके रुक गये हैं। अब अगर कल आ जायँ, तो अत्यंत दया की बात होगी। अगर चंदूलाल साहब ने आज रुपये भेज दिये हैं, तो मुझे कल मिल जायेंगे।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८) १६ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। मुझे अभी वज़ीफा नहीं मिला। आपका पत्र कल आया था। आप जल्दी आने की दया करें, तो अच्छी बात हो।

आपका दास तीर्थराम

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५९) २५ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। आज सोमवार को मुझे वज़ीफा नहीं मिला। मुझे आज कालिज के क्लार्क को मिलने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं हुआ, और वज़ीफे वही दिया करता है।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०) २६ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। आज मालूम हुआ है कि साहब का हुक्म है कि वज़ीफ़े हमें वीरवार बीस तारीख़ को मिलेंगे। और यहाँ लाला अयोध्यादास की माँ व घर की (स्त्री) भी आ

गई है और साथ का मकान राजे के गुरूवाला भी अभी ख़ाली नहीं हुआ। आपका दास

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६१) २८ फ़रवरी, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका कोई पत्र नहीं आया। वज़ीफ़ा मुझे आज भी नहीं मिला, क्योंकि आज बैंक-घर के बंद होने के कारण क्लार्क को रुपये नहीं मिले। और बैंक के बंद होने की यह वजह है कि आज शिवरात्रि की छुट्टी है। आपका दास

—:o:—

छात्रवृत्ति की तीव्र चिंता

संबोधन पूर्वोक्त, (६२) २ मार्च, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आप दया रखा करें। वज़ीफ़ा अभी कुछ अर्से (काल) तक मिलता नज़र नहीं आता। कोई न कोई रोक पड़ ही जाये है। और मुझे कल तप (ताप) चढ़ गया था, और खाँसी बड़ी लगी हुई है। यह सब बलग़म का विकार है, आप मुझ पर कृपादृष्टि रखा करें। मुझे भूलें नहीं। आपका दास तीर्थराम

—:o:—

(६३) ८ मार्च, १८८६

श्रीमहाराज सच्चिदानंदस्वरूप, सर्वशक्तिमान्, नित्य, अनंत, विभु, अखंड, शुद्ध, बुद्ध, एकरस, आदिपुरुष, अनिर्वाच्यजी !

मैं आपको नमस्कार करता हूँ। आपका मेहरबानीनामा (कृपापत्र) कल मिला था, मुझे खाँसी * ने तंग कर रखा है। दवा (औषधि) भी

* इस पत्र व अन्य कई एक पत्रों से स्पष्ट होता है कि तीर्थरामजी का शरीर स्वस्थ नहीं रहता था, बल्कि सारे विद्यार्थीकाल तक वह बहुधा रोगी ही रहे, और तिस पर भी वह विद्या में सर्वोपरि उन्नति करते गये।

बहुत की है और रोटी खाये भी पाँचवाँ डंग (वार वा वेला) है, और एक ही स्थान पर बैठा भी नहीं रहता हूँ, क्योंकि प्रतिदिन कालिज जाता हूँ। भूख का नाम तक नहीं। वज़ीफ़ा नहीं मिला। आप दयादृष्टि रखा करें। मैं आपका दास हूँ। आपका दास तीर्थराम

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४) १० मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका अयोध्यादास को लिखा हुआ पत्र मिल गया है। मुझे आपका कोई पत्र नहीं मिला। कल हमारा इम्तहान (परीक्षा) है। मुझे अब आराम है। आपका दास तीर्थराम

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५) ११ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका पत्र मुझे आज मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। हमारा आज कल इम्तहान हो रहा है। मैं अब आराम में हूँ। मैंने तो आपको बड़े पत्र लिखे हैं, पर आप कहते हैं कोई नहीं आया, क्या वजह है। क्लार्क ने बिल भेज दिया है, रुपये अभी नहीं आये। आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६) १२ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें, पत्र लिखते रहा करें। अयोध्यादास के घर के सब आदमी चले गये हैं, क्योंकि उसकी बहन की बड़ी बीमारी की ख़बर आई थी। और संतराम भी चला गया है, लालाजी व नीरजनाभ और मैं अब यहाँ हैं। आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७) १३ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें।

हमारा आज कल इम्तहान हो रहा है। गुजराँवाले से अभी वज़ीफ़ा नहीं आया, बिल तो क्लार्क ने भेज दिया हुआ है। अगर शनिवार को छुट्टी हो गई, तो मैं शुक्रवार आ जाऊँगा, नहीं तो शनि को आने का संकल्प रखता हूँ।

आपका दास

——:o:——

छात्रवृत्ति का मिलना

संबोधन पूर्वोक्त, (६८) १८ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। मुझे आज वज़ीफ़ा (छात्रवृत्ति) मिल गया है। आप दया रखा करें। संतराम आ गया है, आप पत्र लिखते रहा करें। लालाजी को मत्था टेकना।

आपका दास तीर्थराम

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६९) २१ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। हमें शायद इस सोमवार से लेकर आठ दिन की छुट्टियाँ हो जायेंगी। अगर हो गईं, तो मैं शनिवार को हो सका तो आ जाऊँगा, नहीं तो अगले शनिवार को आने की सलाह है।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७०) २७ मार्च, १८८६

मैं आपको नमस्कार करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका पत्र कोई नहीं आया। मैं अब फिर उसी कमरे में रहता हूँ, जिसमें कि पहले रहा करता था, अर्थात बाज़ार के समीप जो कमरा है, उस कमरे में रहता हूँ, और नीरजनाभ भी उसी कमरे में रहता है।

आपका दास तीर्थराम

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७१) ३१ मार्च, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। चाचाजी * (पिताजी) तीर्थों को चले गये हैं। पर मुझे बड़ा ही अफ़सोस आता है कि आपको जीरा भेजने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं बना। आप मुझ पर दया रखा करें। मैं आपका दास हूँ। लाला अयोध्यादास जंडयाले गया हुआ है और महेशदास यहाँ आया हुआ है।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७२) १ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दयादृष्टि रखा करें। आप पत्र लिखते रहा करें। आप यहाँ कब आवेंगे। लाला अयोध्यादास तथा संतराम यहाँ नहीं हैं। आपका दास तीर्थराम

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७३) ३ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका कोई पत्र नहीं आया, क्या हेतु है? क्लार्क ने बिल तो भेज दिया है, पर अभी रुपये नहीं आये। आप यहाँ कब आयेंगे? आपका दास तीर्थराम

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७४) ५ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका कोई भी पत्र नहीं मिला, क्या हेतु है? आप मुझ पर ख़फ़ा तो नहीं हो गये। अगर कोई मुझसे क़सूर हो गया हो, तो क्षमा करना। मैं आपका दास हूँ। आदमी से अक्सर क़सूर हो ही जाते हैं। आपका दास

———:o:———

* तीर्थरामजी अपने पिता को चाचाजी कहा करते थे। इसलिए जहाँ जहाँ चाचा शब्द आया वहाँ वहाँ पाठकगण उसका अर्थ पिता समझें।

संबोधन पूर्वोक्त, (७५) ६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें। आप अगर आजकल यहाँ आ जायें, तो बड़ी अच्छी बात हो, क्योंकि एक तो अब जगह बड़ी सुतंत्र आपके रहने के लायक़ है। राजे का गुरु चला गया है। और बीच का दरवाज़ा निकाला गया है। दूसरा इन दिनों यह मकान रौले रपे (शोर गुल) से ख़ाली है; तीसरा मेरा जी (चित्त) आपके दर्शन को बड़ा करता (चाहता) है। मुझे वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। आपका दास तीर्थराम

—:०:—

संबोधन पर्वोक्त, (७६) ८ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप मुझ पर ख़ुश रहा करें। अगर आपको गुजराँवाले में कोई बड़ा भारी काम है जिस करके आप यहाँ नहीं आ सकते, तो वह काम मुझे लिखो, नहीं तो मेरी यह प्रार्थना है कि आप यहाँ ज़रूर आवें, क्योंकि मेरा चित्त आपके दर्शन को बड़ा चाहता है। मुझे वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। आपका दास

—:०:—

संबोधन पर्वोक्त, (७७) ६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपके दो पत्र मिले। बड़ी ख़ुशी हुई। जब देवीदयाल तथा साहबसिंह आवें तो मुझे इत्तला (सूचना) देनी। आप मुझ पर दया रखा करें और पत्र भेजते रहा करें। मुझे वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। हम अब नये कालिज में चले गये हैं। और मेरा साला अब यहाँ पढ़ने के लिये आ गया है। और अब जैसा आप कहेंगे, वैसा ही करूँगा। अगर कहोगे तो अब के मैं वहाँ आ जाऊँगा। आप मुझ पर ख़ुश रहा करें। आपका दास

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (७८) ११ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। मुझे वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। अगर हो सका तो इस सनीचर (शनिवार) को मैं आपके चरणों में आऊँगा। आपका पत्र आजकल कोई नहीं मिला। क्या वजह (कारण) है। पत्र लिखते रहा करो, जरूर, बड़ी ताकीद है। लाला अयोध्यादास जंडयाले से अभी नहीं आया।

आपका दास तीर्थराम

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७९) १४ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। कल कालिज में जाऊँगा तो क्लार्क से पूछूँगा। आप दया रखा करें। आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८०) १५ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आज क्लार्क से पूछा था। वह कहने लगा कि साहब ने रुपया आने की मुझे इत्तला (सूचना) नहीं दी, और आप ही रसीद भेज दी है। वह कहता है कि कल (वह) साहब से दर्याफ्त करके रुपये देगा।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८१) १६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका कोई भी पत्र नहीं आया। आज क्लार्क ने साहब से मालूम किया है कि मेरा वज़ीफ़ा आया हुआ है, मुझे शुक्रवार को मिलेगा, क्योंकि सब वज़ीफ़े उस दिन को मिलेंगे।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८२) १६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आपका कोई भी पत्र नहीं

आया, क्या हेतु है ? आप पत्र लिखते रहा करें, और मुझ पर दया रखा करें। मुझे आज वज़ीफ़ा नहीं मिला, क्योंकि आज एक अँगरेज़ी त्योहार होने के कारण बैंकघर बंद था। शायद कल को मिल जाय। आप अब कब आयेंगे ?

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(८३)　　　२० अप्रैल, १८८९

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। क्लार्क ने मुझे वज़ीफ़ा सोमवार को देने का इक़रार किया है। क्योंकि आज दस बजे के बाद उसे बैंक से रुपये मिलेंगे, और हमें दस बजे से पहले हफ़्ता होने के कारण छुट्टी हो गयी है। गुजराँवाले के इंट्रैंस के इम्तहान में ये लड़के पास हुए हैं—राममल, रामकुँवर, अनंतराम, मलिक हज़ारीलाल, सोहनाराम, शिवनाथ, गोविंदराम, गोपालदास। आप अब यहाँ कब आवेंगे ? मुझ पर दया रखा करें। आपका एक पत्र (अभी) मिला।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(८४)　　　२२ अप्रैल, १८८९

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। मुझे वज़ीफ़ा आज भी नहीं मिला। ऐसा इत्तफ़ाक़ हो गया है। इसमें किसी का दोष नहीं है। आप यहाँ कब आवेंगे ? मेरा जी (मन) है कि आप आज कल यहाँ आ जायँ। मैं आपका दास हूँ।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(८५)　　　२३ अप्रैल, १८८९

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आपके दो पत्र मिले। बड़ी ही ख़ुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। मुझसे पत्र लिखने में कुछ देर हो गई है। मुआफ़ करें। मुझे वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८६)　　२४ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आपका एक पत्र आज मिला, बड़ी खुशी हुई। मुझे आज वज़ीफ़ा मिल गया है। आप इसी तरह पत्र लिखते रहा करें। और अगर शुक्रवार से पहले यहाँ आ जाओ, तो बड़ी ही दया हो। पत्र लिख चुकने के बाद लक्ष्मणदास, देवीदयाल का भाई मिला।　　आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८७)　　२६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। मैंने सुना है कि ज्ञानचंद गुजराँवाले में गया हुआ है, आप अगर उससे मेरे लिए वह किताब ले लें, तो मैं बड़ा खुश हूँगा। उसे उस किताब की खबर है। चाहे आप उसे कह दें कि आती बार लाहौर में अपने साथ लेता आवे। लाहौर में मैंने उनके आगे इस किताब का ज़िक्र (चर्चा) किया हुआ है।

——:o:——

कुसंग का त्याग

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८८)　　२७ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। निःसंदेह कुसंग मनुष्य का नाश कर देता है। आप मुझे जिस प्रकार कहें, मैं उसी प्रकार करूँगा। कहो तो उस लड़के को आज ही जवाब दे दूँ, और कहो तो अभी कुछ काल तक न जवाब दूँ, अर्थात् न निकालूँ। आप यदि शीघ्र दर्शन दें, तो मुझे अति आनंद हो। आप की सीहर्फ़ियाँ (कविताएँ) अति सुंदर अक्षरों में आपके लिये लिखवाई हुई यहाँ पड़ी हैं।　　आपका दास तीर्थराम

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८६)   २६ अप्रैल, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। आप जल्दी आवें तो मैं बड़ा ख़ुश हूँ। मैंने सरमाया-ए-ख़िरद अभी ख़रीदी नहीं। आज या कल ख़रीद छोड़ूँगा। अगर आपको तकलीफ़ (कष्ट) न हो तो ज्ञानचंद को भी मिलना। आप जल्दी आवें तो बड़ी ख़ुशी हो।

आपका दास

——:o:——

(६०)   २ मई, १८८६

संबोधन पूर्वोक्त,

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया रखा करें। आपने पत्र नहीं लिखा। मैं राज़ी हूँ, और जब आप ज्ञानचंद से किताब ले लेंगे तो मुझे लिखना।

आपका दास तीर्थराम

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (६१)   ३ मई, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ, आप दया रखा करें। क्लार्क ने बिल भेज दिया है। आज पं० देवकीलाल का एक पत्र आपके नाम का मुझे मिला। आज लाला अयोध्यादास की कोठरी में से कपड़े भाँडे (बर्तन) खोये गये हैं, मगर सब जंद्रे (ताले) लगे के लगे ही रहे हैं। मैं उस वक़्त पढ़ने गया हुआ था। और वह लालाजी आप दो कुंजियों में से एक तो पुरोहित को दे गये हुए हैं और दूसरी नीरजनाभ को। और चाचा साहब अभी नहीं आये।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (६२)   ५ मई, १८८६

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आप दया रखा करें। आपका कोई भी पत्र नहीं मिला, क्या हेतु है ? आप पत्र लिखते रहा करें।

आपका दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३) ६ मई, १८८६

*सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म, आनन्दामृत, शान्तिनिकेतन, मंगलमय शिवरूपं, अद्वैतं, अतुलं, परमेशं, शुद्धं, अपापविद्धमजी !

मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूँ। आपका पत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। आप मुझ पर दया रखा करें। चाचाजी यहाँ नहीं आये। शायद मुझे मिले बिना मुरालीवाले चले गये हैं। मैं इस शनिवार को (अगर हो सका) तो आपके चरणों में हाजिर हूँगा। और हिस्टरी आफ इंडिया (History of India) मेरे ग्राम में भी है। अगर कहो तो वह ग्रामवाली आकर दे दूँगा, और अगर कहो तो यहाँ से मोल ले आऊँगा। जिस तरह कहोगे उसी तरह करूँगा।

तुम्हीं नित्य, तुम्हीं सत्, तुम्हीं ईश, तुम्हीं महेश।
तुम्ही आदि, तुम्हीं अन्त, तुम्हीं अनादि, तुम्हीं अशेष।
तुम्हीं ज्ञान, तुम्हीं प्रेम, तुम्हीं मोक्ष, तुम्हीं महान।

वजीफा अभी नहीं मिला। यह पत्र डालने से पहले एक आपका और पत्र मिला। क्या आप ज्ञानचंद से उस किताब की बाबत पूछोगे ?

आपका दास तीर्थराम

——:o:——

* ६ मई १८८६ से लेकर ३० अगस्त १८८८ तक सारे पत्रों के आरंभ में तीर्थरामजी ने अपने गुरुजी को "सत्य ज्ञानमनन्तं ब्रह्म" इत्यादि उपमा से लेकर "मैं आपको सब कुछ अर्पण करता हूं, आप दया रखा करें।" तक संबोधन लिखा है, पर प्रत्येक पत्र के आरंभ में बार बार यह संबोधन लिखना उचित और आवश्यक न समझकर उसके स्थान पर केवल "संबोधन पूर्वोक्त" ऐसा दे दिया गया है। ऐसे ही सब पत्रों के अंत में आपका "दास तीर्थराम" है। इसे भी बार बार देना आवश्यक न समझकर छोड़ दिया गया है। अलबत्ता जहां कहीं अन्य रूप से संबोधन अथवा पत्र के अंत में अन्य शब्दों में अपने को तीर्थरामजी ने लिखा है, वहां वैसा का वैसा ही दे दिया गया है।

संबोधन पूर्वोक्त,   (६४)   ८ मई, १८८६

मेरा इरादा इस शुक्रवार को आपके पास आने का है, अगर हो सका तो। मुझे मुरालीवाले भी काम है। आप दया रखा करें। मुझे वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। क्या ज्ञानचंद से आप पूछेंगे? आपका पत्र कोई नहीं आया। हिस्टी की बाबत मैं आपको लिख ही चुका हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (६५)   १४ मई, १८८६

आपका कोई पत्र नहीं मिला। क्या हेतु है? आप दया रखा करें और पत्र लिखते रहा करें। मैं आपका दास हूँ। चाचाजी नहीं आये। वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (६६)   १६ मई, १८८६

आपका कोई भी पत्र नहीं मिला। बड़ा फ़िक्र लगा हुआ है। आप पत्र भेजते रहा करें। मैं आपका दास हूँ। मुझ पर ख़फ़ा न होना।

तुम्हीं हमारे परम पिता हो, तुमहीं हो हितकारी।
तुम्हीं हमारे प्राण हो स्वामी, तुमहीं मंगलकारी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (६७)   १७ मई, १८८६

आप मुझे पत्र क्यों नहीं लिखते, मुझ पर ख़फ़ा (रुष्ट) क्यों हो?

राजा रूठे नगरी राखे अपनी,
मैं हर रूठे कहाँ जाना?
जे तुम काला नाग जो भेजो,
मैं शालग्राम कर माना।"

मेरे महाराजजी! आप मुझ पर ख़फ़ा न हुआ करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८) १८ मई, १८८६

चाचाजी आ गये हैं। मुझे वज़ीफ़ा मिल गया है। आपने मुझे भुला क्यों छोड़ा है ? मैं आपका दास हूँ। मुझे पत्र लिखते रहा करो।

मैंने आपको इतने पत्र लिखे हैं, एक का भी उत्तर नहीं आया। क्या हेतु है ? मुझ पर ख़फ़ा न होना, मैं आपका नौकर हूँ। संतराम की कमेटी का हाल अगर मालूम हो, तो लिखना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६) १६ मई, १८८६

मैं नहीं जानता कि मुझसे कौन-सा क़सूर हो गया है, जिस कारण आपने मुझे भुला छोड़ा है। आप मेरे क़सूरों को मुआफ़ (क्षमा) करें, क्योंकि आप परम दयावान् और कृपालु हैं। आदमी से क़सूर हो ही जाते हैं। मैं अगर हो सका, तो इस हफ़्ते (शनिवार) आने का संकल्प रखता हूँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१००) २१ मई, १८८६

आपका पत्र मिला, बड़ा ही आनंद प्राप्त हुआ। मुझे वज़ीफ़ा मिल गया है। अब यहाँ मैं व मुकुंद एक तरफ़, नीरजनाभ लालाजी के कमरे में, और संतराम दूसरी तरफ़ रहते हैं। इन दिनों इस मकान में हम चारों के बग़ैर कोई नहीं रहता। अगर शुक्रवार की छुट्टी हुई, तो मैं वीर को वहाँ आने का संकल्प रखता हूँ, नहीं तो शुक्रवार आने का इरादा है, इति।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१) २६ मई, १८८६

मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। आप मुझ पर दया रखा करें, और आप मुझे पत्र लिखने में देर न किया करें।

——:०:——

गुरुजी से हार्दिक प्रार्थना

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२) २८ मई, १८८६

आपका पत्र कोई नहीं मिला, चित्त उस तरफ़ रहता है। लाला अयोध्यादास आये हुए हैं। आप यहाँ कब आवेंगे ? इति

शुद्ध करो मेरे मन को प्रभुजी !
पापी मन मम रुकत न रोके ,
धीर धरे नहीं छन को।

तीर्थराम
मिशन विद्यालय, लवपुर

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३) ३० मई, १८८६

आपका कोई भी पत्र नहीं मिला, क्या हेतु है ? आप पत्र लिखते रहा करें। ध्यान उधर ही रहता है।

सर्वस्रष्टा देवा, सकल सुखदाता, दुखहरा ;
दयावंता स्वामी, अतुल शुभ-दाता प्रभु वरा।

—:o:—

गुरु-विरह-वेदना

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४) १ जून, १८८६

आपका पत्र कोई नहीं मिला। आप अब से लेकर ठाकुरद्वारे की मार्फ़त ज्यादा ख़त भेजा करो, वहाँ से जल्दी मिलता है। ध्यान आपके पत्र की ओर रहता है। मैं आपका दासानुदास हूँ।

तनक प्रभु चित दो मेरी ओर।
विरह-वेदना सहि न जात अब ,
हिरदय व्याकुल मोर। (तनक प्रभु)

मुकुंदलाल और लाला अयोध्यादास का मत्था टेकना।

—:o:—

गुरु-भक्ति का उदाहरण

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५) २ जून, १८८६

आपका एक कार्ड बहुत काल के पश्चात् आज मिला, बड़ा आनंद हुआ, शायद आज कल हम मकान की यह तरफ़ तबदील कर देंगे और उस तरफ़ (ओर) को चले जायेंगे, जहाँ कि एक बार राजा का गुरु उतरा था और इस तरफ़ में कोई और किराएदार आ जायगा। कल का लाला अयोध्यादास के पास बाबा बालकनाथ आया हुआ है। कुछ दिनों से लाला अयोध्यादास की वृत्ति बदल गयी हुई थी। वह एक भाई सुजानसिंह* के चेले के पीछे लगा हुआ था, और उस शिष्य ने उसे यह कहा था कि मैं तुझको साक्षात् परमेश्वर दिखलाता हूँ। इस बात से लाला अयोध्यादास उसके मगर (पीछे) लगा हुआ था, परंतु अब मैंने लालाजी का दिल उस ओर से नितांत हटा दिया है और वह आपके चरणों में दृढ़ हो गया है। महाराजजी ! मैं आपको हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि आप इस सप्ताह (अर्थात् शनिवार को) अवश्य यहाँ पधारें। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

गुरु से सविनय निवेदन

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६) ५ जून, १८८६

आज बाबा बालकनाथ चला गया है, और संतराम ने भी आज यह मकान छोड़ दिया है। अभी हम मकान की पहली ही तरफ़ हैं। आप अब अगर आवें, तो बड़ी ही दया हो। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

आओ, आओ प्रभु ! पातकी-जन-पावन ;
होय दयालु, देओ नाथ ! पातकी को दर्शन।

* भाई सुजानसिंह गुजराँवाले में एक प्रसिद्ध मस्त और उन्मत्त संत थे।

देश्रो शुद्ध शांत मति, दूर करो सब कुमति ;
प्रेम - युक्त शांति देश्रो, यही है निवेदन ।

——:o:——

गुरु-अनुराग

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७) ६ जून, १८८६

आपका एक पत्र आज मिला, बड़ी ख़ुशी हुई । आज हमने मकान की पहली तरफ़ छोड़ दी है, और उस तरफ़ में आ गये हैं, जिसमें एक दफ़ा राजे का गुरु उतरा था । आप अगर आज कल आ जायें, तो बड़ी ही दया हो । मैं आपका नौकर हूँ ।

तुम बिन कौन हमारो प्रभु जी !
हुए असत के हम अनुरागी
हित कर सत्य बिसारो ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८) ८ जून, १८८६

आप यहाँ आज आये क्यों नहीं ? आप जल्दी दर्शन दें । आप पत्र लिखते रहा करें । मुकुंदलाल का मत्था टेकना ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६) १० जून, १८८६

आपका एक पत्र कल मिला था ; बड़ी ख़ुशी हुई । मैं आख़िरी हफ़्ते को आने का संकल्प रखता हूँ । आप पत्र लिखते रहा करें ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (११०) १२ जून, १८८६

आपका एक पत्र आज मिला, बड़ा आनंद प्राप्त हुआ । आप जरूर इस हफ़्ते दर्शन दें । मैं आपका नौकर हूँ । मुझे वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला । मुकुंदलाल व अयोध्यादासजी की ओर से मत्था टेकना ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१११) १३ जून, १८८६

आपका आज एक पत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। आप ज़रूर मुझ पर दया करें, और मुझे दर्शन दें। मैं आपका दास हूँ। मैं आप वहाँ इसलिये नहीं आता कि हमें सिर्फ़ एक तो छुट्टी होती है और तिस पर काम बड़ा होता है। अगर आप आयें तो दो तीन दिन तक तो आपके दर्शन नसीब रहते हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (११२) १६ जून, १८८६

पत्र लिखते रहा करें। उस दिन आपके, मेरे कालिज से आने से पहले, चले जाने का दिल में बड़ा फ़िक्र हुआ।

धन्य लोचन जिन दरस तिहारो,
धन्य वह करें कथा तुम्हारी।

——:o:——

संबोधन पर्वोक्त, (११३) २२ जून, १८८६

आपका पत्र कोई नहीं आया। मुझसे भी अब के पत्र भेजने में कुछ देर हो गई है। आप दया रखा करें। मुकुंदलाल व अयोध्यादासजी का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (११४) २४ जून, १८८६

मैं आपका दास हूँ। आपका एक पत्र आज मिला ; बड़ी ख़ुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। गुसाईं रामदास, मुकुंदलाल, नीरजनाभ का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (११५) २६ जून, १८८६

आपका पत्र आता रहे, तो बड़ा चित्त प्रसन्न रहता है। आप पत्र लिखते रहा करें। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

गुरु-पत्राकांक्षा

संबोधन पूर्वोक्त,　　(११६)　　२८ जून, १८८६

पत्र लिखते रहा करें। मुकुंदलाल का मत्था टेकना। पत्र ज़रूर भेजते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(११७)　　१ जुलाई, १८८६

मैं आपके चरणों का दास हूँ। पत्र लिखते रहा करें। आपको पत्र भेजे बड़ा अरसा हो गया है।　　आपके चरणों का दास

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(११८)　　३ जुलाई, १८८६

आपके दो पत्र मिले। बड़ी ख़ुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। हमें छुट्टियाँ मिलने की पक्की तारीख़ अभी नहीं बतलाई गई। अगर ज्ञानचंदजी मिलें, तो कृपा करके उन्हें कह देना कि अगर वह पुस्तक छुट्टियों से पहले-पहले हमें मिल गई, तो बड़ा अच्छा काम होगा। और मैं बड़ी जल्दी पुस्तक को देखकर वापिस कर दूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(११९)　　५ जुलाई, १८८६

छुट्टियों की अभी पक्की ख़बर नहीं। आज कल हमें बहुत बड़ा काम होता है। आप दया रखा करें। आप की दया विना कुछ हो नहीं सकता। जिस तरह आप कहें, मैं उसी तरह करूँगा। मैं आपका दास हूँ। आपका पत्र मिला है। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१२०)　　८ जुलाई, १८८६

पत्र लिखते रहा करें। छुट्टियाँ या तो २८ तारीख़ को होंगी या इस हफ़्ते ही शायद हो जायें। आप दया रखा करें। अगर आपको कष्ट न

हो, तो ज्ञानचंदजी से पूछना कि अगर पुस्तक छुट्टियों से पहले-पहले दिला दें, तो बड़ी ही कृपा होगी और मैं बहुत जल्दी देखकर दे भी दूँगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१२१) १३ जुलाई, १८८६

आपका और ज्ञानचंद का पत्र मिला, मगर वह मनुष्य अभी नहीं मिला। मुझे वज़ीफ़ा मिल गया है। मुझसे अब के पत्र भेजने में कुछ देर हो गई है। आप मुआफ़ फ़रमावें। लाला अयोध्यादास जी का मत्था टेकना। मुकुंदलालजी का मत्था टेकना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१२२) १५ जुलाई, १८८६

आप पत्र भेजते रहा करें। हमें कोई दो हफ़्ते को महीने के आख़िर (अंत) में छुट्टियाँ होंगी। वह मनुष्य पुस्तकवाला नहीं मिला। मुकुंद-लाल का मत्था टेकना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१२३) १७ जुलाई, १८८६

आपका पत्र आये बड़ा अरसा (काल) हो गया है। आप पत्र लिखते रहा करें। मैं आपका दास हूँ। वह विक्रमादित्य ज्ञानचंद की पुस्तक-वाला लड़का अपने गाँव चला गया हुआ है।

—:o:—

निज इच्छा-विरुद्ध भी गुरु-आज्ञानुसरण का भाव

संबोधन पूर्वोक्त, (१२४) १६ जुलाई, १८८६

हमें इस सप्ताह (अर्थात् शनिवार) को आशा है छुट्टियाँ होंगी, और नीरजनाभ * मेरे साथ हमारे ग्राम में जाना बड़ा

* नीरजनाभ एक ब्राह्मण का लड़का था, जो तीर्थरामजी की रसोई बनाया करता था और साथ इसके उनसे विद्याध्ययन भी किया करता था। गुरुजी को इस लड़के का आचरण अच्छा प्रतीत नहीं होता था, इसलिये इसकी संगति से तीर्थरामजी को रोकते

चाहता है। आप यदि मुझे कहें, तो मैं उसे लाऊँगा, नहीं तो न लाऊँगा। मैं आपके कहे पर अमल करूँगा (चलूँगा)। वह भाड़ा (किराया) अपने पास से देगा, और थोड़ा काल वहाँ रहकर उसका वापस चले आने का इरादा (विचार) है। मेरे पास वह पढ़ने के लिये रहना चाहता है। आप जल्दी लिखें कि मैं उसे लाऊँ या न लाऊँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१२५)　　　　२२ जुलाई, १८९९

मैं आपका नौकर (सेवक) हूँ, मेरे अपराधों को मुआफ़ (क्षमा) फ़रमाया करें। आपके दो पत्र मिले, बड़ी ही ख़ुशी हुई। मैं नीरजनाभ को हरगिज़ (कदापि) साथ न लाऊँगा। मैं आपका आज्ञाकारी हूँ। आपका वीरवार का पत्र भी आज ही मिला, क्योंकि तीन दिन कालिज बंद रहा। मुकुंदलाल का मत्था टकना।

——:०:——

तीर्थरामजी की अधीनता

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१२६)　　　　२२ जुलाई, १८९९

आपके दो पत्र आज और मिले। मैं बड़ा ही पापी और अपराधी हूँ। आप मेरे मन को शुद्ध करें, क्योंकि सब कुछ आप ही करनेवाले हैं। मेरे पिता भी आप हैं, भाई भी, और सब संबंधी भी आप ही हैं। मुझ पर रहम (दया) किया करो, क्योंकि "अज़ ख़ुर्दाँ ख़ता

थे। परंतु तीर्थरामजी को यह ग़रीब और भोलाभाला दिखाई देता था, इसलिये इसे पढ़ाने तथा अन्य प्रकार से सहायता देने में तत्पर रहते थे। तथापि वह अपने चित्त के अनुसार बिना गुरु की आज्ञा के कुछ नहीं करना चाहते थे, इसलिए इसके विषय में उन्होंने पत्र द्वारा गुरुजी से आज्ञा माँगी।

व अज़ बज़ुर्गाँ अता" (छोटों से अपराध और बड़ों से क्षमा) चली आती है। मनुष्य से अपराध भी हो जाते हैं। मैं आपका दास हूँ, जिस प्रकार कहोगे, उसी प्रकार करूँगा। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

अन्तःकरण की कोमलता

संबोधन पूर्वोक्त, (१२७) २४ जुलाई, १८८९

आपका एक और पत्र आज मुझे मिला। मैं तो आपके इशारे (संकेत) को भी हद से बढ़कर जानता हूँ, आप फिर मुझे बार-बार क्यों ताकीद करते हैं ? मैंने तो अब नीरजनाभ से बोलना भी छोड़ दिया है। मुझ पर आप ख़फ़ा (रुष्ट) क्यों होते हैं ? मेरा आपके विना कोई ठिकाना नहीं। मुझ पर दयादृष्टि करो। मुझ पर यदि आप राज़ी (प्रसन्न) होंगे तो भी मैं आपका हूँ, और यदि रंज (अप्रसन्न वा नाराज़) होंगे तो भी मैं आपके चरणों में पड़ा रहूँगा। मुझ पर करुणा करो।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१२८) २५ जुलाई, १८८९

आपके तीन कार्ड मिले। हमें आशा है, कल छुट्टियाँ मिल जायेंगी। मैं कल आठ बजे आने का संकल्प रखता हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१२९) वैरोके *१० अगस्त, १८८९

मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। ये लोग अच्छी तरह से पेश आये हैं। मैं आपका दास हूँ। दया रखा करें।

——:o:——

* यह वही ग्राम है, जहाँ विद्यार्थी तीर्थराम का श्वशुरालय। [ससुराल] था और जिसका डाकघर व तहसील वज़ीराबाद थे। इसका वर्णन पहले पत्र नं० १ के फुटनोट में

संबोधन पूर्वोक्त,   (१३०)   वैरोके, १५ अगस्त, १८८६

मुझे अभी वह आने नहीं देते। और इस सोमवार को हमारे आने की तजवीज़ ठहरी है। आपने ख़ुशी रखनी, मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१३१)   लाहौर, ८ अक्तूबर, १८८६

मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। लाला अयोध्यादास यहाँ नहीं हैं। आप ज़रूर बसद ज़रूर यहाँ जल्दी तशरीफ़ लायें। नीरजनाभ बड़ा तंग करता है। मैं इस मकान में रहना नहीं चाहता। महेशदास भी यहाँ नहीं हैं। मगर अब यहाँ एक और ग़ैर आदमी भी रहता है। सो अब यहाँ मैं, मुकुंद और वह तीसरा ग़ैर आदमी हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१३२)   ६ अक्तूबर, १८८६

सुना गया है कि अयोध्यादास नौकरी से मौक़ूफ़ किया गया है, मगर यह ख़बर पुख़्ता नहीं है। आप ज़रूर तशरीफ़ लायें। जल्दी आयें। अगर ऊपर की ख़बर सच हुई, तब तो ख़्वाह-मख़्वाह यह मकान छोड़ना पड़ेगा। इसलिए पहले से ही मकान की फ़िक्र करना अच्छा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१३३)   ११ अक्तूबर, १८८६

आप अभी तक आये क्यों नहीं। आप ज़रूर बहुत जल्दी आयें। अब नीरजनाभ इस मकान में नहीं आता। जब लालाजी आयेंगे, फिर आया करेगा। आप ज़रूर जल्दी आयें।

——:o:——

आ चुका है। इन दोनों पत्रों से प्रतीत होता है कि कालिज में इन दिनों गरमियों की छुट्टियाँ थीं जिससे तीर्थरामजी कुछ दिन ससुराल में रहने के बाद गुजराँवाले में सीधा गुरुजी के पास आकर रहे हैं, इसीलिये अगस्त से अक्तूबर मास तक केवल दो पत्र ही उनके मिले हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (१३४) ११ अक्तूबर, १८८६

आपका एक पत्र मुझे आज मिला और थोड़ा काल हुआ लाला अयोध्यादास भी आ गया है। आप अब ज़रूर ही आ जायें। जगह का समागम मुझे नहीं बनता। कृष्णचंद्र की जगह बन रही है। बाबा जवाहरदास भी लाला के संग आया है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१३५) १३ अक्तूबर, १८८६

कल एक पत्र महेशदास के हाथ का आया था। आप अब ज़रूर आयें, क्योंकि अब तो हमारे कालिज खुलने का दिन भी परसों आ गया है। आप ज़रूर आयें। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१३६) १६ अक्तूबर, १८८६

आज ५) रु० अर्जुनदास से वसूल पा लिये हैं। बड़ी ख़ुशी हुई। आज मैंने मासड़(मौसा)जी को भेजने के लिये किताब ले ली है। आप दया रखा करें। मैं बड़ा ख़ुश हुआ हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१३७) २५ अक्तूबर, १८८६

मुझे आज कुछ आराम ही रहा है। आप अब जल्दी आना। अगर तकलीफ़ (कष्ट) न हो तो दया करके नीचे लिखी किताबें लेते आना—(१) डिडक्टिव लॉजिक (Deductive Logic)। इस किताब की जिल्द नहीं बंधी हुई, और छोटी सी किताब है। इसके गिरद शायद कोई काग़ज़ अख़बार आदि का लगाया हुआ है। (२) इम्तहानों के परचे (परीक्षा-प्रश्न-पत्र)। (३) कैलेंडर (Calendar), यह वह किताब है, जिसके वर्क़े (पृष्ठ) सब उखड़े हुए हैं और जिल्द में जुड़े हुए नहीं हैं। मगर इसकी जिल्द बड़ी ख़ूबसूरत है, और इसके

गत्ते एक कपड़े में पहले ही के मढ़े हुए हैं, और इसकी पुश्त (पृष्ठ) पर काले अक्षरों में इसका नाम खुदा हुआ है। ये तीन किताबें हैं। अगर आपको मालूम करने में तकलीफ़ होती हो, तो न लाना।

——:o:——

सत्यं ज्ञानं आदि संबोधन, (१३८) २७ अक्तूबर, १८८९

आप अब कब आयेंगे? जल्दी आना। मैं आपका दास हूँ। भाई साहब आये हुए हैं कि नहीं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१३९) २९ अक्तूबर, १८८९

आपने कोई ख़त (पत्र) नहीं लिखा, क्या हेतु है? ख़त आप लिखते रहा करें। लाला अयोध्यादास आज आ गया है। आपको मालूम है भाई साहब अभी आये हैं कि नहीं? आप कब आयेंगे। जल्दी आना। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४०) ३१ अक्तूबर, १८८९

आपका ख़त कल मिला; सो महाराजजो! आपने भी जरूर भाई साहब के साथ आना। मैं आपका दास हूँ, आप दया रखा करें। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४१) १ नवंबर, १८८९

आपका एक पत्र आज मिला। आप जल्दी भाई साहब के साथ ही चले आवें। जबकि आप लाहौर से गये हैं मैं राज़ी नहीं हूँ। अब बलग़म (श्लेष्मा) और खाँसी ने तंग कर रखा है। आपको लिखा इसलिये नहीं कि आपको तंगी न होवे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४२) रात्रि, ६ नवंबर, १८८६

कोई हाल लिखने के क़ाबिल नहीं। भाई साहब जब जायेंगे, मैं आपको इत्तिला (सूचना) दूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४३) ८ नवंबर, १८८६

मैं आपका दास हूँ, आपका पत्र कोई नहीं आया। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४४) १० नवंबर, १८८६

आपका एक पत्र कल मिला था। मैंने कल से ही तेल सरसों का जलाना शुरू कर दिया है। भाई साहब कल जाने का इरादा रखते हैं, आप पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४५) १४ नवंबर, १८८६

मुझे आज किताबें कलकत्ते से आ गई हैं, जोकि वहाँ लिखी हुई थीं। मैं आपका दास हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४६) १७ नवंबर, १८८६

आपके कई पत्र आये हैं। अब हमारा सिमाही इम्तहान (त्रैमासिक परीक्षा) होनेवाला है। मैं आपका दास हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१४७) १६ नवंबर, १८८६

हमारा इम्तहान कल से शुरू होगा और पंद्रह दिन तक होता रहेगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१४८)   २० नवंबर, १८८६

आपके दो कार्ड आज मिले, बड़ा आनंद हुआ। आप अगर यहाँ आ जायें तो मुझे और क्या चाहिये। आप ज़रूर जल्दी दया करें।

श्रीमहाराजजी ! यह पत्र कल बुद्धवार का लिखा हुआ है, मगर डाक में डालना याद नहीं रहा था, इसलिये आज वीरवार भेजा जाता है, मुआ़फ़ फ़रमाना। मैं आपका दास हूँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१४६)   २२ नवंबर, १८८६

महाराजजी ! आप कल शनिवार को अगर आ जायें, तो बड़ी दया हो, क्योंकि कल से दो तीन दिन तक हमारा इम्तहान बंद रहेगा। और उसके बाद फिर होने लग पड़ेगा। ये छुट्टियाँ अगर आप यहाँ आ जायें तो बड़ी दया हो। आप ज़रूर आ जायें, मैं आपका दास हूँ। दो बातें और भी हैं जिस लिए आप यहाँ आयें। एक तो यह कि अब लाला अयोध्यादास का इरादा इस मकान को छोड़ देने का है, दूसरी यह कि अब ख़र्च की बहुत ही तंगी है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१५०)   २४ नवंबर, १८८६

आपका एक पत्र कल मिला था। मैं राज़ी हूँ। आप अब ज़रूर यहाँ आवें। नीज़ (साथ इसके) कलकत्ते का लॉर्ड (वाइसराय) भी यहाँ आजकल आया हुआ है, उसे भी देख लेना। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (१५१)   २६ नवंबर, १८८६

आप अब इस हफ़्ते (सप्ताह) ज़रूर आ जावें, बड़ी दया होगी। आप पत्र ठाकुरद्वारे और कालिज दोनो की मार्फ़त भेजा करें। मैं आपका दास हू।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५२) २७ नवंबर, १८८६

हमारा इम्तहान इस शुक्रवार को ख़तम हो जायगा, आप अगर शुक्रवार आ जायें तो बड़ी ही दया होगी। आप ज़रूर इस शुक्रवार को आ जायें, मैं आपका दास हूँ। महाराजजी! ज़रूर आ जायें। मुकुंद-लाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५३) ४ दिसंबर, १८८६

यहाँ ख़ैरियत (कुशल) है, आपका सुख मतलूब (इच्छित) है। लाला अयोध्यादास अभी इस तरफ़ नहीं आया।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५४) ६ दिसंबर, १८८६

लाला अयोध्यादास अभी इधर नहीं आया। जब आयेगा, मैं लिख दूँगा। यह पत्र शुक्रवार का लिखा हुआ है, मगर किताब में पड़ा रहा और डाक में डालना याद न रहा, इसलिये आज शनि को भेजा जाता है, आप मुआफ़ फ़रमाना, मैं आपका दास हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५५) ६ दिसंबर, १८८६

आप पत्र कालिज में जो भेजते हैं तो कई दफ़ा (प्रायः) लड़के पढ़ लेते हैं। अब मेरा दूसरा पता यह है—"लाहौर, बाज़ार बारूदखाना, शामामल हलवाई की मार्फ़त तीर्थराम को मिले"। लाला अयोध्यादास के घर के (लोग) लाहौर में आ गये हैं। लाला आप अभी इस मकान में नहीं आया। आपका एक पत्र आज मिला।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१५६) ११ दिसंबर, १८८६

आप दया रखा करें। आपका पत्र आये कुछ देर हो गई है। आप

पत्र लिखते रहा करें। चाचाजी अभी आये हैं कि नहीं? जब आयेंगे मभे इत्तला (सूचना) देना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,   (१५७)   १३ दिसंबर, १८८६

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है; आप दया रखा करें। पता—लाहौर, मस्ती दरवाज़ा या क़िलावाला दरवाज़ा, बाज़ार बारूद-ख़ाना, मार्फ़त शामामल हलवाई के तीर्थराम को मिले।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,   (१५८)   १५ दिसंबर, १८८६

आपका एक पत्र कल मिला था, बड़ा आनंद हुआ। आप एक पत्र कालिज में और एक पत्र इस मकान के पते पर भेजा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,   (१५६)   १७ दिसंबर, १८८६

आपका एक पत्र कल मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। लाला अयोध्या-दास को अभी आराम नहीं आया। हमारा फिर दो दिन इम्तहान है। छुट्टियों में आने की बाबत फिर लिखूँगा। मुकुंदलाल का मत्था टेकना। लाला अयोध्यादास का मत्था टेकना। लाला अयोध्यादास अभी इस बैठक में नहीं आया।

आपका दास

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,   (१६०)   १६ दिसंबर, १८८६

मैं छुट्टियों में आपके पास आने का तो इरादा (संकल्प) रखता हूँ, पर गाँव (ग्राम) में जाने को जी नहीं चाहता। इसलिए आप अगर मेरे आने से पहले दस रुपया किसी तरह हमारे गाँव से मँगाकर अपने पास रखें, तो मुझे वहाँ जाना न पड़े। और आने का दिन फिर लिखूँगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१६१) २१ दिसंबर, १८८९

आपका पत्र आये अब कुछ देर हो गयी है। हमें शायद मंगल से लेकर छुट्टियाँ होंगी। मैं छुट्टियों के अंत में आने का ज्यादा संकल्प रखता हूँ। अगर जी चाहा, तो शुरू ही में आ जाऊँगा। आगे जिस तरह आप हुक्म करें, उसी तरह मैं करूँगा। आप अगर मुरालीवाले* से दस रुपया मँगवा रखें, तो बड़ी दया हो। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१६२) २३ दिसंबर, १८८९

आज से लेकर हमें छुट्टियाँ हो गयी हैं। जिस दिन आप लिखेंगे, मैं हाज़िर हो जाऊँगा। आपका एक पत्र कल मिला था। आप अब पत्र जल्दी भेजना। हमें तो छुट्टियाँ हुई हैं। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१६३) २६ दिसंबर, १८८९

आपका एक पत्र आज मिला। अब मेरा संकल्प शनि की रात को आपके पास आने का है। एक दो दिन रहकर फिर यहाँ चला आऊँगा। आपकी किताब के लिये आज बाज़ार से पूछूँगा। लाला अयोध्यादास का जो अस्बाब इस डेरे में था, वह आप सबेरे (प्रातः) यहाँ से ले गया हुआ है। वह अस्बाब उसने अपने गाँव में भेज दिया है। मुझे नहीं मालूम कि लाला अयोध्यादास ने कुरसियाँ ख़रीदी हुई हैं कि नहीं। अगर लाला अयोध्यादास ने कुरसियाँ ली हुई हैं, तो उससे कहूँगा कि रेल पर चढ़वा दे। इति।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१६४) ३० दिसंबर, १८८९

मैं आज यहाँ पहुँच गया हूँ। मुकुंदलाल अभी यहाँ नहीं आया।

* तीर्थरामजी का जन्म-स्थान यह ग्राम है।

आप पत्र भेजते रहा करें। आप दया रखा करें। मैं आपका दास हूँ।

——:o:——

सन् १८९० ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े सोलह वर्ष के लगभग थी।)

संबोधन पूर्वोक्त, (१६५) १ जनवरी, १८९०

कल हमारा कालिज खुलेगा। आप पत्र भेजते रहा करें। मुकुंदलाल अभी नहीं आया। १) रु० किराया का मैंने दे दिया है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६६) ३ जनवरी, १८९०

आपका एक पत्र आज मिला। बड़ी खुशी हुई। मुकुंदलाल आ गया हुआ है। लाला अयोध्यादास अभी शायद नहीं आया, क्योंकि जब वह यहाँ होता है, तो दिन भर में एक न एक दफ़ा प्रायः जरूर मिला करता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६७) ५ जनवरी, १८९०

लाला अयोध्यादास आ गया हुआ है। रुपये दे दिये हैं। मुकुंदलाल से भी किराया के साढ़े तीन रुपये दिलवा दिये हैं। गोविंदसहाय को भी रुपये दे दिये हुए हैं। आप दया रखा करें। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६८) ६ जनवरी, १८९०

आप पत्र कालिज में भी लिखा करें और इस मकान पर भी। आप पत्र भेजते रहा करें। मैं आपका दास हूँ। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६६) ८ जनवरी, १८६०

आपका एक पत्र आज मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। आप ज़रूर जल्दी यहाँ आवें। मैं आपके चरणों का दास हूँ। आप ज़रूर जल्दी दया करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७०) १० जनवरी, १८६०

महाराजजी ! आप कल ज़रूर ही आ जायें। मैं आपके चरणों का दास हूँ। आप दया रखा करें। ज़रूर ही आ जायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७१) १२ जनवरी, १८६०

महाराजजी ! आपका पत्र मिला। बड़ा आनंद हुआ। आप ज़रूर ही अब तो जल्दी आ जायें। मुझ पर दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७२) १४ जनवरी, १८६०

आप अभी तक आये क्यों नहीं ? जल्दी तशरीफ़ लाओ। मुझ पर ख़ुश रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७३) १४ जनवरी, १८६०

आपका पत्र, जिसमें चाचाजी के आने की बाबत लिखा हुआ था, अब मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। आज प्रातःकाल मैंने आपकी तरफ़ एक पत्र लिखा था, अब फिर लिखता हूँ कि आप ज़रूर आ जाओ; मैं चाचाजी के वास्ते गाँव जाने का संकल्प नहीं रखता। चाचाजी को लिखा है कि वह यहाँ आ जायें। अब आप ज़रूर ही आओ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७४) १५ जनवरी, १८६०

मैंने दो पत्र कल आपकी तरफ़ भेजे थे, अब आपका एक और पत्र

आया। सो महाराजजी! जिस तरह आप मुझ कहें, मैं बिलकुल उसी तरह करूँगा। आप अगर मेरा आना वाजिब समझते हैं, तो मुझे शनिवार से पहले-पहले जवाब लिखें। मैं ज़रूर आ जाऊँगा। अगर आप आ जायें, तो बड़ी ही दया होगी। मैं आपको बहुत जल्दी मिलना चाहता हूँ। ज़रूर, ज़रूर, चाचाजी को मैंने भी लिखा है, और आप भी कहें कि वह खुद ज़रूर आप आकर मुझे मिल जायँ, आप मुझ पर दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७५) १६ जनवरी, १८९०

महाराजजी! आपका एक पत्र आज और मिला, बड़ी खुशी हुई। मैंने तो आपको कितने ही पत्र लिखे हैं, पर आप आते ही नहीं। अब इस कार्ड को पाकर तो ज़रूर दया करनी। मेरा आना मुश्किल है। मुकुंदलाल का मत्था टेकना। आज चाचाजी आ गये हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७६) १८ जनवरी, १८९०

चाचाजी कल जाने का संकल्प रखते हैं। आप जल्दी दया करना। मैं आपका दास हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७७) २० जनवरी, १८९०

आज नौ बजे सुबह (प्रातः) की गाड़ी में चाचाजी कामोंके का टिकट लेकर चले गये हैं। अब आप ज़रूर ही बहुत जल्दी तशरीफ़ लायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७८) २५ जनवरी, १८९०

आज अयोध्यादास रुपये लाया था, कुरसियाँ उसने नहीं खरीदीं। अब जिस दिन वह गुजराँवाले जायेगा, आपको रुपये थालों के दे देगा। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१७६) २७ जनवरी, १८६०

आपका पत्र कोई नहीं आया। आप मेरी तरफ़ भी ध्यान रखा करें। मैं आपका दास हूँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१८०) २८ जनवरी, १८६०

आपका एक पत्र कल मिला था और एक आज मिला। लाला अयोध्यादास मुरीदकी गया हुआ है। वीरवार को शायद गुजराँवाले भी जायेंगे। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१८१) ३० जनवरी, १८६०

आपके तीन कार्ड आज मिले। बड़ी ही ख़ुशी हुई। आप अब बहुत जल्दी यहाँ आयें। मैंने भगवानदास से १) रुपया ले लिया है। मैं आपका दास हूँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१८२) १ फ़रवरी, १८६०

आपका एक पत्र अब मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। आप इस कार्ड को देखते ही चल पड़ने की दया करें, तो बड़ा आनन्द हो। मेरा चित्त बड़ा चाहता है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१८३) २ फ़रवरी, १८६०

मैंने कल भी एक पत्र भेजा था, आज फिर लिखता हूँ कि आप इस पत्र को देखते ही सबसे पहली गाड़ी, जो इस पत्र के आपको मिलने के बाद आयेगी, उस गाड़ी से आने का संकल्प कर दें। मैं आपका दास हूँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१८४) ३ फ़रवरी, १८६०

श्रीमहाराजजी ! आप बड़ी देर क्यों लगा दिया करते हैं। मैं आपका नौकर हूँ। आप ज़रूर जल्दी तशरीफ़ लायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१८५) ८ फ़रवरी, १८६०

आपके नाम का एक पत्र रघुनाथमल का मिला। आप पत्र भेजते रहा करें। मैं आपका दास हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१८६) ९ फ़रवरी, १८६०

कल आपका एक पत्र मुझे मिला था। बड़ी ख़ुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। पहली मार्च के बाद हमारे कालिज के इम्तहान ख़तम हो जायेंगे। आपने बड़े इम्तहान (१६ मार्च) से पहले-पहले एक बार ज़रूर यहाँ हो जाना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१८७) १० फ़रवरी, १८६०

यहाँ अफ़वाह है कि गुजराँवाले के अठानबे (६८) लड़के मिडल के इम्तहान में पास हुए हैं। मगर पुख़्ता (पक्की) तौर पर मालूम नहीं। मुकुंदलाल के उस्ताद ने अभी कोई ख़बर नहीं बतलाई। आपका पत्र कोई नहीं मिला।

——:o:——

निरभिमानिता और गुरु-सहायता पर भरोसा

संबोधन पूर्वोक्त, (१८८) ११ फ़रवरी, १८६०

हमारे दाख़िले देने के लिये वीरवार का दिन और शुक्रवार का दिन मुक़र्रर हुए हैं। इन दोनों में से चाहे किसी दिन दाख़िले (प्रवेश-फ़ीस)

कालिज में दाखिल कर दें। मैंने अभी लाला भगवानदास से रुपये नहीं लिये।

अब महाराजजी! मुझे बड़ी फ़िक्र (चिन्ता) लगी हुई है, क्योंकि मुझे अपने आप पर बिलकुल ज़रा भी भरोसा नहीं। मैं बड़ा नालायक़ हूँ। अगर मेरा वज़ीफ़ा (छात्र-वेतन) अब के न लगा, तो मेरे दिल को बड़ा सदमा पहुँचेगा।

आप बिलकुल (पूर्ण) परमेश्वर हैं, सब कुछ कर सकते हैं, सब कुछ जानते हैं। ग़रज़ आपकी सिफ़त (उपमा) मेरे लिखने की मोहताज नहीं। अब बात यह है कि अभी तो वक़्त है। अगर आपकी राय (सम्मति) में मुझे इस साल दाखिला भेज देना वाजिब हो, तो मैं भेज देता हूँ, नहीं तो अगले साल इम्तहान दे दूँगा।

मैं आपका नौकर हूँ। आपने जवाब जल्दी लिखना और सोचकर लिखना। मुझे अपनी मेहनत या हुश्यारी पर तो कुछ भरोसा नहीं, मगर हाँ आप अगर मदद दें, तो मुझे सब कुछ उम्मेद हो सकती है। मुझे इसी साल वज़ीफ़ा मिल सकता है।

इतनी मुद्दत हुई आपका पत्र कोई नहीं आया। क्या वजह (कारण) है। अब मुझे आपने भी भुला दिया है। जब किसी के बुरे दिन आते हैं, तो ऐसा ही होता है।

—:o:—

तीर्थरामजी का वार्षिक परीक्षा का प्रवेश-पत्र भरना

संबोधन पूर्वोक्त, (१८६) १२ फ़रवरी, १८६०

कल तक मैंने यह समझा था कि इम्तहान में दाखिल होना अथवा न होना मेरे वश (इख़्तियार) में है, मगर यह बात नहीं निकली। आज ही साहब ने तक़रीबन (लगभग) सबसे पहले मुझसे फ़ार्म

(प्रवेश-पत्र) पर नाम लिखवा लिया है। और जब फ़ार्म पर नाम लिखा गया, तो दाख़िला (प्रवेश-शुल्क) अवश्य देना पड़ेगा, और इम्तहान में ज़रूर जाना पड़ेगा। इसलिए मैं आज लाला भगवानदास से रुपये कुल दाख़िला देने के वास्ते ले आया हूँ। अब आप ज़रूर दया करना। मेरे गुनाहों (अपराधों) को क्षमा करना, मुझ पर दया रखना, मैं आपका दास हूँ। मिडल के इम्तहान की मुझे कुछ ख़बर नहीं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१९०) १३ फ़रवरी, १८९०

आपका पत्र एक भी नहीं मिला। मैंने आज दाख़िला दे दिया है। आगे जिस तरह आपकी मरज़ी होगी, हो जायगा। आप दया रखा करें। आपने अब मुझे बिसार क्यों दिया है। मैं आपका दास हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१९१) १४ फ़रवरी, १८९०

रिसाला 'नूरुलबसर'वाला आदमी मुझे अभी नहीं मिला और मेडिकल कालिज का रिसाला कल यहाँ मँगा रखूँगा मुकुंदलाल के हाथ। आज चार बजे कालिज से आती बार मैं उस जगह गया था, जहाँ पर रिज़ल्ट लगता है। पर उस वक़्त नहीं लगा था। फिर डेरे आकर मुकुंद-लाल को भेजा। यह कोई पाँच बजे के क़रीब वहाँ पहुँचा। रिज़ल्ट लग गया हुआ था, मगर लड़कों ने गुजराँवाला, गुजरात, वज़ीराबाद, स्यालकोट इत्यादि के लड़कों के नाम बिलकुल फाड़ दिये हुए थे। इन जगहों के नाम किसी बेवक़ूफ़ हासिद (मूर्ख, ईर्षालु) लड़के ने इसलिये फाड़ दिये थे कि वहाँ के बड़े (बहुत) लड़के पास हुए थे। कई कहते थे कि गुजराँवाले के सारे के सारे लड़के अर्थात् ९६ कुल के कुल पास हो गये हैं। मगर मैं बड़ा ही अफ़सोस करता हूँ कि मैं आपको मोतबर

(विश्वास करने योग्य) ख़बर नहीं दे सका । मुकुंदलाल रोज़ एक बार वहाँ यूनिवर्सिटी हाल में हो आया करता था । मगर उसकी सब कोशिश बेफ़ायदा गई । बड़ा अफ़सोस ।

लाला देवीदयालजी मुझे कल आनकर मिल गये थे । शायद कल ही चले गये होंगे । मगर आप जानते हैं कि रघुनाथमल का (इम्तहान का) नतीजा पुख़्ता तौर पर न लिखने में मेरा कुछ क़सूर (अपराध) नहीं है । मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ । आप मुझ पर दया रखा करें, मैं आपका दास हूँ ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६२) १६ फ़रवरी, १८६०

मेडिकल कालिज का रिसाला हर महीने की पहली तारीख़ को छपा करता है । आज १६ तारीख़ है । अगर कहो तो इस महीने का छपा हुआ रिसाला लेकर डाक में भेज दूँ, नहीं तो नये रिसाले के वास्ते आइन्दा महीने तक इन्तज़ार करना पड़ेगा । कल मेंह (वर्षा) बरसा था, इसलिये वह आदमी, जिसके पास रिसाला नूरुलबसर था, नहीं मिला । आज आशा है ले रखूँगा । आप अब पत्र में सदा ताख़ीर (विलंब) क्यों करते हैं । मैं आपका दास हूँ । इस वीरवार अर्थात् २० तारीख़ से हमारे इम्तहान सिमाही (त्रैमासिक) शुरू होंगे और पहली मार्च तक होते रहेंगे, तत्पश्चात् १७ मार्च से असली इम्तहान शुरू होगा ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१६३) १८ फ़रवरी, १८६०

अब आपने अपने ग़ुलाम को बिसार क्यों दिया है । मैं रोज़ (प्रति दिन) लाहौरी दरवाज़े भी उस आदमी को कालिज से आती बार देख आया करता हूँ, और तलाओ (तालाब) के क़रीब भी रोज़ शाम (सायंकाल) को देख आया करता हूँ । पर आज चार बजे तक वह नहीं मिला ।

गरम तो बंदह शुमरदी ज़ि ख्वाजगी सद शुक्र ;
गरम क़बूल न करदी ज़ि ना कसे फ़रयाद ।

भावार्थ—अगर आपने मुझे अपना गुलाम (सेवक) मान लिया, जैसे कि गुरु अपने शिष्य को मानता है, तो हज़ार हज़ार शुक्र (धन्यवाद) है । और अगर मुझे ऐसा स्वीकार न किया तो किसी के आगे फ़रयाद (शिकायत व उलाहना) नहीं है ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१९४) १९ फ़रवरी, १८९०

आपके दो पत्र कल मिले थे । बड़ी ख़ुशी हुई ! आप दया रखा करें और पत्र भेजते रहा करें । वह आदमी रिसाला नूरुलअसरवाला आज तक नहीं मिला । मालूम नहीं उसे क्या हो गया । मैं आपका दास हूँ ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१९५) २१ फ़रवरी, १८९०

रिसाला नूरुलऐन आपको भेजा जाता है । हमारा इम्तहान हो रहा है । आपका पत्र कोई नहीं आया । आप इस तरफ़ भी ध्यान रखा करें ।

इस तरफ़ भी तो तुम्हें लाज़िम है निगह गाहे गाहे ;
दम बदम लहज़ा बलहज़ा नहीं गाहे गाहे ।

अर्थात् मेरी ओर भी कभी कभी दृष्टि देना आपके लिये उचित (अवश्य कर्तव्य) है । यदि श्वास प्रतिश्वास अथवा पल पल नहीं, तो कभी कभी तो अवश्य चाहिये ।

आक़ा (मालिक लोग) अपने ग़ुलाम (दास) को भी याद रखा करते हैं ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१९६) २४ फ़रवरी, १८९०

आपका पत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई । जो किताब रिसाला नूरुलबसर

आपने (भेजने को) लिखी थी वह बिलकुल यही किताब रिसाला नूरुल-ऐन है, जो मैंने आपको भेजी है। इसमें ज़रा शक (किंचित् संदेह) नहीं। नाम इसका आपको भी बिसर गया हुआ था और मुझको भी। मगर यही किताब थी जो मैंने आपके साथ उस आदमी के पास देखी थी। और यही किताब है कि जिसके साथ की पचास साठ जिल्दें और भी उस आदमी के पास मौजूद हैं, हालाँकि (यद्यपि) रिसाला नूरुल-बसर के नाम की कोई किताब न तो अब उसके पास है और न कभी थी ही। न उस आदमी ने रिसाला नूरुलबसर का नाम ही सुना है। जो आपने लिखी थी मैंने वही भेजी है। और यही किताब है जिसकी क़ीमत एक आना है। मेरा इसमें कुछ क़सूर (अपराध) नहीं। मुकुंद-लाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१९७) २७ फ़रवरी, १८९०

आपका पत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। आप अब जल्दी यहाँ हो जायें। हमारे कालिज के इम्तहान आज ही ख़तम हो गये हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१९८) २८ फ़रवरी, १८९०

आपका एक पत्र आज मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। मुकुंदलाल का बाप आज सुबह (प्रातः) का यहाँ आया हुआ है। शायद दो तीन दिन यहाँ रहेगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१९९) १ मार्च, १८९०

आज सात बजे सायं तक तो आपके भेजे हुए दो २) रुपये मुझे बिलकुल नहीं मिले। अगर आपने नहीं भेजे तो अब डाक की मार्फ़त

न भेजना, आप ही अब आ जाना, और एक बार इम्तहान से पहले-पहले दर्शन दे जाना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२००) २ मार्च, १८६०

आज देसराज से जाकर मैं २) रुपये ले आया हूँ। अब आप जल्दी तशरीफ़ लायें। हमारे इम्तहान में अब पन्द्रह दिन रह गये हैं। आप दया रखा करें। मुकुंदलाल का पिता अभी यहीं है। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०१) ३ मार्च, १८६०

आज मैंने मुरालीवाले एक पत्र में ख़र्च की बाबत सारा हाल लिखा है। मुकुंदलाल का पिता अभी यहीं है। आप अब जल्दी आना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०२) ४ मार्च, १८६०

आज चाचाजी का एक पत्र मिला। आज मुकुंदलाल का पिता यहाँ से गुजराँवाले गया है। मगर इस रविवार या सोमवार को फिर यहाँ लाहौर में आ जायेगा। उसे कोई मुक़द्दमा है। आप अब जल्दी यहाँ आयें। लाला अयोध्यादास के लिये गोलियाँ क़ब्ज़कुशा (पाख़ाना लानेवाली) जैसी पहले कृपा की थी, ले आवें। लालाजी का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०३) ५ मार्च, १८६०

आपका पत्र आये देर हो गई है। आज मुझे आठ रुपये का मनी-आर्डर चाचाजी की तरफ़ से मिला है। अब मैं अयोध्यादास के साढ़े तीन ३॥) रुपये भी दे दूँगा। आप अब ज़रूर ही बड़ी जल्दी यहाँ आयें। मैं आपके चरणों का दास हूँ। आपका नौकर हूँ। मैंने चाचाजी की तरफ़ लिख दिया है कि मुझे श्रीमहाराजजी ने दो रुपये भेजे थे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०४) रात्रि, ५ मार्च, १८६०

आज मैंने लाला अयोध्यादास को साढ़े तीन ३॥) रुपये दे दिये हैं। उसने तीन चार दफ़ा (बार) मुकुंदलाल से कहा था कि वह मुझसे माँगे। आप अब बहुत जल्दी आयें। ज़रूर, ज़रूर। मुकुंदलाल का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२०५) ७ मार्च, १८६०

अब तो आप ज़रूर ही आ जायें। अब तो कोई दस दिन ही बाक़ी रह गये हैं। आपने कभी पत्र भी नहीं लिखा। हमारे रोल नंबर अभी नहीं आये। मुकुंदलाल का पिता भी अभी यहाँ नहीं आया। मुकुंदलाल का पिता डेरे में ज़्यादा नहीं रहता। और अगर रहे भी तो नीचे मकुंदलाल के पास रहता है।

——:o:——

बुरे स्वभाववाले पड़ोसी से परहेज़

संबोधन पूर्वोक्त, (२०६) ८ मार्च, १८६०

आज अब दो बजे हमारे साथ का मकान कंजरियों (वेश्याओं) ने ले लिया है, और वे आज ही इस मकान में आना चाहती हैं, इसलिये बिलफ़ेल (अभी थोड़े काल के लिये) हम आज ही कोई और मकान किराया पर ले लेंगे। फिर जब आप आयेंगे तो कोई और अच्छा मकान तजवीज़ कर लेंगे। आप जब आयें तो मेहरे से हमारे नये मकान का पता पूछ लेना। मैं आपका नौकर हूँ। आप ज़रूर ही बड़ी जल्दी दया करें, अर्थात् आप अवश्य शीघ्र पधारें। आप मुझ पर ख़फ़ा (रुष्ट) क्यों हैं ? मैं तो आपका दास हूँ। उस मकान का पता चाहे शामा हलवाई से पूछ लेना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(२०७)		६ मार्च, १८६०

कल हमने कोई और मकान नहीं लिया था, आज लेने का यत्न कर रहे हैं। आप जरूर आओ, बड़ी जल्दी। अभी तक तो कंजर साथ के मकान में नहीं आये, पर आ जायेंगे जरूर। मैं आपका गुलाम हूँ। आपने मुझे बिसार दिया है। हमने लाला अयोध्यादास के सामने का मकान अब ले लिया है। इस मकान का किराया डेढ़ १।।) रुपये से ज्यादा नहीं है। अब चार बजे इस नये मकान में आकर अपने-अपने काम में लग गये हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(२०८)		१० मार्च, १८६०

आपका एक पत्र भी नहीं मिला, क्या वजह (हेतु) है ? आप अब जरूर आ जायें। आज से लेकर सिर्फ़ आठ दिन इम्तहान में रह गये हैं। यह बैठक लाला अयोध्यादास के सामने गुमटी बाज़ार में एक मसजिद के क़रीब वाक़े है।

——:o:——

परमेश्वर की दया और शान्तस्वरूप गुण।

(२०९)

संबोधन पूर्वोक्त,		१० मार्च, १८६०

न तो आप ही आते हैं और न पत्र ही भेजते हैं। नहीं मालूम मैंने क्या अपराध किया है जो आपका दिल मेरी तरफ़ से इस तरह खिंच गया (उपराम हो गया) है। परमेश्वर के गुणों में से दयास्वरूप और शान्तस्वरूप होना एक बड़ा भारी गुण है। फिर आप मेरी भूलों से दर गुज़र (उपेक्षा over-look) क्यों नहीं करते ? मुझे मालूम होता है कि आपको मेरी बाबत कोई बुरी बात परमात्मा की दरगाह (दरबार) से मालूम हुई है, इसलिये आप मेरे साथ अब बोलते नहीं, ताकि कोई यह न कहे कि तीर्थराम भगतजी का था और फिर अपनी मुराद को न

पहुँचा। मगर महाराजजी ! आप लोगों का ख़याल न करें। मेरा तो यह हाल है किः—

गर बख़ानी ईं दरस्त, व अर बरानी ईं दरस्त ;
जाये दीगर मन नदानम, ईं सरस्तो ईं दरस्त।

(तात्पर्य) यदि आप बुलाएँ वा सत्कार करें तो आपका ही द्वार है और यदि तिरस्कार करें तो भी आपका ही द्वार है। मैं और स्थान नहीं जानता, मेरा यह सिर है और आपका यह द्वार है।

आनाँ कि ख़ाक रा ब नज़र कीमिया कुनंद ;
आया बुवद कि गोशये-चश्मे बमा कुनंद।
जो हम भूले बचन उचारे, क्षमा करो अपराध हमारे।

——:o:——

(२१०)

संबोधन पूर्वोक्त, ११ मार्च, १८९०

आपका एक पत्र आज मिला। अब आप आ जाओ। यहाँ का पता यह है:—"बमुक़ाम लाहौर, गुमटी बाज़ार, बुलाक़ीराम सर्राफ़ की मार्फ़त तीर्थराम को मिले।"

हमारे गाँव में भी इस पते की इत्तिला (सूचना) अगर हो सके तो कर देनी। मुकुंदलाल का बाप अभी तक तो यहाँ नहीं आया। शायद आ जाय।

——:o:——

(२११)

संबोधन पूर्वोक्त, १३ मार्च, १८९०

आपका एक पत्र कल मिला था। परमेश्वर करे कि मेरे इस पत्र के पहुँचने से पहले ही आप लाहौर में आ गये हुए हों। अगर ऐसा न हो, तो मेरे पत्र के पहुँचने के बाद जो सबसे पहली गाड़ी आये, आप उसमें आ जायें।

——:o:——

एफ़० ए० की वार्षिक परीक्षा

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२१२)　　　　१६ मार्च, १८६०

आज हमारा फ़ारसी का इम्तहान हो गया है। परसों रियाज़ी (गणित-शास्त्र) का, जिसे मैथेमैटिक्स भी कहते हैं, इम्तहान होगा। रियाज़ी (गणित-शास्त्र) सबसे भारी मज़मून है और सबसे सख़्त है। आप दया रखा करें। आपकी सहायता विना कुछ हो नहीं सकता।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२१३)　　　　२१ मार्च, १८६०

आपका पत्र कोई नहीं आया। आज हमने इम्तहान दिया था, कल फिर देना है। आप दया रखा करें, मेरी तरफ़ ख़्याल रखें। मैं आपका दास हूँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२१४)　　　　२२ मार्च, १८६०

आज के परचे बड़े सख़्त (कठिन) आये थे। परसों हमारी साइन्स की परीक्षा है, जो कि महा कठिन मज़मून है। भाई साहब परसों के मुरालीवाले से आये हुए थे, आज चले जायेंगे। आपका पत्र कोई नहीं आया।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२१५)　　　　२४ मार्च, १८६०

आज हमारा साइन्स का इम्तहान हुआ। अमूमन (प्रायः) सब प्रश्न ही किताब से बाहर थे। परसों अंग्रेज़ी व साइन्स (विज्ञान-शास्त्र) की मुखपरीक्षा (ओरल) होगी। विज्ञान-शास्त्र की मुखपरीक्षा अत्यन्त कठिन होती है, क्योंकि अगर कोई उसमें न पास (उत्तीर्ण) हो, तो सारे विज्ञान-शास्त्र में फ़ेल (अनुत्तीर्ण) गिना जाता है। अंग्रेज़ी की मुखपरीक्षा भी कठिन ही हुआ करती है। आप अवश्य मेरा ध्यान रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२१६) १० अप्रैल, १८९०

मैं चार बजे बादामी बाग़ उतरा, वहाँ से गुमटी बाज़ार आया। अपनी बैठक पर ताला लगा हुआ देखा। क़रीब के किसी दुकानदार से कुंजी न मिली। आख़िर (अंत में) रंगमहल गया। वहाँ मुकुंदलाल की जमाअ़त (कक्षा) को छुट्टी मिली हुई थी। फिर चेतु महरे के पास गया (चेतु मेहरा को तो बिलफ़ेल कोई ख़तरह अर्थात् भय नहीं मालूम होता, मगर भोले की कोई ख़बर लाहौर में नहीं आई)। वहाँ से मालूम हुआ कि मुकुंदलाल बाबा फ़रीद के टिब्बे (टीले) में जा रहा है (यह जगह भाटी दरवाज़े के बाहर गवर्नमेंट कालिज के समीप है)। आख़िर वहाँ गया। वहाँ से मुकुंदलाल किसी काम को गया हुआ था। जब वापिस आया, तो उस जगह मुकुंदलाल के चौबारे को देखा। वह एक ही तंग व तारीक (अंधकारमयी)कोठी थी, जिसमें दो चारपाइयाँ मुश्किल से आ सकें। वहाँ से मुकुंदलाल को साथ लेकर जी (चित्त) बेज़ार (तंग) होकर यूनिवर्सिटी-हाल में गया। वहाँ रीज़ल्ट (नतीजा) नहीं लगा हुआ था। वहाँ से शाहआलमी दरवाज़े मुखदयाल की तरफ़ गया (मुखदयाल ने कोई पत्र घर नहीं लिखा था, इसलिये उन्होंने मुझे बड़ी ही ताक़ीद की थी कि उसे मिलकर हाल लिखाना या आप लिखना)। तत्पश्चात् मुकुंदलाल ने बताया कि मेरा बड़ा साला प्रभुदयाल वीरवार का लाहौर में आया हुआ है। फिर उसकी तरफ़ गया, वह न मिला। उसके बाद गुमटी बाज़ार का रुख़ किया। महेशदास रास्ते में मिला। कुंजी मकान की उसके पास से मिली (आपको विदित हो कि मेरे पीछे लाला अयोध्यादास ख़ुद तो इस मकान में नहीं आया था बल्कि महेशदास को मुकुंदलाल के साथ इस मकान में कर गया था, तिस पर मुकुंदलाल ने यह मकान छोड़ दिया)। मकान में आकर यही इरादा (संकल्प) किया कि मैं पहले की तरह कोठे पर डेरा कर दूँ, और महेशदास नीचे

रहे (जिस पर वह राज़ी है), और मुकुंदलाल बाबा फ़रीद के टिब्बे में (जो उसे मंज़ूर है, क्योंकि वहाँ उसे किराया नहीं देना पड़ता)। मकान में डेरा लगाने के बाद रोटी खाकर अपने साले की तरफ़ मुकुंदलाल के साथ एक बार फिर गया। वह मिल पड़ा। उसके साथ कुछ देर रहा। फिर गुमटी बाज़ार डेरे में आकर ज़रा आराम किया, और ये (तीन) कार्ड लिखे। लाला अयोध्यादास मुझे आज बिलकुल नहीं मिले और आशा है कि बहुत कम मिला करेंगे, क्योंकि वह अधिकतर घर या और जगहों में रहते हैं और यहाँ (इस डेरे में) उनका कोई अस्बाब नहीं है। लाला महेशदास डेरे में बहुत कम आया करते हैं, क्योंकि वह प्रायः अपने बारिस्टर के साथ रहते हैं। चुनाँचि अब रात के साढ़े ग्यारह बज चुके हैं और उन्होंने अभी तक मुँह नहीं दिखलाया। अब यह मकान आगे की अपेक्षा ज़्यादा शान्तिदेह (शान्ति देनेवाला) मालूम होता है। मेरे इस तूल कलाम (लम्बे वर्णन) से आप ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। आप मेरी तरफ़ भी निगाह (दृष्टि) रखा करें। आज शुक्र का सुबह सबेरे (प्रातःकाल) अयोध्यादास ने आवाज़ दी। अच्छी तरह पेश आया। अभी मैंने उसे नीचे से नहीं बताया, पर आशा है कि बताया जायगा। आप मुझ पर राज़ी रहा करें। बिलफ़ेल (इस समय) तो मैं और मुकुंद जुदा जुदा हो गये हैं।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२१७) १२ अप्रैल, १८६०

अभी नतीजा नहीं निकला। आज अयोध्यादास को वह बात बताई गई है। आप दयादृष्टि रखा करें। मैं आपका दास हूँ। आज इंट्रैंस का रीज़ल्ट निकल गया है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२१८) १४ अप्रैल, १८६०

इस वक़्त (दस बजे) तक तो हमारा रीज़ल्ट (नतीजा) नहीं

निकला। अभी हमारे रीज़ल्ट में देर है। आज बी० ए० का निकलेगा, ऐसी अफ़वाह है। आप दया रखा करें। मैं आपका ग़ुलाम हूँ।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२१६) १५ अप्रैल, १८६०

कल बी० ए० व एम० ए० का रीज़ल्ट निकल गया था, शायद आज या कल को हमारा भी निकल जायेगा। आप दया रखा करें।

—:o:—

तीर्थरामजी को उग्र ज्वर

संबोधन पूर्वोक्त, (२२०) १६ अप्रैल, १८६०

अभी हमारा नतीजा (एफ० ए० की परीक्षा का परिणाम) नहीं निकला, शायद आज या कल निकल आवे। कल मंगलवार मैं सख़्त बीमार हो गया था। दस बजे दिन को उग्र (सख़्त) ज्वर चढ़ गया था, और सिर-दर्द तथा कमर-पीड़ा उससे अतिरिक्त थे। न मेरे पास कोई आदमी था, न आदमी की ज़ात (जाति) थी। ज्वर की यह शिद्दत (उग्रता) लगभग रात के बारह बजे तक रही। अब आराम है। रात के ग्यारह बजे के बाद लाला महेशदास ने मुँह दिखलाया था। आप दया रखा करें। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। यह पत्र लिख चुकने के बाद आपका एक पत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२२१)* १७ अप्रैल, १८६०

परसों का हाल तो कल मैंने आपको लिख दिया था। कल मुझे यों

---

* इस पत्र के बाद २ मई तक कोई पत्र तीर्थरामजी का भगतजी के नाम लिखा नहीं पाया गया। इसके विरुद्ध तीर्थरामजी को किसी ने लाहौर से गुजराँवाले भगतजी की मार्फत २४ अप्रैल को निम्नलिखित पत्र भेजा है, जिससे प्रतीत होता है कि बीमारी के कारण तीर्थरामजी लाहौर छोड़कर गुजराँवाले चल गये थे। (आगे पृष्ठ ६९ पर देखो)

तो बिलकुल आराम रहा था, मगर किसी क़दर टाँगों में दर्द रहा था। खाना खाये मुझे अब चार डंग (उल्लंघन) हो गये हैं। भूख नहीं लगती। कल रात को केवल एक चप्पा टुकर (रोटी का टूक) खाँड के साथ खाया था। मुझे कितने दिनों का पख़ाना क़ब्ज़ के साथ आता था, इसलिए कल रात को मैंने आध सेर दूध भी पिया था। और आज सुबह (प्रातः) को अयोध्यादास से छे गोलियाँ लेकर खाई थीं, इसलिए मुझे सुबह से लगभग दस बजे तक आठ-नौ दस्त केवल पानी के आ चुके हैं, और दो बार क़ै भी आई है। प्यास लगती थी, इसलिए अब हकीम से पूछकर मिश्री का शरबत पिया है। मगर शरबत पीने से कोई घंटा भर पहले का दस्त कोई नहीं आया। सुबह जब उठा, तो मुँह का ज़ायक़ा बड़ा ख़राब था। मगर अब शरबत पीने के बाद से ज़ायक़ा अच्छा मालूम देता है। आशा है कि अब दस्त और क़ै बिलकुल बंद हो गये हैं। इम्तहान का नतीजा अभी नहीं निकला। आप दया रखा करें। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। आप ही का आश्रय है। अब दो बजे एक और दस्त आया है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२२२) २ मई, १८९०

आप आज आये नहीं। मुझको बड़ा ही इंतज़ार था, इसलिए निहायत

"गुसाईं तीर्थरामजी ! बंदगी (नमस्कार) के उपरांत आपको मुबारक हो कि आप इम्तहान एफ़० ए० में काम्याब (सफल) हो गये हैं। नंबर शुमार आपका २५ है, अर्थात् २५ नंबर पर रदीफ़ में आपका नाम है। और दुनीचंद सुपुत्र बाबू साहब भी काम्याब हो गया है। अपनी तबीअत (स्वास्थ्य) का हाल लिखो, और ख़ैरियत (कुशल) है। तरणतारण महाराज भगत साहब (धन्ना भगतजी) की सेवा में चरण-वंदना स्वीकार होवे। ग़ुलाम पर हर वक़्त दयादृष्टि रखा करें। और नेको बद (पुण्य-पाप) में सहायक रहें। केवल आश्रय आपका है। पुनः पुनः प्रणाम।"

२४ अप्रैल, १८९० आप का सेवक

लाहौर महेशदास, मुंशी (क्लार्क) बाबू गणपतिराय बैरिस्टर।

तकलीफ़ हुई है। इसीलिए मुस्तक़िल (दृढ़) इरादा करना अच्छा होता है। अब आप जल्दी आओ। चाचाजी आप को रुपये दे गये हैं कि नहीं। किताबों की ज़रूरत है। फ़ीस की मुआफ़ी का अभी पुख़्ता (पक्का) पता नहीं। वज़ीफ़े के रुपये भी अभी नहीं मिले। आप जल्दी तशरीफ़ लाओ।

——:o:——

दृढ़ निश्चय के समान कोई पदार्थ संसार में नहीं

संबोधन पूर्वोक्त, (२२३) ३ मई, १८६०

आज आपका बड़ा ही इंतज़ार था, अर्थात् आपकी बहुत ही बाट ताकी, पर आप नहीं आये। मन को बड़ा रंज (अति दुःख) हुआ है। यदि आप ने नहीं आना था, तो पत्र ही लिख देते। सो आपने वह भी नहीं किया। चित्त में विचार उठ रहे हैं कि क्या कारण जो आज भी नहीं आये, शायद चाचा जी नहीं मिले या शायद आपकी अथवा उनकी प्रकृति में कुछ अंतर (बिगाड़) है, अथवा और क्या अकस्मात् विघ्न पड़ गया। एक दृढ़ निश्चय के समान संसार में अन्य कोई वस्तु नहीं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२२४) ४ मई, १८६०

नहीं मालूम, आप ख़फ़ा (रुष्ट) हैं, या कुछ और कारण है, पर अब के तो आपने हद से परे की (अत्यंत) मौन धारी है। न तो कोई पत्र ही भेजते हो और न आप ही आते हो। मैं सख़्त इज़तराब (बेचैनी) में हूँ। परमेश्वर के वास्ते आप कल ज़रूर आ जाओ। आज तंग होकर मैं रघुनाथमल* को लिखता हूँ कि बिलफ़ेल (इस समय) मुझे दस रुपये भेज दे।

——:o:——

* पंडित रघुनाथमलजी तीर्थरामजी के मौसा (मासड़) थे। वह हाँसी हिसार आदि प्रान्त में असिस्टैण्ट सर्जन थे। और समय समय पर तीर्थरामजी की धन से सहायता करते थे।

संबोधन पूर्वोक्त, (२२५) ८ मई, १८६०

कल बावे ने मकान बड़ी अच्छी तरह साफ़ करवा दिया था। और लेपन फिरवा दिया था। आज मैं यहाँ आ गया हूँ। अयोध्यादास ने न तो मंजी (चारपाई) दी है और न मूढ़े। इस मकान का पता यह है—

लाहौर, हीरामंडी, हवेली राजा ध्यानसिंह के सामने तीर्थराम गुसाईं तालिबइल्म (विद्यार्थी) को मिले।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२२६) १० मई, १८६०

कल चाचाजी मुरालीवाले से आये थे, आज हम दो मूढ़े ले आये हैं। और वह ख़राब मंजी (छोटी चारपाई) जो महेशदासवाले डेरे में ले गये थे मैं बिलफ़ेल (इस समय) यहाँ ले आया हूँ। कल आपका पत्र मिला था। आप दया रखा करें।

——:o:——

डॉक्टर रघुनाथमल की सहायता

संबोधन पूर्वोक्त, (२२७) १२ मई, १८६०

आज सायंकाल की गाड़ी से चाचाजी के चले जाने का विचार है। आज मौसा(पं० रघुनाथमल)जी ने पचास रुपये भेज दिये हैं। आज ही मैं पुस्तकों* के लिये लिख देता हूँ, आप पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

रुपयों का खोना और काले सर्प की पूँछ का ऊपर आ पड़ना

संबोधन पूर्वोक्त, (२२८) १४ मई, १८६०

आपका पत्र आये बहुत काल हो गया है। आप शीघ्र कृपा करें। जब मैं इस मकान में आया था, सब सामान तो बाहर की कोठरी में रखा था, पर सन्दूक़ भीतर की कोठरी में। उस सन्दूक़ में पचास

* पुस्तकों से तात्पर्य यहाँ बी० ए० श्रेणी की पुस्तकों से है, क्योंकि इसी काल तीर्थरामजी बी० ए० में प्रविष्ट हुए थे।

रुपये पं० रघुनाथमलवाले और सात रुपये जो वज़ीफ़े (छात्र-वृत्ति) * के मिले थे, रखे थे। पचास रुपये चाचाजी (पिताजी) अपने हाथ से रख गये थे, और सात रुपये मैंने उनसे पहले एक काग़ज़ में बन्द करके आप रखे थे। कल मैंने कहा कि वह सात रुपये काग़ज़ से निकाल कर उन पचास रुपयों के साथ मिलाकर रख दूँ। मगर पचास रुपये तो वहाँ पड़े हुए पाये, किन्तु सात रुपये न निकले। उस समय तो मैंने सन्दूक़ बन्द करके ताला लगा दिया। फिर सायंकाल को मैंने कहा कि पुनः देखूँ। यों ही कोठरी का द्वार खोला, तो एक काले, मोटे, लंबे सर्प की पूँछ बड़े ज़ोर से मेरे ऊपर आन पड़ी। मैं डरकर बाहर दौड़ आया, और एक मनुष्य से कोठरी को ताला लगवाकर ऊपर कोठे (छत) पर जा बैठा। आज सन्दूक़ को कोठरी के भीतर से बाहर निकलवाया है, और बाहर के कमरे में रखा है। किन्तु सन्दूक़ का कोना कोना सब पुस्तकें बाहर निकाल कर देखा है, तथापि उन सात रुपयों का पता बिलकुल नहीं मिला। महाराजजी ! मैंने सन्दूक़ तथा कोठरी दोनों को विना ताला लगाये कदापि नहीं छोड़ा, पर यह बड़े आश्चर्य की बात हुई है। महाराजजी ! जिस साँप का मैंने ज़िक्र (वर्णन) किया है, उससे अतिरिक्त एक या दो और साँप भी साथ के तवेले (अस्तबल) में अवश्य रहते हैं, क्योंकि उस मकान में मैं साँपों के चलने की रगड़ के चिह्न बहुधा पाता हूँ। आप दया रखा करें, और मुझको भुला न दें।

यद्यपि इस मकान में साँप तो ज़रूर हैं, पर प्रतिदिन मकान के बदलने में अति कष्ट होता है, इसलिये मैं अभी इस मकान से उपराम नहीं हुआ। आजकल आप क्या कर रहे हैं। जब लाला रामचंद्र रुपये भेजें, मुझे लिखना, मैं आपका ग़ुलाम हूँ।

---

* छात्र-वृत्ति से तात्पर्य म्यूनिसिपल कमेटी गुजरांवाले की छात्र-वृत्ति है, सरकारी छात्र-वृत्ति नहीं।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२२९)　　　　१४ मई, १८९०

आज सुबह (प्रातः) मैंने आपको लिखा था कि सात रुपये खोये गये हैं। सो आपकी दया से अब मिल पड़े हैं। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२३०)　　　　१७ मई, १८९०

अभी किताबें नहीं आईं। आशा है कि कल आ जायेंगी। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२३१)　　　　१९ मई, १८९०

आज किताबें नहीं आईं। देखिये कब आती हैं। आपने पत्र कोई नहीं लिखा, क्यों ?

——:०:——

कर्त्तव्य-निष्ठा

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२३२)　　　　२१ मई, १८९०

कल आपका एक पत्र मिला था। बड़ी ख़ुशी हुई। किताबों की बाबत तो मैंने कल आपको लिख ही दिया था, आने की बाबत यह बात है कि मुझे आपकी आज्ञा से तो किञ्चित् इनकार नहीं, मगर काम इतना अधिक होता है कि (यदि मैं अपने कर्त्तव्य-पालन में त्रुटि न करूँ, तो) सिर खुजलाने को भी अवकाश नहीं मिलता। आगे जैसा आप लिखेंगे, उसी तरह कर लूँगा।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(२३३)　　　　२१ मई, १८९०

आपका एक पत्र आज कालिज में मिला और कुछ दिन हुए हैं, एक डेरे में मिला था। जिस कुतुब-फ़िरोश (पुस्तक-विक्रेता) को मैंने कहा था, उसने

किताबों की बाबत लिख दिया है। आप दया रखा करें। मैं आपका दास हूँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२३४) २३ मई, १८६०

कल आपका एक पत्र डेरे में भी मिला था, आप पत्र लिखते रहा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२३५) २५ मई, १८६०

कल बावे ने मुझे बीच का किवाड़ (बुवा, द्वार) लगवा दिया है। मैं कल किसी क़दर बीमार था। आज अच्छा मालूम होता हूँ। आप दया रखा करें। पत्र लिखते रहा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२३६) २७ मई, १८६०

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है ? आप पत्र जल्दी लिखते रहा करें। सरदार साहबसिंह अभी आये हैं कि नहीं ?

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२३७) २८ मई, १८६०

आपका एक पत्र डेरे में मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। अब हमारे भी इम्तहान हफ़्तावार (साप्ताहिक) शुरू हो जाने हैं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२३८) ३० मई, १८६०

आपका एक पत्र आज मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। किताबें शायद कल आ जायें। आप दया रखा करें। आप कब आयेंगे ?

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२३९) ३१ मई, १८६०

आज किताबें आ गई हैं। अब मेरे पास केवल १) रु० रह गया है।

(किताबों पर) कुल ४८) रुपया ख़र्च आया है, वह १२) रु० की किताब डालकर जो कि आपको पहले लिखी थी।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२४०) २ जून, १८६०

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है ? दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२४१) ३ जून, १८६०

आपका पत्र आये देर हो गई है। लाला साहब परसों वैरोके से आये थे। मगर मुझे कल मिले थे। उन्होंने मोहकमचंद से मुक़द्दमा जीत लिया है। मुझको १५) रुपये दे गये हैं। कल रात यहाँ मेरे पास रहे थे। आज प्रातः चले गये हैं। ज्यादा रुपये उनके पास मौजूद नहीं थे। इसलिए ज्यादा नहीं दे गये। मुझको कह गये हैं, जब ज़रूरत पड़े, मँगा लेना। आप दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२४२) ४ जून, १८६०

आपका पत्र कोई नहीं आया, क्या सबब (हेतु) है। आप दया रखा करें, मैं आपका ग़ुलाम हूँ। आप मेरी तरफ़ भी ध्यान किया करें। आपकी निगाह (दृष्टि) के बिना कुछ नहीं हो सकता।

—:o:—

कालिज के काम का भार

संबोधन पूर्वोक्त, (२४३) ६ जून, १८६०

परसों लाला देवीदयाल मुझे मिला था और कल भी। आपने लिखा था कि हम लाहौर आयेंगे। आप आये क्यों नहीं ? हमें कल और परसों छुट्टी है अगर आ जाओ तो बड़ी अच्छी बात हो। आपने पत्र में देरी क्यों की है ? मेरी ओर से बिलकुल कोई फ़र्क़ (भेद-भावना) नहीं है। मैं सत्य कहता हूँ कि आजकल हमें अत्यंत ही बड़ा काम (अभ्यास का)

होता है, इसलिए मैं नहीं आ सका। अब हमें नाममात्र तो दो छुट्टियाँ मिली हैं, मगर काम इतना है कि दो हफ़्तों (सप्ताह) में भी ख़तम मुश्किल से हो सकता है। लाचार अधूरा काम करना पड़ता है। आपने कोई और ख्याल मन में न लाना। मैं आपका दास (ग़ुलाम) हूँ। आप अब आ जायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४४) ८ जून, १८६०

कल आपका एक पत्र डेरे में मिला था। बड़ी ख़ुशी हुई। कल लाला देवीदयाल चले गये थे। मुझे एक अठन्नी ॥) दे गये थे। आप ग़ुलाम (दास) पर दया रखा करें। आजकल मुझे भूख बड़ी ही कम लगती है। और मेरे मुँह का ज़ायक़ा बड़ा कड़ुवा रहता है।

——:o:——

ऐनक की आवश्यकता

संबोधन पूर्वोक्त, (२४५) १० जून, १८६०

पिछले रविवार मैं अपने साहब की चिट्ठी लेकर आँखें दिखाने गया था। तब आँखें देखनेवाले साहब (डॉक्टर) ने मुझे एक पत्र लिख दिया था, वह पत्र मैंने बम्बई भेजा है। वहाँ से मुझे पाँच रुपये की ऐनकें, जो मेरे योग्य हों, आयेंगी। इस शनिवार हमारी गणित की परीक्षा है। यहाँ वर्षा बड़ी हुई है, इसलिए कल से मेरे मुख का स्वाद किञ्चित् कम कड़ुवा है, और भूख भी कुछ अधिक है। मैं आपका ग़ुलाम (दास) हूँ। आप दया रखा करें। पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४६) १२ जून, १८६०

परसों हमारा इम्तहान है। आपने पत्र कोई नहीं लिखा। क्या कारण है। आप मेहरबानी (दया, कृपा) रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४७) १४ जून, १८६०

आपका पत्र कोई नहीं आया। क्या वजह (हेतु) है। आप दया रखा करें। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। इस समय रियाज़ी (गणित) का इम्तहान देकर डेरे में आया हूँ, और अगले हफ़्ते (शनिवार) अंग्रेज़ी का इम्तहान देना है। आप पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४८) १५ जून, १८६०

आपने अब बिसार क्यों छोड़ा है। मैं तो आपका दास हूँ, आप दया रखा करें, और ग़ुलाम को पत्र लिखते रहा करें। अगर तकलीफ़ (कष्ट) न हो, तो जब आओगे, वह फटी हुई किताब (कैलेंडर), जिसमें इम्तहानों के प्रश्न-पत्र हैं, लेते आना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२४६) १६ जून, १८६०

महाराजजी ! आज मेरी ऐनकें तो नहीं आईं, मगर पत्र आया है कि भेजी जाती हैं। पत्र में लिखा है कि पाँच रुपये सात आने ५।≡) महसूल इत्यादि के सहित देने पड़ेंगे।

और, आजकल मेरे साथ का मकान भी एक आदमी लेनेवाला है, बग्गी इत्यादि के लिए। अगर किसी ने ले लिया और कोई नौकर इत्यादि उस मकान में रहने भी लगा, तो मुझे बड़ी तकलीफ़ होगी। आप मेरे पर क्यों ख़फ़ा (रुष्ट) हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५०) १७ जून, १८६०

कल आपका एक पत्र मिला था। बड़ी ख़ुशी हुई। आज ऐनकें आ गई हैं। मगर मुझे जैसी चाहियें, वैसी बराबर नहीं आईं। वापिस कर दूँगा। आज साथ के मकान में कोई आ गया है। बग्गी और घोड़ा वहाँ

बाँधा गया है। और एक साईस वहाँ रहा करेगा। मैं बड़े कष्ट में हूँ। आप जल्दी आयें।

——:०:——

ज़ाहरदारी (बाह्य आचार, बर्ताव) पर आभ्यन्तर अवस्था की प्रधानता

संबोधन पूर्वोक्त, (२५१) २३ जून, १८६०

महाराजजी ! आप मुझ पर ख़फ़ा (नाराज़) हैं, मगर मैं जानता हूँ कि इस नाराज़गी का कारण इससे अतिरिक्त और कोई नहीं है कि आपने मेरे हृदय को नहीं देखा, और केवल बाह्य व्यवहार और बातों को देखकर ही आप मेरी बाबत बुरे अनुमान कर बैठे हैं। यदि आप मेरे हृदय को देखें तो मैं आशा करता हूँ कि आप ख़फ़ा (क्रुद्ध) न हों।

आप यह न ख़्याल करना कि अगर मेरी तरफ़ से ज़ाहरदारी के किसी मुआमले (बाहर के किसी सत्कार सम्मान सेवा) में कोई त्रुटि हो गयी है, तो उसका कारण आपकी ओर से मेरे चित्त का विमुख हो जाना है, यह बात कदापि नहीं है, क्योंकि मैं प्रत्येक काम में आपकी सहायता का मोहताज (आकांक्षी) हूँ, और अपने चित्त में सदा आपका ख़्याल रखता हूँ। प्रथम तो पढ़ने (अभ्यास) आदि अथवा किसी और उत्तम कार्य की ओर चित्त लगने में आपकी सहायता की आवश्यकता है, फिर उस काम-निमित्त तैयारी करने में आवश्यक पदार्थों की प्राप्ति-निमित्त आपकी सहायता चाहिये। तत्पश्चात् यदि उस काम में परिश्रम भी किया जाये, तो परिश्रम के सफल होने में भी आपकी सहायता की आवश्यकता है। संक्षेप से यह कि प्रत्येक काम में आपकी सहायता की आवश्यकता है।

यदि किसी ज़ाहरदारी के काम (बाह्य व्यवहार तथा सेवा) में त्रुटि हुई है, तो उसका कारण ऐसा है—दृष्टान्त रूप से, यदि मैं पढ़ने में परिश्रम करूँ और उस पढ़ने में केवल स्वार्थ ही दृष्टिगोचर हो और

आपकी ओर से चित्त हटा लूँ, तो निःसन्देह यह बहुत ही बुरी बात है। मगर मेरी ऐसी हालत नहीं है। मैं अगर परिश्रम करता हूँ, तो मेरे चित्त में (मैं बिल्कुल सत्य कह रहा हूँ, आपने कोई और ख़याल न करना) किसी क़द्र अपना रस (स्वार्थ) भी दृष्टि में होता है, परन्तु अधिकतर यह ख़याल होता है कि यह पढ़ना आपका काम है। यदि मैं अच्छा पढ़ूँ (अभ्यास करूँ), तो मानो आपकी अधिक आज्ञा पालन की है, और आपकी सेवा विशेष करके की है। और आपके विरुद्ध अंशमात्र भी कोई काम नहीं कर रहा।

अब यदि पढ़ने की ओर मैं अधिक ध्यान दूँ और किसी ज़ाहिरदारी के काम में अर्थात् आपको किसी शारीरिक सेवा में यदि त्रुटि हो भी जाये (मगर मैं सत्य कहता हूँ कि मेरा मन बिल्कुल पहले की तरह है, बल्कि पहले से भी बहुत अच्छी तरह आपका ताबेदार वा सेवक है), तो चाहे बाह्य द्रष्टा की दृष्टि को मेरी त्रुटि दिखाई देती हो, मगर अन्तर्द्रष्टा की दृष्टि स्पष्ट देख रही है कि मैं पहले से भी अधिक आपकी सेवा कर रहा हूँ। चाहे अब आपको प्रतीत हो रहा है कि मेरा ख़याल आपकी तरफ़ कम है, परन्तु बाह्य रूप से मेरा यह कम ख़याल आपकी तरफ़ प्रतीत होना अन्त में मुझे ऐसा योग्य कर देगा कि आपकी सेवा लक्ष गुणा अच्छी तरह करूँ, यदि आप मेरी बाह्य चेष्टा पर क्रुद्ध या रुष्ट न हो जायें और मेरे परिश्रम (जो कि आपका काम है) के सफल होने में सहायता दें, क्योंकि अन्त में मैं आपकी सहायता का मोहताज (दीन) हूँ। यह कहावत प्रसिद्ध है "हिम्मते मर्दां मददे-ख़ुदा" जिसका अर्थ मैं यह करता हूँ कि मनुष्यों के यत्न में ईश्वर की सहायता की आवश्यकता है।

मेरा पढ़ना (अध्ययन करना) आपका बहुत बड़ा काम है। और ज़ाहिरदारी के कामों को बाह्य भले पुरुष इतना बड़ा काम नहीं समझते। इसलिये आपका बहुत बड़ा काम करने में अर्थात् पढ़ने में यदि आपके

किसी छोटे (ज़ाहरदारी के) काम में त्रुटि हो जाय, तो आप क्षमा कर दें।

फिर यह कि कई मनुष्य ऐसे होते हैं कि जो केवल मन से अधिक सेवा कर सकते हैं, और कई बाह्य पदार्थों से अधिक सेवा कर सकते हैं। मगर मैं चाहे किसी बाह्य पदार्थ से आपकी सेवा न कर सकूँ, पर मन से तो आपका बड़ा आज्ञाकारी हूँ।

जो विद्यार्थी घरों से पढ़ने आते हैं वे (पढ़ने में अधिक प्रवृत्त रहने के कारण) अपने माता पिता को पत्र तक भी बहुत कम लिखते हैं। उनका (इस प्रकार) अपने माता पिता की ओर अधिक ख़्याल होना तो दूर रहा, परन्तु उनके माता पिता भी कभी यह ख़्याल नहीं करते कि हमारा पुत्र हमारे विरुद्ध हो गया है। वे समझते हैं, हमारा ही काम कर रहा है।

यदि आप यह कहें कि अधिक बाह्य-रीति से (सत्कार द्वारा) एक दूसरे की ओर ध्यान न देने से प्रेम में त्रुटि हो जाती है, तो यह बात मेरे विषय में बिलकुल नहीं, क्योंकि मैं तो मन में आपका ख़्याल बड़ा ही करता रहता हूँ। प्रत्येक कठिन स्थान में आप याद रहते हैं। और यह एक प्रकार का आभ्यंतर मिलाप होता है (चाहे स्पष्ट रूप से आपको प्रतीत न हो)। साथ इसके मेरा आपका सम्बन्ध पिता पुत्र का है, जिसके टूटने का प्रलयकाल (क़यामत) में भी अंदेशा (संदेह) नहीं होता। आप और कुछ अनुमान न करें, मेरा मन तो सदा साफ़ (शुद्ध) है।

फिर यह कि जो अनुचित काम मनुष्य से होता है, उसके दो कारण हो सकते हैं—प्रथम मूर्खता या अज्ञानता, द्वितीय उसके मन की अपवित्रता वा मलिनता। जब मेरे से कोई अनुचित व्यवहार प्रतीत हो, तो आप यह देखें कि उसका कारण क्या है। यदि पहला कारण हो (केवल जो कारण मेरे अनुचित कामों में सर्वदा होता है), तो आप इसको दूसरा

कारण समझ कर मुझ पर ख़फ़ा (रुष्ट या क्रुद्ध) न हो बैठें। बल्कि चाहिये कि यदि किसी से कोई अनुचित चेष्टा अज्ञानता से हो जाये, तो उस मनुष्य को उसकी अज्ञानता का बोध करा दें और उसे यह न कहें कि "तेरा मन शुद्ध नहीं है, और तू मलीन चित्त वाला है, या तेरा हमारी ओर चित्त बुरा है।"

अब यदि कोई और कारण आपके क्रोध (रोष) का है तो वह अवश्य लिखदें, क्योंकि जब तक मनुष्य को कारण न बताया जाये, वह क्या जाने कि कोई क्यों नाराज़ (रुष्ट) है। यह अवश्य कृपा करनी कि अपने मन का गुस्सा (रोष) एक पत्र में प्रकट कर भेजना, और मेरी मूर्खता पर मुझे सूचना देनी। आप अवश्य मेरे विषय में बुरा अनुमान जो आप के चित्त में है हटा दें।

पत्र के भारी हो जाने के भय से मैं इसे समाप्त करता हूँ और विश्वास करता हूँ कि आप इतने (लेख) से ही मेरे हाल (दशा) से सूचित हो जायेंगे, और कृपा पत्र लिखेंगे, इति। ॐ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५२) २४ जून, १८९०

मैं उस डॉक्टर साहब के पास गया था, जिसने मुझे ऐनकों के लिए बम्बई अर्ज़ी लिख दी थी। उसने मेरी ऐनकों का अपने संदूक़ की ऐनकों के साथ मुलाहज़ा किया, तो यह वे ही ऐनकें निकलीं, जो लिखी थीं। मैंने कहा कि मैं इनसे अच्छी तरह पढ़ क्यों नहीं सकता। वह कहने लगा कि यह पढ़ने के लिए नहीं हैं, दूर से देखने के लिए हैं, और तुझे अभी पढ़ने के लिए ऐनक नहीं ख़रीदनी चाहिये। और महाराजजी ! इनसे मैं दूर से अच्छी तरह देख सकता हूँ। कालिज का बोर्ड अच्छा नज़र आता है। हमारे कालिज का साहब भी कहने लगा कि जिस तरह तुझे वह डॉक्टर

कहे, उसी तरह कर। इसलिए मैंने अभी वापिस नहीं कीं। आपकी क्या राय (सम्मति) है ?

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५३) २५ जून, १८६०

हमारे लिए फ़ारसी मौक़ूफ़ नहीं हुई। पढ़नी पड़ेगी। कलकत्ता और लखनऊ से किताबें आ गई थीं। हाँसी से पत्र भी आया था। आपका पत्र कोई नहीं आया ; क्यों ?

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५४) २६ जून, १८६०

फ़ारसी की किताबें जो आई थीं, उन पर नौ आने ।।-) लगे थे। और अँग्रेज़ी की किताबों पर दो रुपया सात आने। मगर अब इस हफ़्ते (शनिवार) हमें उन्होंने फ़ारसी की एक और किताब कालिज में पढ़ानी है, जिसकी क़ीमत १।) रुपया है। इसलिए यह किताब मैंने ख़रीद ली है। और अँग्रेज़ी की भी और किताब शुरू करनी है, क्योंकि एक किताब अँग्रेज़ी की हम ख़तम कर चुके हैं। मगर अँग्रेज़ी की किताब मैंने अभी ख़रीदनी है। मगर ।।-) + २।≡) + १।) अर्थात् सवा- चार रुपये मेरे आपके पीछे लग चुके हैं और बारह आने ।।।) मेरे पास हैं। आप फ़रमायें (आज्ञा करें) कि अब आयन्दह ख़र्च के लिए रघुनाथमल को लिखूँ या इस समय अयोध्यादास से लूँ, और फिर मँगाकर उसे दे दूँ। आप अब ख़फ़गी (रोष) को जाने दें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५५) २७ जून, १८६०

आपका पत्र कल मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। आप दया करते रहा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५६) २८ जून, १८६०

आपका एक पत्र कल भी आया था, बड़ी ख़ुशी हुई। बारिश (वर्षा) यहाँ भी हुई थी कुछ दिन हुए, मगर बड़ी बारिश नहीं थी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५७) ३० जून, १८६०

अयोध्यादास कहीं गया हुआ था। शायद आज आ गया हो। आप पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२५८) १ जुलाई, १८६०

कल आपका एक पत्र मिला था। आज मैंने रघुनाथमल को लिखा है कि मुझे १०) रु० भेज दे। अयोध्यादास से मैंने बिलकुल कुछ नहीं लिया।

——:o:——

धार्मिक विषयों में अनुराग

संबोधन पूर्वोक्त, (२५९) ३ जुलाई, १८६०

अभी रघुनाथमल ने रुपये नहीं भेजे। महाराजजी! आप एक दो पैसेवाले लिफ़ाफ़े में लिखें कि आप जब लाहौर में आये थे, तो बाबा जवाहरदास * के साथ आपका क्या संवाद हुआ था, क्योंकि उसने यहाँ यह प्रसिद्ध कर रखा है कि भगतजी ने इस बात के सिद्ध करने में मेरे साथ बहस (चर्चा) की थी कि "जो मनुष्य मरता है (चाहे वह कौन हो), उसको अपने पाप पुण्य का फल कुछ नहीं मिलता, चाहे वह भले कर्म करे, चाहे बुरे, वह मुक्त हो जाता है।" क्या आपने सचमुच इस बात के सिद्ध करने में उसके साथ बहस की थी? मगर मैं आशा करता हूँ कि बाबा ने आपके कथन का तात्पर्य बिलकुल नहीं समझा

* जवाहरदास एक उदासी साधु थे, जो प्रायः गुजराँवाले जिले में घूमते रहते थे और कभी कभी लाहौर आ जाया करते थे।

होगा। इसलिये उसने झूठमूठ यह बात प्रसिद्ध कर दी है, और मुझे अयोध्यादास ने कहा है कि बाबा ने यह बात प्रसिद्ध की हुई है *।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (२६०) ७ जुलाई, १८६०

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई। आप ज़रूर पत्र लिखें, जल्दी। रघुनाथमल ने अभी कुछ नहीं भेजा।

———:o:———

कुल्फ़ी न खाने की प्रतिज्ञा

संबोधन पूर्वोक्त, (२६१) ८ जुलाई, १८६०

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है ? आप अवश्य पत्र लिखें। आज रघुनाथमलजी के १०) दस रुपये भेजे हुए मुझे मिले हैं, परन्तु यह बड़ी जल्दी ही जल्दी लग जायेंगे अर्थात् ख़र्च हो जायेंगे। पुस्तकों पर बड़ा ख़र्च आता है। मैं व्यर्थ ख़र्च बिलकुल नहीं करता। जिस दिन आपके सम्मुख मैंने कुल्फ़ियाँ खाई थीं, उस दिन से मैंने सदा के लिये कुल्फ़ी खानी बिलकुल छोड़ दी है। आप दया रखा करें। मैं आपका ग़ुलाम हूँ, आप पत्र क्यों नहीं लिखते ?

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (२६२) ९ जुलाई, १८६०

आपका पत्र किस लिए कोई नहीं आया ? आप पत्र लिखते रहा करें।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (२६३) १० जुलाई १८६०

आपका पत्र बिलकुल कोई नहीं आया। आप ज़रूर दया करें।

———:o:———

* भगतजी महाराज से पूछने पर मालूम हुआ कि उन्होंने साधारण पुरुष के विषय में ऐसा नहीं कहा था, केवल इतना कहा था कि ज्ञानी को, चाहे वह किसी जाति का क्यों न हो, उसे किसी कर्म का लेप नहीं होता, और वह मर कर मुक्त हो जाता है।

गुरुजी के रोष (खफ़गी) को दूर करने की अत्यन्त चिन्ता

संबोधन पूर्वोक्त, (२६४) ११ जुलाई, १८६०

आप लिख तो दिया करें कि हम इस बात पर ख़फ़ा (रुष्ट) हैं। जब ख़फ़गी अर्थात् रोष का कारण मालूम न हो और केवल इतना ही मालूम हो कि आप रुष्ट हैं, तो बड़ी तकलीफ़ होती है। मैं वारंवार आपको जताता हूँ कि यदि कोई अनुचित बात मुझसे हुई है, तो वह जान-बूझकर कदापि नहीं हुई होगी। उसका कारण मेरी अज्ञानता होगी। आप क्षमा कर दें। क्या वह पत्र जिसमें मैंने बाबा जवाहरदास की बाबत कुछ लिखा था, आपके रोष का कारण है? यदि ऐसा है, तो आप रुष्ट हों, क्योंकि वास्तव में वह सारा पत्र अयोध्यादास के कहने पर था, मुझको उसमें कुछ दख़ल नहीं। चाहे आप कोई बात कहें, मुझको आप पर किञ्चिद् आपत्ति (एतराज़) नहीं। इसलिए अब तो एक पत्र लिखो। और भविष्य में इस प्रकार तुच्छ तुच्छ बातों पर रुष्ट होना कुछ कम कर दें तो अति कृपा होगी। जब मैं आपके कहने मात्र से मान जाता हूँ, तो रुष्ट क्यों होना? जब सोंटे (छड़ी) से काम चल जाये, तो डाँग (लठ) की क्या आवश्यकता है?

——:०:——

छात्र-काल में मन का उद्वेग

संबोधन पूर्वोक्त, (२६५) १२ जुलाई, १८६०

आपका एक पत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। हमें छुट्टियाँ पहली अगस्त या उससे दो तीन दिन पहले को होंगी। अगर पहली अगस्त से पहले-पहले हाँसी से बंसीधर या कोई और मौसीजी को गुजराँवाले न लाया, तो शायद मुझे जाना पड़ेगा, क्योंकि वह सख़्त (भारी) बीमार है। और रघुनाथमल उसे जल-वायु बदलने के लिए यहाँ भेजना चाहता है। और अन्य कोई उसे वहाँ से लानेवाला नहीं है, क्योंकि सुना है, बंसीधर

छुट्टियों में मैं बड़ा परिश्रम करूँ, किसी तरह से कालक्षेप न हो, और मेरा परिश्रम यथार्थ रीति से हो, और परमेश्वर उस (परिश्रम) को सफल करे । क्योंकि मैं अपने आपको बड़ा ही नालायक़ (अयोग्य-निकम्मा) समझता हूँ, और वास्तव में हूँ भी बड़ा ही नालायक़ । इसलिये जो मेरा इरादा (संकल्प) है उसका तात्पर्य यही है कि किसी प्रकार से मैं परिश्रम अधिक करूँ, और कोई उद्देश्य नहीं । मैं आशा करता हूँ कि आप मुझे ऐसे इरादे में अवश्य सहायता देंगे । मेरे हाल (हालत) पर ज़रूर तर्स (दया) करो, मैं बड़ा नालायक़ हूँ । मैं चाहे यहाँ रहूँ चाहें वहाँ रहूँ, आपका तो दास हूँ । और इस वक़्त जो मेरा इरादा है, वह मैं लिख देता हूँ । अगर यह बदल गया, तो भी लिखूँगा । इरादा पड़ा हो, आप यह न ख़्याल करना कि आपके विरुद्ध है, क्योंकि मेरे प्रत्येक इरादे से मुख्य उद्देश्य यह होता है कि आपके साथ प्रीति (सत्कार) और भी बढ़े । मेरा उद्देश्य उसके विरुद्ध कभी नहीं होता । अब इरादा यह है कि "पहले कुछ दिन अर्थात् सात या आठ दिन के लगभग तो बिलकुल लाहौर में ही रहूँ, और उन दिनों में अपने पिछले पढ़े हुए (अधीत पाठ) का अभ्यास (पुनरावर्तन) करूँ (यदि हाँसी न जाना पड़ जाये, तो), तत्पश्चात् गुजराँवाले कुछ दिन रहकर देखूँ कि पढ़ा जाता है या नहीं । पाँच चार दिन वैरोंके रहने का भी इरादा है, और कुछ दिन मुरालीवाले । साथ इसके हाँसी जाने का भी इरादा (विचार) है, क्योंकि मासड़ (मौसा) ने लिखा था । और अगर वहाँ एकान्त जगह मिल जाय, तो वहाँ ही शायद अधिक दिन अर्थात् एक मास के लगभग रह पड़ूँ । और पिछली (अन्तिम) छुट्टियाँ फिर लाहौर में आकर काटूँ ।" मगर मैं आपसे यही माँगता हूँ कि मेरा किसी प्रकार से कालक्षेप न हो, रघुनाथशरण* के

* रघुनाथशरण भगत धन्नारामजी की बुआ का लड़का था ।

लिए मैंने एक अति उत्तम बात सोची है, जिससे वह अच्छा भी हो जाय और उस्ताद (अध्यापक) की भी उसे कम ज़रूरत पड़े। अब और बात लिखता हूँ। अब तक हाँसी से मैं ७०) सत्तर रुपये मँगा चुका हूँ, तीस और मँगवाने हैं। वह इसलिए नहीं मँगाये थे कि उनसे जो पुस्तकें ख़रीदनी थीं, वे भारतवर्ष में नहीं मिल सकती थीं, मगर अब भारतवर्ष के ग्रन्थविक्रेता (बुकसेलर) के पास थोड़े दिनों तक वे पुस्तकें विलायत से आ जानी हैं, और मेरी श्रेणी के सब विद्यार्थी उन पुस्तकों को छुट्टियों से पहले ख़रीद लेंगे, इसलिए कि छुट्टियों में उन्हें अपने घर देखें। इसलिए मैं भी उचित समझता हूँ कि रुपये मँगा लूँ, और ज्योंहि पुस्तकें आयें, ख़रीद लूँ। उन पुस्तकों पर तीस रुपये से कुछ कम लगेगा। बीस रु० के लगभग लगेंगे। बाक़ी के रुपये आपकी दौलत हैं। थोड़े से मुझे भी दे देने। आप लिखें कि रुपये अभी मँगाऊँ या नहीं। ॐ।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(२६६)　९ बजे रात्रि, १२ जुलाई, १८६०

आज पंडित देवकीप्रसाद गुजराँवाले गये हैं। अगर हो सका तो आप मेरे भाई साहब की तरफ़ यह पैग़ाम भेज देना कि ब्रजलाल को जिस किताब की ज़रूरत हो, उसे फ़ौरन ख़रीद दे। उसका मेरी तरफ़ पत्र आया था कि उसके वास्ते उर्दू की तीसरी किताब ले आऊँ। आप अभी तक आये क्यों नहीं? सरदार रामसिंहजी को नमस्कार।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(२६७)　　　१५ जुलाई, १९६०

मेरा इरादा छुट्टियों में हाँसी जाने का भी कुछ पक्का नहीं। और जब आप लिखोगे तब रुपये मँगा लूँगा। इस हफ़्ते (शनिवार) हमारा फ़ारसी का इम्तहान है। आप दया रखा करें। पत्र लिखते रहा करें।

———:o:———

बीमार है। मैं परमेश्वर से या आपसे प्रार्थना करता हूँ कि किसी तरह

संबोधन पूर्वोक्त, (२६८) १६ जुलाई, १८६०

आपका पत्र आये देर हो गई है। रघुनाथमलने रुपये अभी नहीं भेजे, इसलिए आज अयोध्यादास से मैं १) रु० लाया हूँ। आप दया रखा करें।

——:०:——

लाहौर में छुट्टियाँ व्यतीत करने के विषय में अति उत्तम युक्तियाँ और उदाहरण

संबोधन पूर्वोक्त, (२६९) १६ जुलाई, १८६०

हमें छुट्टियाँ पहली अगस्त से होंगी। आज १६ जुलाई है। मैं आपका सदा ताबेदार (आज्ञाकारी) हूँ। आप कोई और ख़याल कभी न करें। जिस काम में कोई मनुष्य मसरूफ़ (प्रवृत्त) हो, उसे कुछ काल के बाद एक मलिका (शक्ति) ज़ेहन (बुद्धि) में आ जाता है, जिससे उसको बिना सोचे उस काम के संबंध में जो अच्छी बात हो वह सूझ जाती है। और उस अच्छी बात के अच्छा होने की जो दलीलें (युक्तियाँ) हैं, उनका प्रभाव तो उसके मन में हो जाता है, चाहे वे (सिद्ध करने की) युक्तियाँ स्वयं उसके मन में न आयें। और बहुधा ऐसी युक्तियाँ मन में नहीं भी आतीं, क्योंकि युक्तियों का निकालना और बात है। यह बात पंडितों व तत्त्वज्ञानियों के साथ संबंध रखती है, और सारे मनुष्य पंडित या तत्त्वज्ञानी नहीं होते, और वह शक्ति जिससे यह मालूम हो जाता है कि अमुक काम अच्छा है, मगर उस काम के अच्छा होने में युक्ति मन में नहीं आती, उस शक्ति का नाम ज़मीर (Conscience या संज्ञान) है। मैं जब छोटा था, तो कविता इत्यादि पढ़ने से तत्काल भाँप लेता था कि अमुक कविता उसी वज़न (वृत्त, Metre या छंद) पर है, जैसी कि अमुक दूसरी, या अमुक कविता और छंद की है, मगर यह नहीं जानता था कि क्या वज़न (वृत्त या छन्द) है, और उन दोनों में भेद किस बात में है, यद्यपि इतना मालूम होता था कि कुछ भेद अवश्य है। अर्थात्

अपने अनुभव के सिद्ध करने में दलील (युक्ति) नहीं दे सकता था, यद्यपि अनुभव बिलकुल सत्य होता था। जैसा कि केवल दस वर्ष के अध्ययन (अभ्यास) के बाद अब मैं कविता के विषय में युक्ति देने के योग्य हुआ हूँ, और जानता हूँ कि यह युक्ति उस समय भी दी जा सकती थी, चाहे मैं युक्ति से अपरिचित था, अर्थात् युक्ति अवश्य थी, यद्यपि मैं नहीं जानता था। इससे यह सिद्ध हुआ कि सच्चा मनुष्य हर वक्त (सदैव) युक्ति नहीं दे सकता, कोई कोई समय तो उसकी बात बिना युक्ति के भी माननी चाहिये, जबकि इतना हमें उसमें विश्वास हो कि "वह मनुष्य जान बूझकर बुरा काम नहीं करनेवाला, और अगर वह ऐसा काम कर रहा है कि जिसमें वह युक्ति नहीं दे सकता, तो वह अपनी ज़मीर (अन्तरात्मा) के अनुसार चल रहा होगा।

(उक्त दृष्टान्त का) दार्ष्टान्त यह है कि मैं आपको यक़ीन (विश्वास) दिलाता हूँ कि मैं आपका अन्तर्हृदय से ग़ुलाम (सेवक) हूँ, और जो काम मैं करता हूँ, चाहे ऊपर से मैं उस विषय में युक्ति न दे सकूँ, पर वास्तव में वह काम ऐसा होता है जैसा मुझे इतने वर्ष की पढ़ाई (अध्ययन) का अनुभव दर्शाता है कि यह काम अच्छा है, और इस काम के करने में कल्याण होगा। इसलिये आप कहीं यह न ख़याल कर बैठें कि चूँकि यह (अर्थात् मैं) युक्ति नहीं दे सकता, तो इसको (अर्थात् मुझे) कोई और उद्देश्य उद्दिष्ट है, अथवा हम से बाग़ी (बाग़ी, सरकश वा विरुद्ध) हो गया है। यह बात कदापि नहीं। हाय, मैं आपको कैसे विश्वास दिलाऊँ कि मैं आपका ग़ुलाम हूँ।

पुनः यह कि चूँकि मैं जानता हूँ कि आपकी जो राय (सम्मति वा विचार) मेरे विषय में होती है, उसका अन्तिम लक्ष्य (मूल उद्देश्य) यही होता है कि मुझको आनंद हो, चाहे ऊपर से वह लक्ष्य या उद्देश्य कुछ अन्य ही प्रतीत होता हो। इसलिये मैं ख़याल करता हूँ कि यदि मेरे

ज़मीर (अन्तरात्मा) से या किसी अन्य अति पक्की रीति से मुझको मालूम हो कि यह बात मेरे लिये अच्छी है (मगर जो मेरे लिए अच्छी होगी वह आपके लिए मुझसे भी अधिक अच्छी होगी, आपके लिए वह कदापि-कदापि बुरी नहीं हो सकती), तो ज़रूर आपकी भी उस विषय में वही सम्मति होगी जो मेरे ज़मीर (अन्तरात्मा) की, या उस परिपक्व उपाय की, जिससे कि वह बात मालूम हुई है। और उस विषय में यह न कहेंगे कि उसने (मैंने) हमारी आज्ञा भङ्ग की है, बल्कि यह कहेंगे कि उसने (अर्थात् मैंने) हमारी पूर्ण रीति से आज्ञा पालन की है। पुनः यह कि मैं चाहे किसी स्थान पर हूँ, आपका तो दास हूँ।

अब बात (सारांश) यह है कि आपने लिखा था कि छुट्टियों में गुजराँवाले आ जाना। सो यह बात है कि आऊँगा तो मैं अवश्य ही (चाहे कैसी दशा हो), मगर यह बात नहीं हो सकती कि सारी छुट्टियाँ (गुजराँवाले) ही व्यतीत करूँ। मेरा ज़मीर (अन्तरात्मा) कहता है कि "लाहौर में अधिक काल रहो।" यह बात अन्तरात्मा की समझ कर मैं ने अधिक सोचा नहीं, मगर फिर भी दो एक युक्तियाँ लिखता हूँ (मैं बड़ा शोक करता हूँ कि मुझे इन निकम्मी युक्तियों पर समय व्यर्थ खोना पड़ता है, मगर मैं इसलिए इन पर समय खोने के लिए विवश होता हूँ कि कहीं आप कुछ और समझ कर रुष्ट न हो बैठे। अगर मुझे इस बात का भय न हो कि आप रुष्ट हो जायेंगे, तो मैं इन युक्तियों पर समय व्यर्थ न खोऊँ। क्या ही अच्छा हो यदि आप मुझको अपना दास समझकर मेरे शुद्ध निश्चय या सत्य वाक्यों में संशय न लाया करें)।

इस बात को मैंने अब समझा है कि लाहौर के विना अन्य किसी स्थान में रहने से न केवल यह अवगुण (दोष) होता है कि वहाँ एकान्त मकान नहीं मिलता, बल्कि एक बहुत ही बड़ा दोष और यह होता है कि वहाँ चित्तवृत्ति ऐसी नहीं रहती कि किसी सूक्ष्म कार्य को कर सके, वहाँ दीर्घदृष्टि

जाती रहती है। इसका कारण यह है कि नफ़स (चिदात्मा) जो कि न देह है और न देह का अंग, वह विषयों की प्राप्ति से और भौतिक पदार्थों के संग से ज़ईफ़ (दुर्बल) और नाक़िस (दूषित) हो जाती है। और लाहौर के बिना अन्य सब स्थानों में यह नुक़्स (दूषण वा अवगुण) पाया जाता है, क्योंकि वहाँ सर्व साधारण के मेलजोल (संगति) से चित्त (स्वभाव) की मिट्टी ख़राब हो जाती है।

अब यदि कोई पूछे कि लाहौर में भी तो मेल जोल होता है, तो उसका उत्तर यह है कि लाहौर में जो मनुष्य मिलता है, उसके साथ ऊपरले (बाह्य) चित्त से एक बात की जाती है, जिसमें मन का ध्यान उसकी ओर नहीं जाता। मगर और जगहों में जो मनुष्य मिलता है, वहाँ बलात्कार उसकी ओर चित्तवृत्ति देनी पड़ती है, क्योंकि उससे जो मिलाप होता है, वह बहुत काल के पीछे प्राप्त हुआ होता है। साथ इसके लाहौर से अतिरिक्त अन्य जगहों में अपने बन्धु-जनों से मिलाप होता है, जिनकी ओर अधिकतम ध्यान देना ज़रूरी होता है। दूसरे, लाहौर में जो मेल-मिलाप होता है, वह बहुधा अपने सहपाठियों से होता है, जो अधिक विक्षेप नहीं डालता।

अब यदि यह प्रश्न किया जाये कि क्या और भी कोई लड़का (विद्यार्थी) है, जो छुट्टियों में लाहौर रहेगा ? तो सुनियेः—रुकुनदीन* जो पञ्जाब में इस बार प्रथम रहा था, बिलकुल एक दिन भी सारी छुट्टियों में अपने ग्राम नहीं जायगा। वह स्वयं कहता है कि वह दस बारह दिन अब वहाँ (अपने ग्राम) से हो आया है, मगर छुट्टियों में वहाँ कदापि नहीं जायगा, आप मालूम कर लें।

संसार में कोई मनुष्य होशियार अर्थात् विद्या में चतुर (निपुण) हो ही नहीं सकता, जब तक कि वह परिश्रम न करे। जो निपुण (चतुर)

* रुकुनदीन से अभिप्राय उस विद्यार्थी रुकुनदीन एम्० ए० से है कि जो तत्पश्चात् मिंटगुमरी के डिस्ट्रिक्ट जज के पद पर नियुक्त हुआ था।

हैं, वे सब बड़ा परिश्रम करते हैं, तब निपुण हैं। यदि हमें उनका परिश्रम ज्ञात न हो, तो वे गुप्त प्रकार से अवश्य करते होंगे, या वे पहले कर चुके होंगे। यह वार्ता बहुत तहक़ीक़ (अनुसंधान) की गयी है।

यह भी सच है कि छुट्टियों में कई विद्यार्थी घर जायेंगे, और फिर भी वे चतुर (निपुण) हैं। किन्तु उनके विषय में और बात (कारण) है। उनके घरों में या उन जगहों में जहाँ वे जायेंगे, ऐसे निमित्त (साधन) नहीं होते कि जो उनके चित्तों को अभ्यास से रोकें। वे विवाहे हुए नहीं होते, वा कोई और हेतु होता है, अथवा उनके मन बड़ी परिपक्वावस्था को प्राप्त हुए होते हैं, जो बाह्य पदार्थों की ओर नहीं जाते। पर मेरा मन पक्का नहीं, यह अति दुष्ट है।

ज़ेहन (मेधा) जिसको कहते हैं, वह शक्ति भी परिश्रम से बढ़ती है। पुनः यह कि यदि संभावना से कोई मनुष्य विना परिश्रम किये किसी परीक्षा में अच्छा रह भी जाये, तो उसको पढ़ने का आनंद कदापि नहीं आयेगा। वह मनुष्य बहुत बुरा है। वह उस मनुष्य के सदृश है जिसने आपको एक समय कहा था कि मुझे एक सीहर्फ़ी (कविता) बना दो और बीच में नाम मेरा रखना। अब चाहे उसने लोगों में यह मशहूर (प्रसिद्ध वा प्रख्यात) कर दिया कि सीहर्फ़ी मेरी है, मगर आप जानते हैं कि उस कविता में जो आनंद आपको आता होगा, उस मनुष्य को कदापि कदापि नहीं आ सकता, अथवा वह उस मनुष्य के सदृश है, जिसको और की मारी (कमाई हुई विभूति) मिल जाये। अब चाहे उसके पास धन तो है, पर वह उस धन से आनंद नहीं उठा सकेगा, तत्काल उसको (उजाड़) देगा। किंतु जिसने परिश्रम से धन कमाया है, वही लाभ उठायेगा।

आप मेरे पिता समान हैं, और पिता माता को ऐसा नहीं होना चाहिये जैसा कि वह गुजराँवाले का पाधा (पंडित), जिसके विषय में आपने एक समय सुनाया था कि उसने अपने बड़े होनहार (निपुणमति) बच्चे को

पाठशाला में पढ़ने से बन्द कर रक्खा था, केवल इसलिए कि उस को अपने पुत्र से प्रेम (मोह) बहुत अधिक था।

मगर आप तो बड़े ही अच्छे हैं, आपको तो इस विषय में उस पाधे (पंडित) की सी उपमा (तुलना) त्रिकाल में भी नहीं दी जा सकती। आपका और उसका उदाहरण तो प्रकाश और अन्धेरे के समान है। कदाचित् आपके चित्त में ये बातें नहीं बीती होंगी, जो मैंने ऊपर लिखी हैं। तभी आपने यह कहा कि लाहौर में मत रहना। अब दो वर्ष की बात है, अधिक काल भी नहीं। यदि अब परिश्रम न करूँ तो और कब समय आयेगा परिश्रम के लिये।

आप मुझे दो वर्ष की छुट्टी दो, फिर सारी आयु आपके संग हूँ। आपने यह समझ छोड़ना कि हमारा पुत्र परदेश (विलायत) गया हुआ है, जब आयेगा फिर हमारा है। और मेरा ख्याल जब इस (पढ़ने की) ओर अधिक हो, तो आपने मेरी बाह्य (अपेक्षाओं) ज़रूरतों की इस तरह खबर रखनी जिस तरह कि एक महाराज अपने योद्धाओं की रखता है, जिस समय कि योद्धा युद्ध-क्षेत्र में अपने महाराजा के लिए शत्रु से लड़ रहे हों। आप कभी कोई और ख़याल मेरे विषय में न लाना, मैं आपका दास हूँ।

मैं यह जानता हूँ कि परिश्रम अति उत्तम वस्तु है (पर मैं परिश्रम इस तरह पर नहीं करनेवाला कि रोगी हो जाऊँ), किंतु परिश्रम में लगने के लिए आपकी (सहायता की) आवश्यकता है। आप मुझे सहायता दें कि मैं पढ़ने में परिश्रम करूँ। आपकी सहायता विना परिश्रम भी नहीं हो सकता। हे परमात्मा! मेरा मन प्रयत्न (परिश्रम) में ज़्यादा लगे, मैं अत्यन्त परिश्रम करूँ, क्योंकि मेरे इरादों को पूरा करनेवाले आप हैं। (सातवीं या आठवीं छुट्टी के पश्चात् मैं गुजराँवाले आऊँगा, थोड़े ही काल के बाद फिर लाहौर में यदि आ जाऊँ, तो बड़ी अच्छी बात हो)

आप इस लम्बे लेख से रुष्ट न हो जाना। इससे वास्तव में अभि-

प्राय यही था कि किसी प्रकार से आप रुष्ट न हो जायें। रघुनाथशरण को यह कह देना कि यदि अच्छा (निपुण) होना चाहता है, तो यों करे कि पुस्तक को कण्ठस्थ कर ले। इस बात में इतने लाभ होते हैं कि मैं किसी प्रकार से वर्णन नहीं कर सकता। मुझे तेरह वर्ष के पश्चात् यह बात मालूम हुई है। यह बात अत्यन्त ही अच्छी है। मैं इसको विस्तारपूर्वक फिर कभी वर्णन करूँगा, जब गुजराँवाले आऊँगा। यह बात ऐसी है कि इससे केवल अपने स्कूल के शिक्षक (अध्यापक) के अतिरिक्त अन्य उस्तादों की बिलकुल ज़रूरत नहीं रहती।*

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२७०) २१ जुलाई, १८९०

हमारी छुट्टियों की अभी कुछ पक्की .खबर नहीं। शायद इस सनीचर (शनिवार) को ही हो जायँ, या शायद एक अगस्त को होवें। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२७१) २२ जुलाई, १८९०

आपका एक कृपापत्र, जो मेरे बड़े पत्र का उत्तर है, आज मिला, बड़ी ही .खुशी हुई। महाराजजी ! मैं आगे ही नहीं चाहता कि किसी और जगह वक़्त ज़ाया वा कालक्षेप (समय नष्ट) करूँ। हमें छुट्टियाँ लगभग इस शनिवार को हो जायेंगी। कुछ दिन के बाद मैं छुट्टियों में आऊँगा। महाराजजी ! अब मेरे पास केवल दो रुपये हैं। बाक़ी के रुपये उचित रीति से खर्च हो गये हैं, फ़ज़ूलख़र्ची से नहीं। इनमें से किराये का रुपया भी देना है। अब कितने रुपये मँगाऊँ ? जल्दी लिखें।

——:o:——

* इस पत्र के लिफ़ाफ़े पर बाहर यह नोट लिखा हैः—"श्रीमहाराजजी ! मुझे मालूम नहीं कि यह पत्र ज्यादा भारी है या नहीं। अगर आपको कुछ देना भी पड़े, तो भी यह पत्र ले लेना।

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(२७२)　　　२४ जुलाई, १८६०

आज आपका एक कार्ड और एक लिफ़ाफ़ा मिला, हाल पढ़कर और यह देखकर कि आप राज़ी हैं, अत्यंत दर्जे की ख़ुशी हुई। हमें इस शनिवार से छुट्टियाँ होंगी और मैं लगभग एक सप्ताह यहाँ रहकर गुजराँवाले आना चाहता हूँ। मैंने जो पत्र लिखा था, अपनी ओर से बड़ी एहतयात (सावधानी) करी थी कि कोई अनुचित बात न मुझसे लिखी जाय। मगर बड़ा ही अफ़सोस है मेरी अक़्ल (बुद्धि) पर कि फिर भी ग़लती (भूल) हो गई। आपने मुआफ़ रखना, क्योंकि मैंने जान बूझकर यह अपराध नहीं किया। अर्थात् स्पष्ट रीति से आपसे सलाह नहीं माँगी, यद्यपि वास्तव में तो मेरा पत्र लिखने से यही तात्पर्य था कि आप सलाह दें। आपने सर्व प्रकार से ख़ुश रहना अपने ग़ुलाम पर। महाराजजी! मेरा मन तो वास्तव में किसी भी और जगह जाना नहीं चाहता। परमेश्वर ऐसा ही करे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(२७३) १२ बजे दिन, २५ जुलाई, १८६०

चार पाँच दिन हुए हैं मैंने आपको लिखा था कि रुपये रघुनाथमल से अभी मँगाऊँ या ना। मगर आपका जवाब इस वक़्त तक कोई नहीं आया। और बाबाजी ने मुझसे कहा है कि हमने कल लाहौर से अपने गाँव चला जाना है। और मेरे पास जो दो रुपये थे (जैसा कि मैंने आपको पहले पत्र में लिखा था), उनमें से एक रुपया किराये का मैं बाबाजी को अभी दे देना वाजिब (उचित) समझता हूँ, क्योंकि फिर देने का अवसर मिलना मुश्किल (कठिन) है। बाक़ी एक रुपया जो रहा उसमें से महरे को भी कुछ हिसाब देना है। उधार अत्यंत तंगी से मिलता है। पिछली बार जब रुपये आने में देर हो गई थी, तो जो तंगी मुझे हुई थी, वह मैं ही जानता हूँ। इसलिए मैं मजबूर (विवश) हूँ कि रुपये मँगा लूँ, क्योंकि आपने बिलकुल कोई जवाब नहीं लिखा कि मँगाऊँ

या ना। आपने दास पर रुष्ट न होना, क्योंकि किसी बात के ख़्याल रहने में अत्यंत तकलीफ़ रहती है। इसलिए मैं अब रघुनाथमल को पत्र लिखता हूँ। साथ इसके हमारी किताबें भी आज कल में आनेवाली हैं। मैं फ़िज़ूलख़र्ची नहीं करता।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२७४) २६ जुलाई, १८६०

आज से लेकर हमें छुट्टियाँ हो गई हैं। मैं अभी कुछ दिन यहाँ रहना चाहता हूँ। आप दया रखा करें। यह पत्र लिख चुकने के बाद आपका एक पत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२७५) २८ जुलाई, १८६०

आप पत्र लिखते रहा करें। रघुनाथमल से रुपये अभी नहीं आये। जब मेरे काम का वह हिस्सा जो मैंने वहाँ आने से पहले करने का इरादा किया हुआ है ख़तम (समाप्त) हो जायगा, मैं आ जाऊँगा। मगर सारा काम इतना है कि अढ़ाई महीने के स्थान पर यदि वर्ष भर की छुट्टियाँ भी होतीं, तो बड़ी कठिनता से समाप्त होता। इसलिए जितनी जल्दी वहाँ* से चला आऊँ, उतना ही अच्छा है। आप ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। मैं ग़ुलाम हूँ। शायद एक सप्ताह से कुछ दिन ऊपर के बाद मैं गुजराँवाले आने के योग्य हो जाऊँगा। आप तक़सीरें (भूल) मुआफ़ करना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२७६) २६ जुलाई, १८६०

आपका एक पत्र कल मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। बंसीधर मुझे बिलकुल नहीं मिला। और न अभी रघुनाथमल से रुपये ही आये हैं।

—:o:—

* वहाँ से अभिप्राय तीर्थरामजी का हाँसी से है, क्योंकि कुछ काम समाप्त करने के बाद उनका विचार रघुनाथमल के पास हाँसी जाने का था, और वैसा ही उन्होंने आगे चलकर किया है।

संबोधन पूर्वोक्त, (२७७) ३० जुलाई, १८९०

आपका एक कार्ड कल रात को मिला था, जिसमें चला आने की बाबत लिखा हुआ था। सो मैं इस शनि, रवि या सोमवार (जिस वार आप लिखोगे) चला आऊँगा। अभी रघुनाथमल से रुपये नहीं आये। अधिक बातें वहाँ आकर करूँगा। मैं बड़ा नालायक़ (अयोग्य) हूँ। मेरे पर आप भी तरस नहीं खाते। इति।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२७८) ३१ जुलाई, १८९०

कल मुझे रघुनाथमल से तीस रुपये आ गये थे। मैंने पचीस उनमें से सुंदरमल कलईवाला जो बूढ़ा आदमी दुकानदार मेरे पास और बाबाजी के सामने रहा करता है, उसे रखने को दे दिये थे। और पाँच अपने पास रखे थे। मैं इस शनिवार आने का इरादा रखता हूँ। आपका पत्र आज और कल कोई नहीं मिला। आपने ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। इन दिनों यहाँ पर किंचित् भी कष्ट नहीं होता। मैं पौड़ियों (सीढ़ियों) में ममटी (गुमटी) के निकट बैठा करता हूँ। न वहाँ तबेले की गंदगी की बदबू आती है, न गरमी लगती है। शाम के वक़्त (सायंकाल) परेट में सैर करने (टहलने) जाया करता हूँ। बड़ी फ़रहत (प्रसन्नता) प्राप्त होती है। पढ़ने के समय पढ़ा अच्छा जाता है। खेलने के वक़्त खेला अच्छा जाता है। आप यह न ख़्याल कर लेना कि हमारे विरुद्ध चल रहा है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२७९) १ अगस्त, १८९०

आपका एक कार्ड आज मिला। कल मैं शाम (सायं) को आ जाने का संकल्प रखता हूँ। ज्यादा बातें आन कर करूँगा। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२८०) * १० अगस्त, १८९०

मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। हिंदुस्तानियों † ने अपना अस्बाब निकाल लिया है। जिस जन्दरे (ताले) की कुंजी टूटी हुई थी वह जन्दरा तोड़ दिया है। क्योंकि ऐसा किये विना कोठे पर चढ़ने की कोई सूरत (विधि) नहीं थी, और साथ इसके वह ताला पहले से ही ख़राब हुआ था। मेरा अस्बाब सब ठीक है। किताबें निकट काल में ही आनेवाली हैं। अभी नहीं आईं। इसलिए मैंने चौबीस रुपये सुंदरमल को दे दिये हैं और एक अपने पास रखा है, आप मेरी सब तक़सीरें (भूलें) मुआफ़ करनी। मैं आपका टहलुवा (चाकर) हूँ।

रघुनाथमलजी का एक पत्र यहाँ मिला है, जिसमें लिखा है—"हाँसी ज़रूर आना।" इत्यादि। मैंने वहाँ जाने का अभी कोई दिन मुक़र्रर (नियत) नहीं किया।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२८१) ११ अगस्त, १८९०

आज मैं भागभरी ‡ आपको रवाना करता हूँ इस कार्ड के साथ। आप रसीद से सूचित करना। मेरा इरादा इस शुक्रवार को यहाँ से रवाना होकर हाँसी जाने का है। आप इस इरादे की मंज़ूरी (स्वीकृति) या नामंज़ूरी (अस्वीकृति) का पत्र लिखना। जूती पाँव में कुछ रस गई (काट रही) है।

——:o:——

* इस पत्र से स्पष्ट हो रहा है कि तीर्थरामजी अपने लिखने के अनुसार शनिवार २ अगस्त को गुजरांवाले चले गये और वहाँ एक सप्ताह रहकर रविवार को वापिस लाहौर आ गये, जिससे इस बीच में सप्ताह भर उन्हें कोई पत्र न लिखने की जरूरत पड़ी और न कोई पत्र इस बीच का मिलता ही है।

† हिंदुस्तानी से अभिप्राय उन दिनों पंजाब में संयुक्त प्रांत के निवासी से लिया जाता था, यहाँ तीर्थरामजी का आशय भी ऐसा ही है।

‡ भागभरी पुस्तक का नाम था।

गुरु-आज्ञा पालन-निमित्त ईश्वर से प्रार्थना

संबोधन पूर्वोक्त, (२८२) १३ अगस्त, १८६०

आपका एक कृपापत्र लाला देवीदयाल * के हाथों का लिखा हुआ मिला। अत्यन्त ख़ुशी हुई। "हे परमात्मन्! मुझसे कभी कोई ऐसी बात न हो जो आपकी मरज़ी (इच्छा) के विरुद्ध हो।" हे पिताजी! मैं अपनी ओर से तो बड़ा ही चाहता हूँ कि सदा ही आपकी मरज़ी के अनुसार चलूँ, मगर यदि कोई चूक हो जाय तो आप क्षमा करनी और उसकी सूचना देनी, ताकि पुनः उससे और भी बचने की कोशिश करूँ। लाला देवीदयालजी को सादर नमस्कार। मैं उनका बड़ा कृतज्ञ हूँ। नारायणसिंह, रघुनाथशरण, अनन्तराम को नमस्कार। हाँसी का पता यह है—"मुक़ाम हाँसी, ज़िला हिसार, पास रघुनाथमल डॉक्टर के पहुँचकर गुसाईं तीर्थराम को मिले।

आज रघुनाथमल का पत्र आया है, जिसमें लिखा है कि जब आओ सायंकाल के चार बजे की गाड़ी में सवार होना अच्छा होगा, क्योंकि इस तरह रास्ते में अधिक काल तक ठहरना नहीं पड़ता, और दूसरे दिन को प्रातः को रेल हाँसी पहुँच जाती है। और अगर किसी और वक़्त की गाड़ी में सवार होया जाय तो रास्ते में फ़ीरोज़पुर दिन के छः घंटे ठहरना पड़ता है, और रात भर फ़ीरोज़पुर से हाँसी की रेल में काटनी पड़ती है। जूती अब मुझे कष्ट नहीं देती। तेल लगाया था। संतोषसुरतरु मैं आप हाँसी से आनकर भेज दूँगा। या अगर मेरी अँग्रेज़ी की किताबें मुझे कल मिल गईं तो वह भी मैं आपको कल ही भेज दूँगा। अगर आपको जल्दी है तो मुझे लिख दो ताकि वहाँ जाने से पहले ही आपको भेज

* लाला देवीदयालजी तीर्थरामजी के गुरुभाई थे, अर्थात् वह भी भगत धन्नाराम जी का सत्संग किया करते थे।

दूँ। सो अब मेरा इरादा हाँसी की बाबत यह है कि शुक्रवार सायं चार बजे की गाड़ी में रवाना हो जाऊँ। अगर इसमें कोई नावाजिब (अनुचित) बात हो तो मुझे कल ही लिख दो और मैं न जाऊँगा। आपने मेरी भूलें मुआफ़ करनी। आपका ग़ुलाम हूँ।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२८३) १५ अगस्त, १८६०

आपका एक पत्र कल मिला था। मेरी किताबें अभी नहीं आईं। आपकी संतोषसुरतरु के लिए मेहरचंद के पास गया था। उसके पास बम्बई के छापे की है, जिसका दाम वह आठ आने ।।) माँगता है। इसलिये मैंने अभी नहीं ली। क्या हाँसी से आकर भेज दूँ? गाड़ी दो बजे जाती है। मैंने स्टेशन के रास्ते में यह पत्र लिखा है। आप दया रखा करें। मैं आपका ग़ुलाम हूँ।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२८४) हाँसी, १६ अगस्त, १८६०

आज प्रातः आठ बजे मैं यहाँ पहुँच गया हूँ, आराम से। आप दया रखा करें, मैं कोई हफ्ते (सप्ताह) के लिये यहाँ रुकूँगा। पता यह है—"मुक़ाम हाँसी, ज़िला हिसार, बाबू रघुनाथमल साहब डाक्टर द्वारा गुसाईं तीर्थराम को मिले।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२८५) हाँसी, १८ अगस्त, १८६०

मेरा चित्त तो जल्दी आने को चाहता है, आगे देखें। आपका एक पत्र आज मंगल को मिला। बड़ी ख़ुशी हुई।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (२८६) २३ अगस्त, १८६०

मैं आज प्रातः की गाड़ी से लाहौर पहुँच गया था, सर्व प्रकार से कुशलपूर्वक। मेरी किताबें यहाँ सब ठीक हैं। महाराजजी! जब मैं गया था तो सात ७) रु० सुंदरमल से ले गया था और बाक़ी १७) रु० उसके पास रहने दिये थे। किराया इत्यादि पर मेरे पाँच रुपये ख़र्च हुए, और आती बार रघुनाथमलजी ने १०) रु० नक़द, एक पोशाक कपड़ों की और दस सेर माँझा घी (भैंस का घी) मुझे दिया है। आप किसी दिन अब यहाँ दर्शन देने आ जाना। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२८७) १० अक्तूबर, १८६०

मैं आज राज़ी ख़ुशी यहाँ पहुँच गया हूँ। मेरा अस्बाब सब ठीक है। मैं अब आपकी दया माँगता हूँ कि सब काम मझसे यथार्थ तौर पर हों, और कोई विघ्न न आ जाय।

आज लक्ष्मणदास भी मिला। बावा अब राज़ी है। मकान सारा मेरे तअ़ल्लुक़ (सिपुर्द) हो गया है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२८८) १२ अक्तूबर, १८६०

आज मैंने प्रातः को अपने घर मूँग की धोतवीं (धोई) दाल बनाई थी। मगर पानी बहुत पड़ गया था, और दिन को अचारी नीबू भी लक्ष्मणदास लाया था। मगर वह नीबू अभी बहुत नया था। मैंने केवल वह दाल और थोड़ा सा नीबू सहित दाल के पानी के खाया, तो मेरा जी (चित्त) मतलाने लगा और मुझे एक बार क़ै भी आ गई। पाख़ाना मुझे ख़ूब आ जाता रहा है। आज मुझे ज़रा सा तप (ज्वर) और बड़ी कम-हिम्मती (उत्साहहीनता) रही। मगर आपने कोई फ़िक्र न करना।

मैं अपना हाल लिखता रहूँगा, इति। पुनः सादर प्रणाम। लक्ष्मणदास कल प्रतापसिंह के पास जायगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२८६) १७ अक्तूबर, १८६०

कल तो हमारा कालिज थोड़ा चिर (काल) ही खुला रहा, मगर आज बाक़ायदा (नियमपूर्वक) पढ़ाई हुई। कल ग्यारह बजे जब मैं कालिज से आया तो मुझे बड़ा तप (ज्वर) चढ़ गया और चार बजे तक रहा। आज मैं यद्यपि बहुत ही नियमपूर्वक चला, फिर भी कालिज में एक बजे तप (ज्वर) चढ़ गया और ढ़ाई बजे तक मैं बोर्डिंग में पड़ा रहा। मेरे ऊपर पाँच लिहाफ़ (रज़ाई) थे। फिर भी लर्ज़ा (कपकपी) और शीत (सर्दी) बन्द न हुई। आख़िर (अन्त में) ढाई बजे बोर्डिंग से चला। और चार बजे गिरते-पड़ते मकान पर आ पहुँचा। अब शाम (सायं) को आराम है। आपने आने का कष्ट न उठाना। मेरा तो यही हाल है। आज लक्ष्मणदास यहाँ आया था। बूटामल को आपने ज़रूर भेज देना।

——:o:——

अपनी बीमारी के कारण स्वयं जानने की शक्ति

संबोधन पूर्वोक्त, (२६०) प्रातःकाल ४ बजे, १६ अक्तूबर, १८६०

कल एक बजे से पहले कालिज में मुझे बुख़ार (ज्वर) शुरू हो गया था, उस वक़्त मैं घर चला आया। बड़ी ही कठिनता से लुहारी दरवाज़े तक पहुँचा। वहाँ से इक्का पर चढ़कर घर आया। यहाँ पाँच-छे बार क़ै आई और एक बार पाख़ाना। मगर कमहिम्मती (शिथिलता) बहुत ही बढ़ गई। आख़िर (अंत में) नींद पड़ गई। और रात के बारह बजे जाकर होश आया। तब का अभी तक जाग रहा हूँ। अब तबीयत (स्वास्थ्य) अच्छी है। यह तीन दिन कालिज में जाने से जो मुझे तप

(ज्वर) चढ़ा तो उसका कारण मैं यह समझता हूँ कि वहाँ बारह बजे के क़रीब मुझे पाख़ाना और क़ै (वमन) आनेवाली मालूम होती थी, मगर मैं वहाँ पढ़ाई में मशग़ूल (प्रवृत्त) रहा और इनकी फ़िक्र (चिंता) न की। ख़ैर, अब मैं ऐसा नहीं करूँगा। और मेरा ऊपर कहा कारण अगर सच है तो भविष्य में मुझे सेहत (नीरोगता) रहेगी। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। आप मेरी तक़सीर (भूल) मुआफ़ करनी। आप दीवाली के लिये कब आयेंगे ?

अब एक बड़ी बात लिखता हूँ कि हमारे रियाज़ी (गणित) के प्रोफ़ेसर ने कहा है कि दस-बारह दिन को मैं दो नई किताबें शुरू कराऊँगा, तब तक तुम किताबों को मुहय्या कर लो अर्थात् मँगवा लो। मगर बड़े अफ़सोस की बात है कि वे किताबें मेरे पास नहीं हैं और उनका दाम भी बहुत बड़ा है अर्थात् लगभग सत्रह रुपये। सो अब क्या रघुनाथमल को लिख दूँ कि रुपये भेज दे। क्योंकि उसने कहा हुआ है। या कोई और सबील (रीति या विधि) करनी चाहिये। जवाब ज़रूर व वापसी डाक भेजना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६१)* दो बजे दिन, १६ अक्तूबर, १८६०

अब आपका कार्ड मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। अभी तक तो मैं अच्छा हूँ। अगर आज सारा दिन और कल का दिन भी अच्छा रहा, तो मैं समझूँगा कि अब मैं राज़ी (नीरोग) हो गया, और अगर मुझे

* इस पत्र के बाद एक मास और दस दिन तक अर्थात् २० अक्तूबर १८६० से २८ नवंबर १८६० तक कोई पत्र तीर्थरामजी का नहीं मिला। १२ अक्तूबर से १६ अक्तूबर तक के पत्रोंमें तीर्थरामजी ने अपनी बीमारी का समाचार अपने गुरूजी को बार बार दिया है और १६ अक्तूबर के पत्र में उन्होंने इसी बीमारी के कारण अपने गुरू भगत धन्नारामजी को विनय पूर्वक बुलाया भी है और २६ नवंबर १८६० के पत्र से विदित होता है कि

आज बुख़ार (ज्वर) चढ़ गया तो मैं आपको लिख दूँगा और आपने आ जाना। साथ इसके अगर कल को भी (ज्वर) चढ़ गया तो आपने आ जाना। प्रथम तो आशा है कि बाग़मल आज कल और परसों में मुराली-वाले ज़रूर आ जायगा यद्यपि आपको न मिले। सरदार साहबसिंह का क्या हाल है? आप मेरे ऊपर कृपादृष्टि रखा करें।

क्या सारे रुपयों की बाबत रघुनाथमल को लिख दूँ या दस १०) रुपये उससे माँगूँ और बाक़ी के घर से? या किसी और तरह करना चाहिये? मगर महाराजजी! घर से और सुसराल से मुझे आशा बहुत कम है। जवाब जल्दी लिखना। मैंने आपका कार्ड आने से पहले ही आपके लिखने के अनुसार अँग्रेज़ी दवाई आज और कल सायं को नहीं पी थी और भविष्य में विना आपके मशविरा (सलाह) के न पीयूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२३२) २९ नवंबर, १८९०

मैं और भाई* साहब कल राज़ी ख़ुशी यहाँ पहुँच गये थे। किताबें ले ली हैं। सत्रह रुपये से दो आना अधिक लगे हैं। आज कालिज में छुट्टी थी पंजाब-युनिवर्सिटी के जलसे कान्वोकेशन (Convocation) के कारण। मेरा असबाब सब ठीक है। भाइ साहब रोटी पका देता है अच्छी तरह से। मैं राज़ी हूँ। आप पत्र लिखते रहा करो।

——:o:——

तीर्थरामजी के साथ उनके बड़े भाइ (गुसाईं गुरुदास) जी भी आये थे। जिससे स्पष्ट होता है कि तीर्थरामजी ज्वर के कारण इतने काल तक अपने गुरूजी के पास इलाज के लिए गुजराँवाला में ही रहे होंगे, और इसी निमित्त अपने साथ अपने बड़े भाईको भी लाये होंगे। यही कारण प्रतीत होता है कि इतने कालतक उनका कोई पत्र नहीं मिलता।

* भाई साहब से अभिप्राय अपने सहोदर बड़े भाई गुसाईं गुरुदासजी से है क्योंकि इनसे इतर और कोई सहोदर भाई उनका नहीं था।

फ़ीस की मुआफ़ी निमित्त चिन्ता

संबोधन पूर्वोक्त, (२९३) १ दिसम्बर, १८९०

आज मैं कालिज गया था, वहाँ और तो सब तरह से ठीक रहा, मगर मेरी फ़ीस के बिलकुल मुआफ़ होने में कुछ शक (संदेह) पड़ गया है, क्योंकि जौन सा प्रोफ़ेसर मेरी आधी फ़ीस अपनी जेब से देता था, अब उसने वह बन्द कर दी है। और वे (कालिज के क्लार्क इत्यादि) कहते हैं कि "हमें केवल आधी फ़ीस मुआफ़ करने का अधिकार है। और उस प्रोफ़ेसर* ने अपने पास से आधी फ़ीस देना इसलिये बन्द कर दिया है कि वह कहता है कि अब मेरे पास कोई काम ऐसा नहीं है जो तुझसे कालिज में करवा सकूँ, और मुफ़्त में मैं देता नहीं।" पर हाँ, यदि कोई काम मेरे सम्बन्ध निकल पड़ा, तो मेरी फ़ीस सारी मुआफ़ रहेगी।

—:o:—

गुरुकृपा पर पूर्ण विश्वास वा आशा

संबोधन पूर्वोक्त, (२९४) ३ दिसंबर, १८९०

कल सायं को आपका कृपापत्र मिला था। बड़ी खुशी हुई। अभी मेरी फ़ीस की बाबत कुछ पता नहीं मिला, क्योंकि बड़ा साहब बीमार पड़ गया है। मुझे आप पर तो आशा आगे ही है, चाहे आप यहीं मेरी फ़ीस बिलकुल मुआफ़ रहने दें और चाहे कोई और सबील (उपाय वा विधि) रुपए की मेरे लिए बना दें। आप कृपादृष्टि रखा करें। जिस तरह

* यहाँ प्रोफ़ेसर से अभिप्राय मिस्टर गिल्बर्टसन (Gilbertson) एम० ए० है, जो उन दिनों लाहौर मिशन कालिज में गणितशास्त्र के प्रोफ़ेसर थे, और इस विषय में तीर्थरामजी से बहुत काम लिया करते थे। सन् १९१२ में यह साहब देहली के गवर्नमेंट हाई स्कूल में हेडमास्टर (मुख्याध्यापक) थे।

आप उचित समझते हैं बेशक कर दें। भाई साहब का मत्था टेकना। जब आपका जी (चित्त) चाहे आ जाना। और अगर रुपए की तंगी हो तो जिस तरह उचित समझें, करना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६५) ५ दिसंबर, १८६०

अभी मेरी फ़ीस की बाबत कुछ पता नहीं लगा। आपने वहाँ का हाल बराबर लिखते रहना। हमारा हफ़्तावार इम्तहान होता है। भाई साहब का मत्था टेकना। जब आप यहाँ आयें मेरे कपड़े ले आने, एक पगड़ी, चोग़ा, पाजामा ; नहीं तो अगर हो सका तो पहले किसी तरह भेज देने।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६६) १० दिसंबर, १८६०

आज हमारा बड़ा साहब राज़ी (स्वस्थ) हुआ है। अभी फ़ीस का रौला है। अयोध्यादास आज मिला था। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६७) १२ दिसंबर, १८६०

हमें कोई नौ या दस दिन को छुट्टियाँ होंगी। आप कब आओगे? और फिर अमृतसर जाने का क्या इरादा है। आप दया रखा करें। चौथे या पाँचवें दिन से हमारा सब चीज़ों का इम्तहान शुरू होगा। फ़ीस की बाबत अभी कुछ पता नहीं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (२६८) १३ दिसंबर, १८६०

आपका कृपापत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। मैं कल रविवार उन संतों के पास जाने का संकल्प रखता हूँ। और आपके पत्र के अनुसार ही अमल (बर्ताव) करूँगा। आप दया रखा करें। और हाल लिखते रहा

करें। अभी फ़ीस का कुछ फ़ैसला नहीं हुआ। इस बुद्धवार से लेकर हमारा इम्तहान शुरू होगा।

——:o:——

अन्य महात्माओं के दर्शन

संबोधन पूर्वोक्त,		(२९९)		१५ दिसंबर, १८९०

कल मैं और भाई साहब और अयोध्यादास उन महात्माओं* के दर्शन को छज्जू भगत के चुबारे गये थे। दर्शन हुए। गीता का सोलहवाँ अध्याय थोड़ा सा उनकी वाणी से सुना। आपका मत्था टेकना कहा और बात छेड़ी; बड़े खुश हुए। पर वे कहते हैं कि हम जाड़ा (शीतकाल) लाहौर ही में काटने का संकल्प रखते हैं। और फिर जब मौज आयगी गुजराँवाले में आयेंगे। अब चार बजे कालिज से आकर पत्र लिखा है। हमारा परसों गणित का और अतरसों (तीसरे दिन) अँगरेज़ी का इम्तहान है। मेरी तापतिल्ली दूर नहीं हुई, बल्कि बढ़ गयी है। आप दया रखा करें। हमें शायद इस शुक्रवार ही से छुट्टियाँ हो जायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(३००)		१७ दिसंबर, १८९०

शायद कल मैं आपके पास आ जाऊँ। अगर न हो सका तो न आऊँगा। कल हमारा इम्तहान ख़तम हो जाना है और छुट्टियाँ भी हो जानी हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(३०१)	७ बजे रात, ३१ दिसंबर, १८९०

आज मैं यहाँ पहुँच गया हूँ। सब कुछ ठीक है। परसों कालिज जाऊँगा। बावाजी मिले हैं। अब रोटी खा कर डेरे में यह पत्र लिखा है।

——:o:——

* यह महात्मा स्वयंप्रकाश उदासी साधु थे, यह स्वभाव के बड़े स्वतंत्र (खुलासे) थे। भगतजी ने तीर्थरामजी को उनके दर्शन के लिये सूचना दी थी, जिस दर्शन का प्रभाव इस पत्र में तीर्थरामजी ने प्रकट किया है।

संबोधन पूर्वोक्त, (३०२) *२६ फ़रवरी, १८९०

मैं आपके चरणों का दास हूँ। आप अब पत्र में सदा देर क्यों करते हैं। हमारे कालिज के इम्तहान इस शनिवार अर्थात् पहली मार्च को ख़तम हो जायेंगे। अगर आपको तकलीफ़ (कष्ट) न हो, तो हमारे गाँव में आप यह संदेसा भेज देना कि अब तीर्थराम के पास ख़र्च बिलकुल नहीं है। और वज़ीफ़ा भी इस महीने नहीं मिलेगा।

——:o:——

सन् १८९१ ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े सत्रह वर्ष के लगभग थी)

परीक्षा में फ़ारसी भाषा के मौक़ूफ़ होने पर हर्ष

संबोधन पूर्वोक्त, (३०३) २ जनवरी, १८९१

आज मैं कालिज गया था, फ़ीस की बाबत कुछ नहीं सुना, हमारी फ़ारसी मौक़ूफ़ हो गयी है। यह परमेश्वर ने बड़ी दया की है। आप अपने हाल से कृपया सूचना देते रहा करें। मैं राज़ी (प्रसन्न) हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३०४) ४ जनवरी, १८९१

आपका पत्र कोई नहीं मिला। फ़ीस का कुछ नहीं सुना। मासड़ (मौसा) ने तिल्ली की गोलियाँ और भेजी हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३०५) ६ जनवरी, १८९१

आज वह फ़ौलाद (लोहा) का सत्त जो आपने ले दिया हुआ था, ख़तम हो गया। तिल्ली अभी ज़ायल (दूर) नहीं हुई। अब मासड़ (मौसा)

* यह पत्र पूर्व पृष्ठ ६० पर पत्र-संख्या १९७ से पहले दिया जाना चाहिये था, पर वहाँ देना भूल गये थे इसलिए इसे यहाँ सन् १८९० के अंत में दे दिया है।

की गोलियाँ बर्ता करूँगा। परसों रात को सुंदरमल की दुकान की छत को चोरों ने फाड़ा था। कुछ थोड़ा ही नुक़सान हुआ है। अभी फ़ीस का फ़ैसला नहीं हुआ। आज मेरे घुटने में ज़रा ज़रा दर्द हो रहा है। आपका पत्र कोई नहीं मिला। आप लिखते रहा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३०६) ८ जनवरी, १८६१

मैं इस वक़्त राज़ी हूँ। आपने कोई अपना पत्र नहीं लिखा, अब ज़रूर लिखो। आपके न लिखने की क्या वजह (कारण) है ? ज़रूर दया करते रहा करें। आपने कब आना है ? और भाई साहब ने कब ?

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३०७) ३ बजे रात, १५ जनवरी, १८६१

मुझे अब के पत्र लिखने में देर हो गई है। आप मुआफ़ रखना। कल सरदार लैहनासिंह और एक और सामने लाला भगतराम को मिलने आये थे। मगर वह वहाँ नहीं था। फिर मेरे मकान पर थोड़ा चिर (काल) बैठे रहे थे। देवीदयाल यहीं है। भैंस की तलाश में इधर उधर गाँवों में फिरता है। आपका पत्र नहीं आया।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३०८) ८ बजे प्रातः, १७ जनवरी, १८६१

यहाँ बहुत बड़ी वर्षा हुई है। अब ज़रा आकाश साफ़ नज़र आता है। आपका पत्र कोई नहीं मिला। वहाँ क्या हाल है ?

——:०:——

फ़ीस की मुआफ़ी पर प्रिन्सिपल साहब का वचन

संबोधन पूर्वोक्त, (३०६) आठ बजे रात, १७ जनवरी, १८६१

आज मुझे हमारे कालिज के डॉक्टर साहब मिले थे। वह कहते हैं कि हमने प्रिन्सिपल साहब से कहा था और प्रिन्सिपल साहब यह कहते

हैं कि "अगर तीर्थराम अपनी श्रेणी में होशियार रहे और सब तरह से अच्छा बर्ताव करे अर्थात् कभी अनुपस्थित न हो, या कोई और बात ऐसी न करे, तो हम तीर्थराम से फ़ीस न लेंगे, मगर एक शर्त और यह है कि मुझे (तीर्थराम को) उनका काम भी करना पड़ेगा। उदाहरणार्थ, इस सप्ताह में कुछ लेक्चर लिखने पड़ेंगे।" आप दयादृष्टि रखा करें। आपका पत्र अभी तक कोई नहीं आया, सारा हाल लिखो। मगर किसी आदमी के हाथ पैग़ाम (संदेशा) न भेजना। जब भाई या बेबे (माता जी) आप गुजराँवाले में आयें, तो कहना। जब भाई साहब आप गुजराँवाले आयें तो आप मेरी फ़ीस की बाबत मेरे भाई को कह देना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३१०) १६ जनवरी, १८६१

आजकल यहाँ बड़ी सर्दी पड़ती है। आज आपका एक पत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। आप हाल लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३११) २२ जनवरी, १८६१

आपका पत्र कल मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। आप पत्र लिखते रहा करें। इस हफ़्ते (शनिवार) हमारा रियाज़ी (गणित) का इम्तहान है। मेरा दिमाग़ बड़ा कमज़ोर है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३१२) २३ जनवरी, १८६१

शायद मुझे इस पत्र लिखने में देर हो गई है। आप दया रखा करें। पत्र भेजते रहा करें। मेरी किसी बात पर ख़फ़ा (रुष्ट) न हो जाना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३१३) २५ जनवरी, १८६१

रघुनाथशरण कल शनिवार की सायं को यहाँ आ गया था। अब

यहीं है। आपका पत्र आने में क्यों देर हुई है ? आप सविस्तर हाल लिखें। आप गुलाम पर दयादृष्टि रखा करें।

अब एक किताब अँग्रेज़ी की और दो रियाज़ी (गणित) की ख़रीदनी पड़नी मालूम होती हैं। अगर उनके बिना गुज़ारह हो सका तो कर लूँगा, नहीं तो जैसा होगा फिर सूचना दूँगा। मुझे इस बात का बड़ा फ़िक्र (सोच) है कि आपका पत्र कोई नहीं आया।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त (३१४) २७ जनवरी, १८६१

आज रघुनाथशरण इम्तहान दे आया है। आपका पत्र आज मिला है। बड़ी ख़ुशी हुई। रघुनाथशरण को आपका पत्र दिखा दिया है, अगर पास हो गया तो रुपये ले आयगा, नतीजा इस वीरवार (बृहस्पतिवार) को निकल जाना है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३१५) २६ जनवरी, १८६१

रघुनाथशरण डिक्टेशन में फ़ेल (अनुत्तीर्ण) हो गया है। अब आपकी जिस तरह आज्ञा हो उस तरह करे। आपके पत्र में देर क्यों हो जाती है ? आप सारा हाल लिखें। मेरे पर दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३१६) ३१ जनवरी, १८६१

आपका पत्र आने में देर क्यों हुई है ? मैंने एक पिछले पत्र में जो आपको लिखा था कि मुझे तीन किताबों की ज़रूरत पड़ेगी, सो उनमें से दो के बिना तो मेरा गुज़ारह हो सकता है, मगर एक तो थोड़े दिनों को हमें जमाअत (श्रेणी) में शुरू कराई जायगी और वह ज़रूर लेनी पड़ती है। वह यहाँ मिल सकती है और उसका दाम चार रुपये तेरह आने ४।।।-) है। दो रुपये मेरे पास हैं। मेरा इरादा अब यों है कि

बिलफ़ेल (अभी तो) बाक़ी का दाम गोविंदसहाय गुसाईं से लेकर किताब ले लूँ और ख़र्च के लिए भी कुछ उसी से ले लूँ। चाचाजी का पत्र कोई नहीं आया। क्या मासड़ (मौसा) जी को चार पाँच रुपये के लिए लिख दूँ या ना? जवाब ज़रूरी।

——:o:——

संसार के लोग कभी किसी के नहीं होते।

संबोधन पूर्वोक्त, (३१७) ८ बजे रात, ३१ जनवरी, १८६१

आज आपका एक पत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। जब भाई * साहब गुजराँवाले में आयें, आपने ज़रूर ज़रूर रोक देना कि किसी बुरे काम में दख़ल न दें, और न अपने संबंधी बढ़ाने का यत्न करें, नहीं तो बहुत पछताना पड़ेगा। रीछ को पकड़ लेना सुगम है, मगर उससे छूटना कठिन है। संसार के लोग कभी किसी के नहीं होते, केवल अपनी ग़रज़ (स्वार्थ) ही दृष्टि में रखते हैं। सुन्दर-सुन्दर दाना देख कर जाल में न फँस जाना। और भाई साहब को कहना कि मुझे कोई पत्र क्यों नहीं लिखा? आजकल अच्छा मौसम आता जाता है। सर्दी कम पड़ती है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३१८) २ फ़रवरी, १८६१

आज आपका पत्र मिला, जो रघुनाथशरण की तरफ़ लिखा हुआ था और जिसमें उसे यहाँ रहने की इजाज़त दी हुई थी। परसों रात हमारे बाज़ार एक चोर पकड़ा गया था। भाई साहब का हाल लिखना। मेरी तिल्ली दूर नहीं हुई। आप मेरी ज़रूर दवा करें। कहीं ऐसा न हो कि बहुत ही तंग करने लग पड़े। और अब मैं कोई इलाज (दवा) तिल्ली का नहीं करता, क्योंकि मासड़ (मौसा) जी की गोलियाँ ख़तम हो गई हुई

* भाईजी से तात्पर्य तीर्थरामजी का अपने बड़े भ्राता गोस्वामी गुरुदासजी से है, जो शायद अब परलोक-निवासी हैं।

हैं। आपने मेरे पर किसी बात से ख़फ़ा न होना, क्योंकि औलाद का नाज़ वालदैन (पिता-माता) पर ही होता है, आज मैंने वह किताब चार रुपये तेरह आने से ख़रीद ली है। किताब निःसंदेह बड़ी उमदा (उत्तम) है। रोटी क्या रघुनाथशरण डेरे में पका लिया करे मेरी भी और अपनी भी या कि हम दोनों तनूर से ही खाया करें ? जिस तरह आप लिखें, उसी तरह किया जायगा। आपने कोई पत्र मेरी तरफ़ अच्छी तरह से नहीं लिखा, क्या कारण है ? आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३१६)　　　　४ फ़रवरी, १८६१

आज आपका पत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। आज मासड़ (मौसा) जी का पत्र भी आया था। उन्होंने एक डिक्शनरी (कोष) की ज़रूरत जतलाई है, जो सवा रुपये १।) को आ सकती है। मेरा इरादा है कि इस आदित्यवार को मैं उन्हें कोष लेकर भेज दूँ। सवा रुपया किसी से उधार ले लूँ। और इस अवसर पर मैं उनसे कुछ माँगना भी उचित नहीं समझता।

हमारे कालिज के डॉक्टर साहब ने मुझे इस सप्ताह एक लेक्चर नक़ल करने को दिया है। शनिवार को हमारा गणित का इम्तहान है। दूसरे शनिवार को अँग्रेज़ी का। आप मुझे पत्र लिखते रहा करें और दया रखा करें। मैं आपका दास हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३२०)　　　　६ फ़रवरी, १८६१

आज भाई साहब का एक पत्र मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। कल जवाब लिखूँगा। ख़र्च की बड़ी तंगी है। रोटी अभी डेरे में नहीं पकाते, क्योंकि ख़र्च दोनों के पास नहीं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३२१) ७ फ़रवरी, १८६१

आपके रुपये मिल गये। दो रुपये मैंने लिये हैं। जब चाचाजी से आयेंगे मैं रघुनाथशरण को दे दूँगा। आप दया रखा करें। आप यहाँ कब आयेंगे? सारा हाल लिखो। आज मैंने मासड़ (मौसा) जी को भेजने के लिए किताब ले ली है। एक रुपये पाँच आने को।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३२२) १० फ़रवरी, १८६१

कल मैंने मासड़ (मौसा) जी को किताब भेज दी थी। कल से लेकर शायद हम रोटी डेरे में खाया करेंगे। भाई साहब अभी नहीं आये, न चाचाजी का कोई पैग़ाम (संदेसा) आया है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३२३) ११ फ़रवरी, १८६१

परसों वसंत पंचमी है, और मेरे पास सखिया सभा के मकान में सनातन-धर्मवालों का एक बहुत बड़ा जल्सा होना है, और एक स्कूल क़ायम होना है। मौक़ा (अवसर) बड़ा अच्छा है। आप कल आ जायें, तो बड़ी ख़ुशी की बात हो। हमारा इस हफ़्ते (शनिवार) अँग्रेज़ी का इम्तहान है। आज से हमने डेरे में रोटी पकानी शुरू कर दी है। भाई साहब नहीं आये।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३२४) १४ फ़रवरी, १८६१

कल मुझसे पत्र नहीं लिखा गया। मुआफ़ रखना। आज भाई साहब यहाँ आ गये हैं, आप नहीं आये। दिमाग़ और हाफ़िज़ा (स्मरण-शक्ति) की ताक़त के लिए कौन सी दवाई अच्छी है?

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३२५) १७ फ़रवरी, १८६१

आज प्रातः चार बजे भाई साहब यहाँ पहुँच गये थे । मासड़ (मौसा) जी को सूचना दे दी है । आप अपना हाल लिखते रहा करें ।

——:o:——

प्रतिदिन व्यायामार्थ प्रिन्सिपल साहब का विद्यार्थी नियत करना

संबोधन पूर्वोक्त, (३२६) १६ फ़रवरी, १८६१

आज मिडल का रिज़ल्ट (नतीजा) छपकर लग गया है । लद्धामल और रघुनाथशरण दोनो पास हैं । रघुनाथशरण के ५१४ नंबर हैं और अपने स्कूल में तीसरा नंबर रहा है । वज़ीफ़ा (छात्रवृत्ति) मिशन स्कूल के लड़के लेंगे । आज मेरे दिल में एक ख़्याल आया है कि अगर रघुनाथशरण मेडिकल स्कूल में दाख़िल हो जाय तो क्या हर्ज है । अगर आपकी राय (सम्मति) में भी यही बात अच्छी हो तो लिखो, नहीं तो वह तार के महकमा में जायेगा । आज मासड़ (मौसा) जी ने मुझे ताप-तिल्ली (प्लीहा का रोग) की और गोलियाँ भेजी हैं । दो तीन दिनों से प्रिन्सिपल साहब ने मुझ पर एक विद्यार्थी (रुकनदीन) नियत किया है कि वह मुझे प्रतिदिन छुट्टी के पश्चात् आधा घंटा तक व्यायाम किये विना घर न आने दिया करे, क्योंकि मैं इन दिनों बहुत ही दुर्बल और रोगी सा हो चला था ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३२७) २१ फ़रवरी, १८६१

कल भाई साहब यहाँ से चले जायेंगे । आपका पत्र आने में देर क्यों हो गई है । आप दया रखा करें । आप यहाँ कब आयेंगे ?

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३२८) २४ फ़रवरी, १८६१

आज रघुनाथशरण तार का इम्तहान दे आया है। परसों नतीजा निकलेगा। आप दया रखा करें। आप कब आयेंगे ?

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३२६) २५ फ़रवरी, १८६१

आज आपका १) रु० मिल गया है, बड़ी ख़ुशी हुई। आप नहीं आये। लद्धामल अब मिला है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३३०) २७ फ़रवरी, १८६१

रघुनाथशरण तार के इम्तहान में पास नहीं हुआ। आपका एक पत्र कल मिला था। रुपया पहुँच गया है। आप कब आयेंगे ? जब आप आयेंगे, तब रघुनाथशरण को जिस तरह कहोगे, करेगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३३१) २ मार्च, १८६१

आज आपका कृपापत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। रघुनाथशरण अभी इसी जगह रहना चाहता है। कहता है कि यहाँ रहने में पढ़ने इत्यादि का लाभ है। आप अब जल्दी आ जायें तो अच्छा है। मुझे आजकल ज़रूरत तो है, मगर मैं गोविंदसहाय या अयोध्यादास से ले लूँगा। आपको कष्ट मैं नहीं देना चाहता। आप अपना कृपापत्र जल्दी लिखते रहा करें और दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३३२) ५ मार्च, १८६१

आज लक्ष्मणदास मिला है। एक रुपया भी उसने दिया है, बड़ी ख़ुशी हुई।। रुपये में से आठ आने मैंने रखे हैं और आठ आने रघुनाथशरण ने। आप दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३३३) ७ मार्च, १८६१

अगले हफ़्ते (शनिवार) हमारा गणित का इम्तहान है। रघुनाथशरण का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३४) ८ मार्च, १८६१

कल एक बंगाली ने बिल्लून में चढ़कर ऊपर आकाश में जाना है। आप अगर हो सके तो आ जायें, देख लें। बड़ा अफ़सोस (शोक) है कि मुझे अब से पहले यह बात आपको लिखनी याद नहीं रही। आज अयोध्यादास मुझे मिला था।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३५) १० मार्च, १८६१

आज रघुनाथशरण यहाँ से ऐमनाबाद गया है, और वहाँ से आपके पास जायेगा। किताबें वहाँ से लेकर फिर यहाँ आने का इरादा रखता है। आज अयोध्यादास ने दो रुपये रघुनाथशरण को दे दिये थे। लक्ष्मणदास आपको बड़ा याद कर रहा है और मैं भी बड़ा याद कर रहा हूँ। आप कब आयेंगे? हमें शायद इस महीने में एक हफ़्ता भर की छुट्टियाँ हों। मगर अभी कुछ पक्का पता नहीं है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३६) १३ मार्च, १८६१

आपका एक पत्र अब मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। कल हमारा गणित का इम्तहान है और अगले हफ़्ते (शनिवार) अँग्रेज़ी का। आप आ जायें, तो बड़ी अच्छी बात है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३३७) १५ मार्च, १८६१

आशा है, इस हफ़्ते २२ मार्च को हमें छुट्टियाँ एक हफ़्ता की होंगी।

रघुनाथशरण का क्या हाल है? अगर उसने यहाँ आना हो तो उसे २२ मार्च से पहले-पहले यहाँ भेज देना, ताकि मेरा डेरा ख़ाली न रहे। आप पत्र लिखते रहा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३३८) १६ मार्च, १८६१

आज रलाराम ने आपका पत्र और दो रुपये दिये हैं। बड़ी ही ख़ुशी हुई। आप दयादृष्टि रखा करें। उस किताब का नाम अच्छी तरह से फिर लिख दें, तो अच्छा है। मैं इस शनिवार या रविवार को आपकी सेवा में उपस्थित होने की आशा रखता हूँ। इस हफ़्ते (शनिवार) हमारा अँग्रेज़ी का इम्तहान है। मेरा दिमाग़ (मस्तिष्क) बड़ा थक जाता है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३३६) १८ मार्च, १८६१

कल आपका एक कृपापत्र मिला था और आज भी मिला है। बड़ी ख़ुशी हुई। मैं शायद रविवार को आ सकूँगा। रघुनाथशरण की घड़ी मैं नहीं लाऊँगा, क्योंकि टूट जाने का भय है। आप दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३४०) ३० मार्च, १८६१

मैं कल यहाँ राज़ी ख़ुशी पहुँच गया था। यहाँ सब कुछ ठीक है। मैं भाई साहब की किताबें इस शनिवार से पहले-पहले तो शायद बड़ी मुश्किल से भेज सकूँ, क्योंकि कोई छुट्टी नहीं और छुट्टियों के अंत में मैं यहाँ आया हूँ। अयोध्यादास मुझे नहीं मिला। मैं पोथियाँ शायद इसी रास्ते पेशावर को भेज दूँगा। आप दया रखा करें।

—:o:—

(विश्वविद्यालय की ओर से) वार्षिक परीक्षा में गणित-शास्त्र में थोड़े नम्बर किये जाने पर विचार

संबोधन पूर्वोक्त,		(३४१)		१ अप्रैल, १८६१

आप लिखें कि भाई साहब अभी पेशावर को गये हैं कि नहीं, और बूटामल भी अभी यहीं है या चला गया है। महाराजजी! अब पंजाब-यूनीवर्सिटी (विश्वविद्यालय) में यह विचार हो रहा है कि गणित-शास्त्र की परीक्षा में उसके नम्बर १५० के बदले १३० किये जायें, और कई अन्य विषय, जिनके नम्बर इस समय १०० या १२० हैं, उन विषयों के नम्बर भी १३० किये जायें, अर्थात् और कई विषयों को भी गणित-शास्त्र के समान पदवी दी जाये। यह बात बहुत बुरी है। यह तो मानो परिश्रम और अपरिश्रम (अथवा प्रयत्न और अप्रयत्न) के भेद को उठा देना है। हमारा गणित-शास्त्र का प्रोफ़ेसर कहता था कि मैं इसके विरुद्ध यत्न करूँगा। आगे देखिये क्या होता है। आप पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(३४२)		२ अप्रैल, १८६१

आपका पत्र कोई नहीं आया, क्या कारण है। आप ज़रूर पत्र लिखें, और दया रखा करें। इस हफ़्ते (शनिवार) हमारा इम्तहान कोई नहीं है। मेरी तापतिल्ली दूर हो गई है। चाचाजी का पत्र मुझको भी एक मिला था। आज मुझे बहुत बड़ा काम है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(३४३)		४ अप्रैल, १८६१

कल लक्ष्मणदास ने मुझे दो २) रुपये आपके दिये हुए दे दिये थे। बड़ी ख़ुशी हुई। यह भी मालूम हो गया कि भाई साहब और बूटामल चले गये हैं। महाराजजी! आज मुझे मासड़ (मौसा) जी का पत्र आया है कि उनकी सगी बहिन का एक पुत्र है, वह मेडिकल स्कूल में

दाख़िल हुआ चाहता है। वह लाहौर आयेगा। और मुझे उन्होंने लिखा है कि अगर हो सके तो उसे मेडिकल स्कूल में दाख़िल करा दूँ। और शायद यह भी कहेंगे कि उसे अपने पास मकान में रखूँ। बात अच्छी मालूम नहीं होती। आगे जैसी परमेश्वर की और आपकी मरज़ी। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३४४) ५ अप्रैल, १८९१

आपका कृपापत्र मिला, बड़ी ही ख़ुशी हुई। हमारे कालिज के डॉक्टर साहब ने मुझे एक अँग्रेज़ी दवाई दिलवाई थी। अब कुछ तो वरज़िश (व्यायाम) के कारण से और कुछ उस दवाई के प्रभाव से मेरी तिल्ली बिलकुल रफ़ा (दूर) हो गई है। परमेश्वर की और आपकी बड़ी कृपा हुई है। आप दया रखा करें। आप अब यहाँ कब आवेंगे। राय साँझीमल साहब का वहाँ आना बड़ा अच्छा काम हुआ है। मुझे पहले से मालूम था।

काम बहुत बड़ा होता है और परिश्रम चाहता है। आप कृपादृष्टि रखा करें कि मैं परिश्रम करता जाऊँ और सदा बड़ी अच्छी तरह से सारा काम करूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३४५) ६ अप्रैल, १८९१

कल से हमारा वक़्त बदल जायगा। अर्थात् हम ७ बजे प्रातः को कालिज जाया करेंगे। मेरा मेदा (उदर) बड़ा कमज़ोर हो रहा है। प्यास बड़ी लगती है और भूख बहुत कम। मगर आज मैं बड़ी सैर करके आया हूँ। और वरज़िश (व्यायाम) तो बराबर करता ही हूँ, इसलिए इस समय तो तबीयत (स्वास्थ्य) अच्छी मालूम होती है। आप दया रखा करें। बैसाखी को कहाँ होने का इरादा है। आप पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

तीर्थरामजी के घर में चोरी

संबोधन पूर्वोक्त, (३४६) ७ अप्रैल, १८६१

आज प्रातःकाल छे बजे मैं ज़रा (किंचित् काल के लिये) महाराजा साहब की समाधि * तक फिरने गया था । अधिक से अधिक पंद्रह मिनट लगे होंगे । वापस आया तो मकान का जन्दरा (ताला) बिलकुल गुम और द्वार आधा खुला था । अन्दर गया, तो भीतर की कोठड़ी, जो पौड़ियों (ज़ीने) के नीचे है, खुली पड़ी थी । मगर परमेश्वर का शुक्र (धन्यवाद) है कि मेरी पुस्तकें और वस्त्र उसी तरह पड़े हैं, यद्यपि गड़वी, गिलास और पतीला नहीं हैं । एक टोपो चोर की यहाँ रह गयी है । आप दया रखा करें ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३४७) ६ अप्रैल, १८६१

जिस लड़के की बाबत मैंने आपको लिखा था, वह मुझे कल यहाँ मिला था । वह मेरे पास नहीं रहेगा । वह बिलफ़ेल (इस समय) सनातन स्कूल में (जो मेरे पास है) पढ़ता है । और शायद मेडिकल स्कूल में इस साल दाख़िल नहीं होगा । आपके पत्र का इंतज़ार था । मगर आया कोई नहीं । क्या कारण ? आप दया रखा करें ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३४८) ११ अप्रैल, १८६१

क्या कारण है, आपका एक पत्र भी इस हफ़्ते नहीं आया । आप जरूर कृपापत्र से कृतार्थ करें । आप दया रखा करें ।

——:०:——

* समाधि से तात्पर्य महाराजा रणजीतसिंह की समाधि है, जो लाहौर म क़िले के समीप है ।

समाधि महाराजा साहब

संबोधन पूर्वोक्त, (३४६) १२ अप्रैल, १८६१

आज-कल आपका पत्र कोई नहीं आया, और न आप ही आये हैं। आज मैं यहाँ तक फिरने आया था। भाईजी साहब ने बुलाया था। और मैंने नया पत्र उनको लिख दिया है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३५०) १३ अप्रैल, १८६१

मैंने कल बैसाखीवाले दिन से कोठे पर सोना शुरू कर दिया है। मैंने कल से वह 'गुजरात क्लाथ' का कोट भी पहन लिया है। आज चाचाजी ने मुझे १०) रु० का मनीआर्डर भेजा है। मैंने रुपये मुंदरमल को रखने दे दिये हैं। आपको इन दिनों अगर ज़रूरत हो, तो ले लो। अब हमें कोई महीने तक एक अँग्रेज़ी की नई किताब शुरू करायेंगे जिस का दाम ४) रु० से शायद अधिक होगा। आप अब मुझे पत्र लिखो। आप मेरे अपराधों को क्षमा फ़रमावेंगे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३५१) १४ अप्रैल, १८६१

एम० ए० और बी० ए० का रिज़ल्ट (नतीजा) निकल गया है। एम० ए० में तीन पास हुए हैं। एक गणित में भी हुआ है। बी० ए० में ३८ पास हुए हैं। हमारे कालिज के १६ में से १० पास हुए हैं। हमारे कालिज का एक (विद्यार्थी) तीसरा नंबर और एक पाँचवाँ नंबर रहा है। पंजाब में प्रथम एक प्राइवेट (विद्यार्थी) रहा है। हमारा कालिज और गवर्नमेंट कालिज अबके बी० ए० के रिज़ल्ट में एक समान रहे हैं। बहादुरचंद नहीं पास हुआ। शास्त्री में प्रथम हमारे कालिज का (विद्यार्थी) रहा है। आपने मुझे भुला क्यों छोड़ा है ? एक पत्र भी नहीं लिखा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३५२)   १६ अप्रैल, १८६१

आज एफ़० ए० का रिज़ल्ट (नतीजा) निकल गया है। हमारा कालिज बहुत ही अच्छा रहा है। गुजराँवाले के अनंतराम, अमरनाथ और हीरासिंह पास हैं। आज आपका पत्र कालिज में मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। डेरे में आपका कोई पत्र नहीं मिला। और दरवाज़े के ऊपर भी कोई कदापि नहीं है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३५३)   १८ अप्रैल, १८६१

आज मैंने (भाई साहब ने जो किताबें कही थीं) वह पेशावर भेज दी हैं। क्योंकि उसका फिर पत्र आया था। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३५४)   १६ अप्रैल, १८६१

कल रात को भाई गुरदित्तसिंह मुझको आपका पत्र दे गया था, बड़ी ख़ुशी हुई। छतरी मैंने अभी नहीं ली। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३५५)   २० अप्रैल, १८६१

आप इस शुक्रवार को आ जायें तो बड़ी अच्छी बात हो। इस शनिवार को हमें आख़िरी हफ़्ते की छुट्टी है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३५६)   २२ अप्रैल, १८६१

अब हमारे इम्तहान (जो हफ़्तेवार होते थे) सिमाही हो गये हैं, अर्थात् बजाये इसके कि हफ़्ते के बाद एक मज़मून का इम्तहान हो, तीन महीने के बाद सब चीज़ों का इम्तहान आगे से बहुत मुश्किल तौर पर हुआ करेगा। इसका कारण यह है कि अब गरमी के दिन हैं। शुक्रवार आपके आने की आशा है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३५७) २३ अप्रैल, १८६१

अब आप ज़रूर आ जायें। मैं आज किसी क़दर बीमार सा हूँ। क्योंकि बार बार हाजत (पाख़ाने की इच्छा) होती है, यद्यपि सुचेता (पाख़ाना) नहीं आता, मगर आँव आती है। अगर अधिक हरकत (चेष्टा) करूँ तो ज़्यादा तकलीफ़ होती है। इस कारण मैं आज कालिज को भी नहीं जा सका। इंट्रेंस का नतीजा कल रात को निकल गया था। मगर बड़ा अफ़सोस, मैं वहाँ जा नहीं सकता कि आपको लिखूँ। आप अब ज़रूर आ जायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३५८) रात के ११ बजे, २८ अप्रैल, १८६१

आज यहाँ इतना ओला (गड़ा) पड़ा है कि जितना मुबालग़ा (अत्युक्ति) कर सकें। अब ठंड हो गई है। मैं नीचे पानी रखनेवाली जगह के निकट बैठा हूँ। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३५६) रात के ८ बजे, १ मई, १८६१

आज मैं बीमार हूँ। मेरी नाक के दायें सुराख़ (नासिका) में कोई फोड़ा सा हो पड़ा है। बड़ी पीडा होती है। उसके कारण दायीं आँख का निचला भाग भी दर्द कर रहा है। और दायीं तरफ़ के दाँत भी दर्द करते हैं। प्रातः देखिये क्या होता है। आप ग़ुलाम पर दयादृष्टि रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३६०) २ मई, १८६१

आपका पत्र कोई नहीं मिला। मेरे नाक का फोड़ा अभी उसी तरह है। आप दया रखा करें। अब हम छे बजे कालिज जाया करेंगे। पहले सात बजे जाया करते थे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(३६१)　　　　　४ मई, १८६१

आज आपके दो पत्र कालिज में मिले। बड़ी ही ख़ुशी हुई। गरम चीज़ें गंडे (प्याज़), चटनी इत्यादि मैं अब बिलकुल नहीं खाया करता। कल की मुझे नाक के फोड़े के कारण पीड़ा तो नहीं होती, मगर फोड़ा अभी अच्छा नहीं हुआ। कल का पाख़ाना भी नहीं आया। अब कालिज से आनकर मैंने आपके लिखे के अनुसार इमली और बनफ़शा भिगो दिया है। सायं पाँच बजे के लगभग पी लूँगा। तत्पश्चात् केवल प्रातः को ही थोड़े दिन तक पिया करूँगा। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(३६२)　　　　　४ मई, १८६१

इससे पहले मैं एक पत्र लिख चुका हूँ। इसके लिखने का अब ख़याल आया है। इस शनिवार मैं भाई साहब को एक पत्र लिख चुका हूँ। अब अगले शनिवार को (जो अब आयेगा) आपकी टोपी की रसीद उसको भेज दूँगा। कालिज के नल के नीचे आज न्हाते समय मेरा पाँव फिसल गया था, इसलिए मेरी पुड़पुड़ी (कनपटी) पर भारी चोट लगी थी। मगर ऊपर चाक (खड़िया मट्टी) पीसकर डाला हुआ है। इस समय दर्द नहीं होता।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(३६३)　　　　　६ मई, १८६१

आज मेरे नाक के फोड़े को आराम है। बहुत सा मवाद निकल गया है। जहाँ चोट लगी थी, वहाँ भी आराम है। तबीयत अच्छी है। कल रायसाहब का लड़का मुझे बाज़ार में मिला था। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　　(३६४)　　　　　८ मई, १८६१

आज लाला अयोध्यादास ने मुझे कहा था कि मैंने तुम्हारे लिए दो

मकान देखे हैं। एक तो मैंने पहले ही नापसंद किया था, क्योंकि उसमें हाकिम राय आर्यसमाजी चाहिलका भी रहता है। दूसरा उसने मुझे दिखाया था। उसमें प्रथम तो इतने सुख नहीं हैं जितने इस मकान में हैं। दूसरे, उस मकान का मालिक बुलाक़ी सराफ़ (जो अयोध्यादास के सामने रहता है) मुझसे किराया कुछ नहीं लेना चाहता, मगर मेरे से अपने भतीजे को (जो उस मकान में आगे ही रहता है) पढ़वाया चाहता है। अर्थात् एक रुपये के बदले २५) रु० का काम लेना चाहता है। और सारी आयु का एहसान इसके अतिरिक्त रखना चाहता है। इसलिए यह मकान भी मेरे नापसंद है। जिस तरह आप आकर कहेंगे मैं उसी तरह आज्ञा पालन करूँगा। इस हीरामंडी के मकान में अभी तो कोई अवगुण नहीं। कृपापत्र आप भेजते रहें। आप दया रखा करें।

——:o:——

नवीन चारपाई पर हर्ष

संबोधन पूर्वोक्त, (३६५) ११ मई, १८६१

आपका एक पत्र अब मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। मेरी चारपाई अब बिलकुल ही टूट गयी थी, दो दिन तो मानो पृथिवी पर ही सोता रहा। कल मैं पाँच आने का बान मोल ले आया था, आज मुंजी (छोटी चारपाई) नई उना ली है। पाँच पैसे उनाने में लगे हैं। मैं अब नवीन उनी हुई मुंजी (चारपाई) को देखकर बड़ा ख़ुश हुआ हूँ। आज हमें छुट्टी थी। किराया का रुपया कल बावाजी को दे दिया था। अब मेरी तबीअत (स्वास्थ्य वा प्रकृति) अच्छी है। मैंने भाई साहब को टोपी की रसीद लिख दी है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३६६) १३ मई, १८६१

दो तीन दिन हुए हैं लाला अयोध्यादास ने मेरे मकान आनकर कहा

था कि "हमारे बाज़ार (गुमटी) में एक मकान ख़ाली हुआ है, उसे देख लो।" मैं गया था। मकान तो अच्छा है, यद्यपि पुराना है। डेढ़ रुपया किराया है। मगर मेरा जी (चित्त) अभी जगह बदलने को नहीं चाहता, क्योंकि इस मकान में भी बिलकुल कोई नुक़्स (त्रुटि) नहीं, बल्कि कुछ लाभ ज़्यादा ही हैं। जब आप आओगे, तब जिस मकान में आप कहेंगे चला जाऊँगा। मगर अभी जाने में बड़ी तकलीफ़ मालूम होती है। मुझे आज पत्र लिखने में एक दिन की देरी हो गई है। आप मुआफ़ फ़रमाना। आप कृपापत्र जल्दी लिखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३६७)　　　　१७ मई, ८१६१

आप पत्र लिखने में विलंब न किया करें। ज़रूर जल्दी हाल लिखते रहा करें।

——:०:——

तीर्थरामजी का कालिज बोर्डिङ्ग में जाने का विचार

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३६८)　　११ बजे दिन, १६ मई, १८६०

आज कालिज में आपका पत्र मिला था। बड़ी ही ख़ुशी हुई। अगर आप आ जाते, तो बड़ी ही अच्छी बात होती। क्योंकि मुझे वैसी चिन्ता न होती, जो इस समय किंचित् हो रही है।

इस समय तरद्दुद (चिन्ता) यह है कि जब आज प्रातः साढ़े पाँच बजे मैं कालिज पहुँच गया, तो उसी समय बोर्डिङ्ग के सारे लड़के मुझे आकर कहने लग पड़े कि—"अब आपको (मुझे) बोर्डिङ्ग में अवश्य रहना पड़ेगा। अब प्रिन्सिपल साहब का हुक्म (आदेश) हो गया है।" फिर जब दो तीन घंटे बीते, तो कालिज के डॉक्टर साहब मुझे मिले और कहने लगे कि—"तू ने प्रिन्सिपल साहब का हुक्म सुना है कि नहीं?" मैंने कहा कि सुना तो है, पर पहले मैं अपने घर लिखकर अपने वाल्दैन

(जिससे तात्पर्य आपसे था) की आज्ञा लेना चाहता हूँ। वह डॉक्टर * साहब कहने लगे कि "प्रिन्सिपल का हुक्म हर हालत में मानना पड़ेगा।" फिर जब कालिज बन्द हो गया, अर्थात् दिन की पढ़ाई समाप्त कर चुके, तो प्रिन्सिपल साहब ने कहा कि—"तेरे लाभार्थ मैंने यह हुक्म दिया है।" अब इस सारी बात की असल (जड़) मैं लिखता हूँ :—

एक दिन जब हमें छुट्टी थी तो मैं अपने डेरे (स्थान) में बैठ कर पढ़ रहा था। हमारे कालिज के लगभग सारे विद्यार्थी (बोर्डिंग वाले तथा न बोर्डिंगवाले लड़के) मेरे मकान के सामने से गुज़रे। वे चले तो और जगह थे, पर मुझे भी साथ ले जाना चाहते थे। उन्होंने मेरा मकान देखा और मुझसे सारा हाल पूछा। (मेरे साथ सारे विद्यार्थी अच्छा सलूक वा वर्तावा करते हैं।) महरे की (दुकान या तंदूर से) रोटी और मकान की कालिज से दूरी, और मकान का हवादार न होना, इत्यादि सब बातें देख कर कहने लगे कि—"हम तुम्हारे इस मकान में रहने पर राज़ी नहीं हैं। हमारे विचार से यही कारण है कि तुम बार-बार बीमार हो जाते हो। और फिर रोगावस्था में तुम्हारी यहाँ ख़बर लेनेवाला भी कोई नहीं। हम चाहते हैं कि तुम बोर्डिङ्ग में चले आओ। वहाँ आपके पढ़ने में बिलकुल कोई रुकावट (बाधा) नहीं होगी, इत्यादि।" मैं तो चुपका हो रहा, मगर वे कहने लगे कि हम प्रिन्सिपल साहब को कह देंगे। सो उन्होंने कह दिया। और प्रिन्सिपल साहब ने मुझे उक्त आज्ञा दे दी।

अब महाराजजी! आप देखते हैं मेरा किसी प्रकार का अपराध नहीं है। अब वहाँ जाना पड़ा है। आपने मुझ पर किंचित् गुस्सा (रोष) न करना। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। मुझ पर दयादृष्टि रखें। आपके वस (वश) में सब कुछ है। बोर्डिङ्ग में एक कोठड़ी (कमरा)

---

* यह डाक्टर आर्बिसन साहब थे जो उस समय मिशिन कालिज में साइन्स के प्रोफ़ेसर थे।

सबसे अलग है। वह हमारी श्रेणी के एक विद्यार्थी ने ली हुई है। पर वह विद्यार्थी अभी यहाँ नहीं है। अगर वह लड़का मान जाय कि वह कोठड़ी मुझको दे दे और आप अन्य विद्यार्थियों के साथ किसी और कमरे में रहे, तो बड़ी अच्छी बात हो। तीन रुपये और नौ आने ३।।-) प्रत्येक मास (वहाँ) देने पड़ते हैं। रोटी, मकान, पानी, चूहड़ा (भंगी) इत्यादि सब खर्च के लिये।

महाराजजी! मैं जानता हूँ कि सब अपने मन के अधीन है। यदि हम चाहें तो मन को चाहे कहीं एकाग्र कर लें, यद्यपि बड़े परिश्रम और प्रयत्न की आवश्यकता होती है। जितना हम मन को अधिक एकाग्र करेंगे, उतना ही अधिक लाभ होगा, चाहे कहीं हों, जैसा कि बोर्डिङ्ग के विद्यार्थी भी तो कई बार प्रथम या द्वितीय रहते हैं।

मैं आपसे सहायता माँगता हूँ कि मैं मन को वहाँ इस स्थान से भी अधिक एकाग्र कर सकूँ। आप मुझको पहले से अधिक सेवक समझना। आप अब यहाँ कब आयेंगे। आप यदि वहाँ बोर्डिङ्ग में मेरे पास आकर रहें तो किसी प्रकार का डर नहीं, क्योंकि और विद्यार्थियों के सम्बन्धी भी तो सदा आते जाते रहते हैं।

अब चूँकि वहाँ (बोर्डिङ्ग में) जाना जरूरी हो गया है और वह भी बहुत जल्दी, इसलिये मैंने यह इरादा (संकल्प) किया है कि इस वीरवार या शुक्रवार वहाँ चला जाऊँ। मैं आपकी स्वीकृति, प्रसन्नता और कृपा चाहता हूँ, क्योंकि मैं सबके स्थान में आप ही को समझता हूँ, और मेरा बड़ा भरोसा आप ही पर है।

बारह आने की चार पुस्तकें अँग्रेजी भाषा की अति लाभदायक ली थीं। अब मेरे पास खर्च बिलकुल खतम हो गया है। खैर (अस्तु), लाला अयोध्यादास से ले लूँगा। आप इस पत्र का उत्तर तत्काल कृपया कालिज में भेजना, और मुझे पत्र लिखने में कभी विलंब न करना। मेरे पर कृपादृष्टि रखनी।

यदि आपके विचार (मति) में मेरा वहाँ (बोर्डिंग में) न जाना उचित हो, तो आप लिखें कि उनको क्या उत्तर दूँ ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३६६) २० मई, १८६१

आज आपका एक और कृपापत्र मिला। बड़ी ही खुशी हुई। गवाही से छुट्टी पाना बड़ा अच्छा काम हुआ है। दूसरा काम आपका कब तक ख़तम (समाप्त) होगा और कब आप आ सकेंगे ? आप पत्र जल्दी लिखना। अगर नहीं लिखा तो (अगर आपका पत्र कल वीरवार न आया तो) शायद मैं परसों शुक्रवार बोर्डिंग में चला जाऊँगा। वहाँ एक मंजी (चारपाई) और संदूक शायद मुफ्त में मिलता है। अभी तो मैं अपना वाफ़र (फ़ालतू) असबाब लाला अयोध्यादास के डेरे रख देने का इरादा रखता हूँ। जब आप आयेंगे जैसा हुक्म देंगे, कर दूँगा।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३७०) २१ मई, १८६१

आज आपका एक और कृपापत्र मिला। बड़ी खुशी हुई। आपको तकलीफ़ तो निस्संदेह बड़ी होगी। मगर वालदैन (पिता-माता) औलाद (संतान) की ख़ातिर तकलीफ़ें सहा ही करते हैं। आप अगर एक दो दिन के लिए अब यहाँ से हो जायें तो बड़ी अच्छी बात हो। बोर्डिंग में जाना मेरे इख्तियार (अधिकार) से बाहर का मुआमला हो रहा है। अगर आज आप आ जायें तो बड़ी अच्छी बात हो।

——:०:——

एक ही दम एकांत अभ्यास छोड़ने से हानि की संभावना

संबोधन पूर्वोक्त, (३७१) २२ मई, १८६१

मैं आज भी बोर्डिंग नहीं गया। अब अगले वीरवार या शुक्रवार

पर बात जा पड़ी है, क्योंकि तब तक पहली तारीख़ भी समीप आ जायेगी। मगर एक उपाय दृष्टि में आता है जिससे मैं वहाँ (बोर्डिंग में) न जा सकूँ। कि वह अलग कोठड़ी बोर्डिंगवाली जो मैंने आपको लिखी थी वह मिलनी अब कठिन है, और मैं यह कहूँ कि जब तक वह कोठड़ी (कमरा) मुझे न मिले मैं नहीं आता, क्योंकि यकलख़्त (एकाएक, अचानक) बिलकुल अकेला पढ़ने के स्वभाव को हटा देना मेरे लिये अति हानिकारक होगा। आप कब आयेंगे ?

——:o:——

मकान में पुनः सर्प

संबोधन पूर्वोक्त, (३७२) २३ मई, १८६१

आज कालिज से मैं आया, तो यों ही मकान का द्वार खोला; एक सर्प कौड़ियोंवाला मेरी ओर पड़ा। जो सर्प मैंने प्रथम देखा था (जब पहले मकान में आया ही था) उससे यह सर्प आधा था। कदाचित् उसका बच्चा हो। मैंने लोगों को बुलाया, उन्होंने मार दिया।

कालिज के सब लोग मेरे बोर्डिंग में न जाने के अत्यन्त विरुद्ध हैं। वे कहते हैं कि यदि अब तुम यह स्वभाव न डालोगे कि लोगों के बीच में भी पढ़ सको, और प्रत्येक स्थान में मन को एकाग्र कर सको, तो तुम्हें फिर कभी भी यह स्वभाव नहीं पड़ेगा। जैसे जो मनुष्य तैरना तो चाहे, पर पानी में न जाये, तो उसे कभी तैरना नहीं आता।

और आयु में जब मनुष्य बड़ा हो जाता है, तो उसे अलग मकान (स्थान) और समय मिलना अति कठिन होता है। क्योंकि कभी कोई मित्र मिलने आ जाता है, कभी कोई सम्बन्धी इत्यादि। इसलिए यदि मनुष्यों के बीच में भी पढ़ने का स्वभाव न हो, तो पिछली आयु में उन्नति करना कठिन हो जाता है।

मैंने डॉक्टर साहब * को वह बात कही थी, जो मैंने पिछले पत्र में आपको लिखी थी। वह कहने लगे, प्रथम तो तुम्हारे मन में किंचित् भी फ़र्क़ (अंतर या विक्षेप) आयेगा ही नहीं, और यदि आये भी तो पहले दो तीन दिन कष्ट होगा, फिर तुम्हारा मन पढ़ने में अच्छा लग जाने लग पड़ेगा। और (इससे अतिरिक्त) बाह्य लाभ तो निःसन्देह वहाँ सब हैं।

तात्पर्य यह कि मेरा अब बोर्डिङ्ग में न जाना किसी रीति से दिखाई नहीं देता। अब यह यत्न करना चाहिये कि बोर्डिङ्ग में जाकर मन पहले से भी अधिक लगे, क्योंकि अब वहाँ न जाने का यत्न करना व्यर्थ है। इस लिये इस वीरवार या शुक्रवार को मैं वहाँ जाने का इरादा (संकल्प) रखता हूँ। आप इस वीरवार से पहले यहाँ एक दिन हो जायें तो बड़ी कृपा हो। आपने अपने दास पर किसी प्रकार से गिला (शिकायत) न करना। मैं सर्व प्रकार से आपका आज्ञाकारी (सेवक) हूँ।

——:o:——

बोर्डिंग का मासिक खर्च

संबोधन पूर्वोक्त, (३७३) २५ मई, १८९१

आज मैंने सब बातें दर्याफ़्त की हैं।

(१) गरमी की छुट्टियों में हमको किराया आदि कुछ नहीं देना पड़ता।

(२) जितने दिन हम रोटी खायें उतने दिनों का हिसाब देना पड़ता है, और अगर कोई मेहमान (अतिथि) हो, तो जितने दिन वह खाये, उतने दिन हमारे हिसाब में (दाम) अधिक किये जाते हैं।

(३) बोर्डिङ्ग की फ़ीस (अर्थात् मासिक किराया) नौ आने ॥-) पहली तारीख़ से लेकर बीसवीं तारीख़ तक चाहे कब दे दें। मगर रोटी (भोजन) का ख़र्च दिनों के हिसाब से गिनकर मास के अन्त में दिया जाता है।

* डॉक्टर साहब से अभिप्राय डॉक्टर आर्मिसन है, जो साइन्स के प्रोफ़ेसर थे।

(४) मैंने लाला * शिवराम को कहा था कि इतना ख़र्च मेरे वालदैन (पिता-माता) नहीं दे सकते, वह हिसाब करके कहने लगा कि लगभग एक रुपया यहाँ अधिक लगेगा। इसमें कुछ बड़ा कष्ट नहीं है। अगर भोजन अच्छा मिल जाये तो तुमने और ख़र्च कम कर देना। साथ इसके अगर इसमें कष्ट भी है तो केवल नौ मास (परीक्षा) तक। और फिर यह भी कहने लगा कि प्रथम तो हम अधिक ख़र्च नहीं होने देंगे, और फिर यह भी कहा कि यहाँ तुम्हें अधिक पुस्तकों के ख़रीदने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी, क्योंकि तुम औरों से ले सकते हो। उसने यह भी कहा कि अगर यहाँ तकलीफ़ (कष्ट) हो तो छुट्टियों के बाद चले जाना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३७४) आठ बजे रात, २७ मई, १८६१

कल मेरा बोर्डिंग में चला जाने का इरादा है, आगे जो परमेश्वर करे। हे महाराजजी! मेरा मन वहाँ पहले से भी अधिक एकाग्र होने लग पड़े, तो अच्छी बात है। मगर यह बात मुश्किल नहीं है, अगर परमेश्वर की और आपकी दया हो तो। वह बीमारी जो मैंने आपको लिखी थी उससे मुझे अब आराम है। आप पत्र जल्दी लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३७५) २६ मई, १८६१

आपके दो पत्र मिले, बड़ी ख़ुशी हुई। महाराज जी! वह बीमारी जो मैंने लिखी थी, वह फोड़ा नहीं था, मुझे ग़लती (भूल) से ऐसा मालूम हुआ था। वह असल में यह बात थी कि मुझे पैख़ाना फिरते समय अंदर का कुछ चमड़ा बाहर को आ गया था। यह बीमारी बच्चों को अक्सर (प्रायः) हो जाया करती है। और एक खांसी (हलकी) सी बीमारी

* लाला शिवराम उस समय कालेज बोर्डिंग के अध्यक्ष (सुपरिण्टेण्डैण्ट) थे।

है। मगर मुझे अब इससे बिलकुल आराम आ गया है। मैं अफ़सोस करता हूँ कि मेरी ग़लती से आपको इतनी तकलीफ़ हुई।

कल मैं बोर्डिंग आ गया था। रात को पढ़ने का अच्छा मौक़ा मिल गया था। और अब दिन को एक सबसे अलग जगह है, वहाँ बैठा हूँ, और हवा भी आ रही है। एक महीने को हमारा सिमाही इम्तहान होगा, बड़ा मुश्किल। आप गुलाम पर दया रखा करें, और पत्र लिखते रहा करें। मैं आपका नौकर हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३७६) ३१ मई, १८६१

आपका पत्र आने में देर क्यों हो गई है? आप दया रखा करें, और सदा पत्र लिखते रहा करें। मैं राज़ी हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३७७) २ जून, १८६१

मिशन ने एक और मकान निहायत उमदा (अत्यंत उत्तम) बड़ी मुश्किल (कठिनता) से बीस रुपये महीना किराये पर लिया है, कालिज के समीप। इसमें चौदह लड़के आये हैं। तीन तीन लड़कों को एक एक बड़ा खुला कमरा अलग मिला है। इस में चूँकि पढ़ने का दूसरे मकान की निस्बत बहुत बड़ा आराम है, इसलिए हमारी चौथी जमाअ़त (Fourth year) के सब लड़के अर्थात् आठ (मुसलमानों के विना) जिन्होंने बी० ए० का इम्तहान देना है और तीसरी जमाअ़त (Third year) के चार तथा पहली व दूसरी जमाअ़त (First year, Second year) का एक एक इस मकान में आ गये हैं। मैं अभी अकेला ही एक कमरे में हूँ। शायद सुखदयाल और दीनानाथ (ब्राह्मण लड़का जो गुजराँवाले में मेरे साथ इंट्रैंस में पढ़ता था और विष्णुदास का रिश्तेदार अर्थात् संबंधी है) यह दो मेरे कमरे में आ जायें। मगर

अभी आये नहीं। महाराजजी! मुझ पर जरा भी ग़ुस्सा (रोष) न करना। मैं आपके ग़ुलामों का ग़ुलाम हूँ। पत्र कालिज में जल्दी लिखें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३७८)　　　　४ जून, १८६१

मेरा शरीर बिलकुल तंदुरुस्त (स्वस्थ) है और अभी तक मन की एकाग्रता में भी फ़रक़ (अंतर) नहीं आया। आगे देखिये। महाराजजी! आप पत्र ज़रूर लिखें। मुखदयाल अभी नहीं आया।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३७६)　४ बजे प्रातः, ७ जून, १८६१

यहाँ पर लोग सवेरे (प्रातः) उठनेवाले भी हैं, जिन से किसी क़दर मुझे सवेरे उठने की आ़दत (स्वभाव) भी शायद पड़ जाय। रात को ज़्यादा पढ़नेवाले भी हैं। कल दीनानाथ मेरे कमरे में आ गया था। मुखदयाल अभी नहीं आया। तकलीफ़, न तकलीफ़, आपको फिर लिखूँगा; अभी कुछ मालूम नहीं हुई। गुजराँवाले का अमरनाथ शहर से इस बोर्डिंग में कल आ गया है, मगर दूसरे कमरे में है। और हमारी अब कोई दुश्मनी (शत्रुता) नहीं। आपका पत्र कोई नहीं मिला, बड़ा अफ़सोस है। आप मेरे पर दया रखा करें। भूलें मुआ़फ़ फ़रमावें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(३८०)　　　　१३ जून, १८६१

आज तीन रुपये आपके मुझे मिले हैं। बड़ी ही ख़ुशी हुई। आप दया रखा करें। मुझे शायद अब के पत्र में देरी हो गई है, मुआ़फ़ फ़रमाना। हमारा इम्तहान सिमाही (त्रैमासिक) बहुत ही समीप है। मैं तंदुरुस्त (स्वस्थ) हूँ। कोई दिमाग़ (मस्तिष्क) को बल (शक्ति) देनेवाली चीज लिखो।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३८१) १५ जून, १८६१

आज लाला अयोध्यादास मिला था। इन दिनों उसे बड़ा वैराग्य उत्पन्न हुआ है। आप कब आयेंगे? आप मुझ पर दया रखा करें। मेरे क़सूर (अपराध) मुआफ़ फ़रमावें। मैंने घी ले लिया है। इन दिनों काम बहुत बड़ा होता है। इम्तहान बहुत निकट है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३८२) १७ जून, १८६१

कल चाचाजी का पत्र आया था, लिखा था कि "हमने ५) रु० भगतजी को भेजे हैं तेरे लिये"। सो अगर आपको पहुँच गये हों, तो मैं रसीद उनको लिख दूँ। अगर आपको ज़रूरत हो, तो आपने ही वह रुपये रखने, नहीं तो जब आओगे तब ले आने। आप पत्र ज़रूर लिखते रहा करें।

—:o—

संबोधन पूर्वोक्त, (३८३) २० जून, १८६१

आपका कृपापत्र कल मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। मैं चाचा जी को रसीद लिख देने लगा हूँ। आप पत्र मुझे जल्दी भेजते रहा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३८४) २० जून, १८६१

आज आपका एक और कृपापत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। छतरी की मुझे कुछ ज़रूरत नहीं है। मुझे पहले इस बात का ख़याल नहीं आया था कि हमारे कालिज की फ़ीस व रोटी का ख़र्च देने के दिन बहुत समीप आ गये हैं। मगर अब ख़याल आया है। इसलिए आप अगर जल्दी रुपये भेज दें, तो अच्छी बात है। दूसरी बात यह चूँकि हमारा इम्तहान अब बहुत सिर पर (समीप) है, और रायसाहब की कोठी यहाँ से बहुत दूर, इसलिए अगर आप मनीआर्डर के द्वारा भेज दें, तो मुझे

दिक्कत न होगी । और अगर आपको मनीआर्डर द्वारा भेजने में कुछ तकलीफ़ होती हो तो जरूर ही राय मूलसिंह की कोठी के द्वारा भेजना। क्योंकि आपकी आज्ञा मुझे कुछ तकलीफ़ नहीं होती ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३८५) २३ जून, १८६१

आप पत्र जल्दी लिखते रहा करें । अब मेरी जूती जो बड़े दिनों की छुट्टियों में रूपसिंह के साथ जाकर ली थी, जब चाचाजी पेशावर नहीं गये थे, बिलकुल टूट गई है, छे महीने के बाद। अद्धड़ (फूसड़-फूसड़) भी हो गई है । अब और लेने को जी (चित) चाहता है । रोटी का खर्च अब वह माँगते हैं । आपके रुपये अभी नहीं मिले ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३८६) २३ जून, १८६१

आज मुझे आपके पाँच ५) रुपये पहुँच गये हैं । बड़ी खुशी हुई । आप मुझे पत्र लिखते रहा करें । अब हमारा इम्तहान कोई दस ग्यारह दिन को होगा ; बहुत निकट है । आप दया करो कि मैं चित्त की एकाग्रता के साथ परिश्रम करूँ ।

——:o:——

विद्यार्थी-अवस्था में सहपाठियों को प्रोफ़ेसर के स्थान पर पढ़ाना

संबोधन पूर्वोक्त, (३८७) २५ जून, १८६१

हमारा गणितशास्त्र का प्रोफ़ेसर बीमार था, इसलिये एक घंटा प्रतिदिन उसकी जगह मैं पढ़ाता रहा हूँ । कल मुझे अर्थात् गणितशास्त्र के विद्यार्थियों को पहले छुट्टी हो गयी थी । मैं कालिज से बोर्डिङ्ग आया । एक रुपया तुड़वाने के लिये सन्दूक से बाहर रखा (अपनी बैठने वाली जगह पर), मेरे कमरे का साथी दीनानाथ अभी नहीं आया था । मगर एक दो लड़के और बोर्डिङ्ग में आये हुए थे । मैं रोटी खाने रसोई में गया,

मगर रुपया बाहर ही पड़ा रहा, और कमरे का जन्दरा (ताला) भी मारा नहीं। रोटी खाकर आया, तो रुपया नहीं था । दीनानाथ ने बहुत पूछा-पाछा, पर मिला नहीं। नहीं मालूम, किसने लिया। शायद नौकर ने लिया, या किसी विद्यार्थी ने ही उठा लिया हो। कल से मुझे एक बड़ा संदूक़ मिल गया है, इससे बड़ा सुख है।

चार पाँच दिन से मुझे प्रतिदिन नकसीर (नाक से रुधिर) आती थी, मगर कल रात को तो इतनी आई कि लगभग अचेत (बेहोश) हो गया। आज कालिज में भी नहीं गया, क्योंकि उस समय मस्तिष्क में अशक्ति अधिक थी। मगर सात बजे प्रातःकाल से लेकर अब तक तबीअत (स्वास्थ्य) अत्यन्त ठीक रही है। विद्यार्थी सब मेरे साथ हमदर्दी (सहानुभूति) करते हैं, और विशेष करके दीनानाथ बड़ी टैहल (सेवा) करता है। आज मैंने बादाम और चार मग़ज़ घुटवाकर पिये हैं। इस समय सब तरह से आराम है। आप दया रखा करें। मुझे पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

गरम (तीक्ष्ण) वस्तुओं का नितान्त परहेज़ (त्याग)

संबोधन पूर्वोक्त, (३८८) २६ जून, १८६१

मैंने जो लिफ़ाफ़ा लिखा है उसमें एक बात लिखनी भूल गया था कि लाला शिवराम बोर्डिङ्ग के मोहतमिम (अध्यक्ष) को आप पर बड़ा विश्वास हो गया है। हम दोनों सोने से पहले भजन किया करते हैं। मैंने आपकी बातें सुनाई थीं। बड़ा ख़ुश हुआ। मैं अब गरम चीज़ें (तीक्ष्ण वस्तुओं) से बिलकुल परहेज़ करता (नहीं वर्तता) हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३८६) २६ जून, १८६१

मुझे पत्र लिखने में अब के देर हो गई है। कारण यह है कि पत्र डालनेवाला संदूक़ (लेटरबक्स) दूर है, और इम्तहान समीप। आप

मुआ़फ़ (क्षमा) फ़रमावें। कल मेरी मंजी (चारपाई, जब मैं उठाकर डालने लगा) तो टूट गई थी। अर्थात् उसका जो टूटा हुआ पावा था वह बिलकुल ही अलग हो गया। ख़ैर (अस्तु), अब छुट्टियों तक तो किसी तरह गुज़ारह (निर्वाह) करूँगा।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३९०) ३० जून, १८९१

आज आपका कृपापत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। अब मेरा दिमाग़ (मस्तिष्क) अच्छा है। अब हमारे इम्तहान में छः दिन रह गये हैं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३९१) ४ जुलाई, १८९१

मुझे पत्र लिखने में देर हो गई है। यहाँ कई बातों का सुख है और कई बातों की तकलीफ़ भी है। परसों हमारा इम्तहान शुरू होगा। आप पत्र लिखते रहा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३९२) ७ जुलाई, १८९१

हमारा आधा अँग्रेज़ी का इम्तहान ख़तम (समाप्त) हो गया है, और आधा रहता है। आधा रियाज़ी (गणित) का भी ख़तम हो गया है और आधा रहता है। कल मेरा कोई इम्तहान नहीं। परसों वीरवार और अतरसों शुक्रवार को अँग्रेज़ी और रियाज़ी का इम्तहान होगा। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३९३) १० जुलाई, १८९१

आज हमारा इम्तहान ख़तम (समाप्त) हो गया है। छुट्टियों का अभी कुछ अच्छी तरह से पता नहीं। कोई कहता है २५ जुलाई से होंगी, कोई कहता है पहली अगस्त से होंगी। आप मेरे पर दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (३६४) १२ जुलाई, १८६१

आपका पत्र कोई क्यों नहीं आया। आप जरूर जल्दी पत्र लिखा करें। छुट्टियों के बाद मेरा इरादा (संकल्प) बौर्डिङ्ग में रहने का नहीं है। आगे जिस तरह परमेश्वर को मंज़ूर हो।

—:o:—

अति परिश्रम मस्तिष्क की निर्बलता का कारण होता है

संबोधन पूर्वोक्त, (३६५) १३ जुलाई, १८६१

यहाँ निहायत दर्जे की (अत्यंत) गरमी पड़ती है, और मैं (जिसकी प्रकृति पहले ही गरमीवाली है) बहुत ही तंग हूँ। मेरा दिमाग़ (मस्तिष्क) काम नहीं कर सकता। चुनाँचि आज बहुत ही कम पढ़ सका हूँ। मेरा चित अब यह चाहता है कि छुट्टियाँ लेकर २५ जुलाई से पहले ही आपके पास आ जाऊँ, और कुछ आराम करूँ। अगर मेरा दिमाग़ ठीक हो गया, तब तो नहीं आऊँगा, और अगर न हुआ, तो आप लिखो कि मेरा आना उचित है कि नहीं। अगर उचित हो तो आऊँ, नहीं तो न आऊँ। दिमाग़ की निर्बलता का कारण यह भी है कि पिछले दिनों में सख्त (भारी) मेहनत (परिश्रम) करनी पड़ी थी। आप मेरे पर दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (३६६) १४ जुलाई, १८६१

कल और आज मैंने बादाम घुटवाकर पिये थे। और पढ़ा भी कम है, अर्थात् सहल-सहल चीज़ें ही पढ़ी हैं। इसलिए आज मेरा दिमाग़ कल से बहुत अच्छा है। आज भाई साहब के हाथ का (आपके पास से) लिखा हुआ पत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। अगर मैंने आना हुआ, तो इस शनिवार को आऊँगा, नहीं तो भाई साहब को कहना कि वह यहाँ से हो जाये। हमने अब नई किताबें शुरू की हैं। छुट्टियों से पहले आप

छुट्टियाँ लेने में हानि बहु होगी। आगे जिस तरह आप कहें। आप मुझे अपने हाथ का पत्र लिखें। मेरे पर दया करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३६७)   १६ जुलाई, १८६१

मुझे इस बात की बड़ी चिन्ता लगी हुई है कि आपका एक पत्र भी इन दिनों नहीं मिला। आप पत्र जरूर लिख दिया करें। अगर कोई अनुचित बात मुझसे स्वाभाविक हो जाय तो क्षमा कर दिया करें, क्योंकि मैं इरादतन (जान बूझ कर) कोई ऐसी चेष्टा नहीं करनी चाहता, और नहीं करता जो आपको नापसंद (अरुचिकर) हो। कल शुक्रवार हमें छुट्टी है ईद की। परसों छुट्टी नहीं। भाई साहब को कहना कि मुझको मिले बिना न जाना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३६८)   १७ जुलाई, १८६१

आपका एक पत्र कल मिला था, बड़ी खुशी हुई। कल हमारा इम्तहान है, इसलिए मैं अधिक नहीं लिख सकता। कल सविस्तार हाल लिखूँगा। मैं आपका गुलाम हूँ। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (३६९)   १७ जुलाई, १८६१

आज आपके दो पत्र मिले, वह दो पैसे भरने वाला, और एक और, मैं अब बिलकुल तंदुरुस्त (स्वस्थ) हूँ। छुट्टियाँ हमें २५ जुलाई को होंगी। मगर छुट्टियों से पहले मेरा आना कठिन है। क्योंकि एक तो पढ़ाई का हर्ज, दूसरा हमारे साहब की नाराजगी, तीसरा यह कि अगर २५ जुलाई को आयें तो रेल के किराया में (हमारे साहब के कहने पर) हमें रियायत होगी। भाई साहब को कहना कि वही मुझे यहाँ आकर मिल जायें। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४००) १६ जुलाई, १८६१

कल चाचाजी का पत्र आया था। आज मेरे बायें कान में ज़रा-ज़रा दर्द होता है, और बाईं पिन्नी (पिंडुली) पर एक फोड़ा हुआ है। अगर ज्यादा तकलीफ़ मालूम हुई तो छुट्टियों से पहले ही चला आऊँगा। अगर आराम आ गया, तो छुट्टियों को आऊँगा। भाई साहब आज तक यहाँ नहीं आये।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४०१) २१ जुलाई, १८६१

कल भाई साहब यहाँ आ गये थे। मैं आज अत्यंत तंग हूँ। कान में सख्त दर्द है। दो दिन हस्पताल से पिचकारी इत्यादि का इलाज करवाया है। आराम बिलकुल नहीं हुआ। प्याज़ का गरम पानी भी कान में डलवाया है। आज सब दिनों से ज्यादा तकलीफ़ है। मैं शायद कल आपके पास चला आऊँ। आप मुझ पर दया रखनी। शायद भाई साहब मेरे राज़ी (स्वस्थ) होने तक पेशावर नहीं जायेंगे।

—:o:—

तीव्र गुरु-भक्ति और सेवा

संबोधन पूर्वोक्त, (४०२) २६ सितंबर, १८६१

परमेश्वर के वास्ते एक पत्र लिखो। आपने वृक्ष को अब तक पाला है, और पानी दिया है, अब यक ब यक (अकस्मात्, एक दम ही) उस वृक्ष का ध्यान छोड़ना नहीं चाहिये। आप यद्यपि मुझे चाहें, अथवा न चाहें, तौ भी मैं तो आपका गुलाम हूँ। पर इतना ज़रूर चाहता हूँ कि आप (यदि अधिक नहीं तो) इतना ख्याल तो मेरी तरफ़ भी रखा करें जितना कि अपने पानी भरनेवाले महरे (कहार) या और किसी ख़िदमतगार (अनुचर) की तरफ़ रखते हैं।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४०३) ६ अक्तूबर, १८९१

कल लाला अयोध्यादास ने बड़ी तलाश करने के बाद मुझे एक मकान सूहे बाज़ार के सिरे पर ले दिया है। मकान आजकल अजुारियों (जुआ खेलनेवालों) ने बहुत रोक रखे हैं। इस मकान का किराया पौने दो १।।।) रुपया है। और मकान बहुत ही फ़राख़ (खुला) है। मैं आज बोर्डिंग से असबाब (सामान) ले आया हूँ और मैंने बरसाती में जो बड़ी वसी (खुली) है डेरा कर दिया है। आप बहुत जल्दी आयें तो भारी कृपा होगी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४०४) ८ अक्तूबर, १८९१

आज लाला अयोध्यादास मुझे कहता था कि "राजा हरबंससिंह का एक और नौकर है, और उसका एक लड़का है जो मेरा (तीर्थराम का) हमउम्र (समान आयु वाला) है और किसी स्कूल में पढ़ता है, मैं (अयोध्यादास) चाहता हूँ कि उसको आप अपने मकान की निचली मंज़िल में रहने दो, तुम्हारा हर्ज कुछ नहीं होगा।" फिर अयोध्यादास उस लड़के के पिता को साथ लाकर मकान दिखला गया था। मैंने अयोध्यादास को यह कहा था कि "अच्छा, जैसी आपकी मरज़ी।" मगर मैंने दिल में यह ठान लिया है कि अगर उस लड़के के आने से मुझे कुछ तकलीफ़ न हुई तो इस मकान में रहूँगा, नहीं तो मकान बदल दूँगा। आप अब बहुत जल्दी पदार्पण कीजिये। इस मकान का पता यह है— "मुक़ाम लाहौर, सुहा बाज़ार, सुखरामदास दुकानदार की मार्फ़त तीर्थराम गुसाईं को मिले।" मकान निस्संदेह खुला है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४०५) ११ अक्तूबर, १८९१

कल आपका एक पत्र मिला। बड़ी ही ख़ुशी हुई। लाला अयोध्यादास

बड़ा भ्रम करता है और कहता है कि "मेरा मतलब तो यह था कि उस लड़के से शायद आपको फ़ायदा (लाभ) हो, क्योंकि मकान बड़ा फ़राख़ (खुला) था और किराया बहुत। मेरा ज़ाती फ़ायदा (निजी लाभ) मुझे किंचित् भी दृष्टिगोचर नहीं था। और फिर यह कि मैंने आपकी सलाह पर छोड़ा था, अगर जी (चित्त) चाहे तो रखो, नहीं तो न।" अब वह कहता है कि उस लड़के या किसी और व्यक्ति को मैं निचली मंज़िल में रखने की सलाह (सम्मति) कदापि नहीं दूँगा। अफ़सोस करता है कि भगतजी के पत्र से किसी क़दर ख़फ़गी (रोष) के चिह्न ज़ाहर हैं। और मुझको कहता था कि उनको लिख दो कि मुझ पर ज़रा (किंचित्) ख़फ़ा (रुष्ट) न हों। और वास्तव में वह हर तरह से मेरी ख़ातिरदारी करता है, और मेरी ख़बर रखता है। आप उसे एक ख़ुशी का पत्र लिखें। मेरे पड़ोसी बड़े ही कृपालु और भलेमानस हैं। मैंने घड़ी (टायमपीस) कोई नहीं ख़रीदी। एक दिन सायं को मैं रोटी खाने जो गया, तो महरे (कहार) की दुकान पर मेरी जूती कोई व्यक्ति बटा (बदल) कर ले गया। मेरी जूती के बदले में जो छोड़ गया है यह भी बड़ी पुरानी है। कितनी जगह से गठवाई हुई है और फिर भी गठवाने-वाली है। आप अभी तक आये क्यों नहीं ?

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४०६) १३ अक्तूबर, १८६१

कल हमारा कालिज खुलेगा। यह मकान है तो बड़ा फ़राख़ (खुला) मगर लिपाई होनेवाली है। मालिक मकान कहता है कि आजकल करा दूँगा। और हमने उसको कहा है कि हम किरायानामा तब लिख देंगे, जब लिपाई हो जायेगी। सो अभी तक किरायानामा नहीं लिख दिया।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४०६)　　१६ अक्तूबर, १८९१

मैं ख़याल करता हूँ कि अब के मुझे पत्र लिखने में देर हो गई है। आप मुआफ़ (क्षमा) फ़रमाना। आप आये क्यों नहीं ?

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४०७)　　१८ अक्तूबर, १८९१

आज चूँकि छुट्टी थी, मैं रोटी खाकर ज़रा लाला अयोध्यादास के मकान पर गया था, वहाँ आपका पत्र (जो आपने लाला अयोध्यादास को लिखा हुआ था) देखा। रूपसिंह और लक्ष्मणदास भी वहाँ बैठे हुए थे। रूपसिंह की ज़बानी मालूम हुआ कि आप आज कल आयेंगे। और आपके पत्र से भी मालूम हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। आपने मुझे पत्र लिखने में इस बार देर क्यों लगाई है ?

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४०८)　　२१ अक्तूबर, १८९१

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है ? आजकल यहाँ एक डॉक्टर सैकुवा साहब आये हुए हैं। लोग कहते हैं कि उनके इलाज में मोजज़े (करामात) का असर (प्रभाव) है। वह अपनी सुनहरी बग्गी में चढ़ कर शहर में फिरते हैं, इलाज करते हैं, और लोगों के साथ बातचीत भी करते हैं। आ कर देख जाओ। यह साहब अमरीका के हैं। मैस्मरिज़िम से इलाज करते हैं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४०९)　　२४ अक्तूबर, १८९१

इतने काल आपका कोई पत्र न आने की क्या वजह (हेतु) है ? आप ज़रूर जल्दी पत्र लिखा करें। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। न तो आप स्वयं ही आये हैं और न पत्र ही लिखा है। अब दया करो। लड़कों ने मेरा बोर्डिंग छोड़ देना साहब को कह दिया था, सो एक दिन डॉक्टर

साहब (हमारे कालिज के प्रोफ़ेसर) मुझे कहने लगे कि तू अब कहाँ रहता है ? मैंने कहा शहर (नगर) में। फिर कहने लगे कि रहने का मकान और खाने-पीने का इंतज़ाम अगर पहले जैसा है, तो यह मकान भी छोड़ देना पड़ेगा ; नहीं तो ख़ैर, वहीं रहो। मैंने यक़ीन (निश्चय) दिलाया कि अब मैं पहले से अच्छी हालत में रहता हूँ। फिर चुप कर रहे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१०) २५ अक्तूबर, १८९१

आप अब अपना हाल ज़रूर लिखें। आपने इतनी मुद्दत (अवधि वा चिर) तक पत्र क्यों नहीं लिखा ? मेरे क़ुसूरों (अपराधों) को मुआफ़ फ़रमावें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४११) ११ बजे रात, १०नवंबर, १८९१

आपका सूचीपत्र यहाँ रह गया है। आपको जाते समय मुझे चाक़ू देना याद नहीं रहा था। अस्तु, अगर हो सका, तो आप कोई चाक़ू लेकर हमारे गाँव में भेज देना। वैरोके का प्रभुदयाल मुझे आज मिला था। कोई एक सप्ताह भर को हमारे सिमाही (त्रैमासिक) इम्तहान शुरू होंगे। आपने पत्र भेजते रहना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१२) १३ नवंबर, १८९१

मुझे थोड़ा-थोड़ा रेशा (श्लेष्मा) था, मगर अब आराम है। आप पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४१३) १५ नवंबर, १८९१

आपका पत्र कोई नहीं मिला। हमारा सिमाही इम्तहान बहुत निकट है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१४)　　　　१७ नवंबर, १८६१

हमारे इम्तहान नवंबर की २० तारीख़ से लेकर ३० तारीख़ तक होते रहेंगे। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१५)　　　　२० नवंबर, १८६१

आज लाला अयोध्यादास मिला था, कहने लगा कि "मैं महेशदास के साथ रहना नहीं चाहता। इसलिए अगर कोई और जगह रहने को न मिली, तो आपके मकान की निचली मंज़िल में आ जाऊँगा।" मैंने कहा कि जिस तरह उचित समझो करना। फिर चुप कर रहा। कल हमारा रियाज़ी (गणित) का इम्तहान है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१६)　　　　२२ नवंबर, १८६१

आज आपका पत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१७)　　　　२६ नवंबर, १८६१

मुझे शायद अब के पत्र लिखने में देर हो गई है, मुआफ़ रखना। काम बहुत था। मैं आपके लिए प्रतिदिन प्रार्थना किया करता हूँ। आप ने अपना हाल जल्दी लिखना। आपका पत्र आने में देर क्यों हो गई है?

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(४१८)　　　　१ दिसंबर, १८६१

आज हमारा कालिज खुला है, अर्थात् मामूली पढ़ाई शुरू हुई है। इम्तहान ख़तम (समाप्त) हुए हैं। आप पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

संसार के सुख रात के पक्षी का साया (छाया) हैं

संबोधन पूर्वोक्त, (४१६) ४ दिसंबर, १८६१

कल आपका पत्र मिला था, अत्यंत बड़ी खुशी हुई। मैंने कल का आपकी तरफ़ लिखने के लिये यह कार्ड अपने पास रखा हुआ था। मगर (गणित के) एक कठिन प्रश्न को हल करने में प्रवृत्त था। लिखने को अवकाश नहीं मिला। कल का बाक़ी कालिज का काम भी अभी तक और कोई नहीं किया। अब आठ पहर के बाद वह प्रश्न निकला है। अब और काम करूँगा। कल लाला अयोध्यादास मिला था। मेरा भाई अभी आया है कि नहीं? अगर आया है तो उसे कहना कि मुझे पत्र लिखे।

परमात्मा का स्वरूप अद्भुत चमत्कारों का मजमुआ (समूह) है, संसार के सुख ऐसे हैं जैसे* उस रात के पक्षी का साया (छाया) जिसको कभी किसी ने देखा नहीं, मगर उसके आने की आवाज़ ही केवल सुनी है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४२०) १६ दिसंबर, १८६१

कल आपके कपड़े मैं धोबी से ले आया था। हमें आज से नवें दिन छुट्टियाँ मिल जायेंगी, अर्थात् वीरवार। मेरे नाक के अंदर की तरफ़ एक फुंसी सी हो पड़ी है, जिसके कारण सिर में भी ज़रा-ज़रा दर्द होता है। जब ख़याल किसी और चीज़ की तरफ़ हो तो दर्द मालूम नहीं देता। पर जब ख़याल और चीज़ से हटता है, तो मालूम देता है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४२१) १८ दिसंबर, १८६१

आज मेरे नाक के फोड़े को किसी क़दर आराम है। सिर-दर्द अब

* भगत धन्नारामजी से विदित हुआ कि प्रत्येक रात्रि वह नियत समय पर एक पक्षी के उड़ने की आवाज सुना करते थे, परन्तु बहुत यत्न करने पर भी वह पक्षी रात्रि के समय किसी को दिखाई नहीं देता था, यद्यपि उसके उड़ने की आवाज़ अवश्य सबको सुनाई देती थी। उस पक्षी के दृष्टांत से तीर्थराम जी ने संसार के सुखों को दर्शाया है।

नहीं होता। मैं शायद वीरवार को आऊँ। आप लिखें कि असबाब (सामान) का क्या इंतज़ाम (प्रबंध) करके आऊँ। आप सारा हाल लिखें। आप मुझ पर दया रखा करें। मेरे चाचाजी अभी आये हैं कि नहीं ?

—:o:—

एकांत निवासार्थ सब सुखों का छोड़ना

संबोधन पूर्वोक्त, (४२२) २० दिसंबर, १८६१

आज लाला अयोध्यादास मिला था। वह अब अपने पहले मकान के सामने के मकान में रहता है, सहित अपने लंगर लशकर के। एक साबित (पूरा) पाजामा जो मेरे पास था वह मैंने पहना हुआ है। नया वहाँ आकर बनवाऊँगा। आज सारा दिन मेरे गले में सख्त (भारी) रेज़श (जुकाम) रही है। अगर मैं बीमार रहा तो शायद वीरवार से पहले ही चला आऊँ। जब आऊँगा आपकी चीजें लेता आऊँगा। अयोध्यादास मुझे कहता था कि "जब जाना हो, मकान की कुंजी मुझे दे जाना।" इससे उसका यह मनशा मालूम होता है कि छुट्टियों में वह यहाँ (इस मकान में) आ जाय। पर महाराजजी ! मैं इस बात को कदापि नहीं चाहता। मैंने सब सुख छोड़े, और किराया भी इतना बड़ा देना मंजूर किया, केवल एकांत रहने की ख़ातिर। और अयोध्यादास यहाँ आना चाहता है ख़राब मकान में। मैं कोशिश करूँगा कि कुंजी उसको न दूँ। आपने उसको इस विषय की बाबत कुछ न लिखना। अयोध्यादास को आपने जो पत्र लिखा था उसने ज़िक्र (चर्चा) किया था। मगर मैंने पत्र देखा नहीं। आपने ग़ुलाम पर सब तरह ख़ुश रहना। मेरी ऐनक का एक शीशा निकल गया है। इस पत्र को लिख चुकने के बाद आपका पत्र मिला। आपके बीमार रहने का अफ़सोस (शोक) है।

—:o:—

सन् १८९२ ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े अठारह वर्ष के लगभग थी)

संबोधन पूर्वोक्त, (४२३) ७ जनवरी, १८९२

आपने जो घड़ी के बाबत काग़ज़ लिखवाया हुआ था, वह यहीं रह गया है। आज मैंने देखा है। अयोध्यादास को दे दूँगा कि वह आपको पहुँचा दे। और अगर उसने कुछ और राय (सम्मति) दी, तो वैसा करूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२४) ९ जनवरी, १८९२

इस हफ़्ते (सप्ताह) आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप पत्र जल्दी लिखते रहा करें।

जब मैं इतना पत्र लिख चुका तो अयोध्यादास आकर मिला। और उसने कहा कि मैं गुजराँवाले से हो आया हूँ। महाराजजी को मिला था।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२५) १२ जनवरी, १८९२

मैं राज़ी हूँ। आप पत्र जल्दी लिखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२६) १५ जनवरी, १८९२

आज हमें छुट्टी हो गई है मलिका के पोते की मृत्यु के कारण। आपके पत्र में देर क्यों हो जाती है ?

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४२७) १८ जनवरी, १८९२

आपका पत्र आये देर क्यों हो गई है। आप जल्दी पत्र लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४२८)　　११ बजे रात, २७ जनवरी, १८९२

कल लक्ष्मणदास मिला था। उसकी ज़बानी मालूम हुआ कि आप बीमार हो गये थे। बड़ा अफ़सोस हुआ। आप अपना हाल लिखें। आज हमें छुट्टी थी और सारे लाहौर शहर की दुकानें दिन भर बंद रही हैं, और सब महकमों में छुट्टी रही है शहज़ादे के मातम (शोक) के कारण। आप सब हाल लिखें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४२९)　　३१ जनवरी, १८९२

बड़ी मुद्दत (अवधि) के बाद कल आपका एक कृपापत्र मिला था। अत्यंत ख़ुशी हुई। लाला अयोध्यादास पाँच छे दिन का जंडयाले गया हुआ है। चाचाजी की बाबत जो आपने लिखवाया था उसमें दो तीन हरफ़ रह गये हुए हैं। अनुमान से जाना है कि वह मुरालीवाला में गये हैं। मगर आपको नहीं मिले। आपने इस बात का कुछ ख़्याल न करना। इस बुद्धवार से लेकर शनिवार तक हमारा कालिज में इम्तहान होगा। फिर बड़े इम्तहान की तैयारी के लिये छुट्टियाँ मिल जायेंगी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४३०)　　४ फ़रवरी, १८९२

आपने पत्र कभी क्यों नहीं भेजा? आप ज़रूर अपने हालात से सूचना देते रहा करें। मेरी गरदन के फोड़े को अब आराम है। मगर बिलकुल राज़ी नहीं हुआ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त　　(४३१)　　६ फ़रवरी, १८९२

आपकी तरफ़ से एक पत्र भी नहीं आया। आप ऐसा न किया करें। मेरी गरदन के फोड़े को बिलकुल आराम है। पिछले दो तीन दिन

सिर-दर्द बड़ी होती थी। मगर अब आराम है। आप ज़रूर पत्र लिखते रहा करें।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४३२) ८ फ़रवरी, १८६२

अब मुझे खर्च की ज़रूरत है। साथ इसके १२ फ़रवरी से १५ फ़रवरी तक हमसे इम्तहान के दाख़ले (प्रवेश-फ़ीस) लिये जाने हैं। मेरे पाँव की जूती भी अब टूट पड़ी है। आपका पत्र कभी नहीं आया।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४३३) ६ बजे रात, ११ फ़रवरी, १८६२

महाराज जी! आप मुझे (कम से कम आठवें दिन तो) एक पत्र लिखने की तकलीफ़ ज़रूर उठा छोड़ा करें। मैंने लाला अयोध्यादास को कहा था। वह मुझे अभी दो रुपये आन कर दे गया है। आप मेरे पर किसी तरह से ख़फ़ा (रुष्ट) न रहें। मैं आपकी दया का इच्छुक हूँ।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४३४) १३ फ़रवरी, १८६२

कल भाई गुरुदास आ गया था। एक रुपया अपने किराये का काट कर उन्तालीस ३६) रुपये मुझको देकर आज चार बजे की गाड़ी कामोंके * चला गया है। आपके दो कार्ड भी आज मिले हैं। भाई साहब की ज़बानी मालूम हुआ कि केवल आप ही की कोशिश से रुपये मुझको पहुँचे हैं। महाराजजी! आप मेरे अत्यंत कृपालु हैं। आप मेरे पर कृपादृष्टि रखा करें। मुझे पत्र ज़रूर लिखा करें। आज मैं कालिज से फ़ार्म ले आया हूँ। इसको भर कर के सोमवार इसके साथ रुपये भी दे

* कामोंके एक क़स्बा का नाम है।

दूँगा। तीस ३०) रुपये दाख़िले के, साढ़े तीन ३॥) रुपये एक मास की आधी फ़ीस के, देने हैं। पौने दो १॥।) रुपये किराया भी इन्हीं से देना है। आपका पत्र लेकर बड़ा चित्त ख़ुश हुआ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४३५) १५ फ़रवरी, १८६२

आज मैं तीस ३०) रुपये दाख़िले के दे आया हूँ। आपकी और परमेश्वर की दया चाहिये। उन्होंने सब लड़कों से दाख़िले के साथ ही पूरी दो मास की फ़ीस ले ली है, बिना किसी को छोड़े। इसलिए मुझे भी पूरे दो मास की आधी फ़ीस देनी पड़ी। अब निज के ख़र्च के लिए लाला अयोध्यादास से कुछ उधार लेना पड़ेगा। लाला अयोध्यादास के पहले दो रुपये मैंने दे दिये हुए हैं। आपने मुझ पर अब किंचित् ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। मेरा कोई अपराध नहीं है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४३६) १२ बजे रात, १८ फ़रवरी, १८६२

आप पत्र ज़रूर कृपा करके भेजा करें। मेरे किसी क़सूर (अपराध) की तरफ़ मत देखना। मुझे जब कोई पत्र मिलता है, तो बड़ी ख़ुशी होती है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४३७) २½ बजे दिन, १६ फ़रवरी, १८६२

आज मैंने सुना था "मिडल का रिज़ल्ट (परिणाम) कल निकल गया है।" कालिज से आती बार देख आया हूँ। लाला हरसुखराय, नेकराम पास हैं। मुरालीवाले के काशीराम, नंदराम और लाला आसानंद साहब का लड़का हरजसराय पास हैं। चरणदास नहीं पास हुआ।

——:०:——

ख़र्च की बार बार तंगी

संबोधन पूर्वोक्त, (४३८) २३ फ़रवरी, १८६२

आप जल्दी आ जायें तो निहायत मेहरबानी (बड़ी भारी कृपा) हो।

उन्तालीस ३९) रुपये जो भाई साहब लाये थे, उनमें से तीस ३०) रुपये दाख़िला, सात ७) रुपये फ़ीस और दो रुपये अयोध्यादास के दे दिये थे। मैं ख़र्च से पहले की तरह तंग ही हूँ। दो रुपये एक लड़के से उधार लिये थे, वह भी लग गये हैं।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (४३९) ३ मार्च, १८९२

मैंने पत्र इस बार देर से इसलिए लिखा है कि मुझे आशा थी आप अब तक यहाँ आ गये होने थे। देर क्यों लग गई है ? आप पत्र लिखते रहा करें।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (४४०) ५ मार्च, १८९२

आज चाचाजी यहाँ तशरीफ़ लाये (पधारे) हैं। और सब तरह से ख़ैरियत (कुशल) है। आपका पत्र कोई नहीं मिला।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (४४१) ८ मार्च, १८९२

कल चाचाजी यहाँ से चले गये थे। शायद आपको मिले होंगे। गुजराँवाले से ख़र्च मुझको भेजेंगे। मैं आशा करता हूँ कि उनकी ज़बानी सब हाल आपको मालूम हो गया होगा।

आपका कृपापत्र कल एक मिला था, निहायत बड़ी (अत्यंत) ख़ुशी हुई। आपके और मेरे चोगों (कोटों) के लिए चाचाजी पट्टी लाये हैं। वह यहाँ पड़ी है।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (४४२) ६½ बजे सायं, १७ मार्च, १८९२

आपने मेरे पर सब तरह से ख़ुश रहना। आज कोई तीन चार बजे के लगभग लद्धाराम और हरिराम उसका भाई, मुरालीवाला के

पांधे, मेरे मकान पर आये थे। कोई एक मिनट ठहरे थे। एक लोई और दो सोटियाँ (हाथ की लकड़ियाँ) यहाँ रखकर चले गये थे। शायद वह मेरे मकान उतरना चाहते हैं। अब जब आयेंगे तो मैंने यह इरादा किया हुआ है कि उनको कह दूँ कि "अगर यहाँ उतरना हो तो निचली मंज़िल में रहना पड़ेगा।" महाराजजी! अगर और कोई बात उचित हो तो वह मुझे आप लिख दें। मैं जान बूझ कर तो कोई अनुचित चेष्टा नहीं करना चाहता।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४३) ११¾ बजे रात, १८ मार्च, १८९२

आज ८ बजे वह दोनों पांधे-भाई मुरालीवाले चले गये हैं। कल रात को देर के साथ यहाँ आये थे। और आते ही सो गये थे। आज दिन भर भी बाहर रहे। मेरा उन्होंने हर्ज नहीं किया। आप ज़रूर मेरा ख़याल रखें। सोमवार, बीर, शुक्र और शनिवार हमारा इम्तहान है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४४) २० मार्च, १८९२

हमारा इम्तहान कल हमारे मिशन कालिज में होगा। हमारा बड़ा साहब मुहतमिम (प्रबंधक) होगा। आपने ज़रूर मेरे लिए प्रार्थना करनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४५) २२ मार्च, १८९२

आज आपका कृपापत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। अगर नारायण-सिंह मिला, तो मैं कह दूँगा। मगर आप आ जायें तो अच्छी बात है। आपका जी (चित्त) चाहा तो इम्तहान के बाद अमृतसर भी जायेंगे। परसों और अतरसों हमारा रियाज़ी (गणित) का इम्तहान है। मुझे इस बार रियाज़ी का बड़ा ही भय है। आपने ज़रूर प्रार्थना करनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४६) २३ मार्च, १८९२

कल मेरे नाक से बहुत बड़ी नकसीर चली थी। अब मेरा दिमाग़ बड़ा ही कमज़ोर हो गया हुआ है, सो आपने ज़रूर मेरे लिए प्रार्थना करनी।

——:o:——

बी० ए० की वार्षिक परीक्षा की चिंता

संबोधन पूर्वोक्त, (४४७) २४ मार्च, १८९२

आज मैं एक रियाज़ी (गणित) का इम्तहान दे आया हूँ। एक परचा बड़ा मुश्किल (कठिन) आया था। पर मैं आशा करता हूँ कि आपने * मेरे लिये ख़याल किया होगा। अब कल दूसरी रियाज़ी का इम्तहान है। मुझे उसका अत्यन्त भय है। आपने ज़रूर प्रार्थना करनी। परसों ओरल (ज़बानी) परीक्षा है, जिसका मुझे सबसे अधिक भय है, क्योंकि अगर कोई उसमें पास (उत्तीर्ण) न हो, तो सारे इम्तहान में पास नहीं होता। शायद कल तो आप यहाँ स्वयं ही आ जायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४८) ७ अप्रैल, १८९२

बूटाराम, वह पेशावरिया, उसकी औरत (स्त्री) और बच्चे (यह दोनों मुरालीवाले चले गये हुए थे), चाचाजी, बेबे (माताजी) और मैं लाहौर आ गये थे कल सायं को। अब वह पेशावरिया, उसकी औरत

* इन दिनों भगत धन्नारामजी अपनी वाणी की सिद्धि में बड़े प्रसिद्ध थे, जो कुछ शाप तथा वर आप किसी को देते थे वह शीघ्र पूरा हो जाया करता था। तीर्थरामजी को उनकी इस संकल्प सिद्धि से पूरा-पूरा परिचय था, इसलिए तीर्थरामजी उनसे अपने लिए उत्तम संकल्प की प्रार्थना करते हैं और उनकी वृत्ति को अपने हित की ओर प्रत्येक पत्र में प्रार्थना द्वारा आकर्षित करते हैं।

और बच्चे और बूटाराम अमृतसर चले गये हैं। बेब्रेजी की आँखें दिखाने गये थे। मगर साहब बीमार था। इस लिए आज इत्तफ़ाक़ (अवसर) दिखाने का नहीं हुआ। कल अगर वह साहब न आया, तो कहते थे कि उसकी जगह कोई और काम करेगा। हमारा रिजल्ट (परिणाम) अभी नहीं निकला। आपने मेरे पर सब तरह से खुश रहना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४४९) ३० अप्रैल, १८९२

मैं कल यहाँ पहुँच गया था। अयोध्यादास का अभी तक मेल नहीं हुआ। और कोई बात लिखने के योग्य इस वक्त तक नहीं हुई। आपने मुझ पर दयादृष्टि रखनी। अगर मासड़ (मौसा)जी का पत्र आया, तो मुझको सूचना देनी। चाचाजी के जाने की सूचना देनी। पता— आपका गुलाम, लाहौर, सूतरमंडी, गंदी गली, सरबदयाल ज़रगर (सुनार) की बैठक।

——:०:——

बी० ए० श्रेणी में पुनः प्रविष्ट होना

संबोधन पूर्वोक्त, (४५०) २ मई, १८९२

*आज मैं कालेज में प्रविष्ट हो गया हूँ। लाला अयोध्यादास को मैंने रुपये रखने दे दिये हैं। यह भी उसको कह दिया था कि उसकी पोथी

---

* इस पत्र से प्रतीत होता है कि तीर्थरामजी इस वर्ष बी० ए० की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुए, जिससे पुनः बी० ए० में प्रविष्ट हो गये। सुना जाता है कि यद्यपि संकलित नम्बरों के विचार से तीर्थराम जी अपने प्रान्त के विश्वविद्यालय में प्रथम थे, पर दैवयोग से अँग्रेज़ी विषय में नियत नम्बरों से उनके कुछ नम्बर कम आये। इस वर्ष किसी न किसी निमित्त से अनेक विद्यार्थी अँग्रेज़ी भाषा में रह गए थे, जैसा कि उनके बाद के पत्रों से स्पष्ट हो रहा है, और विशेष करके योग्य और निपुण विद्यार्थी तो रह गये, परन्तु निकृष्ट अथवा अयोग्य विद्यर्थी जिनके विषय में अध्यापकों को भी कोई आशा नहीं थी, उत्तीर्ण हो गये थे।

आपको अभी तक नहीं पहुँची। इंट्रैंस का रीज़ल्ट (परिणाम) अभी नहीं निकला। आपकी लकड़ियाँ अभी बिकी हैं कि नहीं ? हमारे कालिज का जो हलवाई (झंडूमल) है उसने मुझको पहले भी कई बार बड़ी प्रीति से कहा था कि मैं रोटी उसके घर से खा लिया करूँ और आज पुनः उसने हाथ जोड़ कर कहा था। मैंने आज उसको कह दिया है कि "अच्छा खा लिया करूँगा।" दो तीन दिन खा कर देखूँगा, अगर उचित समझा, तो फिर भी खाता रहूँगा, नहीं तो छोड़ दूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४५१) ५ मई, १८६२

आपका कृपापत्र इस समय तक कोई नहीं प्राप्त हुआ। क्या कारण है। आप ज़रूर मुझे पत्र लिखें। चाचाजी अभी गये हैं कि नहीं ? बूटाराम ने कब हरद्वार जाना है ? आपने कब यहाँ आना है। आपका ग़ुलाम तीर्थराम, मुक़ाम लाहौर, सूतरमंडी, गंदी गली, सरबू जड़िया की बैठक।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४५२) ८ मई, १८६२

आपका कृपापत्र इस हफ़्ते (सप्ताह) कोई नहीं मिला। मैं परसों का उस आदमी (झंडूमल) के घर रोटी खाया करता हूँ। बड़ी प्रीति की रोटी होती है। जब आप आयेंगे तब अगर आपने वहाँ रोटी खाना अनुचित समझा तो मैं छोड़ दूँगा। मैं ख़्याल करता हूँ कि आपका (मेरे विषय में) ऐसा संकल्प था, इसलिये इस तरह का इत्तफ़ाक़ (अवसर) बन गया। मैं इंट्रैंस का रिज़ल्ट (परिणाम) देखने गया था, वह किसी क़दर फटा हुआ था, और किसी क़दर साबित था। साबित हिस्से में मुझको सरदार नारायणसिंह का नाम नहीं मिला था। आप मुझे ज़रूर लिखें कि नारायणसिंह का क्या हाल है ?

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४५३) १० मई, १८९२

आज आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ी ख़ुशी हुई। मेरी उँगली को अब किसी क़िस्म (प्रकार) का दर्द नहीं होता। ज़ख़्म भी लगभग सारा मिल गया (भर गया) है। मगर अभी मैंने नंगा नहीं किया। आप पत्र ज़रूर जल्दी लिखते रहा करें। लकड़ियों का क्या हाल है ? सरदार नारायणसिंह का मुफ़स्सिल (सविस्तर) हाल लिखना।

——:o:——

बी० ए० में एक अति अयोग्य विद्यार्थी का अँग्रेज़ी में प्रथम निकलना

संबोधन पूर्वोक्त, (४५४) १२ मई, १८९२

आज एक पत्र आपका कालिज में मिला। दूसरा मकान पर मिला, निहायत बड़ी (अत्यंत) ख़ुशी हुई। सरदार नारायणसिंह के पास हो जाने की निहायत बड़ी ख़ुशी हुई है। उनको कहना कि मिशन कालिज में दाख़िल हों। मैं आपको एक अजीब (अद्भुत) बात लिखता हूँ कि पहले इतना तो आपको किसी क़दर मालूम ही है कि इस बार बी० ए० के इम्तहान में बहुत से होशियार (निपुण) लड़के अँग्रेज़ी में रह गये हैं। अब जौन-सा लड़का अँग्रेज़ी के मज़मून में प्रथम रहा है वह इतना अयोग्य (नालायक़) था कि अँग्रेज़ी का प्रोफ़ेसर उसे इम्तहान में कदापि भेजना नहीं चाहता था। सब लोग हैरान (विस्मित) हैं कि यह प्रथम क्योंकर रह गया ?

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४५५) १४ मई, १८९२

दो तीन दिन का मेरे दायें कान में ज़रा ज़रा रेशा (बहता) है। अगर परसों सोमवार तक बिलकुल आराम हो गया तो ख़ैर, नहीं तो शायद परसों सायं की गाड़ी में आपके पास चला आऊँ। आपकी लकड़ियाँ अगर बिक गई हों, तो बड़ी ख़ुशी की बात है। मेरा ख़्याल

आपके चरणों की तरफ़ रहता है। मेरा भाई बूटामल अगर परसों तक यहाँ आ गया तब मैं गुजराँवाले शायद न आऊँ।

——:o:——

तीर्थरामजी के विषय में युनीवर्स्टी में कहा सुनी

संशोधन पूर्वोक्त, (४५६) १८ मई, १८९२

आपका कृपापत्र मिला था। अत्यंत .खुशी हुई। पिछले दो तीन दिन मेरे कान का दर्द कम हो गया था, मगर आज फिर ज्यादा है। अगर यही हाल रहा तो शायद कल परसों मैं आपके पास आ जाऊँ। मगर पक्के तौर पर आने की बाबत नहीं लिख सकता। अगर आप भद्रकाली के मेले पर आ सकते हों, तो बड़ी अच्छी बात हो। अब मेरा बहनोई यहाँ गवर्नमेंट कालिज में शास्त्री पढ़ा करता है, प्राज्ञ का इम्तहान इस बार देगा। वह प्रति दिन चार पाँच मिनट मेरे पास हो जाया करता है। आज कहता था कि "अगर ज़रूरत हो तो मैं तुम्हारे मकान ही सो रहता हूँ। मगर मैं ने कहा दर्द बहुत बड़ा नहीं है। तुम अपने मकान ही आराम करना। सरदार नारायणसिंह अभी किताबें मुरालीवाला से लाया है कि नहीं? मैंने एक रीति से अपना सारा वृतांत लिखकर साहब को दिखा दिया था। वह परचों के पुनः देखे जाने की राय (सम्मति) नहीं देते। मगर साहब ने यूनिवर्सिटी में मेरी बाबत बहुत कहा था कि इसको (अर्थात् मुझे) रियायत मिल जानी चाहिये। पर उसकी कोई बात मानी नहीं गयी। आज यूनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) ने यह विज्ञापन दिया है कि जिन्होंने बी० ए०, या एम्० ए० पास किया हो और आयु उनकी २१ वर्ष से अधिक न हो और वह रियाज़ी (गणित) अथवा साइन्स (विज्ञान शास्त्र) में विलायत का एम्०, ए० पास करना चाहते हों, वे प्रार्थनापत्र भेजें। जिस का अधिकार सब से अधिक होगा, उसको

काफ़ी वज़ीफ़ा (छात्र-वेतन) देकर विलायत भेजा जायगा। और जब वह विलायत से पास करके आवे, उसको बड़ी ऊँची पदवी दी जायगी। अब अगर मैं इस बार पास हो जाता, तो मुझको यह वज़ीफ़ा अवश्य मिल जाना था। प्रथम मेरी आयु के विचार से, द्वितीय मेरे गणित-शास्त्र में नम्बरों के कारण से, तृतीय मेरे आचरण की दृष्टि से। मगर अब क्या हो सकता है। आप दया रखा करें। गुराँदित्ता व जीवनसिंह को ख़ुशी कहनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४५७) २५ मई, १८६२

कल सायं के सात बजे लक्ष्मणदास ने मुझे कहा था कि "आज नौ बजे की गाड़ी में गुजराँवाले ज़रूर जाऊँगा।" फिर आज आधा मिनट मेरे मकान लद्धामल के साथ ठहरा था और कहने लगा कि वहाँ जाने का इरादा (विचार) अब हटा दिया है।

बात यह है कि यहाँ दो चिट्ठीरसाँ (डाकिया) इस बाज़ार में आया करते हैं। एक तो मुसल्मान बूटा नाम है। यह व्यक्ति जो पत्र मेरा इसे मिले, मुझे तत्काल दे जाया करता है। दूसरे का नाम बालकृष्ण है। यह व्यक्ति अमली (नशेबाज़) है। जो पत्र इसे मिले ग़बन कर छोड़ता है। मैंने आज तक उसका दर्शन तक भी कभी नहीं किया। औरों के पत्र भी वह बहुत कम देता है। मेरी मरज़ी (इच्छा) है कि उसे मिलकर समझाऊँ। कल बूटा ने आपके दो पत्र दिये थे, आज एक दिया है। सरदार तीर्थसिंह का पत्र मैं बोर्डिंग (खालसा) में दे आया हूँ। आपने तीन या चार अजीब आदमी इससे पहले देखे हैं। अब लाहौर में आन कर एक और अजीब साधु को देख जाओ। यह साधु दरया के किनारे उतरे हुए हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४५८) ३१ मई, १८९२

मैं आराम से यहाँ पहुँच गया हूँ। अयोध्यादास को आज मिला था, लाला गोविंदराम की बैठक में जा कर। आपका पैग़ाम (संदेसा) दे दिया था। नारायणसिंह मुझे चादर दे गया है। कालिज में भी मिला था, उसके वज़ीफ़े का अभी पक्का पता नहीं मिला। मेरा ख़्याल आपकी तरफ़ बड़ा रहता है। आपको अभी कामिल सेहत (पूर्ण नीरोगता) आई है कि नहीं? किताब अभी कोई नहीं भेजी। और कोई बात लिखने के क़ाबिल (योग्य) जब होगी तो आपको सूचना दी जायगी। जीवनसिंह, गुरांदित्तामल और रामसिंहजी को ख़ुशी।

——:०:——

निर्धनता के कारण पाठ्य पुस्तकों का बेचना

संबोधन पूर्वोक्त, (४५९) २ जून, १८९२

——:०:——

सरदार नारायणसिंह * न मुझे कल मिला था और न आज, न कालिज में, और न मकान पर। पंडित द्वारकादास, जिसने पुस्तकें ख़रीदने को मुझसे कहा था, मुझे इन तीन दिनों में नहीं मिला, यद्यपि मैंने सुना है कि यहाँ आया हुआ है। मेरा इरादा है कि कल तीन चार रुपये की पुस्तकों के नाम एक काग़ज़ पर लिखकर विज्ञापन की रीति से कालिज की एक दीवार पर लगा दूँ, ताकि वे पुस्तकें बिक जायें। हमारा गणित-शास्त्र का प्रोफ़ेसर बीमार पड़ा हुआ था, दस बारह दिन के बाद

* सरदार नारायणसिंहजी रामनगर के निवासी थे। इन दिनों में यह गुसाईं तीर्थरामजी से एक कक्षा पीछे थे और उसी मिशन कालिज में पढ़ते थे। इसी कालेज से इन्होंने बी० ए० पास किया था, और एम्० ए० गवर्नमेंट कालिज से पास किया था। तत्पश्चात् थोड़े काल तक वकालत की वृत्ति ग्रहण की। फिर उसे नापसन्द करके ख़ालसा हाईस्कूल, अमृतसर की हैडमास्टरी (मुख्य अध्यापकता) स्वीकार की थी।

आज कालिज में आया था। हमारी श्रेणी का एक होशियार (चतुर) विद्यार्थी थोड़े दिनों के तप के बाद कल सायंकाल को कालवश हो गया। और सब तरह से कुशल है। आप मुझ पर दयादृष्टि रखनी। आप अपना हाल जल्दी जरूर लिखना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६०) ५ जून, १८९२

आपने अपना हाल अभी तक क्यों नहीं लिखा? अब जरूर अपनी सेहत (स्वास्थ्य) का हाल लिखो। किताबों की बाबत विज्ञापन मैंने अभी तक नहीं लगाया कालिज में, क्योंकि जिस जगह विज्ञापन लगाये जाया करते हैं, वह जगह सरकारी नोटिसों से लगभग सारी भरी हुई थी। सरदार नारायणसिंह मुझे पहले दिन के विना फिर किसी दिन नहीं मिला। अगर हो सका तो आपने मेरा कुरता और पाजामा किसी के हाथ मुझे भेज देना। गुराँदित्तामल, जीवनसिंह और रामसिंहजी को खुशी।

——:o:——

मकान दिलाने में झंडूमल की प्रशंसनीय सहायता

संबोधन पूर्वोक्त, (४६१) ८ जून, १८९२

आपकी तरफ़ से अब तक कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। आप जरूर पत्र लिखने की तकलीफ़ उठायें। अपनी सेहत (स्वास्थ्य) का हाल लिखना।

जहाँ मैं रोटी खाया करता हूँ, उस घर के साथ एक और घर लाला गणपतिराय बैरिस्टर का है। यह घर लाला साहब का आजकल बिलकुल खाली पड़ा हुआ है। उनका विचार है कि इस घर को नये सिरे से बनवाया जाये। झंडूमल हलवाई ने (जिसके घर मैं रोटी खाया करता हूँ) बैरिस्टर साहब के भाई को मेरे लिये कहा था कि वह अपना यह मकान

मुझे (अर्थात् तीर्थराम को) इन गरमी के दिनों के लिये मुक्त रहने को दे, और उसने मंज़ूर (स्वीकार) कर लिया था। मगर मैंने अभी तक वह मकान भीतर से नहीं देखा। बाहर से कोई बड़ा सुन्दर मालूम नहीं देता, और न बहुत बड़ा ही है। मेरे इस मकान से बहुत समीप है। गली में है, मगर वहाँ आसपास कोई बड़ा शोर-गुल नहीं दिखाई देता।

यह बैरिस्टर साहब का भाई (लाला दुनीचंद) उनके काम का मुख़्तार है। एफ़० ए० में मेरा सहपाठी था। बी० ए० की शिक्षा गवर्नमेंट कालिज में पाता रहा। इस वर्ष पास नहीं हुआ था, और फिर अब तक किसी कालिज में प्रविष्ट नहीं हुआ।

झंडूमल को मैंने नहीं कहा था कि वह मेरे लिये लाला दुनीचंद* को कहे, मगर उसने स्वयं ऐसा कहा था, ताकि मुझे इन दो मास का किराया न देना पड़े। जब आप लिखेंगे तब मैं उस मकान में जाने की कोई सलाह बनाऊँगा। अभी कोई सलाह वा विचार नहीं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६२) १० जून, १८६२

आपका कृपापत्र आज मिला। आपको नीरोगता न आने का हाल पढ़कर बड़ा रंज (दुःख) हुआ। आप ज़रूर यहाँ आ जायें, देर न करनी। चाचाजी का आज पत्र आया है कि उन्होंने मुझे आठ ८) रुपये भेजे हैं। मगर रुपये मुझे अभी तक नहीं मिले। और कोई नई बात अभी तक नहीं हुई।

——:o:——

निर्धन अवस्था के होते हुए भी संतोषवृत्ति वा तृप्ति

संबोधन पूर्वोक्त, (४६३) ११ जून, १८६२

आज एक मनुष्य ने हमारे प्रिंसिपल साहब को मेरे लिये त्रेपन ५३)

---

* यह लाला दुनीचंद वही हैं, जो आजकल लाहौर में अपने भाई गणपतिराय की तरह बैरिस्टर हैं।

रुपये दिये हैं। साहब ने मुझको बुलाया था और कहने लगे कि यह ले लो। मैंने कहा कि किसने दिये हैं, वह कहने लगे कि हम नाम नहीं बतायेंगे। (मैं ख़याल करता हूँ कि शायद वह अपनी गाँठ से ही दे रहे हों)। फिर मैंने कहा कि आधे इनमें से आप कालिज के कामों में ख़र्च कर दें और आधे मुझे दे दें। यह भी न माना। फिर मैंने कहा कि अच्छा! मिस्टर गिलबर्टसन साहब जो हमें गणित पढ़ाते हैं और मेरी आधी फ़ीस देते हैं, उनको मैं व्यर्थ कष्ट नहीं देना चाहता, उनके बदले वह आधी फ़ीस इम्तहान तक मुझसे ले लो। वह कहने लगे कि इस बात का निर्णय गिलबर्टसन साहब से करना होगा। सो मैंने रुपये लाकर लाला अयोध्यादास को दे दिये हैं। चाचाजी के रुपये अभी मुझको नहीं मिले। मुझे ज़ुकाम उतरा हुआ है। आप अब ज़रूर ही यहाँ आ जायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६४) १० बजे दिन, १२ जून, १८९२

इस समय मुझे आपका कार्ड मिला है, निहायत ही दर्जे का (अत्यंत) ग़म (शोक) हुआ है। मैंने इसी वक़्त बाबू रघुनाथसिंहजी की तरफ़ पत्र लिख दिया है, और शायद मैं ख़ुद (स्वयं) कल आपके पास आ जाऊँ। परमेश्वर आपको ज़रूर इसी वक़्त सेहत (स्वास्थ्य) दे। आज मैं इसलिए नहीं आया कि एक तो चाचाजी का मनीआर्डर आया हुआ है जो मुझे अभी तक नहीं मिला। और दूसरा साहब से आज रविवार के दिन छुट्टी नहीं ली जा सकती।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६५) १८ जून, १८९२

मैंने थाल अयोध्यादास को दे दिये हैं। लाला बुलाकीराम भी उसके पास बैठा हुआ था। क़ैंची भी दे दी है। मकान अभी नहीं बदला। चाचाजी

की तरफ़ अब पत्र लिखूँगा । आपने अपना कुशलपत्र ज़रूर लिखते रहना । अगर आपको तकलीफ़ (कष्ट) न हो तो एक या दो पैसे की *गाचनी (मुलतानी मट्टी) हमारे घर मुरालीवाले भेज देनी ।* उन्होंने मुझको कहा था ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६६) नया मकान लाहौर, २० जून, १८६२

आज झंडूमल मेरा अस्बाब (सामान) इस मकान में ले आया है, और मैं यहाँ आ गया हूँ । सरबू का किराया दे दिया है । पूरे मास में दो दिन कम थे । उन दो दिनों की मुहार काट ली है । और क़ैंची का दाम काट लिया है । इस हिसाब से एक रुपया और साढ़े नौ आने १॥-)॥ देने आये हैं । आपने अपना हाल ज़रूर लिखना और मुझे याद रखना । आपके चरणों की ओर ख़याल रहता है ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६७) २३ जून, १८६२

मैंने पिछले पत्र में आपको इस मकान का पता नहीं लिखा था, तब दर्याफ़्त नहीं किया था । अब आपको पता लिखता हूँ ।

"लाहौर, मुहल्ला मोहलियाँ, गली रंगरेज़ाँ, झंडूमल भाटिया के द्वारा तीर्थराम गुसाईं को मिले ।" आपने ज़रूर ही अपना हाल जल्दी लिखना । आपकी तरफ़ बड़ा ख़याल रहता है ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६८) २७ जून, १८६२

आपका एक कार्ड आज कालिज में मिला । निहायत बड़ी (अत्यंत) ख़ुशी हुई । मैंने आपको पता मकान का लिख दिया हुआ है ।

"मुक़ाम लाहौर, मुत्तसिल (समीप) बाज़ार सूतरमंडी, मुहल्ला मोहलियाँ, गली रंगरेज़ाँ, माफ़्रत झंडूमल भाटिया तीर्थराम गुसाईं ।"

हमारा इस हफ़्ते (शनिवार) अँग्रेज़ी का इम्तहान है। वर्षा यहाँ भी नहीं हुई। शायद इन दिनों हो जाय। आपने ज़रूर आ जाना। चाचाजी का पत्र मुझको आये देर हो गई है। सरदार नारायणसिंह को मिले भी चार-पाँच दिन हो गये हैं। मेरा दिमाग़ बड़ा थक जाता है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४६६) २६ जून, १८६२

आज यहाँ थोड़ी सी वर्षा हुई है। आपने अब ज़रूर आ जाना, सरदार नारायणसिंह को मिले हफ़्ता (सप्ताह) हो गया होगा। आपने मुझे कालिज के पते पर पत्र लिखा करना, जल्दी पहुँचता है। आज कालिज से आते बार अनारकली में एक पैसा देकर दो सिरों वाला लड़का देखा है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४७०) २ जुलाई, १८६२

आज आपका कृपापत्र मिला, निहायत बड़ी (अत्यंत) ख़ुशी हुई। आप अगर आज कल यहाँ आ जायें तो बड़ी ख़ुशी की बात हो। आपके चित्त की हालत और आपकी सेहत (स्वास्थ्य) का हाल पढ़ कर बड़ा आनंद हुआ। आपने ज़रूर आ जाना।

—:o:—

तीर्थरामजी का ज़नानी जूती पहनकर कालिज में जाना

संबोधन पूर्वोक्त, (४७१) ४ जुलाई, १८६२

कल रात को जब मैं दूध पीने गया, तो मेरी जूती का एक पैर शायद किसी की ठोकर से बदर रौ (गट्टर, नाली) में जा पड़ा। जब दूध पीकर जूती पहनने लगा तो एक पैर तो पहन लिया, दूसरा (नाली में), इधर-उधर देखा, कहीं न मिला। हलवाई दीपक लेकर सारी बदर रौ

तिलाश कर आया, न मिला। दो लड़कों को पैसा देना करके कहा कि ढूँढ़ो, उनको भी न मिला। पानी बड़े ज़ोर से (नाली में) चल रहा था, शायद कहीं का कहीं चला गया होगा। मेरे मकान में एक पुरानी ज़नानी जूती पड़ी हुई थी। प्रातःकाल को एक अपनी जूती का पैर और एक उस पुरानी ज़नानी जूती का पैर पहनकर कालिज में गया। यह मेरी जूती अब अत्यन्त पुरानी हो गई थी। सो आज मैंने सवा नौ आने ॥~)। की एक नई जूती ख़रीद कर पहनी है। मेरा आपकी तरफ़ बड़ा ख़्याल रहता है। आपने मुझ पर सदा ख़ुश रहना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४७२) ६ जुलाई, १८६२

कल मैंने सरदार नारायणसिंह की जमाअत (श्रेणी) के एक लड़के (गुरुदास) से, जो गुजराँवाले से आया हुआ है, पूछा था कि नारायणसिंह का क्या हाल है। वह कहने लगा कि "कोई दस ग्यारह दिन हुए हैं उसको ख़बर आई थी कि उसका वज़ीफ़ा (छात्रवृत्ति) नहीं लगा। इसलिए वह दयानंद ऐंग्लो वैदिक कालिज (आर्य कालिज) में जा दाख़िल हुआ है।" मुझको सूचना इस बात की स्वयं उसने कदापि नहीं दी है। मुरालीवाले से भाई बूटाराम का पत्र भी आया था।

आप मुझे पत्र ज़रूर जल्दी लिखते रहा करें। मेरा ख़्याल आपके चरणों की तरफ़ बड़ा रहता है।

"ऐ कि हरगिज़ फ़रामुशत न कुनम, हेचत अज़ मा बेह याद मे आयद"

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४७३) ८ जुलाई, १८६२

आपका पत्र आये देर क्यों हो जाती है? सरदार नारायणसिंह

मिला था। उसकी किताब जो लक्ष्मणदास लाया था वह अभी तक उसने ली नहीं थी। अब उसने माँगी थी। सो मैंने पहुँचा दी है।

इस मकान के जो मालिक हैं अर्थात् लाला गणपतिराय व दुनीचंद, उनकी माता कल कालवश हो गई थी। इसलिए उनका आदमी कल इस सारे मकान को खूब साफ़ करके तिनकाओ (पानी का छिड़कावो) कर गया था, और कह गया था कि वह स्वयं अब इस मकान को बरतेंगे और मुझको (तीर्थराम को) यहाँ से चला जाना पड़ेगा। मगर लाला दुनीचंद सायं के समय जब मुझे मिले थे तो कहने लगे कि "आप इस मकान में मुक़ीम (बसे) रहो, हम इस मकान को नहीं बरतेंगे। हमने तो केवल सबसे निचली मंज़िल में एक दीवा जलाय रखना है।" सो वह केवल दीवा यहाँ जला गये हुए हैं। इन दिनों गरमी अत्यंत पड़ती है। आप मुझे ज़रूर याद रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४७४)　　११ जुलाई, १८९२

कल रात को यहाँ खूब वर्षा हुई थी। मगर अब हवा के बंद होने के कारण फिर हब्स (उमस) सा है। आज आपका एक पत्र कालिज में मिला है। निहायत दर्जे की (अत्यंत) खुशी हुई। हमारी छुट्टियों के मिलने की पक्की तारीख़ मालूम नहीं। आप आ जायें तो बड़ी अच्छी बात है। इस हफ्ते (शनिवार) हमारा रियाज़ी (गणित) का इम्तहान है। अगले हफ़्ते अँग्रेज़ी का।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(४७५)　　१३ जुलाई, १८९२

कल चाचाजी का पत्र आया था, राज़ी हैं। हमें छुट्टियाँ २९ तारीख़ माह हाल (जुलाई) से मिलेंगी। आप आ जायें तो बड़ी अच्छी बात हो। सरदार जीवनसिंह व गौंदित्तामलजी को खुशी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४७६) १६ जुलाई, १८९२

आपका कृपापत्र आये देर हो गई है। आप पत्र जल्दी लिखा करें। आपके न आने की क्या वजह (हेतु) है ?

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४७७) २३ जुलाई, १८९२

हमें २८ जुलाई वारवार से छुट्टियाँ मिलेंगी। मैं आशा करता हूँ कि वीर या शुक्रवार मैं आपके पास आ जाऊँगा। आज मैं लाला अयोध्यादास के पास आपकी घड़ी के लिए जाऊँगा। आपका पत्र अभी कोई नहीं मिला। मेरे लिए मकान तजवीज़ (प्रबंध) कर रखना। मुझे आज बड़ा रेशा (ज़ुकाम) उतरा हुआ है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४७८) २५ जुलाई, १८९२

आपका शनिवार का कृपापत्र लिखा हुआ आज सोमवार कालिज में मिला। अत्यंत खुशी हुई। विदित हो कि मैं शनिवार सायं को लाला अयोध्यादास की ओर गया था, घड़ी के लिए। मगर वहाँ से मालूम हुआ कि वह उसी दिन जंडयाले चला गया था। और न लाला महेशदास ही आज तक मिला है। वह रात के आठ नौ बजे अपने वकील से आता है। और प्रातः छे बजे चला जाता है। इस वजह (कारण) से घड़ी की बाबत मुझको अभी तक कुछ मालूम नहीं हुआ।

मैं आज चराग़दीन की तरफ़ गया था। वह कहने लगे कि नवलकिशोर के छापेख़ाने का रिसाला आतशक हमारे पास कोई नहीं, किंतु छापाख़ाना अबु महम्मदी लखनऊ का एक रिसाला आतशक फ़ारसी ज़बान में हमारे पास है। जिसका दाम उन्होंने सवा आना -)। बताया, सो यह रिसाला मैंने अभी तक नहीं लिया। अगर आप लिखें तो ले आऊँ, अन्यथा ख़ैर। साथ इसके मैंने एक दो और दुकानों से भी पूछा था,

उन्होंने भी यही कहा कि नवलकिशोर छापेखाने का यह रिसाला हमारे पास नहीं है। मेहरचंद की तरफ़ गया था, वह कहने लगा कि मेरे पास गोरखशतक तो नहीं, मगर गोरखनाथ-उत्पत्ति है। सो यह गोरखनाथ-उत्पत्ति अगर आप कहें तो ले आऊँ, वरना न लाऊँ। आपने मेरे पर किसी तरह से ख़फ़ा न होना। मैं वीरवार शायद आ जाऊँगा।

——:o:——

झंडूमलजी की अमूल्य सहायता

संबोधन पूर्वोक्त, (४७९) १२ बजे दिन, ८ अक्तूबर, १८९२

मैं कल यहाँ पहुँच गया था। जिस मकान में मैं पहले रहता था, वह वर्षा के कारण गिर पड़ा था। परन्तु मेरा अस्बाब (सामान) झंडूमल ने बचा लिया था। अभी तक कोई और मकान नहीं मिला। कल रात को झंडूमल के घर पर सो रहा था। और रोटी भी उसी के घर खाता हूँ। बैठने के लिये लाला अयोध्यादास के मकान में आ जाता हूँ। अयोध्यादास ने जिस व्यक्ति को आपकी घड़ी दी हुई थी वह व्यक्ति बीमार है। और आपकी घड़ी दुरुस्त नहीं हुई।

——:o:——

तीर्थरामजी का घर पर पढ़ाने का विचार

संबोधन पूर्वोक्त, (४८०) ८ अक्तूबर, १८९२

आपका कृपापत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। आज हमारा कालिज खुला, पर किसी प्रोफ़ेसर के आगे वह ज़िक्र (वर्णन) करने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं मिला। अलबत्ता बहादुरचंद * मिला था, कहता था कि हीरामंडी में राजा ध्यानसिंह की हवेली के समीप एक बाबू लद्धाराम

* बहादुरचंदजी उन दिनों में एम० ए० में पढ़ते थे, जब तीर्थरामजी बी० ए० में थे। अब यह महाशय वकील हैं।

ऐग्जैक्टिव इन्जीनियर हैं, उनके लड़के को अगर दो घंटे पढ़ाओ, तो पन्द्रह रुपये मासिक मिला करेंगे। मगर वह कहता था कि कल रविवार में तुमको उनके पास ले जाऊँगा। मैंने स्वीकार कर लिया था। अब आगे देखिये, क्योंकि आपका मेरी तरफ़ ख़्याल है, मैं आशा करता हूँ कि अवश्य कोई न कोई अच्छा इत्तफ़ाक़ (अवसर) बन जायगा। अगर आप किसी दिन यहाँ हो जायें तो बड़ी ख़ुशी हो। पंडित देवकीनन्दन भी कल मिला था।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४८१) १० अक्तूबर, १८९२

कल लाला अयोध्यादास ने मुझे मकान किराया पर ले दिया था। यह मकान अयोध्यादास के मकान के समीप है और गुमटी बाज़ार के सिरे पर जो बहुत बड़ी सफ़ेद-सी हवेली है उसके पीछे की तरफ़ वाक़या है। और मालिक इस मकान का भी सरदार स्वरूपसिंह साहब है। किराया डेढ़ रुपया माहवार। पता यह है—"लाहौर, गुमटी बाज़ार, कन्हैयामल रुईवाले के द्वारा तीर्थराम गुसाईं को मिले।" आपने मुझे पत्र जल्दी लिखना। रामसिंहजी को मत्था टेकना।

——:०:——

बाज़ार के तन्दूर से रोटी खाना

संबोधन पूर्वोक्त, (४८२) १२ अक्तूबर, १८९२

आपका काग़ज़ कोई नहीं मिला। अब झंडूमल की घरवाली (धर्मपत्नी) कहीं गयी हुई है, इसलिये मैं रोटी तन्दूर (दुकान) से खाया करता हूँ। अभी तक कोई पढ़नेवाला लड़का नहीं मिला। जब कालिज खुलेगा, किसी प्रोफ़ेसर को कहूँगा। शायद वह कोई इत्तफ़ाक़ बना दे। आप सब हाल लिखें। सरदार साहब को मत्था टेकना।

——:०:——

विद्यार्थियों को पढ़ाने से तीर्थरामजी को प्रोफ़ेसर का रोकना

संबोधन पूर्वोक्त, (४८३) ८ बजे रात, १७ अक्तूबर, १८६२

वह आदमी जो गुजराँवाले गया था और जिसका नाम शायद निहालसिंह है, मिला था, बीमार रहा है, और उसके घर बीमारी है। बहादुरचंद मिला था, कहने लगा कि कल मेरा कोई रिश्तेदार (संबंधी) आया हुआ था, इसलिए मैं तुम्हारी तरफ़ नहीं आ सका। आज सायं को जरूर आऊँगा और तुम्हें बाबू लद्धाराम के घर ले आऊँगा। मगर आज भी नहीं आया। मैंने प्रोफ़ेसरों को कहा था, वह सबके सब कहने लगे, अब इम्तहान समीप आया है। अब अपना काल व्यर्थ न खो, और जिस तरह हो सके ऐसा काम न कर। तेरा समय अब दस पंद्रह रुपये से अधिक प्रियतम है। इत्यादि।

अस्तु, महाराजजी! मैं हर हालत में .खुश हूँ और आपने मुझ पर सर्व प्रकार से राज़ी रहना। जैसा होगा, निबाह लूँगा।

अब मैं अति शोकजनक बातें लिखने लगा हूँ कि इन छुट्टियों में मेरे दो दोस्त (मित्र) मर गये हैं। एक तो खलीलुलरहमान्; इसने इस बार बी० ए० पास किया था; दूसरा लाला शिवराम* जिससे आप भी परिचित थे और जो मेरा अत्यन्त कृपालु था। उनके वंश में अब कोई पुरुष नहीं रहा, सब विधवा हो गयी हैं। परमेश्वर अपनी दया करें। आप पत्र जरूर जल्दी लिखना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४८४) ४ बजे सायं, १६ अक्तूबर, १८६२

आपका कृपापत्र आज मिला, अत्यंत खुशी हुई। आज हमारे कालिज के शास्त्री के प्रोफ़ेसर पंडितजी ने मुझको कहा था कि अगर तुमको मंजूर

* यह लाला शिवराम वही हैं जो मिशन कालिज बोर्डिंग हाउस के सुपरिंटेंडेंट थे और जिनका वर्णन पहले भी चुका है।

(स्वीकार) हो तो भाई नंदगोपाल के हाँ एक लड़के ने मिडल का इम्तहान देना है, उसको पढ़ा आया करो। आठ रुपये मासिक मिलेंगे। वक़् डेढ़ घंटा १½ बताया। अब महाराजजी! आपने बहुत जल्दी लिखना कि मंज़ूर करूँ या न करूँ। पंडितजी को मैंने कहा था कि सोच कर जवाब दूँगा। और अपने दिल में मैंने यह इरादा (निश्चय) किया है कि अगर इस तनख्वाह (वेतन) पर घंटे से अधिक समय मांगेंगे तो नामंज़ूर करूँगा। अन्यथा मंज़ूर कर लूँगा। और यह मेरा इरादा भी बिलकुल आपकी मरज़ी के वश में है। जिस तरह आपकी राय (सम्मति) होगी, वैसा करूँगा। मेरे भाई साहबजी को कहना कि लाहौर भी आवें। सरदार रामसिंहजी को फ़तेह।

——:o:——

कालिज के पंडित वेदान्ती

संबोधन पूर्वोक्त, (४८५) २३ अक्तूबर, १८६२

मैंने पत्र तो पहले लिखना था। मगर देर इसलिये हो गयी है कि मैंने कहा कि कोई ठीक परिणाम निकल ले, तो पत्र लिखूँ। अब बात यह है कि अभी कोई पढ़ाने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) बनता दिखाई नहीं देता। आपने मुझ पर सदा ख़ुश (प्रसन्न) रहना। मैं हर हालत में ख़ुश हूँ। आगे जैसा होगा, वैसा निवेदन कर दूँगा। आपने इमारत शुरू कराई या नहीं। मेरा आपके चरणों की तरफ़ ख़्याल रहता है।

हमारे कालिज के पंडित* साहब परले दर्जे के वेदांती हैं। उनको मैंने अपना निश्चय बताया था, इसलिये मुझ पर अति प्रसन्न हैं।

——:o:——

* पंडितजी से अभिप्राय तीर्थरामजी का पंडित गणेशदत्त से हो सकता है, क्योंकि उस समय कालिज में वही पंडित थे।

संबोधन पूर्वोक्त, (४८६) ३० अक्तूबर, १८९२

बहादुरचंदवाले काम बनने की कोई आशा नहीं। मगर मैं भाई नंदगोपालजी के घर तीन चार दिन का पढ़ाने जाया करता हूँ। मैं एक घंटे में उस लड़के से सारा काम बहुत अच्छी तरह करा आया करता हूँ। यह लड़का चीफ्स कालिज में पढ़ता है। और इसने अब के मिडल का इम्तहान देना है। इसका पिता तो जीवित नहीं है, मगर इसका बड़ा भाई मुख़तार कार है। और मुझे अभी उसके बड़े भाई से मिलने का इत्तफ़ाक़ (समागम) नहीं हुआ। पंडितजी की ज़बान की बात है कि वह आठ रुपये मासिक दिया करेंगे। साथ इसके वह लड़का तो मुझे यह भी कहता था कि "तुम हमारे मकान में आन रहो।" मैंने वहाँ जा रहने या न जा रहने की बाबत कोई सलाह नहीं की। जैसा आप हुक्म (आदेश) देंगे किया जायगा। आपने सारा हाल लिखना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४८७) २ नवंबर, १८९२

आपका कृपापत्र आये बड़ी देर हो गई है। आपने इमारत कब की शुरू कराई हुई है, और आपको फ़राग़त (फ़ुरसत वा छुट्टी) कब होगी? आपकी घड़ी दो तीन दिनों तक ठीक हो जायगी। मुश्किल से बची है। क्योंकि जिस मनुष्य के पास थी, उसकी बाक़ी सब घड़ियाँ चोरी हो गई हैं। जिस व्यक्ति को मैं पढ़ाने जाता हूँ, उसका बड़ा भाई अभी मुझको नहीं मिला। आपने कृपापत्र ज़रूर जल्दी लिखना। सरदार रामसिंहजी को मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४८८) ६ नवंबर, १८९२

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप वहाँ का सारा हाल ज़रूर लिखें। आपकी घड़ी अभी नहीं बनी। दूसरी और कोई बात भी

लिखने योग्य अभी तक नहीं हुई। मैंने कल या परसों सुना था कि वह बरकतराय हाफ़िज़ाबाद का लड़का जो देवसमाज में दाख़िल हो गया था और पढ़ना छोड़ बैठा था उसको अग्निहोत्री ने भी मार कर निकाल दिया था, और अब वह मर गया हुआ है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४८६) ७ नवंबर, १८६२

आपका कृपापत्र मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। चूँकि लिफ़ाफ़ा के ऊपर पता अच्छी तरह से नहीं लिखा हुआ था, इसलिए यह कार्ड पहले किसी और को चला गया था, अब फिर बहुत जगह से फिर कर मुझको मिला है।

वह पुराना पट्टी का कोट मैं पहन कर कालिज में जाया करता हूँ। क्योंकि नया कोट बड़ा गरम है, वहाँ तकलीफ़ देता है।

जिसको मैं पढ़ाया करता हूँ, उस लड़के का बड़ा भाई (सरदार दानसिंह) मुझे आज मिला था। निहायत बड़ी (अत्यंत) मुहब्बत (प्रेम) से पेश आया। और कहता था कि "अगर आप यहाँ आ जायें तो हम दो कमरे ख़ाली कर देते हैं।" मैंने कहा कि "अच्छा, देखा जायगा।" अब जैसा आप लिखेंगे किया जायगा। यह दानसिंह गवर्नमेंट कालिज में पढ़ता है और इस बार इसने भी बी० ए० का इम्तहान देना है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६०) ११ नवंबर, १८६२

आपका एक पत्र कल सायं को मिला था। अत्यंत ख़ुशी हुई। एक पत्र सरदार रामसिंहजी के हाथों का लिखा हुआ भी मिला था। आप ठेके पर काम करवा रहे हैं या दूसरी तरह? आप कृपापत्र ज़रूर भेजते रहा करें। लाला अयोध्यादास ने १४ माह हाल (नवंबर) को जम्मू जाना है लाला गोविंदराम साहब के साथ। वहाँ राजा साहब का

कोई मुक़द्दमा है। और कहता था कि वहाँ से फ़ौरन ही वापिस चले आना है। घड़ी अभी तैयार नहीं हुई।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६१) १३ नवंबर, १८९२

इन दिनों हर शनिवार हमारे कालिज के डॉक्टर साहब इल्मे-फ़िज़िऑलोजी (शरीररचना-विज्ञान) पर एक लेक्चर दिया करते हैं। और लगभग सारे लड़के सुना करते हैं। मैं भी सुना करता हूँ। इल्मे-फ़िज़िऑलोजी में देह के अंग व इंद्रियों के कामों की बैहस (विचार) है। और यह इल्म (विद्या) जैसा कि अंग्रेज़ी किताबों में है, परले दर्जे का दिलचस्प और लाभदायक है। आपकी इमारत कब ख़तम होगी? और आप यहाँ कब आयेंगे? अब हमारे सिमाही इम्तहान शुरू होते हैं। २४ माह नवंबर तक होते रहेंगे। उस वक़्त तक तो मैं इसी मकान में रहूँगा। फिर शायद आप भी यहाँ आ जायेंगे, और आपकी सलाह के साथ उन सरदारों के मकान चला जाऊँगा। आप मुझे ज़रूर जल्दी अपना सारा हाल लिखते रहा करें। मुरलीवाले का हाल भी लिखना। सरदार रामसिंहजी को नमस्कार।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६२) १६ नवंबर, १८९२

कल से लेकर इस महीने की २५ तारीख़ तक हमारे कालिज के इम्तहान होते रहेंगे। इनमें से २१, २२ और २५ तारीख़ को मेरे लिये हुए मज़मूनों (विषयों) का इम्तहान है। बाक़ी के दिन मुझे मानों छुट्टी होगी।

आप वहाँ का सारा हाल लिखें। लाला अयोध्यादास जम्मू से हो आया है। मगर मुझे मिले हुए बड़े दिन हो गये हैं। कहता था कि आपकी घड़ी तैयार है। मगर मैंने नहीं देखी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६३) २० नवंबर, १८६२

आप मुझे कृपापत्र जरूर भेजें। सारा हाल लिखना।

आजकल हमारा सिमाही इम्तहान हो रहा है। हमारे गाँव के पढ़ानेवाले मोलवी साहब यहाँ आये हुए थे। मुझे भी मिले थे। आज चले गये हैं। और कोई बात लिखने योग्य अभी नहीं हुई। इस वक़्त दीवान लक्ष्मणदास मिला है। बड़ी ख़ुशी हुई।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६४) २४ नवंबर, १८६२

मैं आशा करता हूँ कि आपका मकान अब तैयार हो गया होगा। और आप आज या कल यहाँ आ जायेंगे। आपने देरी न लगानी। मैं इन दिनों बीमार रहा हूँ। छाती पर रेशा पड़ता था। मगर अब बहुत आराम है। आपने आती बार मास्टर चंदूलालजी साहब का "ख़ुलासा-उल-हिसाब वमय हल" ख़रीद लाना। शायद रलाराम की दुकान से मिल जाय। यह उस लड़के के लिए है। लक्ष्मणदास आया करता है।

हमारा इम्तहान कल ख़तम हो जायेगा। पंडित देवकीनंदन मिला था। उसका मकान मेरे पास ही है।

——:o:——

संबोधन-पूर्वोक्त, (४६५) २६ नवंबर, १८६२

आज आपका कृपापत्र मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। सरदार रामसिंहजी ने बड़े ख़ुशख़त हरफ़ों में लिखा हुआ था। मैं देखकर बड़ा ही ख़ुश हुआ था। लक्ष्मणदास ने भी तज़किरह (चर्चा) किया था कि सरदार रामसिंह ने आपको इमारत के काम में बहुत सहायता दी है। मेरी उनको नमस्कार कह देनी। अब मुझे बिलकुल सेहत है, और कोई हाल लिखने योग्य अभी नहीं हुआ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (४६६) ६½ बजे दिन, ३० नवंबर, १८६२

इस बार मुझे पत्र लिखने में देरी हो गई है। कारण यह था कि मैंने कहा आप मेरा पत्र वहाँ पहुँचने से पहले ही यहाँ आ जायेंगे। पर आप अभी तक आये नहीं। लाला कृष्णचंद मिला था, कहता था कि भगतजी को मेरी तरफ़ से मकान तैयार हो जाने की बहुत बड़ी मुबारकबाद लिख देनी। अगर तकलीफ़ न हो, तो मास्टर चंदूलालजी के हिसाब की किताब ले आनी।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४६७) ३ दिसंबर, १८६२

मैं आपका बड़ा ही इंतज़ार कर रहा हूँ। आप अभी तक आये क्यों नहीं ? आपने पत्र भी लिखने में बड़ी देर लगाई हुई है। वह भाई सुंदरसिंह, जिसको मैं पढ़ाया करता हूँ, आज गुजराँवाले एक बरात में गया है। मुझे पढ़ाते महीना (मास) तो हो गया है, मगर अभी तनख़्वाह (तलब) नहीं मिली। उसके बड़े भाई साहब से मिलने का इत्तफ़ाक़ नहीं हुआ। और अब वह सुंदरसिंह कहता था कि बरात से आकर रुपये दिला दूँगा। आपको अगर तकलीफ़ न हो तो आपने मास्टर साहब का "खुलासा-उल-हिसाब-बमय-हल" लेते आना। मेरा भाई गुरुदास किसी जगह गया हुआ है। मुलाक़ाते नहीं है। चाचाजी का पत्र आया था।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४६८) ६ दिसंबर, १८६२

यहाँ सब तरह से ख़ैरियत (कुशल) है और आपकी कुशल चाहता हूँ। आपको इंतज़ार है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (४६६) ७ दिसंबर, १८६२

आपका कृपापत्र भाई साहब के हाथों का लिखा हुआ मिला। अत्यंत

ख़ुशी हुई। वह किताब मास्टर चंदूलालजी की सहित हल के ज़रूर ले आनी। वह लड़का गुजराँवाला से नहीं लाया।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५००) ६ दिसंबर, १८६२

आज मासड़(मौसा)जी का हाँसी से पत्र आया है । लिखा है कि बंसीधर पहली दिसंबर को हाँसी से रवाना हुआ था और उसने पेशावर का टिकट लिया था, मगर सात दिसंबर को उन्हें तार पहुँची है कि "बंसीधर दुपहर के वक़्त मर गया है" तार भेजनेवाले का यह पता लिखा है "गुरुदित्तसिंह, गुजराँवाला।" मासड़ साहब अजब हैरानी में हैं, उन्होंने मुझे इस बात का पता लगाने के लिए लिखा है। सो पहले तो मेरा यह इरादा था कि गुजराँवाले मैं स्वयं चला आऊँ। पर अब इसलिए नहीं आया कि मेरी राय (सम्मति) में यह तार ग़लत मालूम होती है। अगर आप वहाँ तार बाबू से अच्छी तरह सुराग़ (पता) लगवाकर मुझे बहुत जल्दी लिखें या सीधा मासड़जी ही की तरफ़ सारा हाल लिख दें तो अत्यंत कृपा होगी। आपको तकलीफ़ तो होगी। मगर यह काम बहुत जल्दी करनेवाला है। आपने इस बात का पता लगाकर यहाँ ही चले आना।

लेखक, आपका नौकर।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०१) १५ दिसम्बर, १८६२

जिस दिन आप गये थे, उससे अगले दिन लाला कृष्णचंद साहब आया था, कहता था कि "मैं उनको भोजन कहने आया हूँ।" मगर आप यहाँ से चले गये हुए थे। फिर सरदार रामसिंहजी का पत्र मिला था। उसका मज़मून आपने उनसे पूछ लेना। फिर लक्ष्मणदास मेरे पास आया था, कहता था कि "मैंने अपने भाई की फ़तूही (जाकट) के जेब में से एक नोट पचास या उससे ज़्यादा रुपये का लिया है,

और चालीस के लगभग नक़द रुपये लिये हैं और सूचना कर दी है, साथ इसके आज ही चला जाऊँगा।" रात के समय लद्धामल के साथ मेरे मकान आया और कहने लगा कि अब आठ बजे की गाड़ी जाता हूँ। मैंने कहा कि प्रातःकाल तक ठहर जाओ, और लद्धामल ने भी कहा, मगर उसने एक न मानी। और एक रुपया १) आपके लिए मुझको देकर रवाना हो गया। और जल्दी में तीन किताबें (गुलज़ारे-मानी, विचार-माला, मुसद्दसे आरिफ़) भी यहाँ छोड़ गया। इसके बाद मुझको आपका पत्र मिला। फिर मैं उसके भाई को मिला। उससे मालूम हुआ कि उसके भाई ने उसे बड़ा रोका था, यहाँ तक कि उसके गरम कपड़े भी उसे नहीं दिये थे। मगर लछमणदास गरम कपड़ों के बिना ही चला गया।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०२) १७ दिसंबर, १८९२

लाला सोहनामल फिर मिला था। उससे मालूम हुआ कि लछमणदास एक सौ रुपये का नोट और चालीस रुपये नक़द ले गया है। सरदार रामसिंहजी को मेरी नमस्कार। आपने मुझे कृपापत्र ज़रूर जल्दी भेजते रहना। हमें अगले शनिवार से बड़े दिन की दस छुट्टियाँ मिलेंगी। आपने यहाँ ज़रूर आ जाना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०३) १९ दिसंबर, १८९२

लाला कृष्णचंद साहब मिले थे, कहते थे कि कल हमारे मुक़द्दमे की पेशी है। इसलिए मैं बड़ा मशगूल (प्रवृत्त) हूँ। और भगत साहब का जो एक पत्र आया था, उसका उत्तर नहीं लिख सकता। आप मेरी तरफ़ से बड़ी हलीमी (अधीनता व नम्रता) के साथ उनको लिख दो कि "अभी कोई जगह हमारे दफ़्तर में ख़ाली नहीं है। वरना (अन्यथा) मेरी तरफ़ से किसी क़िस्म (प्रकार) का दरेग़ (कमी व कसर) नहीं।

साथ इसके यह कि अगर वह (रामसिंहजी) हमारे दफ़्तर का काम जानते हों, तो उनके लिए बड़ी जल्दी कोई तजवीज़ हो सकती है। और चूँकि वह हमारे दफ़्तर का काम नहीं जानते, इसलिए उनकी बाबत किसी अफ़सर को कहने में मन ज़रा कोताही (झजक) करता है।" मेरी तरफ़ से सरदार रामसिंहजी को नमस्कार। आप कृपापत्र जल्दी भेजें बल्कि स्वयं ही आ जायें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०४) २३ दिसंबर, १८६२

न आप ही आये हैं और न आपका पत्र ही आया है। हमें आज छुट्टियाँ मिल जायेंगी। यह पत्र लिखने के बाद आपका कृपापत्र मिला। बड़ी खुशी हुई है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०५) ६ बजे रात, २६ दिसंबर, १८६२

आपका कृपापत्र आज प्रातः मिला था। मैं लाला कृष्णचंद के हाँ गया था। उनसे मालूम हुआ कि वह आपको रायसाहब के विषय पहले ही लिख चुके हैं कि वह ८ या ६ जनवरी को आयेंगे। लाला अयोध्यादास बहुत दिनों का जंडियाले गया हुआ है। आपने मकान का काम ख़तम कराते ही आ जाना।

——:o:——

तीर्थरामजी का एक सहपाठी को पढ़ाना

संबोधन पूर्वोक्त, (५०६) ३१ दिसम्बर, १८६२

मेरा बड़ा ही जी (चित्त) आपके दर्शन करने को चाहता है। चुनाँचि मैंने कल इरादा किया था कि एक रात के लिये गुजराँवाले हो ही आऊँ। मगर चूँकि सरदार सुंदरसिंह का इम्तहान नज़दीक है, उसने आने नहीं दिया, बल्कि कहता है कि कल से लेकर तीन रातें

उसी के मकान पर सोया करूँ, ताकि उसे इम्तहान के दिनों में हर तरह से दिलेरी (उत्साह) और मदद रहे। साथ इसके अब हमारी जमाअत (कक्षा) के एक * विद्यार्थी ने मुझसे गणित पढ़ना आरम्भ किया है, पर वेतन की बाबत न मैंने कोई बात कही है न उसने ही। पर वह मनुष्य बड़ा ही अच्छा है। उपकार को जाननेवाला है। आपने शीघ्र मुझे अपना हाल लिखना। आप मुझ पर दया रखनी।

—:o:—

सन् १८९३ ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में तीर्थरामजी की आयु साढ़े उन्नीस वर्ष के लगभग थी)

सहपाठी से ज़रूरतों की पूर्ति का विश्वास

संबोधन पूर्वोक्त, (५०७) ३ जनवरी, १८९३

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त ख़ुशी हुई। सरदार सुन्दरसिंह का इम्तहान थोड़े दिनों तक समाप्त हो जायेगा। जिस सहपाठी को मैं गणित पढ़ाया करता हूँ, वह मेरे पढ़ाने से अत्यंत खुश है। और कम से कम वह इतना ज़रूर दे दिया करेगा कि जिससे मेरी सारी ज़रूरतें (दूध, किराया इत्यादि) पूरी हो जायें, और चाहे कितनी पुस्तकें अपनी पढ़ाई के सम्बन्ध में ख़रीद लूँ।

साथ इसके सरदार सुंदरसिंह मुझे कहता है कि मैं उनके मकान चल रहूँ। अस्तु, जब आप यहाँ पदार्पण करेंगे, तो जैसा आप कहेंगे, किया जायेगा। मैंने आपका ज़िक्र (चर्चा) इस अपने सहपाठी से किया था। वह आपके दर्शनों की जिज्ञासा रखता है।

—:o:—

* सुना जाता है कि यह विद्यार्थी जो तीर्थरामजी का सहपाठी था, और उन दिनों उनसे पढ़ा करता था, लाला ज्वालाप्रसाद अगरवाल वैश्य था। आजकल यह लाला साहब फ़ीरोज़पुर में वकील हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (५०८) ७ जनवरी, १८६२

आपका कृपापत्र मिला। निहायत दर्जे की अर्थात् अत्यंत खुशी हुई। आज सरदार सुंदरसिंह का इम्तहान खतम हो गया है। और शायद कल से मैं उनसे बिदा हो जाऊँगा। मैं उनके मकान नहीं चला गया। और अभी वहाँ जाकर रहने का इरादा भी नहीं है। यद्यपि उनकी तरफ़ से मुझे कोई रोक नहीं। आपने मुझ पर कृपादृष्टि रखनी। मैं आशा करता हूँ कि आप अब बहुत जल्दी यहाँ पदार्पण करेंगे। अगर हो सका तो आपने ब्रजलाल को उर्दू की तीसरी किताब भेज देनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५०६) प्रातः, ६ जनवरी, १८६२

आपका कृपापत्र आज मिला, अत्यंत खुशी हुई। मैं आपका पत्र देखते ही लाला कृष्णचंद की तरफ़ गया। उनसे मालूम हुआ कि उन्हें रायसाहब का पक्के तौर पर पत्र अभी नहीं आया। मगर पत्र के बहुत जल्दी आने की इंतज़ार है। जब पत्र आयेगा, आपको लिख देंगे। अगर पत्र आपको आ गया, तो आप सरदार रामसिंहजी को साथ ही ले आना। अगर न आया तो सरदार रामसिंहजी को पहले (११ तारीख को) भेज देना। उनके मुक़द्दमे का हुक्म अभी नहीं सुनाया गया। मैं अब अपनी तरफ़ से पूछता हूँ कि अगर आप राय साहब से पहले यहाँ आ जायें तो क्या हर्ज है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५१०) ११ जनवरी, १८६२

आज राय साहब आ गये हैं। रविवार तक यहाँ रहेंगे। आप अब यहाँ ज़रूर आ जायें।

——:o:——

अपने अध्यापकों के सम्मान की चिन्ता

संबोधन पूर्वोक्त, (५११) ८ बजे रात, १९ जनवरी, १८९३

आज लाला कृष्णचंदजी मिले थे। वह कहते थे कि उनके साहब ने उन्हें आज कहा था कि उसके लड़के के लिए उस्ताद निःसंदेह मँगा दें। मगर वह उस्ताद लायक़ (योग्य) हो, जो उस लड़के को उर्दू-भाषा अँग्रेज़ी द्वारा अच्छी तरह से पढ़ा सके। कल प्रातः हमारे दाख़िले * लिये जाने हैं। मैंने तीस ३०) रुपये लाला अयोध्यादास से अब ले लिये हैं। अगर आप मेरी बाबत कहीं ज़िक्र (चर्चा) करें, तो यह ख़्याल रखना कि मेरे उस्तादों (अध्यापकों) की ओर कोई बुरा संकेत न हो जाय, बल्कि उनकी अत्यन्त भारी कीर्ति वर्णन हो। मैं उन जैसा संसार में किसी अन्य को योग्य नहीं समझता।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (५१२) २१ जनवरी, १८९३

हमारे दाख़िले भेजे गये हैं। लाला ज्वालाप्रसाद परसों का आ गया हुआ है। आज सरदार निहालसिंहजी मिले थे, अत्यंत ख़ुशी के साथ। अब रोटी मैं आज से लाला ज्वालाप्रसाद के घर खाता हूँ। पंडित देवकीप्रसाद राज़ी हैं। आपने कृपापत्र जल्दी भेजना। वहाँ के सारे हालात से सूचना देनी।

———:०:———

गणित-शास्त्र के प्रोफ़ेसर की सहायता और तीर्थरामजी की धन से उदारता का उदाहरण

संबोधन पूर्वोक्त, (५१३) २३ जनवरी, १८९३

आज आपका कृपापत्र कालिज जाते जाते मिला, अति हर्ष हुआ।

* बी० ए० की पुनः परीक्षा के दाख़िले (प्रवेश-शुल्क) से यहाँ अभिप्राय है।

जब मैं कालिज पहुँचा, तो चपरासी मुझे बुलाकर प्रोफ़ेसर गिल्बर्टसन साहब (गणित-शास्त्र के प्रोफ़ेसर) के पास ले गया। उन्होंने मुझे एक तह दर तह में बन्द काग़ज़ की पुड़ी दी। और कहा "जाओ"। उस समय घंटा बज गया और मैं उस पुड़ी को जेब में डाल कर पढ़ने में प्रवृत्त हो गया। परन्तु आज मेरे पास एक पैसा भी ख़र्च को न था, तीन घंटे के बाद मैंने अलग जाकर उस पुड़ी को खोला, उसमें तीस ३०) रुपये थे। मैं तत्काल प्रोफ़ेसर साहब के पास गया और कहा "मुझे इतने रुपये की आवश्यकता नहीं है। आप बीस रुपये वापस ले लें।" मगर उन्होंने न माना। अब आप यह पत्र देखते ही फ़ौरन यदि यहाँ आकर इनमें से बीस २०) रुपये ले जायें, तो अति कृपा हो। अगर आप उचित समझें तो इन बीस में से थोड़े से मेरी बे बे (माताजी) को भेज दें। डाक इसलिए नहीं भेजता कि अगर आप स्वयं आयेंगे, तो मिल भी तो जायेंगे। अपने पास दस १०) रुपये इस लिये रखता हूँ कि भविष्य में दो मास की फ़ीस भी देनी है। अपने और ख़र्च के लिये लाला ज्वालाप्रसाद से ले लिया करूँगा।*

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५१४) २६ जनवरी, १८९३

आपका कृपापत्र आये देर क्यों हो गई? अगर आप रविवार तक

* इस पत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि इस समय प्रोफ़ेसर गिल्बर्टसन साहब ने केवल बी० ए०. की परीक्षा के प्रवेश-शुल्क के लिये तीस रुपये दिये हैं। परन्तु तीर्थरामजी दूसरों से रुपया उधार लेकर परीक्षा का प्रवेश-शुल्क दे चुके थे और केवल दो मास की कालिज फ़ीस ही देनी अब शेष रही थी, इसलिये तीर्थरामजी ने उस कालिज फ़ीस से अधिक रुपये प्रोफ़ेसर साहब को वापस करने की प्रार्थना पुनः-पुनः की, और उनके न मानने पर फिर गुरुजी की भेंट करने को उत्सुक हुए, परन्तु अपने पास जरूरत से अधिक एक पैसा भी नहीं रखना चाहा।

न आये तो रविवार में यह बीस २०) रुपये आपको मनीआर्डर से भेज दूँगा। आप कृपापत्र तो जल्दी भेजते रहा करें। उस लाला कृष्णचंदजी-वाली बात की बाबत भी लिखना। पंडित देवकीनंदन मालूम किया चाहता है। भाई साहब का पत्र आया था कि हमारे भाई * पैदा हुआ है। बड़ी ख़ुशी हुई।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५१५) २६ जनवरी, १८९३

रुपये आज मैं नहीं भेज सका। कल भेज दूँगा। लाला ज्वालाप्रसाद ने क़बीला (कुटुंब) फ़ीरोज़पुर भेज दिया है। और मुझे कहता है कि उसके मकान आ रहूँ। वह आपको मिलने का अत्यंत शौक़ (अभिलाषा) रखता है। साथ इसके पं० देवकीनाथ आज मेरे मकान आया था, कहता था कि उस मकानवालों के साथ मेरी लड़ाई हो पड़ी है। मैं तुम्हारे मकान आया चाहता हूँ। अब आप लिखें क्या करना चाहिये। मेरा अभी तो यह इरादा है कि पंडित को कह दूँ कि मेरे मकान में आ जायें, और आप कुछ काल अपने मकान पर बिताऊँ और कुछ लाला ज्वालाप्रसाद के मकान पर। और जो काल लाला ज्वालाप्रसाद के मकान पर ख़र्च करूँ उसमें हम (दोनों) अँग्रेज़ी इकट्ठी पढ़ें। और साथ इसके थोड़ा सा समय उसे गणित पढ़ाऊँ। लाला अयोध्यादास कोयेटे चला गया है। घड़ी मेरे पास है। आठ ८) रुपये मेरी बेबे (माताजी) को भेज देना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५१६) ३ फ़रवरी, १८९३

आज अयोध्यादास का लड़का नत्थूराम आ गया है। लाला अयोध्यादास के नाम एक पत्र गुजरात से आया था, कोई हरभजराय

* तीर्थरामजी का यह सौतेला भाई है, जिसका नाम गुसाईं मोहनलाल है।

भेजनेवाले हैं। उस पत्र में आपके दर्शन की बड़ी अभिलाषा ज़ाहिर की हुई है। हम अभी उसी मकान में हैं। आपने कृपापत्र भेजते रहना और सब तरह से ख़ैरियत (कुशल) है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५१७) ६ फ़रवरी, १८९३

आज हम बोर्डिंग में नहीं गये। वीरवार जाने का विचार है। पंडित देवकीप्रसाद को कह दिया था कि वहाँ साहब को पढ़ा आया करे। आपने कृपापत्र ज़रूर जल्दी भेजते रहना। सारा हाल लिखना।

——:०:——

तीर्थरामजी को झंडूमल का अधिक ध्यान

संबोधन पूर्वोक्त, (५१८) ७ फ़रवरी, १८९३

आज हमारे प्रोफ़ेसर* साहब ने मुझे वह पुस्तक ले दी है, जो मैंने उन्हें कही थी। साथ इनके उन्होंने मुझे एक मनुष्य (लाला चंदूलाल साहब) से पढ़ने के लिये वह पुस्तक † ले दी है जो भारतवर्ष में गणित-शास्त्र के सूर्य ने लिखी है। इस पुस्तक की प्रस्तावना इंग्लैण्ड के एक गणित-शास्त्र के निपुण वेत्ता ने लिखी है। उस प्रस्तावना में हमारे देश के पुराने ज्ञान तथा कला कौशल की इतनी उपमा की है कि जिसका कोई अन्त नहीं। आप मुझे लिखते रहा करें।

अगर आपको कष्ट न हो, तो झंडूमल के लिये एक थाल बनवा छोड़ना।

——:०:——

* प्रोफ़ेसर से तात्पर्य गणित-शास्त्र के प्रोफ़ेसर गिल्बर्टसन साहब से है।

† यह पुस्तक "मैक्सिमा ऐंड मिनिमा" (Maxima and Minima) थी, जो गणित-शास्त्र के प्रसिद्ध सूर्य प्रोफ़ेसर रामचन्द्र ने लिखी थी।

लाला झंडूमल हलवाई

लाहौर १६१०



L. JHANDU MALL HALWAI

Lahore 1910

चोरी और दूसरों की हमदर्दी (सहानुभूति)

संबोधन पूर्वोक्त, (५१६) १० फ़रवरी, १२६३

आपके दोनों कृपापत्र आज मिले, अत्यंत ख़ुशी हुई। चाचाजी का पत्र भी आज मिला, बोर्डिंग में अभी तक जाने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं मिला। शायद आज चले जायें। परसों रात को गुमटी बाज़ार-वाले मकान से मेरा नुक़सान हो गया है। एक लिहाफ़ व तोशक, एक थाली, गड़वी और कौल [कटोरा] चोर जन्दरे (ताले) तोड़कर ले गये हैं। जो कपड़ों का जोड़ा धोना देने के लिये बिस्तरे में रखा हुआ था, वह भी ले गये हैं। पुस्तकें सब बच रही हैं। लाला ज्वालाप्रसाद और झंडूमल* कहते हैं कि "गुसाईंजी, किंचित् भ्रम न करो, आपकी सब ज़रूरियात (ज़रूरतें) हम पूरी करते जायेंगे। कहते हैं कि हम नये वस्त्र सिलवा देंगे।" महाराजजी! आपने भ्रम न करना। मुझ पर ख़ुश (प्रसन्न)

---

* लाला झंडूमल इसी मिशन कालिज का हलवाई था। इसने तीर्थरामजी की उनके अध्ययन काल में तन, मन, धन से सहायता की। तीर्थरामजी के आगे के पत्रों से स्पष्ट होता है कि यदि किसी ने अपना स्वार्थ छोड़कर तथा विना शारीरिक सम्बन्ध के होने पर भी केवल सहानुभूति तथा धर्म और पितृवत् प्रेम से तीर्थरामजी की (उनकी अत्यन्त निर्धन, दीन और तंग अवस्था में) सर्व प्रकार से सहायता की, तो वह यह झंडूमल हलवाई था। इसने उनको अपना मकान रहने के लिये मुफ़्त दिया। बड़े प्रेम और सहानुभूति से अपने घर पर उनको कई मास तक लगातार भोजन विना किसी प्रकार का दाम इत्यादि लिये खिलाया। जब इसका अपना मकान टूट गया, अथवा न रहा, तो तीर्थरामजी को और पुरुषों से मकान विना किराया के दिलाया और सर्व प्रकार के दुःख तथा क्लेशों के दूर करने में जहाँ तक बन सका इस प्यारे ने तीर्थरामजी की अत्यन्त सहायता की। संक्षेप से यह कि जिस चित्त, प्रेम और हित के साथ इसने तीर्थरामजी की सहायता की, वह लिखने की सीमा से बाहर है, और अति प्रशंसनीय है।

रहना। अब मैं किताबें ज्वालाप्रसाद के डेरे ले आया हूँ, और वह मकान छोड़ दिया है। आज सायंकाल बोर्डिंग में चले गये हैं।

—:o:—

अपने ग्राम का नाम मुरालीवाला से मुरारीवाला बदलना

संबोधन पूर्वोक्त, (५२०) ११ फ़रवरी, १८६३

हम कल सायंकाल से बोर्डिंग में आ गये हुए हैं। प्रातः रोटी बोर्डिंग में खाया करूँगा, और सायंकाल को झंडूमल के घर। मेरा प्रातः को रोटी बोर्डिंग में खाना भी झंडूमल ने अति कठिनता से स्वीकार किया है। रुपये और कापियाँ मुरालीवाले पहुँच गये हैं। अगर हो सका तो इम्तहान से पहले मैं आपके चरणों में आ जाऊँगा। आपने मुझ पर दया रखनी। अब से लेकर अपने ग्राम को मैं मुरालीवाला के बदले मुरारीवाला कहा करूँगा। मुरारी के अर्थ परमेश्वर के हैं।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५२१) १४ फ़रवरी, १८६३

आपका कृपापत्र मिला। अत्यंत खुशी हुई। हमें अब कालिज से छुट्टियाँ मिल गई हैं। मगर अभी वहाँ दूसरे तीसरे दिन जाना जरूर पड़ेगा। इस वीरवार को हमारे अँग्रेज़ी के प्रोफ़ेसर विल्टी साहब (जिन्होंने मुझे गुजराँवाले से वज़ीफ़ा लेने के लिए मदद दी थी) विलायत जायेंगे। २२ फ़रवरी से २८ फ़रवरी तक हमारे कालिज के इम्तहान होंगे। हमारे बड़े इम्तहान से पंद्रह दिन पहले मैं शायद गुजराँवाले हाज़िर हो सकूँगा। और वहाँ एक सप्ताह रह कर फिर लाहौर में आना पड़ेगा। आगे जिस तरह आप आज्ञा करें, उसी तरह किया जायेगा। अगर आप उचित समझें तो लाला ज्वालाप्रसाद को भी अपने साथ गुजराँवाले ले आऊँ।

—:o:—

झंडूमल से पुनः सहायता

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(५२२)　　　१८ फ़रवरी, १८६३

आप का कृपापत्र आज मिला, अत्यंत ख़ुशी हुई, हमारा अगले हफ़्ते (सप्ताह) इम्तहान होता रहेगा। उसके बाद आने की बाबत अच्छी तरह से लिख सकूँगा।

झंडूमल ने मुझे दो कुरते और एक पाजामा बनवा दिया है, और लाला ज्वालाप्रसाद के कपड़े (वस्त्र) मैं सब वर्त सकता हूँ। और सब प्रकार से कुशल है, आप मुझ पर दया रखें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(५२३)　　　२२ फ़रवरी, १८६३

आज हमारा रियाज़ी (गणित) का इम्तहान हुआ था। कल अँग्रेज़ी का है। फिर दूसरी रियाज़ी का होगा। उसके बाद मैं आपको पाँचवें दिन आने की बाबत लिखूँगा। भाई साहब का पत्र आज मिला था। आपने कृपादृष्टि रखनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(५२४)　　　२४ फ़रवरी, १८६३

कल हमारा अँग्रेज़ी का इम्तहान हुआ था। सोमवार हमारा दूसरी रियाज़ी का इम्तहान है! मैं अगर हो सका तो सोमवार रात की गाड़ी आपकी सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा। और अभी तो आपके पास अधिक दिन ठहरने का इत्तफ़ाक़ लगता मालूम नहीं होता।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(५२५)　　　२५ फ़रवरी, १८६३

हमारा इम्तहान सोमवार नहीं होगा, बल्कि मंगलवार होगा। इसलिए मैं शायद बुद्धवार प्रातः को आ सकूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५२६) ३½ बजे सिपहर, ३ मार्च, १८६३

मैं अभी डेरे नहीं गया। रेल से उतरते ही गुलाबसिंह के पास आया हूँ। इसके पास वह किताब नहीं है। बाक़ी हाल फिर लिखूँगा।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५२७) ५ मार्च, १८६३

लाला ज्वालाप्रसाद भी कल प्रातः चार बजे की गाड़ी में आ गये थे। थाल दे दिया था। वह कहते थे कि क़ीमत हम जरूर दे देंगे। मगर अभी दी नहीं।

हमारे गाँव का सुंदरदास इम्तहान मिडल में काम्याब (सफल) हो गया है। मगर सरदार सुंदरसिंह नहीं पास हुआ। उनकी जमाअत (कक्षा) के आठ लड़कों में से कोई भी पास नहीं हुआ। इस वर्ष बहुत कम लड़के पास हुए हैं। आप कृपादृष्टि रखा करें।

——:०:——

बी० ए० की आज़मायशी परीक्षा

(Test examination) का परिणाम।

संबोधन पूर्वोक्त, (५२८) ११ मार्च, १८६३

आज हमारे रोल नम्बर आ गये हैं। मेरा नम्बर ८७ है। हमारी आज़मायेशी परीक्षा का रिज़ल्ट (नतीजा) निकला है। मुझे परमेश्वर ने सर्वोपरि उत्तम रक्खा है। जितने नम्बर प्रथम दर्जे में रहने के लिये चाहियें उससे मेरे ६० अधिक हैं। अँग्रेज़ी में भी बड़ा अच्छा रहा हूँ। और एक गणित-शास्त्र के परचे में १५० में से १४८ नंबर मिले हैं। मगर मैं जानता हूँ यह सब आपकी ही कृपादृष्टि का फ़ज़ है। आपने मुझ पर दयादृष्टि रखनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५२९) १४ मार्च, १८९३

आपका एक कृपापत्र कल मिला था, और एक आज मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। लाला ज्वालाप्रसाद का मत्था टेकना। हमारा इम्तहान अगले हफ़्ते (सप्ताह) इस तरतीब (सिलसिले) से होगा:—सोमवार—अँग्रेजी। वीरवार—रियाज़ी (एक)। शुक्रवार—रियाज़ी (दूसरी)। ओरल (मुखाग्र) दूसरे सोमवार को होगा। आपने पूर्ण बेफ़िक्री (निश्चिंतता) के साथ यहाँ पदार्पण करना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५३०) १६ मार्च, १८९३

अभी तक आपका कृपापत्र कोई नहीं मिला। आप जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। आप मुझ पर दया रखा करें। मेरा हरदम आपके चरणों में ख़याल रहता है। अब शायद पत्र मैं जल्दी न भेज सकूँगा। मुझ पर आपने ख़ुश रहना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५३१) १८ मार्च, १८९३

मुझे इस बार पत्र लिखने में देरी हो गई है। आप अभी तक आये क्यों नहीं ? आप अब जल्दी पदार्पण कीजिये। मुझ पर दया रखा करें।

——:o:——

बी० ए० की पुनः वार्षिक परीक्षा

संबोधन पूर्वोक्त, (५३२) २१ मार्च, १८९३

मेरा प्रतिक्षण आपके चरणों में ध्यान रहा है, आप अभी तक नहीं आये। बड़ी चिंता लगी हुई है। परसों (गुरुवार) और अतरसों (शुक्रवार) हमारा रियाज़ी का इम्तहान है। अँग्रेजी का इम्तहान हो चुका है। महाराजजी ! यदि मेरा साठ ६०) रुपये वज़ीफ़ा (छात्र-वृत्ति) लग जाये, तो पहले तीन मास का वज़ीफा सारा ही आपने रख लेना, और जो इनआम (उपहार) मिले, वह भी आप ही का। और यों

तो आप जानते ही हैं कि मैं स्वयं सारा ही आपका हूँ। अगर मैं रियाजी के चारों परचे ही सारे के सारे कर आऊँ, तब मुझे तसल्ली होगी। अगर आपकी दया हो, तो यह बात किञ्चित् भी मुश्किल (कठिन) नहीं। लाला ज्वालाप्रसाद का मत्था टेकना। लाला ज्वालाप्रसाद आपको बड़ा याद करता है।

आपका नौकर

—:o:—

बी० ए० की वार्षिक परीक्षा के परिणाम-संबंधी एक सहपाठी का प्रेम-पत्र

(५३३) मिशन कालिज, लाहौर, १७ अप्रैल, १८६३

बाबू तीर्थराम साहब दाम अनायतहु (नित्य कृपा बनी रहे)।

मुबारकबाद (बधाई) देता हूँ, आप पंजाब भर में प्रथम रहे हैं। आपके नंबर ३१० हैं, और फ़र्स्ट डिवीज़न (प्रथम श्रेणी) में रहे हो, और आपको वैसे ही दो वज़ीफ़े भी मिलेंगे। द्वितीय लक्ष्मणदास, तृतीय ग़ुलाम सरवर और चतुर्थ टोपनराम रहे हैं। सारे लड़के (विद्यार्थी) हमारे कालिज से २१ के लगभग पास हुए हैं। और समस्त विद्यार्थी सारे पंजाब भर में ५० (पचास) के लगभग पास हुए हैं। यह दास आपको अवश्य तार द्वारा सूचना देता, मगर इस दास का अपना चित्त बहुत व्याकुल है, इसलिये क्षमा रखें। (लिखनेवाले का नाम पत्र में दर्ज नहीं)

—:o:—

सत्यं ज्ञान इत्यादि संबोधन पूर्वोक्त, (५३४) लाहौर, २६ अप्रैल, १८६३

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हुआ हूँ। बोर्डिंग में डेरा किया हुआ है। अभी कोई मकान नहीं मिला। इंट्रेंस का रिज़ल्ट (परिणाम) अभी नहीं निकला। आपने दयादृष्टि रखनी। सोमवार को पढ़ाई शुरू होगी।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५३५) २ मई, १८६३

गुजराँवाले के इंट्रेंस के इम्तहान में निम्न-लिखित नंबरोंवाले लड़के पास (उत्तीर्ण) हैं। ६३०, ६८६, ६३१, ६६२, ६८८, ६३२, ६८६, ६८५, ६६०, ६६१, ६८२, ६५७, ६७५, ६६६, ६६८, ६३३, ६५४, ६४४, ६७८, ६४१, ६४६, ६४८, ६३८, ६७३, ६५५, ६६६, ६७४, ६३७, ६८४, ६६०, ६६४, ६८३, ६७०, ६७६, ६७१, ६५६, ६४०, ६३५, ६८७, ६५२, ६६७, ६४२, ६४५ और भी पास होंगे। मगर भीड़ में कुछ पता नहीं लगा। तीर्थसिंह, द्वारिकालाल, लाभचंद्र, परशराम, हरीराम, वज़ीरचंद, तारासिंह, दूलसिंह, विधात्रासिंह, जयगोपाल, दीनानाथ, अमरसिंह, ब्रजलाल, रतनचंद, इत्यादि, इत्यादि पास हैं। रामसिंहजी की बाबत अभी कुछ पता नहीं लगा। आप फ़ौरन ही आ जायें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५३६) ६ मई, १८६३

आज यूनिवर्स्टी आफ़िस में गुरुमुखी के इम्तहानों का प्रोस्पैक्टस लेने गया था। मगर फिर मालूम हुआ कि अब प्रोस्पैक्टस अलग छपने मौक़ूफ़ हो गये हैं। जिसको ज़रूरत हो वह अढ़ाई २॥) रुपये की एक किताब (कैलेंडर) ख़रीदे। उस किताब से सब कुछ मालूम हो जायगा। आपने कृपापत्र भेजते रहना। इस जगह का पता यह है:—

"लाहौर, चौक गुमटी बाज़ार, मुत्तसिल (समीप) हवेली सरदार स्वरूपसिंह, भगत सुखदयाल के पास पहुँच कर गुसाईं तीर्थराम को मिले।" जब मुरालीवाले वह चीज़ें भेजेंगे, मुझे सूचना देनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५३७) प्रातः ६ बजे, ८ मई, १८६३

आपका कृपापत्र अभी प्राप्त हुआ। अति ख़ुशी का कारण हुआ। आपकी नसीहतों (शिक्षाओं) पर मैं अमल करूँगा। आपके आने से

पहले मुझे रेशा (ज़ुकाम) का बड़ा ज़ोर था। इसलिए वह हरीड़ें (हरड़ें) आपके हाँ पहुँचने से पहले ख़तम हो गई थीं। सरदार रामसिंहजी को फ़तेहाबाद गुरूजी को पहुँचे। आपने पत्र लिखते रहना। आज मैंने भगत हरभजराय को एक कार्ड लिख दिया है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५३८) ११ मई, १८६३

लाला लछमणदास लाहौर में आया हुआ है। मेरे पास भी प्रतिदिन एक बार ज़रूर आता है। चाचाजी ने गड़वी और गलास मुझे पहुँचा दिये हैं। आज रात को यहाँ बड़ी वर्षा हुई थी। मासड़(मौसा)जी का पत्र आया था। मेरे ऐसा पास हो जाने की बाबत अत्यंत ख़ुशी ज़ाहिर की हुई है। ज्वालाप्रसाद का पत्र भी मिला था। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। मेरे हाल पर कृपादृष्टि डाले रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५३९) १३ मई, १८६३

महाराजजी! आपका कृपापत्र आये हुए बड़ी देर हो गई है। लछमणदास को अब मेरे डेरे आये हुए तीन या चार दिन हो गये हैं। चार किताबें जो बम्बई लिखी हुई थीं, उनमें से दो छोटी सी किताबें आई हैं। जिन पर १२॥।≈) बारह रुपये तेरह आने ख़र्च आया है। यह रुपये अतरचंद कुतुबफ़रोश ने अभी तो अपनी गाँठ से दे दिये हैं। बाक़ी की दो किताबें कलकत्ते लिखी हैं। देखिये, उन पर क्या लगता है। यह सब किताबें हमने छुट्टियों से पहले पहले कालिज में पढ़नी हैं। अगर आप उचित समझें तो मैं मासड़ (मौसा) रघुनाथसिंहजी को लिख दूँ कि बीस या पचीस रुपये भेज दें। इन रुपयों में से थोड़े तो आपने अपने ख़र्च के लिए रख लेने और बाक़ी के कुतुबफ़रोश को दे देंगे। क्योंकि अक्तूबर तक जो वज़ीफ़ा मिला

करेगा, वह बड़ी मुश्किल से भी आपके और मेरे अखराजात को कफ़ायत (पूरा) नहीं करेगा। सनातनधर्म स्कूल में मुद्दत (बहुत काल) का लाला देवीदास बी० ए०, एम० ए० फ़ेल हेडमास्टर मुकर्रिर हो गया हुआ है। जवाब जल्दी लिखना। मैं आपके हुक्म (आदेश) के अनुसार चलूँगा। जो उचित हो लिख दें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(५४०)		१६ मई, १८९३

आपका कृपा पत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। क्या हेतु है? मेरा हर वक्त आपके चरणों की तरफ़ ध्यान रहता है। मैंने बाबू रघुनाथसिंह की तरफ़ उस विषय में कुछ नहीं लिखा। लक्ष्मणदास को लाला सोहनामल कहता था कि "गुसाईंजी को जो ज़रूरत हो मुझसे ले लिया करें।" आपने कृपापत्र जल्दी भेजना। और इस अँग्रेज़ी मास के अंत के लगभग यहाँ आ जाना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(५४१)		१९ मई, १८९३

आपका कृपापत्र आये कई वर्ष गुज़र गये, क्या कारण है? आप जल्दी पत्र लिखा करें। जिस जगह मैंने वह किताबें लिखी थीं, वहाँ से नहीं मिलीं। अब और जगह लिख दी हैं। सरदार रामसिंह को नमस्कार।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(५४२)		२० मई, १८९३

आपने जो लाला सोहनलाल की तरफ़ पत्र लिखा था, वह भी मिला। और उसके बाद जो आपने मेरी ओर लिखा था वह भी पहुँचा। इससे पहले केवल एक पत्र (मुद्दत हुई) आपकी तरफ़ से इस मकान के पते पर आया था। लक्ष्मणदास की आँखें आई हुई हैं। इस कालिज

में बड़ी छुट्टियाँ होती हैं। आप अब जरूर जल्दी तशरीफ़ ले आयें, (चाहे) जल्दी चले जायें। हमारे प्रोफ़ेसर साहब बड़े ख़ुशमिज़ाज (प्रसन्न प्रकृति के) हैं। भगत हरभजरायजी का एक पत्र आया था।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५४३) २२ मई, १८६३

आपने जो पत्र दस्ती भेजा था वह जयगोपालदास ने मुझको दे दिया था। मगर मैं अब सरदार तीर्थसिंह या जीवनसिंह का पता नहीं जानता, अब उनका पत्र उन्हें क्योंकर पहुँचाया जाय ? आपने जो पत्र डाक में इसके साथ भेजा था वह भी इस बार मिल गया है। आप अब यहाँ जल्दी तशरीफ़ ले आयें। अभी तक मैंने लाला सोहनलाल या मासड़ (मौसा) जी से कुछ नहीं लिया। आशा है कि वीरवार को कलकत्ते से किताबें आ जायेंगी। मासड़(मौसा)जी का पत्र आया था कि अगर कुछ थोड़ा सा रुपया चाहिये तो बेशक (निःसंदेह) मँगा लो। ध्यान आपकी तरफ़ रहता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५४४) २३ मई, १८६३

आज दीवान लछमणदास शायद आपके पास आया होगा, उससे चिट्ठीरसाँ (डाकिया) की बाबत हाल मालूम हो जायगा, आप अब ज़रूर यहाँ तशरीफ़ ले आयें।

——:o:——

गुरुजी की जरूरत और कष्ट का अधिक ख़्याल

संबोधन पूर्वोक्त, (५४५) २५ मई, १८६३

आपका पाँच रुपये का मनीआर्डर पहुँचा, मगर जिस हालत में मुझे यहाँ से रुपया मिल सकता था, आपने व्यर्थ क्यों कष्ट उठाया ? क्या आपकी जरूरतें मेरी जरूरतें नहीं हैं ? यदि आप आज्ञा दें, तो आपको

मैं लाला सोहनलाल से या मौसा से या किसी अन्य स्थान से जितने रुपये आवश्यक हों लेकर भेज दूँ। आपने यह कष्ट क्यों उठाया? मगर इसमें अपराध मेरा है कि इससे पहले मैं इस विषय में आपको लिखना भूल गया। अब आप आयेंगे कब? मनीऑर्डर के बाद आपका एक और पत्र आया। यह पत्र बालकृष्ण लाया था, और भविष्य में आशा है कि मेरा पत्र ग़बन न कर लिया करेगा। हमें छुट्टियाँ तो हैं, पर काम भी बहुत है, इसलिये अगर आप ही आ जायें तो अच्छा होगा। नहीं तो जैसा मुझे आज्ञा करो मैं वैसा करने को उद्यत हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५४६)　　　　२६ मई, १८६३

आज कलकत्ता से दो किताबों का पारसल आया था। मगर मुझे यह आशा नहीं थी कि इतनी बड़ी क़ीमत लगेगी। चुनाँचि पचीस रुपये और एक आना २५-) डाकख़ाने में जाकर देना पड़ा, तब किताबें मिलीं। ये किताबें हम आजकल कालिज में पढ़ते हैं। यह रुपये लाला सोहनलाल से लिये हैं। जलसा के बाद आपने फ़ौरन तशरीफ़ यहाँ ले आनी। आपने मुझ पर दया रखनी। ये किताबें यद्यपि दाम में बहुत बड़ी हैं, मगर दिलचस्प और लाभदायक भी हद से ज़्यादा हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(५४७)　　　　२८ मई, १८६३

आपका एक कार्ड आज प्रातः मिला था। अत्यंत ख़ुशी हुई। मैंने तो रुपये नहीं भेजे, मगर मेरा इरादा भेजने का ज़रूर था। परमेश्वर ने ख़ुद भेजे होंगे। आप मुझ पर दया रखा करें। हमारी छुट्टियाँ आज ख़तम हो गई हैं। आज मुरालीवाले से पत्र आया था।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५४८) ३० मई, १८९३

आज आपका एक पत्र मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई, जब आपके आने का हाल पढ़ा। इस सोमवार को हमारे प्रोफ़ेसर साहब ने मेरा इम्तहान लेना है। दीवान लक्ष्मणदास राज़ी ख़ुशी है। और सब तरह से आनंद है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५४९) ५ जून, १८९३

मैं कल का यहाँ आ गया हुआ हूँ। इस शनिवार को मेरा इम्तहान होगा। आप जब आयेंगे, अगर हो सका, तो आपने योगवाशिष्ठ की एक प्रति ज़रूर यहाँ ले आनी। मेरे लिए यह तकलीफ़ बरदाश्त करनी (सहनी) पड़ेगी। दीवान लक्ष्मणदास राज़ी ख़ुशी है। मोहनलाल की बाबत अगर आपको मालूम हुआ तो आपने लिखना। सरदार जीवनसिंहजी व रामसिंहजी को नमस्कार।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५५०) १० जून, १८९३

आपका कृपापत्र कल सायं को मिला था। अत्यंत ख़ुशी हुई। मैं आशा करता हूँ कि इस पत्र के वहाँ पहुँचने से पहले आप यहाँ आ जायेंगे। राज मज़दूरों से आपने यहाँ से वापिस जाने के बाद काम ले लेना। यहाँ पहले तशरीफ़ लानी। वाशिष्ठ शास्त्री (संस्कृत) अक्षरोंवाला न लाना, दूसरा लाना (अगर कष्ट न हो तो)।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५५) १२ जून, १८९३

मैं हर वक़्त हर रोज़ (प्रतिदिन) आपका इंतज़ार करता रहता हूँ। मगर आपकी तरफ़ से कभी हवा भी इधर को नहीं चली। अब कौन सी

रुकावट दरपेश है। वजीफ़ा अभी नहीं मिला। और हर तरह से कुशल है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५५२) १४ जून, १८६३

आपका कृपापत्र आज प्रातः मिला था, अत्यंत खुशी प्राप्त हुई। काम कितने दिनों तक खतम हो जायगा? अब आप बैठक का दरवाज़ा अलग बनवा रहे हैं या कुछ और? वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। और सब तरह से आनंद है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५५३) १५ जून, १८६३

कल शायद दीवान लछमणदास आपके पास पहुँच गया होगा। अगर कोई आदमी मुझे यहाँ से गुजराँवाले जाता मिले, तो मैंने उसके हाथ मोहन के लिए एक खिलौना भेजना है। लछमणदास मुझे जाती बार मिलकर नहीं गया। इसलिए उसके हाथ नहीं भेज सका। आपने शनिवार को यहाँ ज़रूर तशरीफ़ ले आनी। और वाशिष्ठ की एक जिल्द भी (अगर आपको तकलीफ़ न हुई तो) ले आनी।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५५४) १६ जून, १८६३

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत खुशी हुई। अगर आपका काम खतम हो गया हुआ है तो आप अभी तक आये क्यों नहीं? यहाँ बड़ी वर्षा हुई है। वैरोके से पत्र आया था कि "वहाँ ४ श्रावण को विवाह है, ज़रूर आना।" मगर आशा नहीं कि मैं वहाँ जा सकूँ।

—:o:—

झंडूमल की अत्यंत प्रेरणा

संबोधन पूर्वोक्त, (५५५) ६½ बजे रात, २५ जून, १८६३

कल रात लाला जयगोपालदास और मुकुंदलाल आपको देखने मेरे

मकान आये थे। मैंने बीस इक्कीस मिनट बैठाया था। आज लाला कृष्णचंदजी साहब आपकी रोटी कहने आये थे।

कल जिस समय आपको रेल पर छोड़कर मैं आया, तो उस समय झंडूमल मिला, और उसने आपको पूछा। उसका यह मंशा (विचार) था कि उसने जो अब अपना मकान (घर) ख़रीदा हुआ है, वह आपके पसंद कराये और उसमें मुझको रखे। यह मकान केवल परसों ख़ाली हुआ था। झंडूमल अत्यन्त दर्जे की प्रेरणा करता है कि मैं उसके मकान में बिना किराया देने के रहूँ। आगे जैसी आप आज्ञा देंगे वैसा ही करूँगा। यह मकान झंडूमल की अपनी गली में है, मगर पुराना है, और अधिक हवादार भी नहीं। दो छत्ता है, आपने उत्तर से शीघ्र कृपा करनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५५६) २८ जन, १८९३

आपका कृपापत्र मिला था, बड़ी ख़ुशी हुई। बाबाजी मुझे नहीं मिले। साथ इसके उनका स्थान, पता मुझे मालूम नहीं है। अन्यथा मैं स्वयं उनके पास चला जाता। मैं झंडूमल के मकान में नहीं जाऊँगा। यहाँ ख़ूब वर्षाएँ हो रही हैं। आपने दयादृष्टि रखनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५५७) १ जुलाई, १८९३

आपका कृपापत्र आये बहुत दिन हो गये हैं। आप जल्दी याद फ़रमाते रहा करें। मैं हर तरह से आनंद हूँ। थोड़े दिनों को हमारा इम्तहान है।

——:०:——

गुरुजी के लिये परमेश्वर से प्रार्थना

संबोधन पूर्वोक्त, (५५८) ५ जुलाई, १८९३

मैंने अभी परमेश्वर के आगे यह प्रार्थना की थी कि आपको भीतर

तथा बाहर सर्व प्रकार से परमानन्द रहे, कभी भा कोई कल्पना और विक्षेप दुःख न दे।

महाराजजी ! आप मुझे याद रखा करें।

——:o:——

जीविका की अन्वेषणा (तलाश)

संबोधन पूर्वोक्त, (५५६) रात, ६ जुलाई, १८६३

आज सायं को आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत ही खुशी हुई। लाला कृष्णचंदजी साहब प्रायः मिला करते हैं। बड़े खुश हैं, मगर इस वक्त मैं विशेष मिलने नहीं गया। कल अगर मिले तो मैं उनका हाल आपकी तरफ से अच्छी तरह से पूछ छोड़ूँगा और लिखूँगा। आज लाला ज्वालाप्रसाद लाहौर में पढ़ने की खातिर आया है।

आज मैंने कुछ-कुछ खबर सुनी है कि वैदिक कालिज, लाहौर का गणित-शास्त्र का प्रोफ़ेसर छुट्टी लेनी चाहता है। अगर आप परमात्मा से कहकर मुझे उसके स्थान पर अभी नियत करा दें, तो यह मेरे और आपके लिये अत्यंत खुशी की खबर होगी। शायद कल वज़ीफ़े की बाबत पिछले मास का कट कटा कर केवल चार रुपये आठ आने ४।) मुझे मिलें। आपने किसी प्रकार से कदापि तंग न रहना। जिसको मैं पढ़ाया करता हूँ, वह मुझसे अत्यंत प्रसन्न है। आप मुझे बहुत जल्दी पत्र लिखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६०) ६ जुलाई, १८६३

वैदिक कालिजवाली बात यों ही थी। अव्वल (प्रथम) तो वह जायेंगे नहीं, और अगर गये भी तो उन्हीं के कालिज का एक आदमी वहाँ काम करेगा। लाला कृष्णचंद के पास मैं कल गया था। वह कहते थे, यों तो सब तरह से आनंद है, मगर मुक़द्दमात का सिलसिला उसी तरह से जारी है। आपको मत्था टेकते थे। कल चार रुपये बारह आने

४॥।) वज़ीफ़े की बाबत मिले थे । महाराजजी ! आप मुझ पर दयादृष्टि रखा करें। और आपने किसी तरह से तंग न होना। लाला सोहनलाल यहाँ नहीं है। आप मुझे कृपापत्र ज़रूर जल्दी भेजा करें।

आपका नौकर तीर्थराम

——:o:——

प्राकृतिक दृश्य का रूप बाँधना

संबोधन पूर्वोक्त, (५६१) १० जुलाई, १८९३

यहाँ कल बड़ी वर्षा हुई थी। आज मैं कालिज से पढ़कर सैर करता हुआ डेरे (अपने घर पर) आ रहा हूँ। इस वक़्त बड़ा सुहाना समय है। जिधर देखता हूँ या जल नज़र आता है या हरियाली (सब्ज़ी)। ठंडी-ठंडी पवन हृदय को बड़ी प्रिय लगती है। आकाश में बादल कभी सूर्य को छुपा लेते हैं, कभी प्रकट कर देते हैं। नाले नालियों से पानी बड़े वेग से बह रहा है। गोलबाग के वृक्ष फलों से भरपूर (भरे पड़े) हैं। टहनियाँ झुक कर पृथिवी से आ लगी हैं। यही प्रतीत होता है कि अनार आड़ू, आम इत्यादि अभी गिरे कि गिरे। कबूतर, कव्वे और चीलें बड़ी प्रसन्नता मे वायु की सैर कर रहे हैं। वृक्षों पर पक्षी बड़े आनन्द से गायन कर रहे हैं। तरह-तरह (नाना प्रकार) के पुष्प खिले हुए यही मालूम देते हैं कि मानों मेरी बाट देखने के लिये आँखें खोले मुंतज़िर खड़े थे। पृथिवी पर हरियावल क्या है, मानों मखमल का फ़र्श बिछा है (या मानों मखमल से भूमि आच्छादित है)। सरू और सफेदा (लम्बे-लम्बे वृक्ष) अभी स्नान करके सूर्य की ओर ध्यान करके एक टाँग से (इकटंगे) खड़े हैं, मानों संध्या उपासना में मग्न हैं। आकाश की नीलता और सफ़ेदी ने अद्भुत बहार बनाई है (अथवा अद्भुत समय बाँधा है)। मेंडक वर्षा की खुशियाँ मना रहे हैं। प्रत्येक तरफ़ से खुशी के जंकारे (ह्लाद) बज रहे हैं, मानों पृथिवी और आकाश का विवाह होनेवाला है, जिसकी

सन्तान कार्तिक और मार्गशीर्ष के सतोगुणी मास होगी। इस समय मुझे आप याद आते हैं। चूँकि मैं आपको यह सब वस्तुएँ दिखा नहीं सकता, इसलिये लिख देता हूँ।

अब मैं (घर पर) आ पहुँचा हूँ। आपका पत्र मिला है, अत्यन्त ख़ुशी हुई। अब मैं अपनी पढ़ाई का काम आरम्भ करने लगा हूँ, क्योंकि परसों बुद्धवार हमारा इम्तहान * है, इति। यह पत्र चलते-चलते रास्ते में पैन्सिल से लिखा गया था, और घर पर आकर इस कार्ड पर उसकी नक़ल करता हूँ।

अपने विद्यार्थी के पास हो जाने पर ख़ुशी

संबोधन पूर्वोक्त, (५६२) ११ जुलाई, १८६३

भाई †सुन्दरसिंह जो मुझसे पढ़ा करता था और जिसने इस बार चीफ़ कालिज से मिडिल क्लास की परीक्षा दी थी और जो फ़ेल (अनुत्तीर्ण) हो गया था, उसके परचे पुनः देखे जाने से वह पास (उत्तीर्ण) हो गया है। ख़ुशी की बात है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६३) ६ बजे रात, १२ जुलाई, १८६३

आपका पत्र इस वक़्त मिला, बड़ी ख़ुशी हुई। जिस लड़के (जीयालाल) को मैं पढ़ाया करता हूँ, वह मिंटगुमरी में छुट्टियाँ गुज़ारेगा। और मुझे भी साथ रखना चाहता है। आगे जैसा आप हुक्म (आदेश) देंगे। आपकी बीमारी का बड़ा अफ़सोस (शोक) है। आपने अपनी

---

* यहाँ परीक्षा से तात्पर्य गुसाईंजी की एम्० ए० की मासिक परीक्षा से है, क्योंकि बी० ए० श्रेणी को उत्तीर्ण करने के पश्चात् वह गवर्नमेंट कालिज लाहौर की एम्० ए० श्रेणी में प्रविष्ट हो गये थे।

† भाई सुन्दरसिंह मजीठा के जमीन्दार व रईस हैं, जो उन दिनों गुसाईं तीर्थरामजी से घर पर पढ़ा करते थे।

सेहत (स्वास्थ्य) का हाल फिर अच्छी तरह से लिखना। इस सोमवार को वैरोके प्रभुदयाल की पुत्री का विवाह है, और जंज (बारात) अकालगढ़ से भाई रघुवीरदास के चाचे के घर से आनी है। प्रभुदयाल का पत्र भी आया था। अगर आपकी राय (सम्मति) में उचित हो तो मैं सोमवार सायं की गाड़ी वज़ीराबाद का टिकट ले लूँ। गुजराँवाले स्टेशन पर आपसे मिलूँ और वैरोके दो रात ठहरकर गुजराँवाले चला आऊँ। और वहाँ एक या दो रात रहकर लाहौर चला आऊँ। हमारा इम्तहान हो चुका है। आपने जवाब जल्दी भेजना। और हुक्म ज़ुमानी (दोहरे अर्थवाला) न भेजना। जैसा आप लिखेंगे, वैसा ही करूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६४) १५ जुलाई, १८६३

आपके दो कृपापत्र आज प्राप्त हुए, अत्यंत .खुशी हुई। मैंने कपड़े धोबी को धोने दिये हुए हैं। अगर उसने कपड़े वापिस दे दिये और कालिज से छुट्टी भी मिल गई, तो ज़रूर आ जाऊँगा। और टिकट मैं गुजराँवाले ही का लूँगा। यह मैंने पहले ही इरादा किया हुआ था।

——:o:——

मिस्टर बैल प्रिन्सिपल गवर्नमेंट कालिज से अकस्मात् मुलाक़ात

संबोधन पूर्वोक्त, (५६५) १०½ बजे रात, १६ जुलाई, १८६३

हाल यह है कि मैं कल सोमवार शायद आपकी सेवा में हाज़िर न हो सकूँगा। क्योंकि धोबी ने कपड़े अभी तक नहीं दिये और आशा नहीं कि कल दे। क्योंकि वह आजकल एक कारण विशेष से बड़े ग़म और अंदोह (शोक व चिंता) में फँसा हुआ है। परसों या अतरसों अगर मैं आऊँ तो आऊँ, पहले नहीं आ सकता। आज मैं दरिया (रावी) की सैर को गया था। किश्तियों (नौका) के पुल पर फिर रहा था कि मिस्टर बैल गवर्नमेंट कालिज के प्रिन्सिपल (बड़े साहब) वहाँ आ निकले।

बड़ी अच्छी तरह से मिले। कई प्रकार की बातें हुईं, मेरी ऐनक की बाबत, और इस बात की बाबत कि मैं छाता क्यों नहीं लगाता, क्योंकि उस समय बादल आया हुआ था, और छोटी-छोटी बूँदें पड़ रही थीं, इत्यादि, इत्यादि।

फिर मुझे अपनी गाड़ी में बिठा लिया और गाड़ी शहर की ओर लाये। रास्ते में मेरी पढ़ाई के विषय बात हुई। और मुझे लगभग सौ पद (शेर) अँग्रेज़ी भाषा के कण्ठस्थ थे, मैंने वह सुनाये। और गणित-शास्त्र के सम्बन्ध में कहा कि मैं इसकी प्रत्येक शाखा की कम से कम चार या पाँच पुस्तकें अवश्य पढ़ा करता हूँ। और जो अँग्रेज़ी साहित्य की पुस्तकें आजकल मैं देखता हूँ, वह मैंने बताईं। बड़े ख़ुश (प्रसन्न) हुए। फिर उन्होंने मेरे पिता माता की बाबत पूछा कि वह धनाढ्य हैं या नहीं। मैंने उत्तर दिया, नहीं। फिर उन्होंने पूछा कि मेरा विचार एम० ए० की परीक्षा के पश्चात् क्या करने का है ? मैंने उत्तर दिया कि मेरा अपना कुछ संकल्प (विचार) नहीं, जो ईश्वर-इच्छा होगी, उसी के अनुसार मैं अपना संकल्प कर लूँगा। और ऐसे यदि मेरी कोई इच्छा है तो यह है कि वह काम करूँ जिससे मैं अपने जीवन का श्वास श्वास परमात्मा की सेवा में अर्पण कर सकूँ। और परमात्मा की सेवा लोगों की सेवा करने में होती है, और लोगों की सेवा मैं सबसे अच्छी तरह गणित पढ़ाने से कर सकता हूँ, इत्यादि।

उन्होंने भी बहुत सी बातें मेरे अनुसार कीं, और यह भी कहा कि हम तुम्हारे लाभ में जितना भी हो सकेगा यत्न करेंगे। (अब यह साहब पंजाब विश्वविद्यालय के क़ायममुक़ाम रजिस्ट्रार भी हो गये हैं)।

इतने में उनकी कोठी जो कालिज के ठीक समीप है आन पहुँची। पर वह मुझे उस जगह लाये जहाँ विद्यार्थी व्यायाम किया करते हैं, और उन्होंने मुझे व्यायाम करते हुए विद्यार्थी दिखाये, फिर उन्होंने पूछा

कि "तुम किस प्रकार का व्यायाम किया करते हो ?" मैंने चारपाई वाली वर्ज़िश (व्यायाम) वर्णन करी । उन्होंने एक चारपाई (खाट) मँगवाई । मैंने एक सौ साठ (१६०) बार उसे ऊपर उठाया और नीचे रखा। फिर उन्होंने अन्य विद्यार्थियों से कहा कि चारपाई से व्यायाम करें, उनमें से कोई भी बीस से अधिक बार न कर सका। इसी तरह अन्य विद्यार्थियों का दूसरी विधि का व्यायाम देखने के पश्चात् वह सबको सलाम (नमस्कार) करके अपनी कोठी की ओर चल दिये। और मैंने किञ्चित् आगे बढ़कर कहा कि जी ! मैं आपकी कृपा का अत्यन्त अनुगृहीत (आभारी) हूँ। फिर मुझको नमस्कार (सलाम) करके अपनी कोठी में प्रविष्ट हो गये। और मैं अपने डेरे की तरफ़ चला आया।

अब महाराजजी ! यह सब आपकी कृपा का फल है। जब मैं आऊँगा, पंडित जियालालजी से मासिक वेतन ले आऊँगा। आपने मुझे अब एक कृपापत्र ज़रूर भेजना और जल्दी भेजना। मैंने आज यह भी सुना था कि राय साँझीमल साहब यहाँ आये हुए थे। और आज उन्होंने शायद चला जाना था।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६६) १० बजे रात, २३ जुलाई, १८६३

यहाँ सर्व प्रकार से आनंद है। आपके आनंद की ज़रूरत है। आप कृपादृष्टि रखा करें। कृपापत्र जल्दी भेजते रहना। यहाँ आज मुहर्रम के कारण बड़ा शोर व ग़ौग़ा (हुल्लड़) मच रहा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५६७) २६ जुलाई, १८६३

हमें परसों शायद छुट्टियाँ हो जायें। पंडित जियालाल ने इस शनिवार को मिंटगुमरी ज़रूर जाना है। वह कहता है कि वहाँ जाने पर वह मजबूर है, मगर वहाँ से आना किसी क़दर उसकी मरज़ी पर निर्भर

है। और उसने यह इक़रार किया है कि जहाँ तक बन सकेगा वह वहाँ एक मास से अधिक काल तक नहीं ठहरेगा। आगे परमेश्वर की मरज़ी। मुझे भी अब वह अपने साथ ले जायगा। वह कहता है कि वहाँ की आबो-हवा (जलवायु) अति उत्तम है। भूख बहुत लगती है। आपने मुझे कृपापत्र जल्दी भेजना। मिंटगुमरी का पता यह होगा—मुक़ाम मिंटगुमरी, पंडित शालग्राम प्लीडर को पहुँचकर गुसाईं तीर्थराम को मिले। मैंने चाचाजी की तरफ़ लिख दिया है कि वह पत्र मुझे आपके पते पर भेजा करें।

—:o:—

एक ग़रीब विद्यार्थी से सहानुभूति

संबोधन पूर्वोक्त, (५६८) १२ बजे दिन, २७ जुलाई, १८६३

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है? हमें आज कालिज से छुट्टियाँ हो गयी हैं। मिशन कालिज भी मैं आज गया था। वहाँ के साहब निहायत मेहरबानी (अत्यन्त सत्कार) से मिले। वहाँ भी आज छुट्टियाँ हो गयी हैं। आज मैं कायस्थ-बोर्डिंग हौस में गया था। वहाँ एक अति ग़रीब विद्यार्थी को देखकर (जिसने छुट्टियों में लाहौर ठहरना है) मेरे चित्त में यह ख़्याल आया कि जब मैं मिंटगुमरी जाऊँ, उस विद्यार्थी को अपने पीछे अपने मकान में छोड़ जाऊँ, और जब एक मास के पीछे मिंटगुमरी से वापस आऊँ, तब उसको कहूँ कि बोर्डिंग में चला जाय। ताकि उसको बोर्डिंग की आधी फ़ीस मासिक न देनी पड़े, और मेरा मकान ख़ाली न पड़ा रहे। आगे आप जैसी आज्ञा देंगे वैसा किया जायगा। अगर आपका उत्तर शनिवार से पहले-पहले न आया तो उस समय जैसा मुझे ख़्याल आयेगा मैं समझूँगा कि यही आपकी आज्ञा है। और तदनुसार चलूँगा, क्योंकि

शनिवार को मैंने लाला जियालाल के साथ जाना है। वहाँ से मैं जल्दी वापिस आ जाने का यत्न करूँगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५६६) ६ बजे रात, २७ जुलाई, १८६३

आपका एक कृपापत्र इस वक़्त प्राप्त हुआ। मैं उस दुकान से ही आया हूँ, जहाँ लाला कृष्णचंद्रजी बैठा करते हैं, वह वहाँ नहीं थे। मगर वहाँ से मालूम हुआ कि रायसाहब इन मुहर्रम की छुट्टियों में आये थे और इस रविवार तक यहाँ ही रहेंगे। सो अब वह यहीं हैं। कल मैं लाला कृष्णचंद्रजी को भी मिलने जाऊँगा। आपका कृपापत्र आने से पहले मैं पंडित जियालाल को बहुत कहा था कि यहाँ कुछ दिन और ठहरे, मगर वह कहता था कि एक ख़ास ख़ानगी (निजी) मुआमले के कारण उसे वहाँ शनिवार को ज़रूर चले जाना चाहिये। अस्तु। मैं अब आपकी तरफ़ से भी उसे एक बार और कह छोड़ूँगा। आगे उसकी मरज़ी। आप अगर कल यहाँ आ जायें तो सब बातों का फ़ैसला हो जाये। अगर मैं चला ही गया तो भी यह मकान आपके क़याम (ठहरने) के लिए तैयार रहेगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५७०) १० बजे रात, २८ जुलाई, १८६३

आपका कृपापत्र इस समय मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। वह जो बोर्डिंग का आदमी था, वह यहाँ अब नहीं आवेगा। क्योंकि उसकी फ़ीस वहाँ शायद मुआफ़ हो गई है। ख़ैर, मैंने इस मकान में कोई अस्बाब (सामान) नहीं रहने दिया। अगर रायबहादुर पंडित राधाकृष्णजी भी छुट्टियों में कहीं गये तो जियालाल कहता था कि वह उनके पीछे लाहौर में नहीं रह सकता। मैंने कहा था कि वह मेरे मकान पर रह सकता है। फिर उसने जवाब दिया कि इस बात को रायसाहब नागवार (नापसंद) समझेंगे। यह बातचीत आज इस विषय में हुई थी।

मगर मैं हरचंद कोशिश करूँगा कि जियालाल लाहौर में जल्दी चला आये। अगर रायसाहब कहीं गये तो वह अब से चार पाँच सप्ताह के अंदर ही अंदर वापिस चले आवेंगे। झंडूमल की औरत (स्त्री) गगरे की बाबत कहती है। कहते हैं मिंटगुमरी का जलवायु अति उत्तम है। कल प्रातः जाने का इरादा (विचार) है। आपने सर्वप्रकार से कृपादृष्टि रखनी अपने .गुलाम पर।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७१) मिंटगुमरी, ३० जुलाई, १८६३

महाराजजी! आपने .गुलाम पर किसी बात से खफ़ा (रुष्ट) न होना। यहाँ की आबोहवा (जलवायु) अच्छी है, यद्यपि गरमी पड़ती है, मगर सर्द हवा बराबर चलती रहती है। और रात को बड़ा आनंद होता है। मुझे एक अलग कमरा मिल गया है। मैं शायद पहले की तरह जल्दी पत्र अभी न भेज सकूँगा। मगर आपने कोई किसी प्रकार की और बात न समझ लेनी। आपने कृपापत्र भेजते रहना। अगर परमात्मा की मरज़ी हुई तो मैं जल्दी लाहौर आ जाऊँगा। मेरा पता यह है:—"मुक़ाम मिंटगुमरी, पंडित शालिग्राम लीडर साहब के पास पहुँचकर गुसाईं तीर्थराम को मिले।"

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७२) मिंटगुमरी, १ अगस्त, १८६३

आपका कृपापत्र कल एक मिला था। निहायत ही बड़ी (अत्यंत) .खुशी हुई। आप इसी तरह से दया करते रहा करें। यहाँ दूध एक आने का पक्के सेर से कुछ ज़्यादा मिलता है। मैं प्रतिदिन प्रातः को एक आने का दूध और डेढ़ पैसे का मीठा पिया करता हूँ। रात को वह भी कुछ दूध देते हैं। प्रातः के दूध के लिए मैंने उनसे अभी तो एक रुपया लिया है। फिर जब जरूरत पड़ेगी और ले लूँगा। उनके नौकर मेरे सब काम

करते हैं। यहाँ आठों पहर ठंडी हवा चलती रहती है। आपने गुलाम पर हर तरह से अत्यंत खुश रहना।

——:o:——

अनाहत शब्द का श्रवण

संबोधन पूर्वोक्त, (५७३) मिंटगुमरी, ४ अगस्त, १८६३

मेरा ध्यान नित्य आपके चरणकमलों में रहता है। आप दया रखा करें। हम शायद अब से सवा महीने को यहाँ से चलेंगे। २२ सितंबर को लाहौर रायसाहब (पंडित राधाकृष्ण कौल) का मकान खुलेगा। तब तक बंद रहेगा, क्योंकि वह कहीं गये हुए हैं। मगर पंडित जियालाल यहाँ से पहले इसलिए चला जायगा कि उसका इरादा सीधा लाहौर जाने का नहीं है, बल्कि सैर करना चाहता है।

यहाँ अनाहत (अनहद) शब्द बहुत सुनाई देता है, और जगह सतोगुणी है। जब छुट्टियों से पहले मैं मिशन कालिज के प्रोफ़ेसरों से मिलने गया था, तब उन्होंने मुझे कहा था कि अगले वर्ष एक लड़के (विद्यार्थी) को विलायत का वज़ीफ़ा देना है। अगर तुम जाना चाहो, तो तुम्हारा सबसे बढ़कर अधिकार है। मगर महाराजजी! मैं तो केवल आपका आज्ञाधीन हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७४) मिंटगुमरी, ६ अगस्त, १८६३

आप का कृपापत्र आज मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। सरदार मेवासिंह-जी को मैं आज मिला था। बड़े खुश थे। लाला अयोध्यादासजी को मेरा मत्था टेकना। आप विवाह पर जायेंगे कि नहीं? और भगत हरभजरायजी भी वहाँ जायेंगे या नहीं। अगर आप जायंगे तो कब जायेंगे। और सब तरह से ख़ैरियत (कुशल) है। चाचाजी का कोई पत्र आया है या नहीं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७५) मिंटगुमरी, ९ अगस्त, १८९३

मुझे इस बार पत्र लिखने में देर हो गई है। आपने मुआफ़ फ़रमाना। आपका कृपापत्र आने में भी देर हो गई है। आप वहाँ का सब हाल लिखते रहा करें। ग़ुलाम पर सब तरह से ख़ुश रहा करें। और आप भी किसी तरह का फ़िक्र और अंदेशा (शोक-चिंता) कदापि मत किया करें। सबको मेरा मत्था टेकना।

—:o:—

मिंटगुमरी में भैंस का अभाव।

संबोधन पूर्वोक्त, (५७६) मिंटगुमरी, १३ अगस्त, १८९३

आपका एक पत्र परसों मिला था, अत्यन्त हर्ष का कारण हुआ। यहाँ की एक अद्भुत बात मैं आपको लिखता हूँ कि यहाँ किसी भी मनुष्य के पास कोई भैंस नहीं है। केवल गौवों का दूध ही वर्ता जाता है। जी! आप मुझ पर सर्व प्रकार से ख़ुश रहा करें। मैं आपका दास हूँ। यहाँ मन अन्तर्मुख बड़ा रहता है। अगर ब्रजलाल ने कोई किताब आदि आपसे माँगी तो आपने ले देनी।

—:o:—

योगवासिष्ठ का अभ्यास।

संबोधन पूर्वोक्त, (५७७) मिंटगुमरी, १७ अगस्त, १८९३

आपका कृपापत्र आये देर हो गयी है, और मुझे भी पत्र लिखने में देर हो गयी है। मुआफ़ (क्षमा) करना। मैं योगवासिष्ठ बहुधा पढ़ा करता हूँ। सरदार जवाहरसिंह जो सिंह सभा पंजाब के मंत्री हैं, वही हैं जो आपके वाक़िफ़ (परिचित) थे। क्योंकि मैंने सुना है कि यह आर्य-समाज के मंत्री भी रह चुके हैं। आप ग़ुलाम पर सदा कृपादृष्टि रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५७८) मिंटगुमरी, २० अगस्त, १८६३

आपका कृपापत्र मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। मैं आशा करता हूँ कि मैं २ सितंबर को सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा। आप कृपादृष्टि रखा करें। पिछले दिनों मिंटगुमरी में स्वामी शिवगणचंद्र जी आये हुए थे। उनसे आपका भी ज़िक्र (चर्चा) किया गया था। आशा है कि वह अब किसी दिन गुजराँवाले में उतरेंगे। और आपसे भी मिलेंगे। पंडित शालिग्राम जी साहब लीडर से भी आपका ज़िक्र किया गया था। आप दया दृष्टि रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५७९) ७½ बजे सायं, २५ अगस्त, १८६३

आशा है कि मैं ३१ अगस्त (माह हाल) को यहाँ से रवाना हूँगा। और लाहौर भी एक दिन या आध दिन ठहरूँगा। फिर आपकी सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा। आपने दयादृष्टि रखनी। यहाँ आज वर्षा हुई है। मैं इस वक़्त सैर करने आया हुआ हूँ। बड़ी ठंडी हवा चल रही है। बड़ा आनंद है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८०) मिंटगुमरी, २६ अगस्त, १८६३

आपका कृपापत्र कल प्राप्त हुआ था। अत्यंत ख़ुशी हुई। पंडितजी की सलाह मैंने सैर करने की कर दी है, वह देहली और बिजनौर जायेंगे। वहाँ उनके रिश्तेदार (संबंधी) भी हैं। आशा है कि १५ या १६ मास सितंबर को लाहौर में वापिस चले आयेंगे। हम परसों वीरवार यहाँ से चलेंगे, और मैं शायद वीरवार की रात को या शुक्रवार को सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८१) मिंटगुमरी, २८ अगस्त, १८६३

आपका कृपापत्र आज मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। आशा है कि मैं

और पंडितजी १ सितंबर को यहाँ से रवाना होंगे। वह देहली आदि की ओर जायेंगें, और मैं लाहौर से होता हुआ गुजराँवाले आऊँगा। १५ या १६ सितंबर को वह लाहौर आ जायेंगे। और मैं भी आपके पास से और मुरारीवाला से होता हुआ शायद लाहौर आ जाऊँगा। आशा करता हूँ कि गुजराँवाले आठ-दस दिन ज़रूर रहूँगा। आगे परमेश्वर की मरज़ी। हाँसी से पत्र आया था कि मासड़जी (मौसाजी) १ या २ सितंबर को गुजराँवाले आयेंगे, कालिज के सब लड़कों को मेरा मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (५८२)   लाहौर, २२ सितंबर, १८९३

मैं यहाँ पूर्ण सकुशल पहुँच गया हूँ। यहाँ सब तरह से कुशल है। पंडित जियालाल मिले थे। वह इसी जगह रहेंगे। आप जल्दी पदार्पण करें। आपके पास जो अँग्रेज़ी लिफ़ाफ़ा मेरे नाम का पहुँचा है, वह आपने कृपापूर्वक फाड़कर, उसमें से पत्र निकालकर, एक नये लिफ़ाफ़े में डालकर, उसके ऊपर मेरा यहाँ का पता लिखकर फ़ौरन भेज देना। अगर उसी लिफ़ाफ़े को भेजोगे तो मुझे पूर्ण आशा है कि मार्ग में खो जायगा। यह लिफ़ाफ़ा हमारे प्रोफ़ेसरजी का है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (५८३) ६ बजे दिन, २५ सितंबर, १८९३

आपकी तरफ़ से दो पत्र आज ८ बजे मिले। प्रोफ़ेसर साहब ने अपना हाल लिखा है कि उन्होंने दिन क्योंकर काटे और वहाँ मौसम (ऋतु) कैसा है। साथ इसके वह अक्तूबर की पहली दूसरी तारीख़ को लाहौर आयेंगे, और तब मुझे मिलना चाहते हैं। राय साँझीमल साहब लाला माधोराम और कृष्णचंद्रजी सब अक्तूबर की पहली दूसरी तारीख़ तक यहाँ रहेंगे। लाला माधोराम की तबदीली लाहौर में हो गई है। राय साँझीमल साहब पहली सितंबर के लाहौर आये हुए हैं। उनकी

तबदीली हिसार से और जगह ज़रूर होनी है। मगर अभी हुक्म नहीं आया कि किस जगह। लाला कृष्णचंदजी की तबदीली लखनऊ हो गई है। वह आपको आज कल बड़ा मिलना चाहते हैं। उनको आपका कदापि कोई पत्र नहीं मिला। वरना जवाब ज़रूर भेज देते। लाला हाकिमराय आजकल पढ़ाई में प्रवृत्त है। शायद ही गुजराँवाले में आये। आप अब यहाँ ज़रूर जल्दी चले आवें। और किताबें (पोथियाँ) ख़रीद लें। लाला सोहनामल मिला था। कहता था कि जब कहोगे रुपये दे दूँगा।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८४) ५ अक्तूबर, १८९३

आप अपना हाल अच्छी तरह से लिखें। अब पाँव का क्या हाल है ? और यों सेहत (स्वास्थ्य) कैसी है ? आज लाला कृष्णचंदजी आपको देखने आये थे। यहाँ सब तरह से आनंद है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८५) ७ अक्तूबर, १८९३

महाराजजी ! आपकी तरफ़ से कोई कृपापत्र नहीं प्राप्त हुआ। अब आपकी सेहत (स्वास्थ्य) कैसी है। आप बहुत जल्दी सूचित फ़रमावें। कल मुरारीवाले से पत्र आया था जिससे यह मालूम होता था कि चाचाजी की सेहत अच्छी नहीं है। और बेबे (माता) जी चाहती हैं कि मैं पेशावर को जाकर उनको मुरारीवाले में ले आऊँ। अस्तु, मैंने कल फिर मुरारीवाले पत्र लिखा था कि सारा हाल स्पष्ट रीति से लिखो। उसका जवाब आने पर देखा जायगा, आपने भी (अगर हो सका) तो मालूम करना कि क्या बात है। भाई साहब चाचाजी से बहुत परे के मुलक में गया हुआ है। मुझे किसी तरह तकलीफ़ नहीं है, जैसा आप हुक्म (आदेश) करेंगे वैसा करूँगा। आपने अपना हाल बहुत जल्दी लिखना। मेरा ख्याल आपकी तरफ़ रहता है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५८६)　　६ अक्तूबर, १८९३

आपके दो कार्ड मिले। एक से आपकी बीमारी का हाल पढ़कर बड़ा रंज हुआ। आशा है कि पेशावर को तो मैं नहीं जाऊँगा, मगर मुरारीवाला से कोई जवाब मेरे पत्र का नहीं आया, और न चाचाजी की तरफ़ से कोई पत्र आया है। इसलिये दिल ज़रा तशवीश (शोक, चिंता) में है, और सब तरह से आनंद है। विलायत से किताबें अभी तक नहीं आईं। आपने अपना हाल ज़रूर बहुत जल्दी लिखना। आपका पाँव कैसा है। आप दयादृष्टि रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५८७)　　१२ अक्तूबर, १८९३

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। आपके पाँव को आराम आया पढ़कर खुशी दोबाला (द्विगुणी) हुई। मुरारीवाला से कोई पत्र अभी तक नहीं आया। अभी विलायत से किताबें भी नहीं आईं। झंडूमल के घर जो किताबें रखी हुई थीं वह वहाँ बड़ी खराब हो चली थीं। आज उनको इस मकान में अपने पास ले आया हूँ। यहाँ उनको जब खोला तो उनमें से सैकड़ों कीड़े बड़े-बड़े लाल रंग के निकले। मैं राज़ी हूँ। आप दयादृष्टि रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(५८८)　　१४ अक्तूबर, १८९३

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। मेरी किताबें आज विलायत से लाला अतरचंद की दुकान पर आ गई हैं। परसों या अतरसों मिलेंगी। कारण यह है कि उसके पास कोई चार या पाँच हज़ार रुपये की सब किताबें आई हैं। और उन सबको छान बीन करने और क़ीमत लगाने पर उनके दो तीन दिन लग जायेंगे, और उसके बाद वह मेरी किताबें मुझको दे सकेंगे। मैं आशा करता हूँ कि मैं शायद

बुद्धवार एक या दो दिन के वास्ते आपकी सेवा में हाज़िर हूँगा और मुरारीवाला भी जाऊँगा। अब से आठवें दिन शनिवार हमारा कालिज खुलना है। आपने ग़ुलाम पर दयादृष्टि रखनी। मुरारीवाले से कोई पत्र नहीं आया। योगवासिष्ठ मेरे पास है, अगर हो सका तो मैं साथ ले आऊँगा। साईं लोक का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५८९) ९ बजे रात, १५ अक्तूबर, १८९३

आज मैं रेशा (ज़ुकाम) के कारण बड़ा तंग रहा हूँ। अभी आराम नहीं आया। मैं आशा करता हूँ कि परसों मंगलवार मैं सुबह (प्रातः) की गाड़ी से सेवा में हाज़िर हूँगा। आगे देखिये। आशा है किताबें कल मिल जायँगी। आज मैंने किताबें देखी थीं। दो किताबों से अतिरिक्त बाक़ी सब किताबें जो लिखी थीं वह आ गई हैं। इन पर कोई एक सौ तीस १३०) रुपये लगे हैं। और पैंतीस ३५) रुपये के लगभग उनके अगले (पहले के) देने हैं। भविष्य में भी और किताबों की ज़रूरत पड़ती रहा करेगी। कल मिशन कालिज खुलना है। मैं शायद वहाँ मिलने जाऊँगा। आप ग़ुलाम पर हर तरह ख़ुश रहना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५९०) २१ अक्तूबर, १८९३

यहाँ सब प्रकार से आनंद है। आपने अपना हाल जल्दी लिखना और जल्दी तशरीफ़ ले आना। मैं कालिज गया था। सब तरह से आनंद है, और कोई बात अभी लिखने योग्य नहीं है। आज से लेकर मैंने पंडितजी के मकान पर सात बजे जाया करना है। इसलिए आप जब यहाँ आयें तो गुजराँवाला से सायं की गाड़ी से सवार न हुआ करना, क्योंकि उस तरह आपके यहाँ आने के वक़्त को मैं मकान पर मौजूद

नहीं हो सका करूँगा। वहाँ सात बजे का जाना उन्होंने स्वयं मुझे कहा था, मैंने नहीं कहा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५९१) ११½ बजे दिन, २३ अक्तूबर, १८९३

जब का मैं आया हूँ, बड़ा तंग रहा हूँ। बदन (शरीर) बड़ा ही दुर्बल हो गया है। थोड़ा-थोड़ा तपः (ज्वर) भी हो जाता है। और देह पर खुजली भी बराबर जारी है। और जुकाम अभी हटा नहीं। कालिज गया था, बड़ी मुश्किल से वापिस आया हूँ। यह पत्र लेट कर लिखा है, बहुत देर बैठ भी नहीं सकता। इन दिनों मैंने दूध जरा भी नहीं पिया। इति; मैंने बस्ते (खिड़कियों के द्वार) भी मकान के बंद कर दिए हुए हैं और गरम कपड़ा भी ऊपर लेता हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५९२) ११ बजे रात, ६ नवंबर, १८९३

आपका न तो कोई कृपापत्र प्राप्त हुआ है और न आप ही आये हैं। क्या कारण है ? इन दिनों मैं आपका बड़ा इंतज़ार करता रहा हूँ। मगर आप पधारे नहीं। अगर आप यहाँ चरण डालने की तकलीफ़ उठावें तो अत्यंत कृपा है। ग़ुलाम पर किसी तरह से ख़फ़ा (रुष्ट) न होना और ग़ुलाम को याद से न भुलाना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५९३) १०¾ बजे दिन, ७ नवंबर, १८९३

आपका कृपापत्र इस वक़्त मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। मैं आशा करता हूँ कि मैं इस शुक्र या शनिवार को वहाँ हाज़िर हूँगा। अगर हो सका तो मैं आपका थरमामीटर ले आऊँगा। बाक़ी कुशल है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (५९४) १३ नवंबर, १८९३

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हूँ। आपने वहाँ का हाल लिखते

रहना। रायसाहब ने वह कोठी बदल दी है। मगर यह दूसरी कोठी भी पहली के पास ही है। और कोई बात लिखने के योग्य नहीं।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५६५) १७ नवंबर, १८६३

आपकी तरफ़ से कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। वैराग्यशतक सहित बाक़ी के शतकों के अभी मैंने ख़रीदा नहीं। जब रुपये मिलेंगे फ़ौरन् ख़रीद लूँगा। और सब तरह से कुशल है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५६६) १८, नवंबर, १८६३

आपका एक कृपापत्र डेरे पर मिला था। अत्यंत ख़ुशी हुई। मैं आपकी आज्ञानुसार अमल करूँगा, और तंग कुरते के नीचे और कुरता रखूँगा, जो जल्दी बदल दिया करूँगा। अगर इत्तफाक़ (अवसर) हुआ तो किसी के हाथ वैराग्यशतक भेज दूँगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५६७) २१ नवंबर, १८६३

आपका कृपापत्र आज मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। कल मामा हरनामदास माड़ी ठाकुराँवाली का यहाँ आया था, आँखें बनवाने के लिये। आज वह वापिस चले गये हैं। कारण यह था कि उनकी आँख दो मास को ठीक बनाने के योग्य होगी। अभी कच्ची थी। आपने अगले मास के शुरू में यहाँ एक दो दिन के लिए चले आना। अत्यंत दया होगी।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (५६८) २३ नवंबर, १८६०

आपका कृपापत्र कल कालिज में मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। मुझे ख़ुर्क (ख़ारिश) अभी है। पर और सब तरह से सेहत (नीरोगता)

है। कल के स्वामी शिवगणचन्द्रजी यहाँ आये हुए हैं। लाला लक्ष्मी-नारायण बैरिस्टर की कोठी पर उतरे हुए हैं। आपको बहुत ही ज्यादा याद करते हैं। पिछले दिनों में उन्होंने भरतरी के तीनों शतकों का अनुवाद सहित व्याख्या के उर्दू में किया है, और वह स्यालकोट में किसी जिज्ञासु के पास भेजा है। वह शायद छपवा दे। आपको वह ज़रूर मिलना चाहते हैं। केवल सत्संग की ख़ातिर। आप यहाँ कब आयेंगे ? स्वामीजी यहाँ बहुत दिन ठहरेंगे। आप दास पर दयादृष्टि रखा करें।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (५९९) ९ बजे दिन, २५ नवंबर, १८९३

आपके दो कृपापत्र मिले थे। अति ख़ुशी का कारण हुए। कल मैं आपके आने का बड़ा इंतज़ार करता रहा। मगर आप आये नहीं। अब आपने बहुत जल्दी यहाँ पधारना। आप जब आयेंगे, अपनी मरज़ी के अनुसार सब किताबें पसंद करके ख़रीद लेनी। आज कल आर्य्यसमाज के दो सालाना जलसे हैं। स्वामी शिवगणचंद्रजी कल नहीं मिले।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (६००) १ दिसंबर, १८९३

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था, अत्यंत ख़ुशी व प्रसन्नता का कारण हुआ। आप जल्दी पधारें। बाक़ी सर्व प्रकार से कुशल है। इन दिनों अगर मैं तीन बजे के लगभग सैर करने जाऊँगा तो चाबी नीचे ख़ताई (बनाने) वाले को दे जाया करूँगा।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (६०१) ६ दिसंबर, १८९३

स्वामीजी मिले थे। मुझे कहने लगे कि "तुमने हमें भगतजी के जाने से पहले सूचना क्यों नहीं दी ? वरना हम उनसे और बातें करते और

उनके साथ छोड़ने स्टेशन पर जाते।" साथ इसके कहते थे कि "हमें एक जरूरी काम था। अन्यथा हम खुद बख़ुद (स्वयं आप) वहाँ आते।" वज़ीफ़ा शायद कल मिले। मैं साहनलाल को दे दूँगा।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०२) ६ दिसंबर, १८९३

परसों का मुझे तप (ज्वर) आता है। आज सारा दिन चारपाई से पैर नीचे नहीं धरा। आज सायं के आठ बजे तप उतरा है। मैं कहीं बाहर इत्यादि नहीं जा सका। आज आठ बजे सायं के बाद कुनैन खाई थी। जिसके कारण देह में शक्ति आई है और पत्र लिखने के योग्य हुआ हूँ। मुझे तप के साथ खाँसी भी है। कारण यह मालूम होता है कि मैंने नीबू आचारी थोड़ा सा खाया था, और वरज़िश (व्यायाम) नहीं की थी। लक्ष्मणदास कभी-कभी यहाँ आता है। मगर वह ऐसा आदमी नहीं है जिससे कोई चंदाँ (कुछ) लाभ उठा सकें। अब आपने यहाँ आने की तकलीफ़ बिलकुल न उठानी। अब मुझे सेहत आ जायगी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०३) १५ दिसंबर, १८९३

प्रेमनाथ मिला था। मगर अभी उसने शुरू करने का दिन नियत नहीं किया। पंडितजी की तरफ़ जाने का वक़्त बदला दिया है। मैं आशा करता हूँ कि मैं रविवार को सेवा में उपस्थित हो सकूँगा। अब मुझे आगे से बहुत आराम है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०४) २१ दिसंबर, १८९३

कल लक्ष्मणदास का पत्र मिला था, कुछ मुश्किल के साथ पढ़ा गया। उसकी नक़ल यह है:—"जनाब मेहरबान गुसाईं तीर्थराम साहब जी! मत्था टेकना के बाद विदित हो। इस जगह कुशल है और आपकी कुशल

सदैव उत्तम चाहता हूँ। यह बंदा (दास) पूर्ण कुशलतापूर्वक लाहौर से रवाना होकर मुक़ाम पनीरबंद में पहुँच गया। मुझे किसी क़िस्म की तंगी नहीं है। मैं यहाँ राज़ी-ख़ुशी हूँ। लाला गुरुदास साहब मुझे मिले थे। कहते थे कि हमने लाला अयोध्यादास की तरफ़ पत्र लिख दिया है। मैं सरदार साहब के पास हूँ। साथ इसके काम अभी पठानों का टंडल में शुरू हुआ है। और काम शायद कब शुरू होंगे। पुनः प्रणाम। बंदा लक्ष्मणदास, मुक़ाम पनीरबंद।"

मैंने अभी कोई जवाब नहीं लिखा। लाला सोहनलाल का घर मैं नहीं जानता। और यों मिलने का इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं हुआ। इसलिए उनको यह पत्र नहीं दिखाया। लाला अयोध्यादास यहाँ नहीं हैं। आप अगर इन दिनों यहाँ आ जायें तो अति कृपा हो।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०५) ११ बजे रात, २२ दिसंबर, १८९३

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हूँ। वह अँगीठी रेल ही में टूट गई थी। आप ने चाचाजी का हाल सविस्तर बहुत जल्दी लिखना। खड़कचंद को बंदगी।

——:o:——

दादाभाई नौरोजी का आगमन

संबोधन पूर्वोक्त, (६०६) ८ बजे रात, २५ दिसंबर, १८९३

आपका कृपापत्र कोई न मिला, चाचाजी का हाल आपने नहीं लिखा। आज यहाँ दादाभाई नौरोजी (जो भारतवर्ष का मनुष्य पारलीमैंट का मैम्बर है) तीन बजे की गाड़ी में आया है। इतने ठाठबाट (आडम्बर) के साथ उसका स्वागत किया गया है कि जिसका कुछ अन्त नहीं। कांग्रेसवालों ने मानो उसको ब्रह्मा और विष्णु की पदवी दे दी है। कई सुनहरी दरवाज़े बनाये गये हैं। उसकी गाड़ी शहर (नगर) में

अभी तक फिरा रहे हैं। लाखों मनुष्य साथ जा रहे हैं। उसके चारों ओर (इर्द-गिर्द) दीपमाला है। और बड़े ज़ोर के जंकारे (उच्चह्लाद) बज रहे हैं। साधारण लोगों के चित्तों में अत्यन्त जोश आ रहा है। इतना जोश कि जिसका कुछ ठिकाना नहीं। मगर मेरे दिल (चित्त) पर इन सब बातों से किञ्चित् मात्र प्रभाव (असर) नहीं हुआ। यह बड़े शुकर (धन्यवाद) की बात है। आज लाला कृष्णचंदजी मिले थे। राय साहब यहाँ नहीं हैं।

——:०:——

गुरुजी का क्रोध और तीर्थरामजी की क्षमा-याचना

संबोधन पूर्वोक्त, (६०७) ६ बजे सायं, २६ दिसंबर, १८६३

गर कुशी वर जुर्म बख़शी, दस्तो सर बर आस्तानम।
बन्दः रा फ़रमां चेः बाशद, हरचेः फ़रमाई बर आनम ॥

(गुलिस्तान सादी)

(अर्थः—चाहे आप मारें चाहे क्षमा करें, मेरा सिर और हाथ दोनों आपकी देहली अर्थात् दैहलीज़ पर हैं। दास का आदेश क्या हो सकता है, जैसी आप आज्ञा दें वैसा मैं बर्तावों में लाऊँ।)

महाराजजी! जब आपका पत्र मुझे मिला, अत्यन्त खुशी हुई। मगर (पत्र) पढ़कर चित्त अति शोकातुर हुआ, क्योंकि आप दास पर ख़फ़ा (रुष्ट) हैं। आप अब क्षमा करियेगा, क्योंकि मेरे जैसे ना तजुरुबेकार (अनुभवहीन) से भूल चक बहुधा हो जाती हैं। "मनुष्य गिर-गिर कर सवार होता है," और कई बार बड़े स्याने (बुद्धिमान्) भी चूक जाते हैं। "तारू (तैराक) डूबते आये हैं"। आप अब यहाँ कब पधारेंगे? जब तक आपका ख़ुशी का पत्र या आप स्वयं यहाँ न आयेंगे, मुझे बड़ी चिन्ता रहेगी। मुझे मालूम है कि इन दिनों आपको तंगी होगी, इसलिये यदि

आप आज्ञा दें तो मैं यहाँ से कुछ अर्ज़ करूँ* अर्थात् सेवा में कुछ भेजूँ। आपने दास पर किसी प्रकार से रुष्ट न होना। इस वर्ष मैंने ऐसी एक भी पुस्तक नहीं ख़रीदी जो मेरी वार्षिक परीक्षा में उपयोगी न हो। पहले यह स्वभाव मुझे था, पर अब आपकी दया से दूर हो गया है। ख़र्च मुझसे निःसन्देह बहुत अधिक हो जाता है, और मैं प्रयत्न कर रहा हूँ कि कम हो। वह ख़र्च दूध इत्यादि में होता है। मैं जब कांग्रेस का उत्सव देखने गया था, तो इस उद्देश्य से गया था कि वहाँ जो बङ्गाल, मदरास, बम्बई, मध्य प्रान्त, दक्षिण इत्यादि के अव्वल दर्जे के वक्ता (Lecturers) आये हुए हैं, उनके व्याख्यान की विधि आदि देखूँ। नौरोजी के आने के दिन मैंने इस बात का धन्यवाद किया था कि लोगों को जोश-ख़रोश (उत्साह) में देख कर मुझे जोश नहीं आया; सो अब भी मैं आपके चरणों को धन्यवाद देता हूँ कि इन सब बोलनेवालों (वक्ताओं) को सुन कर मुझे जोश न आया।

——:o:——

सन् १८९४ ई०

(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईंजी की आयु लगभग साढ़े बीस वर्ष के थी और इसी वर्ष उन्होंने एम० ए० में पढ़ना आरंभ किया था।)

संबोधन पूर्वोक्त, (६०८) १ जनवरी, १८९४

आपका कोई कृपापत्र उस गुस्से के (रोष भरे) पत्र के बाद प्राप्त नहीं हुआ। मेरा मन यह कहता है कि आप मुझ पर किसी तरह से ख़फ़ा (रुष्ट) नहीं हैं। पर आपने मुझे कृपापत्र क्यों नहीं लिखा। अब आपने दो तीन दिनों तक यहाँ ज़रूर पधारना। आपके आदेशानुसार अब मैं

* गुरुजी की भेंट में जब कुछ रुपये भेजना हो, तो उसे "अर्ज़ करूँ" का संकेत तीर्थरामजी ने बना रखा था, उसी संकेत को यहाँ उन्होंने वर्ता है।

प्रातः के समय ही पंडितजी की तरफ़ से हो आता हूँ। यहाँ कल से वर्षा हो रही है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०६) ३ जनवरी, १८६४

कल आपका एक कृपापत्र मिला था। अत्यंत ख़ुशी का कारण हुआ। मैं आशा करता हूँ कि कल वीरवार सायं से लेकर मैं प्रेमनाथ की तरफ़ जाया करूँगा, वह मुझे केवल कल ही मिला था। इतनी मुद्दत (देर तक) आपने यहाँ नहीं पधारे। आपने जल्दी आना। हमारी कान्वोकेशन का जलसा १५ माह हाल (जनवरी) को है। हाँसी से एक आदमी आया था। उसके हाथ मासड़ (मौसा) जी ने मुझे कोई बारह सेर घी अत्यंत शुद्ध भेजा है खाने के लिए। इसमें से आपने भी ले जाना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६१०) ६ जनवरी, १८६४

महाराजजी! आप अभी तक यहाँ तशरीफ़ क्यों नहीं लाये? अब बहुत जल्दी पदार्पण कीजियेगा। इस महीने मुझे कोई वज़ीफ़ा अभी तक नहीं मिला। मेरी बहन के हाँ लड़का पैदा हुआ है। प्रेमनाथ के पिता को भी रियाज़ी (गणित शास्त्र) का शौक़ है। दोनों मेरे से अत्यंत ख़ुश (प्रसन्न) हुए हैं। बहुत ही राज़ी हुए हैं। यह सब आपके चरणों की दया है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६११) ८ जनवरी, १८६४

कान्वोकेशन का जलसा १५ माह हाल (जनवरी) के स्थान पर २२ जनवरी को होगा। आपका कृपापत्र इस पत्र लिख चुकने के बाद मिला है, अत्यंत ख़ुशी का कारण हुआ है। आप दास पर सदैव राज़ी रहा करें। रावलपिंडी में एक आर्ट्स कालिज खुला है। वहाँ एक प्रोफ़ेसर रियाज़ी

की जरूरत होगी। मेरे एक दोस्त (मित्र) लाला गिरिजाप्रसाद बी० ए० का वहाँ से पत्र आया है कि वह मेरे लिए अत्यंत कोशिश करेगा। महाराजजी ! आपने हर तरह से ख़ुश रहना।

——:o:——

गौन (Gown) की चिन्ता

संबोधन पूर्वोक्त, (६१२) १० जनवरी, १८६४

आपके दो पत्र मिले, एक ७ जनवरी का लिखा हुआ, दूसरा ८ जनवरी का लिखा हुआ। आप ख़र्च की कुछ परवाह न करें, कोई डर नहीं। परमेश्वर दया करेगा। आप मुझे बहुत जल्दी लिखें कि मैं वह चोग़ा (गौन) इत्यादि बनवाऊँ या किसी से उधार माँगने का यत्न करूँ। मैंने एक दो से अब तक उधार माँगा है, उन्होंने इनकार किया है। इस वर्ष से पहले एक मनुष्य (दर्ज़ी) यूनीवर्सिटी से ठेका ले लिया करता था और उससे बने बनाए चोग़े (गौन) मिल सकते थे। इस बार उसने ठेका नहीं लिया। आप बनवाने में बीस रुपये के लगभग ख़र्च होते हैं। अगर (विश्वविद्यालय के वार्षिक) उत्सव के निकटस्थ समय पर बनवाया जायगा तो ख़र्च अधिक पड़ेगा। क्योंकि उस प्रकार का गौन (चोग़ा) बनानेवाले उस्ताद (कारीगर) लाहौर में एक या दो से अधिक नहीं। और उन दिनों उनको काम बहुत विशेष होगा और मज़दूरी बहुत माँगेंगे। इस बार मुझसे भी ख़र्च बहुत अधिक हुआ है, मगर भविष्य में आप देखेंगे कि मेरा ख़र्च दूध इत्यादि पर बहुत कम हुआ करेगा। मुझे आज छोटा वज़ीफ़ा फ़ीस काटकर मिला है। २२ जनवरी सोमवार को जलसा है। अपनी बहन के विषय में मुझे कल ही मालूम हो गया था। (उसकी मृत्यु से) जो मुझे शोक हुआ है उसका न लिखना अच्छा है। मैं बड़ा ही रोया हूँ। मेरी उसके साथ अत्यन्त मुहब्बत (प्रीति) थी।

——:o:——

एक प्रोफ़ेसर साहब का अपना गौन देने के लिये तैयार होना

संबोधन पूर्वोक्त, (६१३) १३ जनवरी, १८६४

आज लक्ष्मणदास* मिला है, चोगा (गौन) किसी लड़के से हाथ नहीं लगा, क्योंकि बहुतों ने तो बनवाया ही नहीं हुआ, और जिन्होंने बनवाया हुआ है, उनसे औरों ने पहले ही से माँग रखा हुआ है। अगर हो सके तो आपने हाकमराय † से चाहिल ‡ संदेशा भेजकर उसका गौन गुजराँवाले से मँगा लेना, और वहाँ से जब यहाँ पधारो तो साथ लेते आना। नहीं तो मेरे प्रोफ़ेसर साहब ने फ़रमाया था कि "तुमने गौन तो मेरा ले लेना, परन्तु वह गौन विलायत का है और उसमें तथा यहाँ के गौन इत्यादि में थोड़ा सा अंतर (फ़र्क़) है। वह फ़र्क़ दुरुस्त करवाने पर तुम्हारे चार पाँच रुपये खर्च होंगे, क्योंकि एक हुड (झब्बा) तुमको नया बनवाना पड़ेगा"। यह तब्दीली उनके गौन में जलने से एक दिन पहले भी करवा सकते हैं। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था। महाराजजी! आप दयादृष्टि रखा करें।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६१४) १५ जनवरी, १८६४

आप किस दिन पधारेंगे? स्वामी शिवगणचंद्रजी, जब का मैं यहाँ

---

* लाला लक्ष्मणदास चाहिल कुहना के रहनेवाले थे। गुसाईं तीर्थरामजी के साथ उनकी बड़ी प्रीति थी। उनके एक बड़े भ्राता लाला सोहनलाल हैं जो कई वर्षों से लाहौर रहते हैं। उन्होंने तीर्थरामजी को समय-समय पर धन से सहायता दी, और अपने पुत्र लाला बालमुकुन्द को विद्यार्थी उन (तीर्थरामजी) के सुपुर्द कर रखा था। आजकल यह लाला बालमुकुन्दजी किसी प्रान्त में असिस्टैंट इञ्जीनियर के पद पर नियुक्त हैं।

† लाला हाकिमराय भी लाला लक्ष्मणदास के सम्बन्धी हैं

‡ यह ग्राम ज़िला गुजराँवाले में है

गोस्वामी तीर्थराम एम्० ए०

लाहौर (यूनिवर्सिटी गौन) १८९६



GOSWAMI TIRTHA RAMA M. A.

(in University Gown)

Lahore 1896

आया हूँ, यहाँ नहीं थे। कहीं गये हुए थे। सुना है अब आये हुए हैं। आप ने जल्दी पधारना। गुलाम पर हर तरह से खुश रहना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६१५) १० बजे रात, २४ जनवरी, १८६४

आपने जन्मपत्री की बाबत लिखना। चाचाजी की बाबत भी आपने लिखना। आप कृपादृष्टि रखा करें। मैं बड़ा अफ़सोस (शोक) करता हूँ कि आज मैं लक्ष्मणदास के हाथ लाला भगवानदासजी का वह पुराना कपड़ा नहीं भेज सका। राय साँझीमल साहब आये हुए हैं। वह नई जुराबें मैंने बोर्डिंग से लाकर वापिस दे दी थीं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६१६)　　　　२७ जनवरी, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। जन्मपत्री की अत्यंत जल्दी नहीं है। प्रीति के साथ बनवानी। आप गुलाम पर कृपादृष्टि रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६१७)　　　　३१ जनवरी, १८६४

महाराजजी ! यहाँ सब तरह से कुशल है, आपकी कुशल चाहता हूँ। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। मैंने इस रविवार दुपहर से पहले गवर्नमेंट कालिज के बड़े साहब को मिलने जाना है। अभी तक इसलिए नहीं गया कि उनको काम बहुत था। अब उन्होंने कहा था कि इस रविवार को आना। आप कृपादृष्टि रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६१८)　　　　रात, ३ फ़रवरी, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था। अत्यंत खुशी का कारण हुआ। कल मैं आपको एक और प्रार्थनापत्र भेजूँगा। लाला करमचंदजी को खुशी।

——:०:——

गवर्नमेंट कालिज के प्रिन्सिपल साहब की सहानुभूति व कृपा

संबोधन पूर्वोक्त, (६१९) ४ फ़रवरी, १८९४

आज मैं गवर्नमेंट कालिज के बड़े साहबजी* को मिलने गया था, उन्होंने मुझे एक पुस्तक उपहार की रीति से दी है, और वह कहते हैं कि "तुम्हारे उधर (विलायत) भेजने के लिये अगर हमें आकाश और पाताल भी मिलाना पड़ जाये, तो किञ्चित् संकोच (झजक) न करेंगे" इत्यादि। अब मैं कल परसों यह पूछूँगा कि वह वज़ीफ़ा † (छात्रवृत्ति) किस तारीख़ से मिलेगा। पूछ कर लिखूँगा। पंडितजी की तरफ़ ज़रूर जाना, और उन्हें प्रसन्न करना। मैं रात के समय उस वले ‡ के साथ भी (जो मेरे मकान में लगा हुआ है) वर्ज़िश (व्यायाम) किया करता हूँ। आप कृपादृष्टि रखा करें।

—:o:—

गुरुजी से सीखा हुआ उपदेश अब गुरुजी की ओर

संबोधन पूर्वोक्त, (६२०) ७ फ़रवरी, १८९४

आपका कृपापत्र मिला था। आपका गला अभी तक बीमार है, यह पढ़कर अत्यंत अफ़सोस हुआ। इस बार मुझे पत्र लिखने में किंचित् देर हो गई है। मैं आशा करता हूँ कि हमें इस रविवार से लेकर चार पाँच दिन की छुट्टियाँ होंगी। अगर हुईं तो मैं शनिवार रात या रविवार की प्रातः को हाज़िर हूँगा। पंडितजी की तरफ़ आपने ज़रूर जल्दी जाना।

* मिस्टर बैल प्रिन्सिपल गवर्नमेंट कालिज से यहाँ अभिप्राय है।

† यह छात्रवृत्ति विलायत की है। जिसका वर्णन पहले भी अगस्त १८९३ के पत्र में हुआ है।

‡ पंजाब के लोग घरों की आमनी सामनी दीवारों में या दरवाजे की दायीं बायीं चौकट के बीच एक लकड़ी गाड़ रखते हैं, जो वस्तुओं के लटकाने का काम देती है। उसे लोग वला कहते हैं।

आप अपने वास्तव स्वरूप की ओर ध्यान करने का प्रयत्न करें। संबंधियों की किञ्चित् मात्र परवाह न करें। सत्संग, उत्तम पुस्तक, एकान्त-सेवन के द्वारा अपने स्वरूप में निष्ठा होती है। और अपने स्वरूप में निष्ठा होने से सारा संसार दास बन जाता है। आप अपने सेवक को कभी न भुलायें, सर्वदा कृपादृष्टि रखा करें। एक पत्र मैं जल्दी और लिखूँगा। कर्मचंद को ख़ुशी।

—:o:—

तीर्थरामजी का समय-क्रम

संबोधन पूर्वोक्त, (६२१) ११ बजे रात, ८ फ़रवरी, १८९४

आपका एक कृपापत्र इस समय और मिला। अत्यन्त ख़ुशी हुई। मैं आजकल कोई पाँच बजे प्रातःकाल उठता हूँ। और सात बजे तक पढ़ता रहता हूँ। फिर शौच इत्यादि जाकर स्नान करता हूँ, और व्यायाम करता हूँ, तत्पश्चात् पंडितजी की ओर जाता हूँ। मार्ग में पढ़ता रहता हूँ। वहाँ एक घंटे के बाद भोजन करके उनके साथ गाड़ी में कालिज जाता हूँ। कालिज से डेरे (मकान) आती बार रास्ते में दूध पीता हूँ। डेरे कुछ मिनट ठैहर कर दरिया (रावी दरिया) को जाता हूँ। वहाँ जाकर दरिया किनारे (नदी तट) पर कोई आध घंटे के लगभग टहलता रहता हूँ। वहाँ से वापस आती बार सारे नगर के इर्द गिर्द (चारों ओर) बाग़ में फिरता हूँ। वहाँ से डेरे (घर) आनकर कोठे (छत) पर टहलता रहता हूँ। इतने में अँधेरा हो जाता है (मगर यह याद रहे कि मैं चलते फिरते पढ़ता बराबर रहता हूँ)। अँधेरा पड़ने पर व्यायाम करता हूँ। और लैम्प जलाकर सात बजे तक पढ़ता हूँ, फिर भोजन पाने जाता हूँ और प्रेम * की तरफ़ भी जाता हूँ। वहाँ से आकर कोई दस बारह मिनट अपने मकान के वले

* प्रेम से तात्पर्य प्रेमनाथ है।

के साथ व्यायाम करता हूँ। फिर कोई साढ़े दस बजे तक पढ़ता हूँ, और लेट जाता हूँ। मेरे अनुभव में यह आया है कि यदि हमारा मेदा (उदर) ठीक निरोग्यावस्था में हो, तो हमें अत्यंत आनंद, शांति, एकाग्रता, ईश्वरस्मरण और अन्तःकरण की शुद्धि प्राप्त होते हैं। बुद्धि और स्मरण शक्ति का बल अति तीव्र हो जाता है। प्रथम तो मैं खाता ही बहुत कम हूँ, द्वितीय जो खाता हूँ, पचा लेता हूँ।

परसों मुझे प्रेमनाथ का पिता बाबू चंद्रनाथ मित्र के घर ले गया था। मगर आज मैं अकेला बाबू चंद्रनाथ मित्र (जो पंजाब विश्वविद्यालय के सब-रजिस्ट्रार हैं) की ओर दफ्तर में गया था, बड़े आदर-सत्कार से मिले। कहते हैं कि वह वज़ीफ़ा इस वर्ष है, दो सौ पचास रुपये २५०) मासिक का है। साथ इसके (विलायत) जाकर चार विद्यार्थी और वज़ीफे भी ले सकते हैं। अप्रैल मास में प्रार्थनापत्र दिये जायँगे। इस बात का आपने अभी और किसी मनुष्य से भी चर्चा न करना। वहाँ वार्तालाप में उन्होंने कहा था कि "गुजराँवाले के प्रान्त में पहिले एक ब्राह्मण महात्मा * हुए थे जो जम्मू की ओर भी जाया करते थे, उनकी यह बात प्रसिद्ध थी कि वह कई प्रकार की सच्ची भविष्य वाणियाँ कहा करते थे। क्या अब भी कोई ऐसे (महात्मा) हैं। मैंने फिर आपका ज़िक्र (चर्चा) बड़ी अच्छी तरह से किया। और कहा जब कि वह अर्थात् आप लाहौर में पधारेंगे, मैं दर्शन कराऊँगा, इत्यादि।

आज कल राय मेलाराम का पुत्र† जो ऐफ़० ए० में पढ़ता है मुझे कई संदेशे भेज चुका है कि मैं उसे पढ़ाना स्वीकार करूँ। मगर मैंने अभी

* सुना जाता है कि ब्राह्मण महात्मा मायादास थे जो लगातार १४ वर्ष तक एक चुबारे में रहे थे, फिर अपनी वाणी की सिद्धि में प्रसिद्ध होगये थे। उनसे लोग बहुत भय खाते थे।

† राय मेलाराम के सुपुत्र राय बहादर लाला रामशरणदास से यहाँ अभिप्राय है।

कोई उत्तर नहीं दिया। समय कहाँ से लाऊँ? कठिन यह है कि जिनको पढ़ाने लगता हूँ वह फिर छोड़ते बिलकुल नहीं। कोई न कोई उपाय से मुझे रख लेते हैं। प्यार से और मुहब्बत से बाँध लेते हैं। आप कृपादृष्टि रखा करें। गुलाम को याद रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६२२) ६ फ़रवरी, १८६४

मुझे छुट्टियाँ नहीं हुईं, इसलिए मैंने वहाँ आने का इरादा मुल्तवी (स्थगित) कर दिया है। वज़ीफ़ा अभी तक कोई नहीं मिला। राय मेलाराम के लड़के ने फिर मेरे किसी दोस्त (मित्र) के हाथ कह भेजा था, और फिर आप भी मिला था। मैंने अभी कोई पक्का जवाब नहीं दिया। अब जैसा आप हुक्म (आदेश) दें करूँगा। ......।* मगर वह छुटता नहीं। राय मेलाराम का लड़का एक घंटे के पंद्रह १५) रु० देना चाहता है। आपने वज़ीराबाद ज़रूर जाना। लाला कर्मचंद को मेरी ख़ुशी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६२३) १३ फ़रवरी, १८६४

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हुआ हूँ। और कोई बात इस समय तक लिखने के योग्य नहीं हुई। छोटा वज़ीफ़ा आज मिला था। जिनसे अबकी वार रुपये उधार लिए थे, उनको दे दिये हैं। हलवाइयों को भी दे दिया है। आप दयादृष्टि रखा करें। यहाँ आज धूप निकली है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६२४) रात, १५ फ़रवरी, १८६४

मैं आज लाला रामशरण की तरफ़ गया था। वह अत्यंत ख़ुश हुआ था। पंडित को कहा था कि यहाँ आ जाया करे। और उसने मंज़ूर

* इतना भाग पत्र का फटा पाया था।

कर लिया था। मगर वह तीन दिन आया नहीं। शायद वर्षा के कारण। प्रेम (प्रेमनाथ) है। आप ने उस काम के लिए बहुत जल्दी कोशिश करनी। जूती बहुत अच्छी है। और कर्मचंद को ख़ुशी।

—:o:—

संसार की निःसारता

संबोधन पूर्वोक्त, (६२५) १७ फ़रवरी, १८६४

आपका एक भी कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है ? पंडितजी का क्या हाल है ? यहाँ सब बातें बदस्तूर हैं। आप ग़ुलाम पर दया रखा करें। संसार की कोई वस्तु एतबार (विश्वास) और भरोसा (आश्रय) करने के योग्य नहीं। अत्यन्त कृपा परमेश्वर की उन लोगों पर है जो अपना आश्रय और विश्वास केवल एक परमात्मा पर रखते हैं, और चित्त से सच्चे साधु हैं। ऐसे महापुरुषों के चरणों में परमेश्वर की सारी सृष्टि सेवा करती है, अर्थात् आज्ञाधीन रहती है।

—:o:—

विलायत जाने निमित्त वज़ीफ़े का विज्ञापन

संबोधन पूर्वोक्त, (६२६) १६ फ़रवरी, १८६४

आज आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ी ख़ुशी हुई। आज यहाँ ख़ूब धूप निकली थी। यूनिवर्सिटी (विश्वविद्यालय) वालों ने आज ही से उस वज़ीफ़े की बाबत यह विज्ञापन दे दिया है कि जो व्यक्ति वह वज़ीफ़ा लेना चाहते हैं, वह आज से लेकर मई मास से पहले-पहले प्रार्थना-पत्र दे दें। आपने कृपा दृष्टि रखनी। आप स्वयं भी पत्र लिखने का अभ्यास किया करें। धैर्य और प्रीति के साथ वह काम करना, मगर जल्दी। मगर आपने किसी प्रकार की चिन्ता न करना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६२७) ५ बजे प्रात:, २२ फ़रवरी, १८९४

यहाँ आज कल .खूब धूप लगती है। अगर वह काम मास मार्च के शुरू (आरंभ) में हो जाय, तो बड़ी .खुशी हो। तब आपने यहाँ आ जाना। आपने किसी क़िस्म का फ़िक्र न करना। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। गुलाम पर दयादृष्टि रखा करें। लाला रामशरण पिछले दो तीन दिन यहाँ नहीं था। पंडित यहाँ कभी नहीं आया।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६२८) २३ फ़रवरी, १८९४

आशा है कल या परसों डॉक्टर से मिलने का इत्तफ़ाक़ (समागम) होगा। आप अपना हाल बहुत जल्दी लिखें। आपकी तरफ़ बड़ा ख़याल है। बड़ी ऐहतियात (परहेज़) के साथ सब खान पान करना। आशा है परमात्मा आपको बहुत जल्द सेहत (स्वास्थ्य) दे देंगे। मेरी किताब को अभी अगर आज शुरू नहीं किया तो अत्यंत जल्दी कर देना। किसी बात का फ़िक्र न करना।

——:०:——

व्यायाम और व्रतों से रोग दूर करना

संबोधन पूर्वोक्त, (६२९) २५ फ़रवरी, १८९४

महाराजजी! अब आपकी तबीयत (प्रकृति) कैसी है? आपसे जितना हो सके कसरत-बदनी (व्यायाम) का प्रयत्न किया करें, और एक दो डंग (समय) उपवास करें, तो मैं ख़याल करता हूँ कि आपको शर्तिया (निश्चयपूर्वक) नीरोगता प्राप्त हो जायगी। मेरे अनुभव में आया है कि खाने पीनेवाली औषधियों का अधिक सेवन भी हमें अत्यंत तंग करता है। परमेश्वर आपको बहुत जल्दी पूर्ण स्वास्थ्य प्रदान करें। आपने अपना हाल अत्यंत जल्दी अपने हाथ से लिखना। आपके चरणों का ख़याल है। इन दिनों लाहौर में करनल अलकाट और मिसिज़ बिसेंट

आये हुए हैं। मेरी किताब तो शायद आपने दे दी होगी। उसका फ़िक्र रखना।

——:o:——

साधुसेवा और पुस्तकों से लाभ

संबोधन पूर्वोक्त, (६३०) १२ बजे रात, २६ फ़रवरी, १८६४

करनल अलकाट और एनीबिसेंट आज चले गये हैं, वे पक्के सनातन धर्मी हैं और वेदान्त में बड़ा निश्चय रखते हैं। आज आपकी दया से मुझे डॉक्टर का सर्टीफ़िकट बड़ा अच्छा मुफ़्त मिल गया है। अब आपकी तरफ़ से कसर (न्यूनता) है। आप पुस्तकें निःशंक होकर ख़रीद लिया करें। जो कुछ साधुसेवा और पुस्तकों इत्यादि पर लगे, वही लाभ है। आपका अच्छा होने का हाल पढ़कर बड़ी .खुशी हुई।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३१) २८ फ़रवरी, १८६४

महाराजजी ! आप अपनी सेहत (स्वास्थ्य) का हाल जल्दी लिखकर भेजते रहा करें। मैं सर्व प्रकार से आनंद में हूँ। आपके चरणों का ख़याल है। आज दो सर्टीफ़िकेट लिये हैं। और अभी एक और लेना रहता है। सब आपकी कृपा का फल है। आप ग़ुलाम पर हर तरह से .खुश रहा करें। किसी बात से ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। थोड़े दिनों को तशरीफ़ ले आना (यहाँ पधारना)। अगर कल वह काम शुरू (आरंभ) हो जाय तो क्या ही अच्छा हो।

——:o:——

काम का रहस्य

संबोधन पूर्वोक्त, (६३२) प्रातः, ४ मार्च, १८६४

आज मैं देर के बाद विनय-पत्र भेजने लगा हूँ। इन दिनों

मुझे अत्यंत काम रहा है। चुनाँचि आज मैं सोया भी पाँच घंटे से कम हूँ। प्रोफ़ेसरों का काम भी करनेवाला हूँ। सर्टीफ़िकेट अत्यंत ही उत्तम मिले हैं। आप सर्व प्रकार से ख़ुश (प्रसन्न) रहा करें। किसी प्रकार की चिंता न करें। अगर हम किसी काम को करना चाहें, तो मेरी राय (सम्मति) में हमको चाहिये कि अपने मन को किञ्चित न डोलने दें (उसको अडोल, अचल और निष्क्रिय रखें), मगर उस काम के करने के लिये अपनी इंद्रियों को किञ्चित् स्थिर (निष्क्रिय) न होने दें। उनको हिलाते और चलाते रहें और कर्म में अत्यंत प्रवृत्त रखें। इस तरह से हमको अवश्य अत्यंत जल्दी कामयाबी (सफलता) प्राप्त होती है। कृष्णजी ने भी ऐसा ही कहा है।

——:o:——

बहुत काम में बड़ा आनंद

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६३३)　　　　६ मार्च, १८६४

आपका एक कृपापत्र परसों और एक कल मिला था। अत्यंत ख़ुशी हुई। भाई साहब का एक पत्र आया था। वह आज कल पेशावर से आनेवाले हैं। आपके चरणों की तरफ़ बड़ा ध्यान रहता है। मुझे काम बहुत बड़ा रहता है, मगर काम से बहुत ज़्यादा आनंद रहता है। यह सब आपके चरणों की कृपा है। लाला रामशरणदास * ने एक घंटा के बीस २०) रु० मासिक कर दिये हैं, मगर समय अधिक ख़र्च होता है, क्योंकि मुझे स्वयं पढ़ाने में आनंद आता है। हे परमात्मा! महाराजजी

* यहाँ राय बहादुर लाला भेलाराम साहब के सुपुत्र रायबहादुर लाला रामशरणदास से अभिप्राय है।

को बिलकुल सेहत (पूर्ण नीरोगता) हो जाय। मुझे आशा है कि मेरा वह काम परमात्मा अब अत्यंत जल्दी कर देंगे।

——:o:——

एम० ए० में तीर्थरामजी के वस्त्र

संबोधन पूर्वोक्त, (६३४) ८ मार्च, १८९४

आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। पिछले दिनों मुझे कपड़ों की बड़ी तंगी थी। धोबी ने मास भर तक कपड़े नहीं दिये थे, इस लिये मैंने पड़ोसी दरज़ी से एक चोग़ा, एक कुरता और एक पाजामा मोल ले लिया था। दाम दो रुपये से दो पैसे कम लगे थे। आप अपने स्वास्थ्य का हाल जल्दी लिखें। आपके चरणों की ओर ध्यान रहता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३५) ९ मार्च, १८९४

आपका कृपापत्र कल मिला था। अत्यंत ख़ुशी का कारण हुआ। जब आपका जी (चित्त) यहाँ आने को ज़रा भी चाहे तो तुरंत चले आया कीजिये। मुझसे कभी मत पूछा कीजिये। क्योंकि मैं तो आपको सदा ही चाहता हूँ। वह अँग्रेज़ मेरे पढ़ाने से अत्यंत ही ख़ुश है और बड़ा मशकूर (कृतज्ञ) है। यह सब परमात्मा की कृपा है।

——:o:——

तीर्थरामजी का केवल दूध पर निर्वाह

संबोधन पूर्वोक्त, (६३६) ११ मार्च, १८९४

आपके कृपापत्र बहुत मिले हैं। मैं सबके जवाब नहीं दे सका। मुआफ़ (क्षमा) फ़रमाना। महाराजजी! मैं इन दिनों वास्तव में केवल दूध पर गुज़ारा (निर्वाह) करता हूँ। और मेरा दमाग़ (मस्तिष्क) बहुत

अच्छी प्रकार से काम करता है। बदन (शरीर) में बल किसी से कम नहीं। मन भी शुद्ध रहता है। अगर आप भी इसी प्रकार केवल दूधादि पर गुज़ारह करने का स्वभाव डालें तो मुझे बड़ी ख़ुशी हो। ख़र्च की कुछ परवाह (चिन्ता) न करें। दूध पीना फ़ज़ूलख़र्ची (अपव्यय) नहीं है। दूध अधिक वर्तने से ख़र्च कदापि कदापि अधिक नहीं होता; और अगर अधिक हो भी तो कुछ परवाह नहीं है। आपने जल्दी यहाँ पधारना। मेरे काम का ख़्याल रखना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३७) १३ मार्च, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। चाचाजी की बीमारी का बड़ा अफ़सोस (शोक) है। छुट्टियाँ तो हमें होनी हैं, मगर आशा नहीं कि मैं आ सकूँ, क्योंकि बड़ा फंसा हुआ हूँ। सबके वार्षिक इम्तहान समीप हैं। अब आपने उस काम की बाबत कभो इशारह भी नहीं लिखा। आप ग़ुलाम पर दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३८) १४ मार्च, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए बहुत काल बीत गया। क्या कारण है? मैं होलियों के अंत में आने की कोशिश करूँगा। आपने हर प्रकार से कृपादृष्टि रखनी। अपना हाल जल्दी लिखते रहा करें।

——:०:——

सत्संग और कुसंग के फल

सबोधन पूर्वोक्त, (६३६) १६ मार्च, १८६४

मैं आशा करता हूँ कि सात-आठ दिन को सेवा में हाज़िर हूँगा। लाला रामशरणदास कोई आठ दस दिन के बाद यहाँ वापिस आयगा।

अपनी जागीर के मुक़ामात देखने मुलतान की तरफ़ गया हुआ है। आज उसका पत्र आया था। प्रेम को आज जवाब दे दिया है। इसके कई कारण थे। पहला तो यह कि वक़्त बहुत ज्यादा लगता था और इवज़ाना (वेतन) थोड़ा। दूसरा वह मिज़ाजदार (अभिमानी) आदमी था, और इत्यादि, इत्यादि। साथ इसके वह इस योग्य हो गया है कि अपने आप जमाअ़त (कक्षा) में अच्छी तरह से चल सके। इन दिनों आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। बड़ा फ़िक्र लगा हुआ है। आप जल्दी अपने हाथ से लिखकर कृपापत्र भेज दिया करें। और किसी तरह से ग़ुलाम पर ख़फ़ा (रुष्ट) न होवें। मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ, आप आज कल तंग होंगे। अगर आप यहाँ पधारना उचित समझें तो फ़ौरन आजायें। आप किसी क़िस्म का शोक चिंता न करें। परमात्मा बड़ा आनंद देंगे, भीतर भी बाहर भी। सत्संग, उत्तम ग्रंथ और भजन-कीर्तन ये तीन चीज़ें तीन लोकों का राजा बना देती हैं। और हमारा कुसंग परमेश्वर को हमसे कुपित (रुष्ट) करवा देता है। जिसके कारण हम पर नाना प्रकार के कष्ट आ जाते हैं। एकान्त-सेवन और थोड़ा खाने से परमात्मा आप आन कर हमारा संग अंगीकार करते हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४०) १८ मार्च, १८९४

आपके दोनों कृपापत्र प्राप्त हुए। अत्यंत आनंद हुआ। महाराजजी! मुझे घर से भी पत्र आया था कि मैं वहाँ जाऊँ, क्योंकि चाचाजी बीमार हैं, और दूसरे अपने भाई को मिल आऊँ। साथ इसके आपके दर्शन किये भी बहुत देर हो गई है। इसलिए इस वक़्त तो मेरा इरादा पक्का आपके चरणों में आने का है, आगे जो परमेश्वर की मरज़ी! मैं शायद शुक्रवार को हाज़िर हूँगा। अगर आप इससे पहले यहाँ तशरीफ़ ले आयें (पधारें), तो बड़ी अच्छी बात है, आपकी कृपा से चित बड़ा आनंद में

रहता है। मुझे काम अत्यंत होता है जिसका कोई हिसाब (अंदाज़ा) नहीं। आज-कल मौसम बहुत अच्छा है। आज इस मकान में पोचा फिराया (लिपाई करवाई) है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४१) २० मार्च, १८६४

दिल वहाँ आने को बड़ा करता है। मगर यहाँ अभी कुछ काम करनेवाला है। मैं कोशिश करूँगा कि बहुत जल्दी हाज़िर हो जाऊँ। अगर जल्दी न आ सका तो शुक्रवार को शायद ज़रूर आ जाऊँ। आगे परमेश्वर की मरज़ी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४२) २६ मार्च, १८६४

यहाँ सब तरह से कुशल है। आशा करता हूँ कि आप दो तीन दिनों तक यहाँ पधारेंगे। ज़रूर आना। पंडित रामजीदास को कह देना कि निःसंदेह चला आये। मैंने उनको कह दिया है। दो तीन दिनों में उसका काम बन जायगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४३) २८ मार्च, १८६४

आपके दो कार्ड प्राप्त हुए। बड़ी ख़ुशी का कारण हुए। आपने एक या ज़्यादा से ज़्यादा दो कपड़े साथ ले आने। बाक़ी यहाँ से माँग लेंगे। जब आप यहाँ पधारेंगे, तब जैसा उचित समझकर रामसिंहजी की बाबत कहोगे किया जायगा।

——:o:——

निर्धन और धनी पुरुषों में तुलना

संबोधन पूर्वोक्त, (६४४) ११ अप्रैल, १८६४

आपने हर तरह से ख़ुश रहना। अपना हाल लिखना। मैंने इन दिनों एक नया पद्य (शेर) पढ़ा है:—

"तहीदस्तों का रुतबा ऐहले-दौलत से ज़्यादा है।
सुराही सर झुका देती है जब पैमाना आता है ॥"–(दाग़)

अर्थः—ख़ाली हाथ (निर्धन) पुरुषों की पदवी धनाढ्य पुरुषों से अधिक है, अर्थात् निर्धन पुरुष धनी पुरुषों से अच्छे हैं, जैसे जब ख़ाली पात्र (भरी हुई) सुराही के सम्मुख आता है, तो सुराही (उस पात्र को भरने के लिये) अपना सिर नीचे झुका देती है, मानों उस ख़ाली पात्र के आगे प्रणाम करती है और उसको अपने से अच्छा समझती है।

कालिज में हमें थोड़े दिन छुट्टियाँ हैं। मेरा पता यह है:—

लाहौर, गुमटी बाज़ार, हवेली राजा सरदार स्वरूपसिंह व तालाब के मध्य में शिवालय के सामने।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४५) १४ अप्रैल, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। अपने आने की बाबत मैं फिर अर्ज़ करूँगा। आप कृपापत्र भेजते रहा करें। सरदार रामसिंह मिला था।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४६) १६ अप्रैल, १८६४

आपके चरणों का ध्यान रहता है। आप अपना हाल लिखते रहा करें। मैं शायद लाला रामशरणदास के साथ किसी दिन गुजराँवाले में आऊँगा। लाला साहब के वहाँ नानके (ननिहाल) हैं। पर अगर वह रात रहे तो आपके मकान पर रहेंगे। पिछले दिनों मेरा गला दर्द करता था। अब आराम मालूम होता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४७) २३ अप्रैल, १८६४

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हुआ हूँ। और सब तरह से ख़ैरियत (कुशल) है। आपने कृपापत्र भेजते रहना। परसों से लेकर हमारा

कालिज प्रातः छः बजे लगा करेगा। आपने किसी तरह से भी ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। महाराजजी ! आज मैंने भगत हरभजराय को भी पत्र लिखा है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,   (६४८)   २५ अप्रैल, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। मैंने आज दो कोरी कापियाँ गुसाईं राधाकृष्ण के हाथ आपकी सेवा में मौलवी महम्मदअली के लिए भेजी हैं। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। और ग़ुलाम (दास) पर हर तरह से ख़ुश रहा करें।

—:o:—

मिशन कालिज में अपने प्रोफ़ेसर के स्थान पर काम करना

संबोधन पूर्वोक्त,   (६४६)   २७ अप्रैल, १८६४

जुलाई मास में मिशन कालिज के गणितशास्त्र के बड़े प्रोफ़ेसर ने अपने घर विलायत छुट्टी पर जाना है। उन्होंने मुझे अपने स्थान पर अपने पीछे काम करने के लिये कहा है और लिखा है। और मैंने स्वीकार कर लिया है। वेतन की बाबत अभी कुछ ज़िक्र (चर्चा) नहीं किया।* साथ इसके उनके कहने पर मैंने आज वह प्रार्थना-पत्र भी विश्वविद्यालय के दफ़्तर में दे दिया है। आगे जो परमात्मा की और आपकी मरज़ी। आप कृपादृष्टि रखा करें। वह कटोरे अभी तैयार हुए कि नहीं। आप जल्दी हाल लिखते रहा करें।

—:o:—

* इस समय गुसाईंजी एम० ए० श्रेणी में पढ़ते थे, परन्तु अपने भूतपूर्व प्रोफ़ेसर के कहने पर अपने अध्ययन काल के समय भी उनके बदले मिशन कालिज में पढ़ाते रहे। तिस पर भी वह एम० ए० की परीक्षा में गणितशास्त्र में उत्तीर्ण हो गये।

बुरे पड़ोसियों से परहेज़

संबोधन पूर्वोक्त, (६५०) २९ अप्रैल, १८९४

आपका कृपापत्र केवल एक ही आज तक मिला है। लाला रामशरणदास ने मुझे बहुत ही कहा है कि मैं उसकी कोठी पर चल रहूँ। चुनाँचि (तदनुसार) उसने मुझे आज चार पाँच कमरे एकान्त और सुरक्षित (महफ़ूज़) दिखलाये भी हैं कि उनमें से चाहे कौन सा लेना मैं पसन्द कर लूँ। मगर मैंने जवाब दिया था कि महाराजजी आनकर जैसी मुझे आज्ञा देंगे, वैसे मैं करूँगा। आप लाला साहब घर पर सोया करते हैं, पर कोठी में उनके बहुत से नौकर रखवाली के लिये रहते हैं। उनका स्वभाव निरा साधुओंवाला है। कोठी भाटी दरवाज़े के समीप है। जिस मकान में अब मैं रहता हूँ उसके सामने तीन मकानों में वेश्या रहती हैं, इसलिये बारियाँ (खिड़कियाँ) सदा बन्द रखनी पड़ती हैं। आप जल्दी पधार कर निर्णय कर जावें तो अच्छा हो। कटोरे जल्द ले आने।

—:o:—

कम खाने से चित्त में परमेश्वर आन कर निवास करता है

संबोधन पूर्वोक्त, (६५१) १२ बजे रात, ३० अप्रैल, १८९४

कौलों (कटोरों) की कुछ परवाह नहीं है। आपने कौलों का इंतज़ार न करना। बी० ए० का रिज़ल्ट (नतीजा) निकल आया है। लाला अमरनाथ, अनंतराम और रहीमबख़्श भी गुजराँवाले से पास हैं। वीरवार तक आपने ज़रूर चले आना ! चाहे बुद्धवार चले आना। कम खाने से चित्त में परमेश्वर आन कर निवास करता है। वह मुझे बड़ा कह रहे हैं कि वहाँ चल रहूँ।

—:o:—

अँग्रेज़ शिष्य का बी० ए० पास होना

संबोधन पूर्वोक्त, (६५२) ११ बजे रात, २ मई, १८९४

आज मैं आपका बड़ा इंतज़ार करता रहा हूँ। आप आये बिलकुल नहीं। महाराजजी! आप दास पर सर्व प्रकार से खुश (प्रसन्न) रहा करें, किसी तरह से भी खफ़ा (रुष्ट) न होना। मैं तो बिलकुल आपका आज्ञाधीन हूँ। मेरा अँग्रेज़ शिष्य बी० ए० में पास हो गया है। मैं आशा करता हूँ कि कल चार बजे आप लाहौर पहुँच जायेंगे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५३) ७ मई, १८९४

गुजराँवाले के ये विद्यार्थी एफ़० ए० में पास हुए हैं:—भगीरथलाल, शंकरदास, देवकीप्रसाद, जगतसिंह, गोविंदसहाय, बरकतराय, गुरुमुखसिंह, गुरुदास।

अभी भगत हरभजरायजी आये हैं कि नहीं? मिशन स्कूल का ईश्वरदास गुजराँवाले के ज़िले में मिडल के इम्तहान में अव्वल (प्रथम) रहा है और गवर्नमेंट स्कूल का परसराम दोयम (द्वितीय) रहा है।

——:o:——

निष्काम कर्म

संबोधन पूर्वोक्त, (६५४) ९ मई, १८९४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। इस संसार में कोई चीज़ हमारी नहीं है। अगर हम सुख चाहते हैं, तो हमें चाहिये कि संसार के काम काज करते समय इस शरीर इत्यादि को केवल परमात्मा का समझ कर विचरें, और इसमें राग द्वेष न करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५५) १० मई, १८९४

मैं आज से एक समय रोटी यहाँ उनके नौकर से पकवाया करूँगा।

रोटी वह अच्छी पकाता है। आशा है अब आपको रोटी की यहाँ कुछ तकलीफ़ न होगी। आप कृपापत्र भेजते रहा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६५६) १४ मई, १८६४

आपका कृपापत्र आज मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। आप निःसंदेह चले आयें। भगत हरभजराय भी आ जायेंगे। इंट्रैंस का रिज़ल्ट निकलनेवाला था। उसका इंतज़ार करने के कारण पत्र लिखने में इस बार देर लग गई है। रिज़ल्ट इस वक़्त मंगल की सायं को निकला है। मगर भीड़ बड़ी है, कुछ पता नहीं लगता। फिर पत्र लिखूँगा। आप जल्दी पधारें। गुजराँवाले का रिज़ल्ट सारा फट गया है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६५७) १८ मई, १८६४

मैं राज़ी हूँ। आप अपना हाल जल्दी लिखते रहा करें। कोई क़िस्म की फ़िक्र (चिंता) न करें। तशरीफ़ जल्दी ले आनी।

—:o:—

सत्त्वगुणी आहार

संबोधन पूर्वोक्त, (६५८) २७ मई, १८६४

यहाँ सर्व प्रकार से कुशल है। आप अपना हाल (समाचार) जल्दी लिखते रहा करें। थोड़े और सत्त्वगुण आहार से चित्त बड़ा ख़ुश (प्रसन्न) रहता है। गरम और बहुत देर में पचनेवाली वस्तुओं से प्रकृति सदा तंग रहती है।

—:o:—

कुसंग के परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (६५६) २६ मई, १८६४

इस वक़्त कोई बात लिखने के योग्य नहीं। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। कुसंग, जिसे "कोहे-संग" अर्थात् पत्थर का पहाड़ कहना ठीक है, हमारी उन्नति की ओर उड़नेवाले बाजुओं (पंखों)

पर पड़कर हमें मुरदा सा (शववत्) बना देता है। और हमें मानों आकाश में से अपने भार के कारण अपने साथ नीचे ही नीचे लिये जाता है। अगर आप भगवद्गीता के अर्थों का एक भोग शनैः-शनैः विचार पूर्वक इन दिनों में पायें, तो मुझे अत्यंत ही ख़ुशी होगी। आपने दास पर कृपादृष्टि रखनी। किसी प्रकार से भी ख़फ़ा (रुष्ट) न होना।

——:o:——

नंगे और लम्बे आँचल (पल्ले) वालों से सुख असम्भव

संबाधन पूर्वोक्त, (६६०) २ जून, १८६४

आप का कृपापत्र कल मिला था। अत्यंत ख़ुशी का कारण हुआ। मैं आशा करता हूँ कि जल्दी सेवा में हाज़िर हूँगा। मगर यह नहीं कह सकता कि कब। शायद ८ जून से पहले पहले नहीं आ सकूँगा। काम बहुत है। मैं पत्र बराबर अपने मामूल के मुवाफ़िक़ भेजता रहा हूँ। शायद आपको देर से मिलता होगा, या मेरा आदमी डाक में डालना भूल जाता होगा। वास्तव में जगत् की कोई वस्तु भी स्थायी नहीं। जो मनुष्य इन वस्तुओं पर आश्रय करता है (और अपने आनन्द का आधार परमात्मा पर नहीं रखता), वह अवश्य हानि उठाता है। संसार के धनाढ्य पुरुष नंगे (ख़ाली) और दराज़े-दामन (लम्बे आँचलवाले) पुरुषों के सदृश हैं। अर्थात् यह लोग हैं तो बिलकुल नंगे और कंगाल, मगर अपने आपको बड़े लम्बे आँचलवाला अर्थात् वस्त्रोंवाला ख़्याल करते हैं। ऐसे नंगे व लम्बे आँचलवालों से हमें क्या सुख मिल सकता है, अर्थात् कुछ भी नहीं।

आपने दास पर सदा कृपादृष्टि रखनी और उसे अपना दीन सेवक निश्चय करना। कोई फ़िक्र (चिंता) न करना। आपने सर्व प्रकार से आनन्द रहना। किसी प्रकार से भी ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। मैं आपका टहलिया (किंकर, अनुचर) हूँ।

——:o:——

कीड़ियों की मनोहर बातचीत

संबोधन पूर्वोक्त, (६६१) ४ जून, १८६४

महाराजजी ! परमेश्वर बड़ा ही चंगा (अच्छा) है, मुझे बड़ा ही प्यारा लगता है। आप उसके साथ सुलह (मैत्री) रखा करें। आपके साथ जो कभी-कभी किञ्चित् कठोरता वर्तता है, यह उस (ईश्वर) के विलास हैं। वह आपके साथ हँसी-मख़ौल करना (हँसना-खेलना) चाहता है। हमें चाहिये कि हँसनेवालों से ख़फ़ा (रुष्ट) न हो जायें। किसी और पत्र में मैं आपकी सेवा में उसकी कई बातें बताऊँगा (वर्णन करूँगा)। वास्तव में वह (ईश्वर) बड़ा ही मोतियोंवाला है।

यह पत्र मैं मेज़ पर रखकर लिख रहा हूँ। यहाँ प्रातः थोड़ी सी खाँड गिर पड़ी थी। उस खाँड के पास मेज़ पर चार-पाँच कीड़ियाँ एकत्र हो रही हैं, और वह सब मेरी लेखनी की ओर और अक्षरों की ओर तक रही (देख रही) हैं, और परस्पर बड़ी बातें कर रही हैं। जितनी बात-चीत मैंने उनसे सुनी है, वह विनय-पूर्वक लिखता हूँ।

(परन्तु पहले मैं यह विनय करना चाहता हूँ कि चाहे मेरे अक्षर बहुत ही बुरे और निषिद्ध तथा कुरूप हैं, पर उन कीड़ियों की दृष्टि में तो चीन देश के नक़शोनगार—सुंदर तथा आकर्षणीय चित्रों—से कम नहीं)। जो कीड़ी सबसे पहले बोली, वह बड़ी अनजान और निर्दोष बच्ची थी। अभी बहुत छोटी बच्ची थी।

पहली कीड़ी कहती है:—"देख, बैहन ! इस लेखनी की कारीगरी (चित्रकारी)। काग़ज़ पर क्या गोल-गोल घेरे (चित्र या वृत्त) डाल रही है। इसकी डाली हुई लकीरों अर्थात् अक्षरों को सब लोग बड़ी प्रीति से अपने नेत्रों के पास रखते हैं अर्थात् पढ़ते हैं, और जिस काग़ज़ पर यह (लेखनी) चिह्न कर दे अर्थात् लिख दे, उस काग़ज़ को लोग हाथों में लिये फिरते हैं। काग़ज़ पर मानों मोती डाल रही है, क्या रंगामेज़ियाँ

(चित्रकारियाँ) हैं । बाज़-बाज़ (अमुक-अमुक) अक्षर तो विशेष करके हमारी और हमारी मौसी के पुत्रों (कीड़ों) के रूपों के समान दिखाई देते हैं । क्या ही सुंदर हैं ।

क़लम गोयद् कि मन शाहे-जहानम ।
क़लमकश रा बदौलत मे रसानम ॥

अर्थः—लेखनी कहती है कि मैं जगत् की अधिष्ठात्री (या जगत् की विधाता) हूँ और लेखक को कुबेर भंडारी बना देती हूँ ।

इस लेखनी में जान (प्राण) नहीं है, परन्तु हमारे जैसे जानदारों (प्राणियों) को बीसियों बार उत्पन्न कर सकती है ।" इतना कहकर पहली कीड़ी चुप हो गयी ।

अब दूसरी बोली । यह कीड़ी पहली से कुछ बड़ी थी और उससे अधिक दीर्घ दृष्टि रखती थी ।

दूसरी कीड़ी बोलीः—"मेरी भोली बैहन ! तू देखती नहीं है कि लेखनी तो बिलकुल मुरदा शै (निर्जीव वस्तु) है ; वह तो बिलकुल कुछ काम नहीं कर सकती । वह उँगलियाँ उसे चला रही हैं । जितनी प्रशंसा तूने लेखनी की की है, वह सब उँगलियों की जानी चाहिये ।"

अब एक इन दोनों से बड़ी और स्यानी (चतुर) कीड़ी बोलीः—"तुम दोनों अभी अनजान हो । उँगलियाँ तो पतली-पतली रस्सियों की तरह हैं, वह क्या कर सकती हैं । वह मोटी बीनी (बाँह, भुजा) हाथ की इन सबसे काम ले रही है ।"

अब इन कीड़ियों की माँ बोलीः—"यह सब लेखनी, उँगलियाँ (बीनी), बाज़ू (भुजा) इत्यादि इस बड़े मोटे धड़ के आश्रय से काम कर रहे हैं । यह सब प्रशंसा उस धड़ के योग्य है ।"

इतना कहकर कीड़ियाँ जब ज़रा चुपकी हुईं । तो मैंने उनको यह कहाः—कि "ऐ मेरे दूसरे स्वरूपों ! यह धड़ भी जड़ रूप है । इसको भी

एक और वस्तु का आश्रय है, अर्थात् प्राण का। इसलिये यह सब प्रशंसा उस प्राण के ही योग्य है।"

जब मैंने इतना कहा, तो मेरे दिल में आपकी तरफ़ से आवाज़ आई। और वह आपके वचन भी मैंने उन कीड़ियों को सुना दिये। उनका सार मैं लिखता हूँ—

"मनुष्य के प्राण से परे भी एक वस्तु है, अर्थात् परमात्मा। उस वस्तु के आश्रय सब भूत चेष्टा करते हैं। संसार में जो कुछ होता है, उसी की मरज़ी से होता है। पुतलियाँ बिना तारवाले (पुतलीगर) के नहीं नाच सकतीं। बाँसरी (मुरली) बिना बजानेवाले के नहीं बज सकती। इसी प्रकार संसार के लोग विना उस (ईश्वर) की आज्ञा के कोई काम नहीं कर सकते। जैसे तलवार का काम यद्यपि मारना है, मगर वह बिना चलानेवाले के नहीं चल सकती; इसी प्रकार से चाहे कुछ मनुष्यों का स्वभाव बहुत ही ख़राब (बुरा) क्यों न हो, जब तक उन्हें परमेश्वर न उकसाये (प्रेरे), वह हमें कष्ट नहीं पहुँचा सकते। जैसे महाराजा के साथ सुलह (संधि) करने से सब राज्याधिकारी (अमला) हमारा मित्र बन जाता है, इसी प्रकार परमात्मा को राज़ी (प्रसन्न) रखने से सारी सृष्टि हमारी अपनी हो जाती है।"

महाराजजी ! आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था, अत्यन्त हर्ष का कारण हुआ था। महाराजजी ! अगर आप यहाँ रहना चाहें, तो बड़ी ख़ुशी की बात है। और अगर आप वहाँ एक आदमी रखना चाहें, तो आप (अपनी सेवा के लिये) निःसन्देह रख लें। जहाँ इतना ख़र्च हो रहा है, वहाँ और एक आदमी का ख़र्च भी परमात्मा बड़ी अच्छी तरह से दे देंगे। मेरी तरफ़ से कोई फ़र्क़ (कमी या रोक) नहीं। जिस प्रकार से जी (चित्त) चाहे, आप करें।

मुझे किसी पर किञ्चित् क्रोध नहीं है। मैं बड़ा ख़ुश हूँ। बहुधा क्रोध

में आकर मनुष्यों के मुख से कई बातें निकल जाती हैं, हमें सब मुआफ़ (क्षमा) कर देनी चाहियें, आप भी क्षमा कर दें। आप उनसे सुलह (मेल) कर लें। खाना आप उनका चाहे खायें, चाहे न खायें, मगर सुलह (संधि) अवश्य कर लें, और सब अपराध क्षमा कर दें। साधुओं का क्षमा भूषण होता है।

आप इन दिनों कुछ अचाह (इच्छा-रहित) हुए थे, इसलिये आपके पिताजी आपके पास आये थे। यह पत्र बेइख़्तियार (स्वतः) इतना लंबा हो गया। क्षमा करना। परमेश्वर आपको बड़ी ख़ुशी देगा।

——:o:——

गीता पढ़ने का लाभ

संबोधन पूर्वोक्त, (६६२) ६ जून, १८९४

आपका कृपापत्र मिला, आपके चित्त की अवस्था पढ़कर अत्यंत ख़ुशी हुई। थोड़े दिन हुए मैंने भी गीता का एक भोग पाया था। अत्यंत ही उत्तम ग्रन्थ है। इसको समझकर पढ़ने से परमेश्वर के ऊपर इतना विश्वास हो जाता है, जितना संसारी लोगों का अपने शरीर पर होता है। आप फ़िलहाल (अभी) वहाँ रोटी खाना निःसंदेह स्वीकार कर लें। फिर देखा जायगा।

मैं आशा करता हूँ कि मैं इस शनिवार आपकी सेवा में उपस्थित हूँगा। पहले इस कारण से नहीं आ सकता कि प्रथम तो कोई छुट्टी नहीं है, द्वितीय वज़ीफ़ा (छात्र-वेतन) अभी नहीं मिला। और विना रुपयों के अगर वहाँ (घर) जाया जाये, तो सबको निराशा होती है, और न

ख़ुश होते हैं, और न हमको ही अधिक ख़ुश करते हैं। तृतीय मैं आशा करता हूँ कि तब तक उस बड़े वज़ीफ़े के विषय में भी शायद निर्णय हो जायगा। और उस मुआमले का निर्णय हुए विना जाने में

यह डर है कि शायद वहाँ मेरी हाज़िरी (उपस्थिति) की आवश्यकता हो और मैं उस दिन लाहौर में न मिलूँ ।

यह सब इत्तफ़ाक़ (समागम) दैवयोग से बने हैं, मेरा इनमें कुछ दख़ल नहीं है। पर अगर आप आज्ञा दें, तो मैं इन सब कारणों के होते हुए भी आपकी सेवा में उपस्थित हो सकता हूँ। आगे जैसी आपकी मरज़ी ।

महाराजजी ! आप दास पर सर्व प्रकार से खुश रहा करें। जो आपकी राय (सम्मति) है मेरी सम्मति उसके विरुद्ध कदापि नहीं हो सकती। दास को आप ही के चरणों का आश्रय है ।

—:o:—

दूसरों के आगे गुरुजी की महिमा

संबोधन पूर्वोक्त, (६६३) ७ जून, १८९४

महाराजजी ! आपका कृपापत्र प्राप्त हुए देर हो गई है। आज लाला रामशरणदास से आपकी बहुत बातें कही गईं। वह अत्यंत प्रसन्न हुआ, और दर्शनों का अभिलाषी हुआ । महाराजजी ! आपकी अति कृपा है। अत्यन्त हर्ष और आनन्द रहता है। आशा है कि जल्दी दर्शन करूँगा ।

आर्ज़ू दारम कि ख़ाके-आँ क़दम ।
तूतियाये-चश्म साज़म दम बदम ॥

अर्थः—मेरी यह याचना अथवा अभिलाषा है कि आपके चरणों की रज को मैं नित्य अपने नेत्रों का सुरमा बनाऊँ ।

—:o:—

विलायत के वज़ीफ़ों का न मिलना

संबोधन पूर्वोक्त, (६६४) ९ जून, १८९४

मैं शायद बुद्धवार हाज़िर हूँगा। क्योंकि वीरवार से हमें इकट्ठी

छुट्टियाँ हैं। अब केवल एक छुट्टी रविवार की है। क्षमा करना। आपका कार्ड मिला था, बड़ी ख़ुशी का काम हुआ। परमेश्वर की मरज़ी (इच्छा) नहीं थी कि इस वर्ष मैं विलायत जाऊँ। सविस्तर हाल मुख से वर्णन करने योग्य है।

—:०:—

गुरु के पद्य (शेर) की उपमा

संबोधन पूर्वोक्त, (६६५) ११ जून, १८९४

मैं शायद बुद्धवार सेवा में उपस्थित हूँगा। आपका पद्य (शेर) बहुत उत्तम है। लगभग इसी विषय के कुछ पद्य मैं नीचे लिखता हूँ—

१—बगिरदे-ख़ुद हमें गरदम् चो गरदूँ।
बरूँ अज़ ख़ुद ख़रामीदन नदारम॥

२—हर दम अज़ नाख़ुन ख़राशम सीनए-अफ़कार रा।
ता ज़ि-दिल बेरूँ कुनम ग़ैरे - ख़्याले-यार रा॥

३—दिल के आईने में है तस्वीरे-यार।
जब ज़रा गरदन झुकाई देख ली॥

अर्थ १—अपने चारों ओर आकाश के समान मैं घूमता हूँ, अपने से बाहर मैं नहीं टहलता (फिरता)।

२—मैं सदा शोकपरायण (चिन्तामय) हृदय को नखों से छीलता रहता हूँ, अर्थात् शोकों को हृदय से बाहर करता रहता हूँ, ताकि अपने स्वरूप (अथवा प्यारे) के विचार से अतिरिक्त विचारों को हृदय से बाहर निकाल दूँ।

३—अंतःकरण के दर्पण में अपने प्रियतम की मूर्ति है। जब भी किञ्चित् सिर झुकाया, तब उसे देख लिया।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६६६) १४ जून, १८६४

मैं बड़ा अफ़सोस (शोक) करता हूँ कि मैं तो बड़ा ही चाहता हूँ कि बहुत जल्दी सेवा में हाज़िर हो जाऊँ। मगर कोई न कोई ऐसी सूरत (दशा) निकल आती है जिससे देर लग जाय। अब मासड़(मौसा)-जी से तार आई है कि वह रविवार को आयेंगे। उन्हें इससे पहले की छुट्टी नहीं मिली। साथ इसके मुझे वज़ीफ़ा भी इस शनिवार को आशा है कि मिलेगा। मैं चाहता हूँ कि मासड़ (मौसा) जी को स्वयं चाचाजी का हाल दिखाकर कुछ इलाज (चिकित्सा) निमित्त राय (सम्मति) पूछूँ। साथ इसके आपसे भी उनकी मुलाक़ात कराऊँ। आपने भी ग़ुलाम पर हर तरह से ख़ुश रहना। जगत् की कोई चीज़ एतबार (विश्वास) के योग्य नहीं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६७) २२ जून, १८६४

मासड़ (मौसा) जी बंसीधर आज रवाना हुए हैं। उनसे आपकी बाबत ज़िक्र (बातचीत) करने का यहाँ अवसर मिल गया था। बड़े प्रसन्न हुए थे। और इस बात के लिए तैयार हुए थे कि आप वहाँ उनके पास हाँसी पदार्पण करने की कृपा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६८) २४ जून, १८६४

आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६९) २६ जून, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था। अत्यंत ख़ुशी का कारण हुआ। आप ख़िदमतगार (अपने सेवक) को जल्दी याद फ़रमाते रहा करें।

मैं आपकी दया से आनंद में हूँ। और आपकी भीतरी व बाहरी सेहत (कुशलता व स्वास्थ्य) का इच्छुक हूँ।

जब मैं मुरारीवाले से आया था तो भूआ (फूफी) से इक़रार कर आया था कि "गुजराँवाले से एक भोछन (ओढ़ने का कपड़ा) मलमल का तीन गज़ लंबा और डेढ़ गज़ चौड़ा भेजूँगा।" अगर आपको कष्ट न हो तो आपने भेजदेना, नहीं तो यहाँ से भेज दूँगा।

——:o:——

अभ्यासी और शुद्धचित्त मनुष्यों के मिलाप का कारण

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६७०)　　　　२८ जून, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। आप निःसंदेह बहुत जल्दी पधारें। अभ्यास करनेवाले और शुद्ध अन्तःकरणवाले पुरुषों का मिलाप बड़े ही उत्तम कर्मों का फल होता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६७१)　　　　३० जून, १८६४

आपका एक और प्रेमपत्र प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। इस सोमवार से मैंने आपके चरणों की बदौलत (कृपा से) वहाँ काम करना है। मेरठ में एक असामी (प्रोफ़ेसर रियाज़ी की जगह) ख़ाली हुई है। वहाँ डेढ़ सौ १५०) रुपये माहवार देते हैं। उसकी बाबत आपकी क्या राय (सम्मति) है? आप तशरीफ़ अभी क्यों नहीं लाये?

——:o:——

तीर्थरामजी की अत्यन्त प्रवृत्ति

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६७२)　　　　२ जुलाई, १८६४

मैं कल बड़ा ही काम में प्रवृत्त रहा हूँ, चुनाँचि रात के दो बजे सोया था। और आज प्रातः पाँच बजे फिर काम के लिये उठ खड़ा हुआ। इस-

लिये पत्र कल नहीं लिख सका। क्षमा करियेगा। मिशन कालिज के लड़के बड़े ही खुश होते हैं। यह सब आपकी दया है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७३) ६ जुलाई, १८९४

मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ कि मैं आपकी सेवा में इससे पहले विनय-पत्रिका भेज नहीं सका। आप अभी तक पधारे क्यों नहीं? आज लाला रामशरणदास साहब गुजराँवाले गये हैं, और फिर आज ही वज़ीराबाद चले जायेंगे। आशा है कि आपको मिलेंगे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७४) १२ बजे रात, १५ जुलाई, १८९४

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है?

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७५) १७ जुलाई, १८९४

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। अभी मेरे वहाँ आने की तारीख़ का कोई पक्का पता नहीं। मालूम नहीं कि छुट्टियाँ कब होंगी। यहाँ लाहौर में गुसाईं ईश्वरदास मुरारीवाले का आया हुआ है। मेरे पास भी आता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७६) २० जुलाई, १८९४

कल के लाला अयोध्यादासजी यहाँ आये हुए हैं। रात यहीं सोये थे। उनका मन अच्छा है। आज गुसाईं ईश्वरदास भी मुरारीवाला चले जायेंगे। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७७) २३ जुलाई, १८९४

हमें छुट्टियाँ शायद २८ माह हाल (जुलाई) से होंगी। मैंने अभी

आने का कोई दिन मुक़र्रर नहीं किया। आप दया रखा करें। यहाँ वर्षा-ऋतु लगी रहती है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७८) ४ अगस्त, १८६४

चाचाजी रातभर अत्यंत तंग (पीड़ित) रहे हैं। मैं ख्याल करता हूँ कि अभी कुछ दिन तक मैं आपकी सेवा में हाज़िर नहीं हो सकूँगा। आप दया रखा करें। किसी बात से ख़फ़ा (रुष्ट) न होना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६७६) ३½ बजे सायं, २६ अगस्त, १८६४

मैं आज यहाँ कुशलपूर्वक पहुँच गया हूँ। सब कार्यवाही ठीक है। आप जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

——:०:——

एकांत में आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त, (६८०) ३० अगस्त, १८६४

यहाँ मैं एकान्त में हूँ। और जो मुझे यहाँ एकान्तता में आनन्द है, उसका वर्णन करना अत्यंत कठिन है। अगर आप जितना भी हो सके कोठे (छत) पर रहने का स्वभाव डालें, तो आपको पूर्ण आनन्द होगा, और मुझे भी इससे बड़ी खुशी होगी। एक स्वभाव को बदलकर दूसरा स्वभाव डालना कठिन तो है, अगर आप यह स्वभाव कोठे (छत) पर रहने का डाल लेंगे, तो आप बड़े ख़ुश रहा करेंगे। कोठे पर रहकर तत्त्व विचार के पुस्तक, वासिष्ठ आदिक, पढ़ने से लाभ होगा। नीचे यह पुस्तक विचारे ही नहीं जा सकते।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८१) ४ सितंबर, १८६४

जो मुद्दत में (बहुत काल से) मैं यहाँ से ग़ैरहाज़िर रहा हूँ, उसका

कुछ नहीं मिलेगा। मगर चला जाने से पहले के कुछ दिनों और इन दिनों का मिलेगा, कोई ६ या १० तारीख के लगभग। आपने अब अमृतसर के लिए तैयार होकर यहाँ जल्दी चले आना। कल रात का मेरे मकान के साथ के हिस्से में दीवान कृपाराम जज आन कर रहा है। वह यहीं रहेगा। दीवान साहब अच्छे स्वभाववाले मनुष्य हैं। वर्षा यहाँ प्रतिदिन होती है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८२) दुपहर, ५ सितंबर, १८६४

आपका एक कृपापत्र कल प्राप्त हुआ। इसका जवाब मैं आगे लिख चुका हूँ। यहाँ मेरे सगे मामे का लड़का तीन दिन से आया हुआ है। मेरे डेरे ही रहता है। शायद कल जायगा। बड़ा ग़रीब है। आपने चाचाजी को हुब्बे-करामात (ओषधि) और भेज देनी। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८३) ७ सितंबर, १८६४

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। वह आदमी (मेरे मामे का लड़का) जो यहाँ आया हुआ था वह बीमार पड़ गया है। पर मुझे कोई ज्यादा तकलीफ़ नहीं देता। आपका इन्तज़ार है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८४) ६ सितंबर, १८६४

मेरे मामे का लड़का बड़ा बीमार है और मैं तकलीफ़ में हूँ। अगर आप यहाँ तशरीफ़ ले आवें और उसे अपने गाँव (मौज़ा मानी, मुत्तसिल क़िला दीदारसिंह) भेजने की तजवीज़ कर दें, तो बड़ी अच्छी बात हो। यहाँ से वह चीज़ मुझको मिल गई है। आपका बड़ा इंतज़ार है।

——:०:——

ईश्वर-भक्त के सम्बन्ध में कविता

संबोधन पूर्वोक्त, (६८५) १६ सितंबर, १८६४

और कोई मतलब (बात) लिखने के योग्य नहीं । निम्न शेर (पद्य) ही लिख देता हूँ—

(१) आशिक़ाँ दर बेनवाई ख़ुसरविहाँ मे कुनंद ।
शाही-ए-कोनीन दारद बे सरो-सामाने-इश्क़ ॥
(२) बदिल्क़े फ़क्र, शाही मे कुनम अज़ ख़ूबिये-ताले ।
न जम दारद न कैये ईं ताला-ए-गरदूँ स्वारे-मन ॥
(३) हुबाब आसा किया है कार इस्तग़ाना तमाम अपना ।
रक्खा महरूम मैं क़तरह से इस दरया में जाम अपना ॥

अर्थ—(१) ईश्वर-भक्त निर्धन तथा अन्य सामग्री-रहित अवस्था में भी बादशाहियाँ करते हैं, अर्थात् आनन्द भोगते हैं । द्रव्य इत्यादि से रहित रहने की प्रीति दोनो लोकों (लोक-परलोक) का अधिपति बनाती है ।

(२) प्रारब्ध की उत्तमता से मैं कंथा में भी राज्य करता (आनन्द भोगता) हूँ । ऐसी आकाश पर सवारी करनेवाली मेरी प्रारब्ध न बादशाह जमशेद रखता है और न कैकाऊस, अर्थात् ईरान देश के बादशाह की भी ऐसी उत्तम प्रारब्ध नहीं ।

(३) बुदबुदा के सदृश हमने अपना काम तमाम कर दिया है, अर्थात् निजानन्द के समुद्र में हमने अपने तुच्छ अहंकार-रूपी बुदबुदे को फोड़ दिया है, और इस आनन्द-समुद्र में अपने शरीर-रूपी प्याले (पात्र) को अहंकार-रूपी बिन्दु (बुदबुदा) से रहित कर दिया है ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८६) २२ सितंबर, १८९४

आपका पत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है ? आप जल्दी-जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। लाला रामशरणदास आदि कल के दिल्ली गये हुए हैं। कल राय साँझीमल साहब और उनका दामाद मेरे मकान आये थे और कहते थे कि सप्ताह में दो दिन के स्थान पर तीन दिन हरसुखराय को पढ़ाना मंज़ूर करो। नाचार मंज़ूर करना पड़ा। मगर हरसुखराय आपके पीछे मेरे पास अभी तक बिलकुल नहीं आया। कल चाचाजी का एक और पत्र आया था। कहते हैं कि दवाई (उशबा इत्यादि) की बड़ी ज़रूरत है। पहुँची नहीं ? सो अब भेज देने का इरादा है। आपने हुब्बे-करामात (दवा) उनको ज़रूर भेज देनी। और उसका नुसख़ा उनको न लिखना। नुसख़ा न लिखने का एक कारण है। पत्र लिखने के बाद आज मुरारीवाला का एक आदमी मिला था, उसके हाथ उशबा लेकर भेज दिया है। आप कृपादृष्टि रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८७) २३ सितंबर, १८९४

आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। मुझे अत्यंत फ़िक्र (चिंता) लगा हुआ है। आप इस तरह से ख़ामोशी (मौन) न इख़्तियार कर लिया करें। अपने ग़ुलाम की भूलों को बिलकुल मुआफ़ फ़रमाना और मेरे अपराधों और दोषों को दिल में कदापि जगह न देनी। क्योंकि अगर ज़ाहिरा तौर पर मुझसे कोई गुनाह (पाप व अपराध) हो भी जाय, तो दिल से तो मैं हमेशा आपका सेवक आज्ञाकारी हूँ।

——:०:——

चित्त अभ्यास करने से वश में आता है

संबोधन पूर्वोक्त, (६८८) २६ सितंबर, १८९४

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, बड़ी ख़ुशी हुई। परमात्मा बड़ा ही

कारसाज़ (काम सिद्ध करनेवाला) और सब पर अत्यंत कृपालु है। हमारे चित्त की सब बदमाशियाँ (दुर्वृत्तियाँ) हैं कि परमात्मा पर विश्वास न लाकर हमें दुःखी पड़ा करती हैं। यह चित्त अभ्यास करने से वश में आता है। अच्छे, उत्तम पुस्तक वासिष्ठ आदिक ऐसे समय पर विचारने चाहिएं। और सबसे ज्यादा जरूरी यह बात है कि आहार अल्प कर देना चाहिए, अथवा व्रत रख लेना चाहिए। यह ऋतु बड़ी सत्त्वगुणी है। अब अगर आप योगवासिष्ठ पढ़ें, तो मुझे बड़ी ख़ुशी हो। तुलसीदासजी लिखते हैं—

जब दाँत न थे, तब दूध दियो।
अब दाँत भये क्या अन्न न दे है।

झंडूमल की गागर (जल का बर्तन) का जरूर ख्याल रखना। आप दास पर सदा प्रसन्न रहा करें। इन दिनों ख़ाहमख़ाह भजन करने को चित्त चाहता है।

——:o:——

कबीरजी का वाक्य

संबोधन पूर्वोक्त, (६८६) २६ सितंबर, १८६४

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। कबीरजी का यह वाक्य क्या ही अच्छी अवस्था को प्रकट करता है:—

मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा-नीर।
पीछे-पीछे हर फिरें कहत कबीर कबीर॥

झंडूमल की गागर का ख्याल रखना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६०) २ अक्तूबर, १८६४

मुझे पत्र लिखने में शायद देर हो गई है। आपने मुआफ़ फ़रमाना। आज दीवान कृपाराम साहब यहाँ से गुरुदासपुर तबदील होकर चले

गये हैं। शायद आठ-दस दिन को फिर आ जायेंगे। आपने हनुमाननाटक का भोग पाया है कि नहीं? और क्या-क्या पुस्तक आप पढ़ा करते हैं? आपने दास पर कृपादृष्टि रखनी। सतोगुण भोजन और थोड़ा, अमृत-वत् हमको खुश रखता है, बीमारियों से बचाता है और हमारी आयु दीर्घ करता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६१) ३ अक्तूबर, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए बहुत काल बीत गया है। क्या कारण है? *

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६२) ५ अक्तूबर, १८६४

आपका एक कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। चाचाजी का पत्र भी बड़ी मुद्दत के बाद आज आया है। गाड़ी का वक्त मुझे मालूम है। मैं शायद आऊँगा तो सही, मगर वहाँ बहुत थोड़ा चिर (काल) ठहरना चाहता हूँ, क्योंकि काम बड़ा करनेवाला है और समय इम्तहान में थोड़ा रह गया है। आगे आपकी और परमेश्वर की मरज़ी। आने का दिन मैं आपको पहले लिख चुका हूँ। आप दास पर दया रखा करें।

——:o:——

जीवन से बेज़ारी (व्याकुलता)

संबोधन पूर्वोक्त, (६६३) ६ अक्तूबर, १८६४

थोड़ी देर हुई आपका पत्र मिला। पत्र पढ़ने से कुछ तप (ताप) सा चढ़ गया है। न पढ़ा-लिखा जाता है और न बैठा ही जाता है। तबीयत (चित्त वा प्रकृति) ज़िंदगी (जीवन) से और संसार से बेज़ार (व्याकुल वा उपराम) हो गई है। मैं अपनी ओर से दिलो-जान से यत्न करता हूँ कि कोई काम आपकी इच्छा के विरुद्ध न हो जाये। फिर भी काल की गति कुछ न कुछ

* इससे आगे का कार्ड चूँकि फटा हुआ है, इसलिए आगे ठीक नहीं पढ़ा गया, जिससे इतना ही देना पड़ा।

करा देती है, या किसी ऐसे मनुष्य ने जो मेरे और आपके सम्बन्ध से ईर्ष्या रखता होगा, आपको कुछ सिखा दिया होगा। पंचतंत्र और अन्वार-सहेली में एक कथा है, वह सुनने योग्य है। अत्यन्त व्याकुलता है। मैं शायद दसेहरा से एक दिन पहले हाज़िर हूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(६६४)　　　११ अक्तूबर, १८९४

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हूँ। आँखें बनानेवाला साहब यहाँ से कलकत्ता बदल गया है और जो साहब उसकी जगह यहाँ काम करता है, वह बड़ा नातजरुबेकार (अनाड़ी) और नावाक़िफ़ (अनभिज्ञ) है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(६६५)　　　१४ अक्तूबर, १८९४

मैं ख़्याल करता हूँ कि कल या परसों से लेकर एक व्यक्ति यहाँ उस कमरे में भी आनकर रहेगा जो मेरे कमरे और डिपुटी कृपाराम साहब-वाले कमरे के बीच का है। और डिपुटी साहबवाला कमरा दो-तीन दिनों का आगे ही रुका हुआ है। कुछ तकलीफ़ होगी। योगवासिष्ठ आपने मेरे लिए लिया है कि नहीं ? झंडूमल की गागर का ख़्याल रखना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　(६६६)　　　१६ अक्तूबर, १८९४

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। अगर आप अमृतसर को यहाँ से होते जायें, तो बड़ी कृपा हो। आगे जैसा आप मुनासिब (उचित) समझें, करें।

आज हमारा कालिज खुला है। मिशन कालिज का प्रोफ़ेसर रियाज़ी सुना है कि आज आ गया है। मगर मैं अभी नहीं मिला। और सब कुशल है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६९७) ३० अक्तूबर, १८९४

कल सायं को मासड़ (मौसा) जी आये थे। आज प्रातः चले गये थे। आपको मिलने का इश्तयाक़ (अभिलाषा) रखते थे। आपकी तरफ़ से भी मैंने उचित तौर पर शौक़ ज़ाहिर किया था। गवर्नमेंट कालिज आज गया था। अभी वज़ीफ़ा नहीं मिला। मैं यथा सम्भव मनीआर्डर द्वारा ही रुपया भेजूँगा। मेरा आना कठिन मालूम देता है। आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६९८) २ नवंबर, १८९४

मुझे कल तीन महीनों का छोटा वज़ीफ़ा मिला था। जिसमें से एक मास की फ़ीस काट ली गई थी। बाक़ी रुपयों में से जो मैंने लोगों का उधार देना था, वह चुका दिया है। अब थोड़े से रुपये यहाँ रखे हैं। जब दूसरा वज़ीफ़ा मिलेगा, तब सब भेज दूँगा। या अगर संभव हुआ, तो स्वयं हाज़िर हूँगा। सविस्तर फिर सूचना दूँगा।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६९९) ४ नवंबर, १८९४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। मैं उस छोटे कमरे में सोया करता हूँ। सर्दी नहीं लगती। कल-परसों का मुझे ज़ुकाम ने तंग किया हुआ है। आप सरना (ओषधि) का किस तरह से प्रयोग कराया करते हैं? अभी दूसरा वज़ीफ़ा नहीं मिला। आप कृपादृष्टि रखा करें। मैं आपका दीन दास हूँ।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (७००) ८ नवंबर, १८९४

आज ८ तारीख़ को बड़ी देर से यहाँ वह चीज़ तक़सीम हुई थी, इसलिए मैं आज कुछ अर्ज़ नहीं कर सका। 'अऽबहाज' एक अरबी

का शब्द है, जिसके अर्थ हैं ख़ुशी। इसमें 'ब' दुरुस्त है, इसलिए इसको दो बार गिनती में लाना चाहिये। 'अब्बहाज' से जो निकलता है, वह मैं कल अर्ज करूँगा। आपने दास पर कृपादृष्टि रखनी। अब लाला साहब शहर में हवेली में पढ़ते हैं। सो मुझे रात को वहाँ आना पड़ता है। सरदी लगती है। आशा है कि जब छोटा वज़ीफ़ा अक्तूबर का मिलेगा, गरम कोट आदि बनवा लूँगा। जुलाब नहीं लूँगा। आपका कृपापत्र मिलकर अत्यंत ख़ुशी का कारण हुआ था। इस बार मुझे पत्र में देरी हो गई है। मुआफ़ फ़रमाना। आप जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

——:o:——

धन-सम्बन्धी कठिनाइयाँ

संबोधन पूर्वोक्त, (७०१) १२ नवंबर, १८६४

चाचाजी का पत्र आया था। वह लिखते हैं कि "पच्चीस २५) रुपये तुमको छोटे वज़ीफ़े के अभी मिलने हैं, वह रख छोड़ने, और पाँच-पाँच रुपये और जोड़कर दस रुपये दाख़िला (परीक्षा-प्रवेश-फ़ीस) देने के दिनों तक, अर्थात् डेढ़ या पौने दो मास तक, बना लेने। इस प्रकार से पैंतीस ३५) रुपये हुए। और पन्द्रह १५) रुपये हमसे लेकर पचास ५०) रुपये पूरे करके परीक्षा-प्रवेश-फ़ीस दे देनी।" अब विनय यह है कि यह पच्चीस २५) रुपये जो चाचाजी छोटे वज़ीफ़े के लिखते हैं, इनमें से सवा बारह १२।) रुपये तो एक मास की फ़ीस के काटे जाने हैं, और छे ६) रुपये के लगभग उन दिनों के काटे जाने हैं, जब मैं बीमारी के कारण कालिज से ग़ैरहाज़िर (अनुपस्थित) रहा। और गरम कपड़े भी मैंने बनवाने हैं, और कुछ खाना-पीना भी है। और फ़ीस काटकर थोड़े से रुपये जो मिला करेंगे, उनमें से पाँच-पाँच रुपये जोड़ना (संग्रह करना) भी कठिन है।

कल मैं गरम कपड़े ले आया हूँ, डबलजीन का पाजामा, एक कुरती,

और एक कशमीरे का कोट लिये हैं, सब पर पौने आठ ७॥।) रुपये लगे हैं। पर अब मैं चाचाजी को इस विषय में कुछ विशेष लिखूँगा नहीं। केवल अपनी दशा जतला दूँगा। आशा है कि मासड़(मौसा)जी या मेरा खुसर (ससुर) सहायता कर देंगे। जो परमात्मा अब तक सहायता करता रहा है, अब भी कर देगा। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ी ख़ुशी हुई।

——:o:——

तीर्थरामजी के पास एक पैसे का भी न होना

संबोधन पूर्वोक्त, (७०२) १६ नवंबर, १८६४

आपका कृपापत्र कल प्राप्त हुआ, अत्यन्त ख़ुशी हुई। आपके चित्त की दशा का ज़िक्र (प्रसंग) पढ़कर हृदय बड़ा प्रसन्न हुआ। आपको परमेश्वर सदा ऐसा ही ख़ुश रखे। मेरे इस बार देर से पत्र लिखने का कारण यह है कि मेरे कार्ड ख़तम (समाप्त) हो गये थे, और न मेरे पास कोई पैसा था, न काले (नौकर) के पास। वज़ीफ़ा की प्रतिदिन बाट ताकता था, मगर मिलता नहीं था। कल दस बजे रात के लाला (रामशरण) साहब के दफ़्तर से ठाकुर को कह कर यह कार्ड निकलवाया था। जो अब आपको भेजता हूँ। कपड़े मैंने सिले-सिलाये लिये हैं। एक पुरुष को साथ ले गया था। कपड़े बहुत अच्छे हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७०३) १७ नवंबर, १८६४

महाराजजी! आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। दास पर हर तरह से ख़ुश रहा करें। आज-कल मुझे काम बहुत है। ध्यान और तवज्जह अधिकतर काम की तरफ़ रहती है। जो पंडित लालाजी को संस्कृत पढ़ाया करता था, उसने मेरी ज़बानी एक बार आपकी तप की गोलियों की सिफ़त (प्रशंसा) सुन ली थी। उस दिन का मुझे प्रतिदिन कहता है। उन गोलियों के बनाने की तरकीब उसे दर्याफ़्त कर दूँ।

और जब मिलता है पूछता है कि "अभी पत्र लिखा है या नहीं ?" जैसा आप उचित समझें, करें। आदमी बड़ा भलामानस और नेक है। आपके चरणों की तरफ़ ख़्याल रहता है। अब मुझे इस मकान के परले कमरे में (जहाँ लाला हरिकृष्ण रहते थे) चला जाना पड़ा है।

—:o:—

धनाढ्य पुरुषों का बर्ताव

संबोधन पूर्वोक्त, (७०४) १८ नवंबर, १८६४

महाराजजी! आपने दास पर कभी किसी बात पर ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। पत्र भेजने में देरी का कारण एक यह है कि इन दिनों आदमियों के लिए कहीं जाने-आने का काम करना (जैसे डाक में पत्र डालने जाना) ज़रा कठिन है। और मैं उस समय (आठ बजे रात) के सिवा जब लालाजी की तरफ़ जाता हूँ, कभी डेरे से बाहर नहीं निकलता। आज-कल (यहाँ) जलसा (उत्सव) होने के कारण इस मकान में कई बड़े पुरुष आनेवाले हैं। उनके लिये मेरेवाला कमरा और बीच का कमरा नियत किये गये हैं। और मुझे उस कमरे में आना पड़ा है, जिसमें लाला हरिकृष्ण (प्रसिद्ध नाम डॉक्टर साहब) रहते थे। आज उसमें अस्बाब ले आया हूँ। आज मुरालीवाले का एक ग़रीब लड़का यहाँ तार की पाठशाला में दाख़िल (प्रविष्ट) होने को आया है। लड़का भलामानस और मेरे कहने पर चलनेवाला है। यदि आप आज्ञा दें, तो उसे मैं अपने मकान में रहने दूँ, नहीं तो निकाल दूँ। आपने उत्तर से शीघ्र कृपा करनी। यहाँ नीचे के लगभग सब कमरों में कपास डाली गई है। और प्रतिदिन कपास के छकड़ों के छकड़े आते-जाते हैं। उनका विचार है कि जिन कमरों में दफ़्तर लगते हैं, वहाँ भी कपास भर दें, और दफ़्तर ऊपर की छत में (अर्थात् जहाँ मैं रहता हूँ) लगाया करें। अब देखिये, मेरे रहने का क्या प्रबन्ध होता है।

—:o:—

मासड़(मौसा)जी की अमूल्य सहायता और गुसाईंजी का संकटहरण

संबोधन पूर्वोक्त, (७०५) २० नवंबर, १८९४

आप कृपापत्र जल्दी भेजते रहा करें। आपने ग़ुलाम (दास) को भुला न देना। भाई साहब का पत्र आया था। उन्होंने आपको बड़े अदब (सम्मान) के साथ मत्था टेकना लिखा है। मासड़(मौसा)जी का पत्र आया था, वह लिखते हैं कि दाख़िला (परीक्षा-प्रवेश-फ़ीस) के लिए हमारे से अतिरिक्त और किसी से रुपये न लेने। परमात्मा की सिफ़त (उपमा) कोई किस ज़बान (वाणी) से करे। चित्त तो आपके दर्शनों को करता है, पर अभी कोई ऐसी सूरत (युक्ति) दिखाई नहीं देती।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७०६) २१ नवंबर, १८९४

आपका कृपापत्र कल प्राप्त हुआ था। अति ख़ुशी का कारण हुआ। आज-कल यहाँ बड़े राजे आ रहे हैं। बड़ी धूमधाम है। मुझे शायद जलसा के दिनों में उस नीचे की कोठरी में रहना पड़ेगा जो पहलेपहल मेरे लिये तजवीज़ (नियत) हुई थी, और जो कोठी से परे तबेले के पास है। अब आप पहले से अच्छा लिखते हैं, मश्क़ (अभ्यास) करते रहना चाहिये।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७०७) ९ बजे दिन, २६ नवंबर, १८९४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था। अत्यंत ख़ुशी हुई। कल मैं राय साँझीमल साहब की तरफ़ गया था, वह यहाँ नहीं हैं। कल चले गये हैं। मैं अब नीचे अँगरेज़ी दफ़्तर में रहता हूँ। राजे सब आ गये हुए हैं। परेट में उतरे हुए हैं। अभी कलकत्तेवाला लाट साहब आयेगा। वीर व शुक्र

को दरबार लगेगा, जिसमें केवल चंद (कुछ एक) व्यक्ति ही जाने पायेंगे। यह लाट नया है, इसलिए सैर करने आया है। जलसे का और कोई विशेष कारण नहीं है। पहली दिसंबर को युनिवार्सिटी (विश्वविद्यालय) का जलसा होगा, जिसमें (इस) लाट साहब को भी ख़िताब (पद) मिलेगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७०८) प्रातः, ३ दिसंबर, १८६४

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। कल रात को मैं अँग्रेज़ी दफ़्तर से फ़ारसी दफ़्तर के ऊपरवाली मंज़िल में आ गया हूँ, जिसमें लाला हरिकृष्ण साहब (डॉक्टर) रहते थे। देखिये, अब इसमें कब तक रहता हूँ। आपके चरणों की दया है। सब तरह आनंद है। कल गुरोंदित्ता और दो अन्य व्यक्ति मेरे पास आये थे। आज फिर आयेंगे। मैं आपकी किताब भेज दूँगा। आज यहाँ वर्षा हो रही है। यह ऊपर का कमरा बहुत अच्छा है।

——:o:——

उधार लेकर कार्ड लिखना

संबोधन पूर्वोक्त, (७०६) ६ दिसंबर, १८६४

इस बार पत्र लिखने में देर का कारण यह है कि पास कोई पैसा नहीं था। पहले के कार्ड ख़तम हो चुके थे। वज़ीफ़े मिलने की आशा पर किसी से उधार नहीं लिया था। सो वज़ीफ़ा तो अभी तक मिला नहीं। आज अन्त में (निराश होकर) उधार ले कर कार्ड लाया हूँ। मैंने तीन-चार छोटी पोथियाँ (पुस्तकें) आपकी सेवा में गुरोंदित्ता के हाथ भेजी हैं। आपको अभी मिली हैं कि नहीं ? आप दास पर कृपा-दृष्टि रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७१०) दुपहर, ७ दिसंबर, १८६४

इस समय आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। मुझे इस बार पत्र लिखने में निःसंदेह देर हो गई है। इसका कारण यह है कि मैं अब नीचे दफ़्तर में रहता हूँ और कार्यवाही स्वतंत्र न होने के कारण चित्त पहले की तरह एकाग्र नहीं है। इससे अतिरिक्त काम भी करने-वाला बहुत है। मैं प्रतिदिन पत्र लिखने का इरादा करता रहा हूँ, मगर पत्र लिख नहीं सका। आपने ज़रूर कृपापूर्वक मुआफ़ फ़रमाना।

—:o:—

धन की तंगी के दिन

संबोधन पूर्वोक्त, (७११) ६ दिसंबर, १८६४

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत ख़ुशी हुई। डॉक्टर साहब को मैंने आपकी तरफ़ से ख़ुशी कही थी, ख़ुश हुए थे। मेरे विचार में पुस्तक ख़रीदने में हमें रुपये का ख़्याल कभी नहीं करना चाहिये। उस लाभ की अपेक्षा, जो हमें पढ़ने से प्राप्त होता है, पुस्तक का मूल्य (कितना ही अधिक क्यों न हो) कुछ भी अधिक नहीं होता। एक वह भी दिन थे, जब छोटी-छोटी पुस्तकों के लिखाने पर लोग बीसियों रुपये ख़र्च कर देते थे। अब से दो सप्ताह तक हमें बड़े दिनों की छुट्टियाँ मिलेंगी। आपका दस्तख़त (लिखना) अब पहले से उत्तम है। बारीक लिखने का यत्न किया करें। "बादब" एक शब्द है। जिससे 'ब' के बाद 'अ' को दो बार 'अ' गिनते हैं, उसके अर्थ हैं बहुत अदब (सम्मान) के साथ। मैं आशा करता हूँ कि कल या परसों तक मैं "बाअदब" अर्ज़ (भेंट) करूँगा। वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। आज-कल पहले की अपेक्षा धन की तंगी के दिन हैं। कारण जानते ही होंगे। इस पत्र के लिख चुकने के बाद आपका एक और पत्र मिला। जवाब जल्दी भेजूँगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (७१२) १२ दिसंबर, १८९४

आपका कृपापत्र कल प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। वज़ीफ़ा अभी नहीं मिला। मालूम नहीं, क़ब मिले। जब मिलेगा अर्ज़ की जायगी। मेरा गुज़ारह (निर्वाह) हुए जाता है। आपको वहाँ से (कुछ रुपये) भेजने का कष्ट उठाने की कुछ ज़रूरत नहीं। मुरालीवाले से पाँच गज़ लुध्याना क्लाथ (घर का बना हुआ कपड़ा) आया था। दो-तीन दिन हुए हैं। मैंने भी कल उसका एक कुरता और एक पाजामा बनना दे दिया था। अब बड़े दिन की छुट्टियाँ समीप हैं। और काम भी बहुत है। आपने गुलाम पर हर तरह से दया की दृष्टि रखनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७१३) १० बजे प्रातः, १५ दिसंबर, १८९४

आपके दो पत्र इस समय मिले। महाराजजी ! मैं अत्यंत आजिज़ी (विनीत भाव) से बिनती करता हूँ कि मुझे आज-कल काम बहुत ज्यादा रहा है (जो सब आप ही का काम समझता हूँ)। और तबीयत (वृत्ति) एक ही तरफ़ अधिक मायल (प्रवृत्त) रही है। इसलिए अगर मुझसे किसी बात की कोताही (न्यूनता) हो गई हो, तो आपने कृपा-पूर्वक मुआफ़ फ़रमा देना। मेरे मन में कदापि और कोई बात नहीं है। छुट्टियों में आने का मैं इरादा रखता हूँ। अगर आप पहलेपहल यहाँ तशरीफ़ ले आयें, तो ऐन (पूर्ण) कृपा हो। वज़ीफ़ा अभी तक नहीं मिला। देखिये, आज मिलता है कि नहीं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७१४) १६ दिसंबर, १८९४

नज़ामी का एक शेर (पद्य) है, जो मुझे इस वक़्त ठीक याद तो नहीं मगर इस तरह का है—

न बूदे मरा बा ख़ता गर शुआ़र।
तुरा नाम कै बूदे आमुरज़गार॥

अर्थ—(अगर मेरे कार्य वा पद्य दोष-युक्त न होते, तो आपका नाम बख़्शनहार वा क्षमावान् कब होता)।

इस पद्य का अभिप्राय तो आप समझ ही गये होंगे। मनुष्य से अपराध भी हो जाते हैं, आप मुआ़फ़ फ़रमा दिया करें। आपकी ख़फ़गी (रोष) से मुझे बड़ी चिंता लग जाती है और पढ़ा भी नहीं जाता। मेरे दिल में इसके सिवा कदापि कोई ख़्याल नहीं था कि मैंने गुजराँवाले जाना है। और आपको यहाँ तशरीफ़ लाने (पधारने) में कई तरह का कष्ट होता। कल कालिज से वह चीज़* मिली थी। बाअदब अ़र्ज़† कर दी थी। और जमाअ़तों (कक्षाओं) का कल सोमवार से शनिवार तक इम्तहान है।

२४ तारीख़ सोमवार को कालिज लगेगा (खुलेगा), और फिर बड़े दिन की छुट्टियाँ मिलेंगी। लाला साहब ने इस मंगलवार को रियाज़ी (गणित) का इम्तहान देना है। मैं शायद बुद्ध को हाज़िरे-ख़िदमत (सेवा में उपस्थित) हूँगा। और फिर कराची जायेंगे। २४ दिसंबर को कालिज लगेगा। इसलिए अगर मैं इस बुद्धवार को हाज़िर हूँगा, तो मुझे रविवार को वापिस आना पड़ेगा।

——:o:——

बद्ध कोष्ठ (क़ब्ज़) का परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (७१५) ३ बजे सायं, १६ दिसंबर, १८६४

आपका आज और एक क्रोध से भरा कृपापत्र प्राप्त हुआ। नहीं मालूम,

---

* यहाँ 'चीज़' से अभिप्राय तीर्थरामजी का मासिक वज़ीफ़े से है।

† 'अ़र्ज़ कर दी' से अभिप्राय वज़ीफ़े से कुछ रुपये गुरुजी को भेज दिये। ऐसा तीर्थरामजी का नियत संकेत है।

मेरे दिन कैसे आ गये हैं। मैं अपनी तरफ़ से तो अत्यन्त एहत्यात (सावधानी) के साथ प्रत्येक काम करता हूँ, मगर फिर भी आप किसी न किसी बात पर रुष्ट हो हो जाते हैं। बहुधा मैं तीसरे दिन पत्र भेजा करता हूँ, मगर कई बार चौथे दिन भी भेजा जाता है। इस बार काम की अधिकता के कारण चौथे दिन भेजा। कोई असाधारण (अपूर्व बात) नहीं थी, परन्तु आप रुष्ट हो गये। पहले कई बार भी मेरा विनय-पत्र देर के बाद गया, पर तब आपने क्षमा कर दिया, और कुछ ख़्याल न किया। अस्तु, महाराजजी ! आपका रुष्ट होना भी ठीक उचित, बल्कि मेरे हाल (अवस्था) पर अनुग्रह है।

जवाबे-तलख़ मे ज़ेबद, लबे-लाले-शकर ख़ारा।

भावार्थ—मधुर मधुर (मिठास-भरे) ओठों पर कटु शब्द भी युक्त हो जाते हैं। आपके मुखारविन्द से कटु वचन भी मुझे अमृत समान हैं।

मुझे आपके रोष से भी कई प्रकार का लाभ है, कई उपदेश लेता हूँ। मैं सर्व अवस्था में आपका ताबेदार (आज्ञाधीन अनुचर) हूँ।

सरे-तस्लीम ख़म है जो मिज़ाजे-यार में आये।

भावार्थ—आपके चरणों में सिर झुका पड़ा है, आपकी जो इच्छा हो करें।

१—राज़ी हैं हम उसी में जो कुछ दिलरुबा करे।
ख़्वाह वह जफ़ा-ओ-जौर करे या वफ़ा करे॥

२—आँ रा कि बजा तुस्त हरदम करमे।
उज़्रश बिनेह अरकुनद बेह उमरे सितमे॥

भावार्थ—१—जो हमारा प्रियतम प्राणेश हमारे साथ करे, चाहे वह सत्कार करे चाहे तिरस्कार, हम उसी में प्रसन्न वा सन्तुष्ट हैं।

२—जिसकी कि तेरे ऊपर नित्य कृपा रही है, यदि वह सारी आयु में कोई उपद्रव तथा अपराध भी करे, तू उसे क्षमा कर दे।

महाराजजी ! आप इतने ख़फ़ा (रुष्ट) हुए, और मैं जानता हूँ कि मेरे

चित्त में कोई राई का दाना भर भी किसी प्रकार का बुरा ख्याल नहीं था, इसलिये मैं अब अपने चित्त को व्यर्थ चिन्ता में नहीं लगाता (चिन्ता लगाने से मुझसे एक अक्षर भी नहीं पढ़ा जाता)। और चित्त को पूर्ववत् आपके चरणों में अधिक ख़ुश रखता हूँ। मैं जानता हूँ कि मेरे चित्त की निर्मलता आप पर प्रकट हुए विना नहीं रहेगी और आप मुझ पर पहले से भी अधिक प्रसन्न रहेंगे।

अ़दावत से तिरी प्यारे! ज़रर होवे तो मैं जानूँ।
भला तुम ज़हर दे देखो, असर होवे तो मैं जानूँ॥

भावार्थ—हे भगवन्! आप यदि शत्रुवत् मेरे साथ बर्तें तो भी मुझे कोई हानि नहीं होगी, और यदि मुझे आप विष भी दे दें, तो भी मुझे कुछ बुरा असर नहीं होगा; आप चाहे बर्त के देख लें।

जिस कारण से आप मुझ पर रुष्ट हुए हैं, उसी से आपका चित्त इन दिनों पढ़ने में भी भले प्रकार नहीं लगता। मैं अपने अनुभव की सहायता से प्रतिज्ञा के साथ कह सकता हूँ कि वास्तव में कारण इन दोनों बातों (रुष्ट होना, और पढ़ने में चित्त न लगना) का आपके उदर में रोग होने से अतिरिक्त और कुछ कदापि नहीं है। जब उदर में रोग हो या शौच क़ब्ज़ (बद्ध) होकर आवे, तो चित्त अशान्त रहता है, पढ़ा जाता नहीं। और व्यर्थ संकल्प वा चिन्ता और मिथ्या (निर्मूल) अनुमान मनुष्य की मति को भ्रष्ट कर देते हैं। जब शौच सुगमता से ठीक आवे और उदर नितान्त ठीक हो, तब किसी प्रकार के शोक अथवा चिन्ता का आना ऐसा है, जैसे कड़कती दुपहर (प्रचंड मध्याह्न काल) में अर्ध रात्रि का पड़ जाना। मासड़ (मौसा) जी मेरे लिये एक औषध (नुसखा) बनाकर लाये थे, उसका मैंने सेवन किया था। बड़ा ही लाभ प्राप्त हुआ। उस नुसख़ा (औषध-विधि) की अँग्रेज़ी और देशी वैद्यों ने अति प्रशंसा की है। यूनानी वैद्यों की सम्मति का मुझे पता नहा।

मैं भी उसे बनवाना चाहता हूँ। अगर आप उसका सेवन करें, तो बड़ी अच्छी बात हो। इससे उदर, मस्तिष्क और नेत्रों का अत्यन्त लाभ प्राप्त होता है। यद्यपि आप इसे जानते तो होंगे, मगर मैं भी लिख देता हूँ। नुसख़ा "हर्रड़ (हरीतकी), बहेड़ा, आमला, सोंठ, सौंफ़, सरना (सना)", इन सबको एक समान लेकर कूट-छानकर इन सबके बराबर सेंधिया लून मिला दो। प्रत्येक मात्रा नौ माशा से एक तोला तक होनी चाहिये।

——:०:——

प्रसन्न चित्त के सामने संसार के सारे पदार्थ तुच्छ हैं

संबोधन पूर्वोक्त, (७१६) १२ बजे दिन, १७ दिसंबर, १८६४

इस समय आपका एक प्रसन्नता-भरा पत्र मिला, अत्यन्त आनंद हुआ। धन्य है, परमात्मा ने आपके चित्त को पहली आनन्दमयी अवस्था पुनः दिखाई। यह बड़े हर्ष का स्थान है। मेरा मन भी आपके चरणों की दया से आनन्द में है। ऐसी अवस्था के आगे संसार के सब पदार्थ तुच्छ हैं। ख़्वाजा हाफ़िज़ लिखते हैं कि:—

दमे बा ग़म बसर बुर्दन जहाँ यक्सर नमे अर्ज़द।

बमये बिफ़रोश दल्क़े-मा कज़ीन् बेहतर नमे अर्ज़द॥ इत्यादि इत्यादि

भावार्थ—ऐ प्यारे! तेरे प्रेम के शोक में एक श्वास भी लिया हुआ सारे जगत् के मूल्य के तुल्य नहीं (अर्थात् संसार उस श्वास के आगे तुच्छ है)। हमारा बाह्य सर्वस्व इस प्रेममद्य के बदले बेच दे, क्योंकि इससे बढ़कर इसका मूल्य नहीं।

——:०:——

अधिक आहार का परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (७१७) ६½ बजे सायं, १७ दिसंबर, १८६४

आपका एक और कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई।

मैं परसों बुद्धवार प्रातः की गाड़ी अगर न आ सका तो सायंकाल की गाड़ी से आने की आशा रखता हूँ। भजन करने से निःसन्देह पूर्णानन्द प्राप्त होता है। और परमात्मा पर सच्चा विश्वास होने से किसी वस्तु की कमी नहीं रहती। मगर जब परिमाण (अन्दाज़े) से अधिक खाया जाय, तो यह विश्वास परमात्मा पर नहीं रहता और वृत्ति विषयों, शोक तथा चिन्ता में पड़ जाती (आसक्त हो जाती) है। दूध का सेवन बड़ा अच्छा है। ख़र्च की कुछ बात नहीं है। शेख़ सादी लिखता है किः—

अन्दरूँ अज़ तुआ़म ख़ाली दार,
ता दर आँ नूरे-मारफ़त बीनी।
तही अज़ हिकमती ब इल्लते-आँ,
कि पुरी अज़ तुआ़म ता बीनी॥

भावार्थ—उदर को भोजन से ख़ाली रख, जिससे तू उसमें ईश्वर का प्रकाश अनुभव कर सके, क्योंकि भरे हुए पेटवाला अपनी वृत्ति को ईश्वर-ध्यान में ठीक नियुक्त नहीं कर सकता। तुझे यह ज्ञान तथा बोध नहीं है, इसीलिये तूने उदर को भोजन से नाक तक भरा हुआ है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७१८) २४ दिसंबर, १८६४

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हूँ। आज भाईया * नंदलाल चला जायगा। आज मैं कालिज आया। वहाँ छुट्टी थी। सरदार ईश्वरसिंह को मैं फिर नहीं मिल सका। हाँसी जाने का इरादा तो किसी क़दर है, मगर अभी कहीं से ख़र्च हाथ नहीं लगा।

——:o:——

* पंजाब में प्रायः पिताजी को भाईया के नाम से पुकारते हैं। परंतु पिता की आयु के बराबरवाले या पिता-तुल्य सम्मानवाले को भी भाईया करके पुकारते हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (७१९) ६ बजे रात, २५ दिसंबर, १८९४

आपका कृपापत्र कोई नहीं मिला। भाईया नंदलाल आज प्रातः ६ बजे की गाड़ी चला गया है। मासड़ (मौसा) जी का आज फिर एक और बड़ी मुहब्बत का लफ़ाफ़ा आया था। आपको आदाब (सम्मान-पूर्वक नमस्कार) लिखा है। और मेरी बाबत लिखते हैं कि "वीरवार की प्रातः को हाँसी स्टेशन पर तुम्हारा स्वागत किया जायगा।" अर्थात् तुम्हारी बाट ताकी जायगी। पर मेरा इरादा कल ६ बज कर ४० मिनट गुज़रे यहाँ से चलनेवाली गाड़ी पर सवार होने का है। महाराजजी! आपने कृपादृष्टि रखनी। मैं आपका ग़ुलाम हूँ। मैं आपकी आज्ञा से वहाँ चला हूँ। आपने वहाँ कृपापत्र ज़रूर भेजना। मेरा ध्यान आपके चरणों में रहता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२०) हाँसी, २८ दिसंबर, १८९४

मैं यहाँ कल प्रातः वीरवार साढ़े सात बजे के बाद आ गया था। रास्ते में तकलीफ़ किसी प्रकार की नहीं हुई। फ़िरोज़पुर चार पाँच घंटा अगली गाड़ी तैयार न होने के कारण ठहरना पड़ा था। ज्वालाप्रसाद और दो एक और मित्र मिले थे। किसी तरह की किसी जगह तकलीफ़ नहीं हुई। आशा है कि कल सायंकाल की गाड़ी यहाँ से रवाना हूँगा। आप दयादृष्टि रखा करें। मैं आपका बंदा (ग़ुलाम वा सेवक) हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२१) लाहौर, ३० दिसंबर, १८९४

मैं कल पौने ६ बजे सायं के हाँसी से रवाना हुआ था। आज नौ बजे प्रातः के लगभग लाहौर स्टेशन पर पहुँच गया हूँ। रज़ाई वहाँ से रात के लिये एक ले आया हूँ। लाला साहब भी करौंची से इसी

गाड़ी में आ गये हैं। यह पत्र रेल में अर्थात् चलती रेल में लिखा है, और पत्र लिखूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२२) ३० दिसंबर, १८९४

एक पत्र मैंने आज प्रातः भेजा था, संभवतः मिला होगा। हाँसी* से मैं एक पीपा घी का लाया हूँ। और दाखिल (परीक्षा-प्रवेश-फ़ीस) के लिए रुपया (जब मुझे आवश्यकता पड़ेगी, वह तत्क्षण मनीआर्डर से भेज देंगे) मैं अपने साथ नहीं लाया। इसके कई कारण थे। प्रथम तो वह मुझे यह रुपया औरों से गुप्त (छुपा कर) देना चाहते थे। द्वितीय मुझे यहाँ लाकर भी तो किसी के पास जाकर रखना ही पड़ता था, इत्यादि। केवल आती बार रेल का टिकट उन्होंने ले दिया था। बड़ी मुहब्बत और सत्कार से मिले थे, और अन्य कई एक भले पुरुषों का मिलना हुआ। आपको (मौसाजी) बड़े आदाब (सम्मान) से स्मरण करते थे और कहते थे कि यों तो सब कुछ आपकी कृपा से यहाँ बहुत है, केवल आपकी कृपादृष्टि चाहिये। साधारण स्वास्थ्य के लिये उन्होंने उस चूर्ण (हड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, सौंफ़, सरना (सना), सेन्धिया लून) की, जिसका नाम उन्होंने चूर्ण कलाँ बताया है, बहुत प्रशंसा की है।

रेविन्द चीनी की गोलियों के बनाने की यह विधि है :— "एक डराम या चार माशे रेविन्द चीनी लेकर उसे बहुत पीस लो, और पानी के साथ उसकी ३० तीस गोलियाँ बना लो"। प्रत्येक मात्रा एक या दो गोली से सात गोली तक। यदि हो सके, तो उस चूर्ण (सफ़ूफ़) में पाँच बूँदें पेपरमिंट तेल की भी डाल लो।

* हाँसी नगर का नाम है, यहाँ गुसाईं तीर्थरामजी के मौसा (मासड) पंडित रघुनाथमलजी असिस्टेंट सर्जन की पदवी पर थे।

थोड़ा सा मैग्नेशिया मिलाने से गोली अच्छी तरह से बन जायगी। आपके दो पत्र मिले थे। आप दास पर कृपादृष्टि रखा करें।

—:o:—

सन् १८६५ ईस्वी

(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु साढ़े इक्कीस वर्ष के लगभग थी, और इसी वर्ष के आरम्भ में गुसाईंजी ने गणितशास्त्र में एम० ए० पास किया था।)

मिस्टर गिल्बर्टसन का एक उत्तम घड़ी उपहार में देना

संबोधन पूर्वोक्त, (७२३) २ जनवरी, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। हाँसी का सविस्तर हाल मैं आगे अर्ज़ (स्पष्ट) कर ही चुका हूँ। सरदार ईश्वरसिंह साहब से आपने अमृतसरवाले ख़ालसा कालिज की बाबत दर्याफ़्त करना कि आया इंट्रैंस की पढ़ाई शुरू होती है कि नहीं, और क्या इंतज़ाम (प्रबंध) है, इत्यादि। आज मुझे गिल्बर्टसन साहब (मिशन कालिजवाले) ने बुला कर एक बड़ी उत्तम घड़ी उपहार में दी है, जञ्जीरी के साथ। यह सब आपकी कृपा का फल है, और यह सब आपकी ही दौलत (संपत्ति) है। चाहे आप यह घड़ी अपने पास रखें, चाहे मेरी टाइमपीस आप ले लें।

—:o:—

संसार किसी का नहीं

संबोधन पूर्वोक्त, (७२४) ४ जनवरी, १८६५

आपका कृपापत्र मिला, बड़ी ख़ुशी हुई।

जहाँ ऐ बिरादर, नमानद बकस।
दिल अंदर जहाँ आफ़रीं बन्दो बस॥

भावार्थ—ऐ भाई ! संसार किसी का नहीं होगा, इसलिये चित्त ईश्वर में लगा, और बस ।

दीवान कृपाराम (डिपुटी) जो यहाँ रह गया है, वह थोड़े दिन हुए पूरा हो गया (मर गया) है । मैंने सुना है कि लाला साहब* का विचार है कि अँग्रेज़ी और फ़ारसी के दोनों दफ़्तर बहुत जल्दी ऊपर ले आयें, और मुझे कहें कि धुर ऊपर (सबसे ऊपर की छत पर) बरसातियों (परछत्तियों) में रहूँ । जैसी आप आज्ञा भेजेंगे, वैसा करूँगा । आप कहें, तो बरसातियों में जा रहूँ, नहीं तो नगर (बस्ती) में चला जाऊँ । मुझे बरसाती में रहने में भी किञ्चित् क्लेश नहीं है, बल्कि प्रसन्न हूँ । केवल परीक्षा तक ही रहना है । उत्तर सोच-विचार कर देना । यह भी संभव है कि और कोई स्थान रहने को दे दें ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२५) ५ जनवरी, १८६५

कल मैं अपने पहले कमरे की तरफ़ आ गया हूँ । अब सर्दियों के दिन आशा है कि यहीं काटूँगा ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२६) ७ जनवरी, १८६५

आपका एक कृपापत्र आज और मिला । बड़ी ख़ुशी हुई । सब कुछ परमात्मा के किये से होता है । आदमी पर या दुनिया की किसी और बात पर हमें कुछ भरोसा नहीं करना चाहिये । आप जल्दी तशरीफ़ ले आयें ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२७) १० जनवरी, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ । अत्यंत ख़ुशी हुई । आपका इंतज़ार

* लाला साहब से अभिप्राय लाला रामशरणदास रईस, लाहौर (अर्थात् अपने शिष्य) से है, या उनके पिता राय मेलाराम साहब बहादुर से भी हो सकता है ।

है। यहाँ भी बड़ी झड़ियाँ लगी हुई हैं। यह पत्र बड़ी जल्दी में लिखा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२८) १३ जनवरी, १८९५

आपका कृपापत्र मिला। अति आनंद प्राप्त हुआ। अब धूप खूब निकलती है। मौसम (ऋतु) अच्छा है। आशा है कि आप जल्दी तशरीफ़ लावेंगे। आपने जल्दी दया करनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७२९) १३ जनवरी, १८९५

चाचाजी का आज एक पत्र आया है कि दर्द फिर शुरू है। बड़ा अफ़सोस (शोक) है। आप जब तशरीफ़ लावें, तो आपने "मुक्तिसर" के दोनों भाग भाई लालसिंह या भाई ईश्वरसिंह से ज़रूर ख़रीद लावें। इनमें दरबार साहब के चुने चुने शब्द हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३०) १६ जनवरी, १८९५

आप अभी तक तशरीफ़ नहीं लाये। क्या कारण है? मुझे परसों का ज़ुकाम ने तंग कर रखा है। यह पत्र लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। लाला अयोध्यादासजी को मेरा मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३१) १८ जनवरी, १८९५

मैं आपका बड़ा ही इंतज़ार कर रहा हूँ और बड़े दिनों से याद कर रहा हूँ। आप अभी तक पधारे नहीं। ख़ैर (अस्तु)। जब किसी काम का वक़्त आता है तब ही वह होता है। आज आपके चरणों का ध्यान करके मैंने इम्तहान का दाख़िला* भेज दिया है। सब कुछ परमात्मा के और

* यह दाखिला एम्० ए० के इम्तहान का है।

आपके इख़्तियार में है। एक तकलीफ़ मैं आपको और देनी चाहता हूँ, अगर आप गवारा (बरदाश्त) कर सकें तो। मेरी किताबों में शायद यह अँग्रेज़ी की किताब होगी जिसका नाम यह है Todhunter's Mensuration अर्थात् "टाड हंटर साहब का रिसाला मसाहत"। अगर यह उनमें हुई तो आपने कृपा करके अपने साथ लेते आनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३२) २३ जनवरी, १८९५

आपने वहाँ पहुँचकर कोई कृपापत्र नहीं भेजा। वह किताब रिसाला मसाहत टाड हंटर साहब की रचना (Todhunter's Mensuration) वहाँ गुजराँवाले मेरी किताबों में है कि नहीं? अगर है तो जल्दी कष्ट उठाने की कृपा करें। अभी ऐनक मैंने नहीं बनवाई। वज़ीफ़ा भी अभी नहीं मिला। रेशा अभी थोड़ा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३३) २५ जनवरी, १८९५

आज मैंने आपकी सेवा में गुरुमुखी का व्याकरण (छोटा) भेजा है। आपने उसके पहुँचने से जल्दी सूचना देना। आपका कृपापत्र आये देर हो गई है। क्या कारण है? आपने दास पर किसी बात से ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। अक्सर (बहुधा वा प्रायः) अपराध भी हो ही जाया करते हैं। अगर आप यह लिख भेजें कि जो दीवाने-ज़ौक़ आप चाहते हैं उसके कितने पृष्ठ हैं। और किस व्यक्ति ने उस पर शरह (व्याख्या) की हुई है, और कहाँ छपा है, तो शायद मैं आपको भेज दूँ, नहीं तो उसका पता लगाना बड़ा मुश्किल है, क्योंकि कई प्रकार का दीवाने-ज़ौक़ छपा हुआ है। मालूम नहीं आप कौन सा चाहते हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३४) २७ जनवरी, १८६५

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, अत्यंत ख़ुशी व प्रसन्नता प्राप्त हुई। किताब भी पहुँच गई। पंडित देवकीनंदन का घर मुझे मालूम न था। आज उनके कालिज का एक उस्ताद मुझे मिला था। उसने इक़रार किया था कि वह पंडित देवकीनंदन को कल सोमवार ज़रूर मेरी तरफ़ भेजेगा। प्रथम तो मैं स्वयं ही कल उनके कालिज में चला जाऊँगा और उसे पैग़ाम (संदेसा) दे दूँगा। आपने दीवाने-ज़ौक़ की बाबत कुछ नहीं लिखा। साथ इसके अगर आप पदमपुराण जैसा आप चाहते हैं विस्तारपूर्वक लिखें तो आशा है कि मैं ख़रीद कर आपकी सेवा में भेजने की कोशिश करूँ। मेरी राय (सम्मति) में अगर आप स्वामी शिवगणचंद्रजी को बुला लें तो कुछ हर्ज नहीं। ऐनक को मैंने दो रुपये देकर चाँदी की कमानी लगवा ली है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३५) ३० जनवरी, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। आप ज़रूर जल्दी कृपा किया करें। लिहाफ़ आदि की कुछ बात नहीं। यहाँ से माँग सकते हैं। पोथियाँ आपने ख़ुद आनकर ही ले लेनी। जब आपका चित्त वापिस जाने को चाहे आप तशरीफ़ ले जा सकते हैं। चाचाजी को मैं लिखने लगा हूँ कि अनुचित रीति से आपके साथ कभी बर्ताव न किया करें। देवकीप्रसाद को आपका पैग़ाम (संदेसा) दे दिया हुआ है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३६) १ फ़रवरी, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। मैं इसका जवाब पहले पत्र में दे चुका हूँ। आप कल तशरीफ़ लायेंगे। कभी पत्र लिखने

में देरी हो जाय, या कोई अपराध हो, तो आप कृपापूर्वक मुआफ़ फ़रमा दिया करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३७) ३ बजे प्रातः, ४ फ़रवरी, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। ग़ुलाम पर सर्व प्रकार से ख़ुश रहना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३८) ६ फ़रवरी, १८९५

आपने अभी आने का कोई ठीक दिन नहीं लिखा। आप कब तशरीफ़ लावेंगे। परसों और अतरसों यहाँ वर्षा हुई थी। और ओले भी पड़े थे। मगर अब धूप ख़ूब लगती है। मौसम अच्छा है। आप कृपा की दृष्टि रखा करें। आजकल मुझे काम बहुत है। आप ग़ुलाम पर ख़ुश रहा करें। यहाँ मुंशी संतराम (जा अब मुरारीवाले रहता है और जो मेरा पुराना उस्ताद है) आया था। लाला साहब ने उसे नौकर रख लिया है। इस पत्र को लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७३९) १३ फ़रवरी, १८९५

आपकी पोथियाँ अभी मैंने नहीं ख़रीदीं। आशा है कि जल्दी ख़रीद लूँगा। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४०) १५ फ़रवरी, १८९५

कल आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। परमेश्वर हमारे चित्तों को सदा ही अपनी तरफ़ लगाये रखे। आपके पास जो संत आये हुए हैं, उनको भी मेरा मत्था टेकना। आपकी पोथियाँ मैं रविवार को ख़रीदने जाऊँगा। "बुत कदहे चीन" मैंने ≡)॥ को मँगवा लिया है।

अच्छा है। काला राम अपने गाँव गया है, पंद्रह दिन के लिए। और मैं अब केवल दूध पीता हूँ आनंद है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७४१)　　१७ फ़रवरी, १८६५

आपका कल एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। मैं आज आशा है कि आपकी पोथियाँ लेने जाऊँगा। आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। चाचाजी का कोई पत्र या पैग़ाम (संदेसा) अभी नहीं आया। वह बहुत कम लिखा करते हैं। आज या कल उनको फिर लिखूँगा।

——:o:——

राय रामशरणदास के घर भोजन का प्रबन्ध

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७४२)　　२० फ़रवरी, १८६५

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत ख़ुशी हुई। अब आज से लेकर काला (नौकर) के आने तक मेरा भोजन लाला (रामशरण) जी के घर से आ जाया करेगा। आज आया था। उन्होंने अपने आप ही ऐसा प्रबन्ध किया है। यह आपका संकल्प पूरा हुआ है। मेरा अपना विचार तो थोड़ा बहुत था। आपके आने की सूचना पढ़कर बड़ी ख़ुशी हुई। जल्दी पधारिये।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(७४३)　　२७ फ़रवरी, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मुझे अभी ठीक-ठीक सेहत (नीरोगता) नहीं आई। मगर आशा है कि जल्दी आ जायगी। मैं रामलाल के रिज़ल्ट (नतीजे) की बाबत जब रिज़ल्ट निकलेगा, लिख दूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४४) २ मार्च, १८९५

मुझे अब पहले से बहुत आराम है। आप दया रखा करें। काला आज आ गया है। चाचाजी का हाल लिखें।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७४५) ७ मार्च, १८९५

मासड़ (मौसा) जी का पत्र आया है। उन्होंने भी लिखा है कि भगतजी इम्तहान के दिनों में तुम्हारे पास रहें, तो बहुत अच्छा है। ब्रज और मोहन पास हो गये हैं। आशा है कि मैं कल अर्ज़ करूँगा, अर्थात् सेवा में कुछ भेजूँगा। आप दया रखा करें।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७४६) ९ मार्च, १८९५

कल देर से वह चीज़ यहाँ तक़सीम हुई थी (बँटी थी)। इसलिए आदमी को डाकखाना से वह काम करने के बिना आना पड़ा। आज अर्ज़ (भेंट) की गई है। आप दया रखा करें।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७४७) ११ मार्च, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अति ख़ुशी हुई। मैंने तो आपको यह नहीं लिखा कि मेरे पास ब्रज और मोहन आवेंगे। बल्कि अगर इन दिनों आना चाहें तो उन्हें रोक देना चाहिये। मैंने तो केवल यह लिखा था कि वह वार्षिक इम्तहान में पास हो गये हैं। आपने जल्दी तशरीफ़ ले आनी। और कम-से-कम आठ सात दिन के रहने का इरादा करके आना।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७४८) १ बजे रात, ११ मार्च, १८९५

मिडिल का रिज़ल्ट (नतीजा) आज सात बजे सायं के लगभग

निकला है। मैं १२ बजे के लगभग देखने गया था। वहाँ अत्यंत भीड़ थी। एक बड़ा मज़बूत आदमी वहाँ मेरा परिचित निकल पड़ा। उसने मुझे तीन लड़कों का पता कर दिया, जिनकी तफ़सील यह है:—

नंबर	नाम	रिज़ल्ट	विवरण
२५९१	अविनाशीराम	पास	यह लड़का मुरालीवाले का है।
१५३३	हरिकृष्णदास	पास	हमारे डॉक्टर साहब।
२६८२ :	रामलाल	×	यह नंबर और नाम उसे फ़ेहरिस्त में नहीं मिला।

वह किताब जो लखनऊ लिखी थी (पदमपुराण) अभी आई है कि नहीं ? आप ग़ुलाम पर हर तरह से ख़ुश रहा करें। मेरा रोल नंबर २१ है। ब्रजलाल का आज पत्र आया है कि उसे निम्न-लिखित पुस्तकें यहाँ से खरीदकर डाक से आपकी माफ़र्त भेज दी जायँ। मेरे विचार में अगर आप ही गुजराँवाले से ख़रीदकर उसे भेज दें तो अति उत्तम होगा, यद्यपि मुझे डर है कि आपका कष्ट होगा। पंद्रह आने ।।।≡) के लगभग इन पर लगेंगे। किताबें यह हैं:—(१) गुलिस्ता दो बाब (२) खेती की किताब (३) उर्दू की सातवीं किताब।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७४९) १२ मार्च, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बरकतराम इन दिनों यहाँ नहीं था। अन्यथा मैं उससे तुरंत रिज़ल्ट दर्याफ्त करवा लेता। उस जगह प्रातः भीड़ बहुत ही थी। मैंने कहा तीसरे पहर जाकर ज़्यादा हाल दर्याफ्त कर लूँगा। मगर तीसरे पहर जो वहाँ गया, तो तख़्ता इस तरह ख़ाली पड़ा था कि मानों इस पर रिज़ल्ट कभी लगा ही नहीं। लड़कों ने ऐसा साफ़

किया था। इम्तहान से एक दो दिन पहले आप तशरीफ़ ले आयें, तो अत्यंत कृपा। बरकतराम का मत्था टेकना। आपने इस बार वह गोलियाँ ज़रूर ले आनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५०) १२ बजे रात, १४ मार्च, १८६५

आपके दो कृपापत्र मिले। अत्यंत ख़ुशी हुई। ब्रज को किताबें मिल गई हैं। आपने बड़ा अच्छा काम किया है। आप अब तशरीफ़ ले आयें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५१) रात, १५ अप्रैल, १८६५

आज भी रिज़ल्ट नहीं निकला। आपके चरणों का आश्रय है। आपने याद रखना। मेरे क़ुसूरों (अपराधों) की तरफ़ न देखना। अपनी बख़्शिश (दया) की तरफ़ देखना। बरकतराम "तसबीहे-आरिफ़" ले आया है। मैं आती बार ले आऊँगा। बरकतराम का मत्था टेकना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५२) दुपहर, १६ अप्रैल, १८६५

आपका कृपापत्र मिला। हाल मालूम हुआ। रिज़ल्ट अभी नहीं निकला। मैंने कल सोमवार सारा दिन रिज़ल्ट का इंतज़ार करके सायं को आपकी तरफ़ विनय-पत्र भेजा था। मगर मालूम हुआ कि यहाँ के सन्दूक़चों में से दिन चढ़े पत्र ले जाते हैं, सो मेरा कल का पत्र आज प्रातः की गाड़ी में गुजराँवाले नहीं पहुँच सकता था। सो यहाँ से सायं की गाड़ी से जायगा। साथ इसके गुजराँवाले लाहौर की तरफ़ के पत्र केवल प्रातः के समय तक़सीम होते (बाँटे जाते) हैं। सो मेरा कल का लिखा हुआ पत्र आपको भलके (कल) मिलेगा, तीसरे दिन को। ख़बर आज या कल निकलनेवाली है। आशा है कि जल्दी निकलेगी। मैं ख़बर निकलने के बाद आने में देर नहीं करूँगा। और आपको सब सूचना दे

दूँगा। अगर आप उचित समझें और आपको कष्ट न हो, तो आप निःसंदेह आने की कृपा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५३) ९ बजे रात, १६ अप्रैल, १८९५

रिज़ल्ट अभी नहीं निकला। मेरा मन हुलास की दशा में है। आप दया रखा करें। आपने हर तरह से कृपादृष्टि रखनी। जीवनसिंहजी को मत्था टेकना।

——:o:——

गुरुजी से अभेदता

संबोधन पूर्वोक्त, (७५४) ९ बजे रात, १७ अप्रैल, १८९५

आपने जो एम० ए० का इम्तहान दिया हुआ है, उसका नतीजा (परिणाम) अभी नहीं निकला। जब आपके पास हो जाने की सूचना आयेगी, मुझे बड़ी ख़ुशी होगी। यह सब आप ही का काम है। मुझे कोई जल्दी नहीं, जिस दिन यह सूचना निकालने की आपकी इच्छा हो, उसी दिन सही।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५५) दुपहर, १८ अप्रैल, १८९५

रिज़ल्ट अभी नहीं निकला। अगर कल और परसों भी न निकला, तो परसों सायं की गाड़ी में मैं सेवा में उपस्थित हो जाऊँगा। अगर आज या कल निकल आया तो मैं पहले ही आ जाऊँगा। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५६) रात्रि, १८ अप्रैल, १८९५

रिज़ल्ट अभी तक नहीं निकला। देखिये कब निकलता है। आप दया रखा करें। आपका पत्र भी एक के सिवा और कोई नहीं आया। आप ही का आश्रय है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७५७) १६ अप्रैल, १८६५

आज आपका एक कृपापत्र मिला। अत्यंत ख़ुशी हुई। बी० ए० का रिज़ल्ट भी आज निकल आया। गुजराँवाले से फ़तेहउद्दीन (दरज़ी) पास है। मेरा रिज़ल्ट अभी तक नहीं निकला। आप दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (७५८) रात, १६ अप्रैल, १८६५

बी० ए० के इम्तहान में दो सौ में से चौंसठ (लड़के) पास हो गये हैं, जिनमें से छे मुसलमान थे। मिशन कालिज सबसे अच्छा रहा है। मेरा रिज़ल्ट अभी नहीं निकला। आप दया रखा करें। मैं कल रात की गाड़ी में आने की आशा करता हूँ। आप दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (७५६) ५ मई, १८६५

लाला गोपालदास इम्तहान इंट्रैंस में कामयाब (सफल) हो गया है। मेरी तरफ़ से मुबारकबाद (बधाई)। लाला साहब अभी तशरीफ़ नहीं लाये। मुरालीवाला के लड़कों का पता अभी नहीं लगा। बाक़ी कल लिखूँगा।

—:o:—

एम० ए० उत्तीर्ण होने के पीछे क्लास खोल कर पढ़ाने का संकल्प

संबोधन पूर्वोक्त, (७६०) ८ मई, १८६५

लाला साहब और सेठ साहब अभी नहीं आये। मैंने अभी तक कोई विचार नहीं किया। कुछ दिन परमेश्वर के रंग देखकर क्लास (श्रेणी) खोलूँगा। शायद कल कुछ अर्ज़ (भेंट) कर सकूँगा। आप दया रखा करें।

—:o:—

गणितशास्त्र की क्लास खोलने का विज्ञापन

संबोधन पूर्वोक्त, (७६१) १० मई, १८६५

कल आशा है यहाँ से कुछ रुपये हाथ लगेंगे। अर्ज़ (भेंट) की जावेगी। लाला साहब व सेठ साहब अभी नहीं आये। कई तजवीजों (विचारों) के बाद आज गवर्नमेंट कालिज के प्रिन्सिपल साहब ने मेरी ओर से यह विज्ञापन (नोटिस) छपवाना भेजा है कि एफ़० ए० श्रेणी के विद्यार्थी दस रुपया मासिक और बी० ए० श्रेणी के विद्यार्थी पंद्रह रुपया मासिक फ़ीस देकर मुझसे अर्थात् तीर्थराम से आकर गणित पढ़ें। जब विद्यार्थियों की संख्या दस से अधिक हो जायगी, तब काम आरम्भ किया जायगा। आप दास पर दया रखा करें। आपका एक कृपापत्र मिला। बड़ी खुशी हुई।

—:o:—

उदासी का नाम तक नहीं

संबोधन पूर्वोक्त, (७६२) १२ मई, १८६५

कल आपकी सेवा में अर्ज़ (भेंट) की गयी थी, आपका कृपापत्र भी कल मिला, बड़ी खुशी हुई। आपकी दया से मुझे बड़ा आनंद रहता है। उदासी का नाम तक भी कभी नहीं आता, और पढ़ने लिखने का काम भी बहुत रहता है। आपका यहाँ पधारना मुझ पर अति कृपा करना है। लाला साहब और सेठ साहब अभी नहीं आये। कल विज्ञापन (नोटिस) छप कर आ गये थे। आज नगर के द्वारों और कालिजों में लगाये जायेंगे। और कल पंजाब प्रांत के अन्य नगरों में जहाँ जहाँ भी कालिज हैं, भेजे जायेंगे। एफ़० ए० श्रेणी की दस और बी० ए० श्रेणी की पन्द्रह रुपये फ़ीस मेरे प्रोफ़ेसरों ने नियत की है। आपने दास पर कृपादृष्टि रखनी और कभी रुष्ट न होना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (७६३) १३ मई, १८६५

आपका एक कृपापत्र कल प्राप्त हुआ। बड़ी ख़ुशी हुई। आज कुल शहर के दरवाज़ों और कालिजों पर नोटिस अर्थात् विज्ञापन लगाये गये। नोटिस इस प्रकार के हैं जैसा कि आपकी सेवा में भेजा जाता है—

Important notice to students.

The undersigned intends to give Private Tuition in Mathematics to students preparing for the University Examinations at the following rates :—

Intermediate Candidates :—Rs. 10/- a month, for 3 lectures weekly.

B. A. Candidates :—Rs. 15/- a month, for 3 lectures weekly.

Work will be commenced immediately after 10 students are willing to read at the foregoing rates

No pains will be spared to prove really useful to those who come to seek help.

GOSWAMI TIRTHA RAMA, M. A.,

11th May, 1895. *R. B. Mela Rama's Bungalow, Lahore.*

इसमें लिखा है कि सप्ताह में तीन तीन लेक्चर दिये जायेंगे। एफ़० ए० वालों को अलग, बी० ए० वालों को अलग। दुपहर ढलने के पीछे, गवर्नमेंट कालिज में। और इस तरह महीने भर के लेक्चरों के बदले में १०) और १५) रुपये फ़ीस ली जायगी। कम से कम दस विद्यार्थी ज़रूर आने चाहियें। और अगर दस से अधिक आ जायें तो इससे बढ़ कर क्या, वह भी फ़ीस दें और पढ़ें।

कल इत्तिफ़ाक़ से मुरारीवाले का हाकिमसिंह (ब्राह्मण) मुझे मिल पड़ा। नगर के द्वारों और कालिजों पर सब नोटिस उसने लगाये हैं। दीवानचंद (बूढ़े और अंधे) ने भी मदद (सहायता) बहुत दी थी। अब पंजाब के अन्य स्थानों पर (जहाँ जहाँ कालिज हैं) यह नोटिस भेजने का इरादा है।

आज सेठ साहब और लाला साहब तशरीफ़ ले आये हैं। आपकी चीज़ें ख़रीदी जायेंगी। आप दया रखा करें।

लेक्चरों का लंबा या छोटा होना मेरी अपनी मर्ज़ी पर निर्भर है। एक लेक्चर पर अगर अधिक नहीं, तो कम से कम एक घंटा तो ज़रूर लगा करेगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (७६४)   १८ मई, १८६५

कल की कोई नई बात देखने में नहीं आई। लड़के अभी नहीं मिले। लाला साहब व सेठ साहब से भी अभी मुलाक़ात नहीं हुई। आप दया-दृष्टि रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (७६५)   १६ मई, १८६५

मिशन कालिज का प्रिन्सिपल यहाँ नहीं है। इसलिए बरेली कालिज अर्ज़ी भेजने की तजवीज़ उसके आने तक मुल्तवी (स्थगित) कर दी है, क्योंकि उसका सर्टिफ़िकट ज़रूरी है। और बहुत व्यक्तियों ने राय (सम्मति) दी है कि अगर यहाँ काम चल पड़े तो बरेली न जाना। कल छुट्टी है। परसों मंगलवार है। वीरवार काम शुरू कर देने का इरादा है। आप दास पर दया रखा करें। और कृपापत्र जल्दी जल्दी भेजते रहा करें।

——:o:——

एक प्रोफ़ेसर को गणितशास्त्र पढ़ाना

संबोधन पूर्वोक्त, (७६६) २० मई, १८६५

आपका एक कृपापत्र आज मिला, अत्यन्त ख़ुशी हुई। आपकी दया से मुझे कोई किसी प्रकार की चिन्ता किञ्चिन्मात्र भी नहीं है। इस वीरवार को एक साधारण (पब्लिक) व्याख्यान गणितशास्त्र के लाभों पर देना चाहता हूँ। और शुक्रवार को एक प्रोफ़ेसर साहब को गणित पढ़ाना आरम्भ करने का वादा (इक़रार) किया है। और अगले सोमवार को अपनी क्लास की पढ़ाई आरम्भ करवा देने का विचार है। काम सब परिश्रम माँगता है, आप निश्चिंत तशरीफ़ ले आयें। बड़ी कृपा है। हमारे ग्राम का सुन्दरदास कल सायंकाल का यहाँ मेरे पास आया हुआ है। अभी तक वह मेरा किसी प्रकार से प्रतिबन्धक (विघ्नकारक) नहीं हुआ। आगे, उसको साथ रखने या न रखने के विषय जैसी आप आज्ञा देंगे किया जायगा। बरकतराम के समान यह भी अलग बैठकर अपना कार्य करता रहता है। आपकी चीज़ें लेने का अभी इत्तफ़ाक़ (अवसर) नहीं हुआ।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७६७) २२ मई, १८६५

मुझे आपका बड़ा इंतज़ार रहा है। पर आप तशरीफ़ नहीं लाये। अब आपने जल्दी तशरीफ़ ले आनी। आप दया रखा करें।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७६८) २४ मई, १८६५

आप अभी तक तशरीफ़ नहीं लाये, जब आप तशरीफ़ लायेंगे सेठ साहब को साथ ले जाकर वह चीज़ें ख़रीद लेंगे, क्योंकि यह चीज़ें कई कई क़िस्म की मिल सकती हैं।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७६६) २६ मई, १८६५

आप अभी तक तशरीफ़ नहीं लाये। क्या कारण है? आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७७०) २ जून, १८६५

मुझे इस बार पत्र लिखने में बहुत देर हो गई है। आपने कृपा करके मुआफ़ फ़रमाना। दास पर सदा कृपादृष्टि रखनी। बरेली कालिजवाली अर्ज़ी आदि सब कुछ तैयार है। आशा है कि कल रवाना की जायगी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७७१) ४ जून, १८६५

बरेली कालिज अर्ज़ी भेज दी है, आगे जो परमात्मा की मरज़ी। आप दया रखा करें। मैं राज़ी हूँ। आप भी कोई फ़िक्र (चिंता) न करें। परमात्मा सब कुछ अच्छा करेगा। हाकिमसिंह का मत्था टेकना।

——:o:——

केवल एक विद्यार्थी का पढ़ने आना

संबोधन पूर्वोक्त, (७७२) ५ जून, १८६५

अब केवल एक ही विद्यार्थी पढ़ने आता है। मैं पढ़ाता अति ही उत्तम हूँ। पर कोई इत्तिफ़ाक़ (अवसर) ही ऐसा बन गया है। किसी के पिता माता आज्ञा नहीं देते। कोई धूप के कारण रुक जाता है। किसी को कोई और रुकावट (विघ्न) सम्मुख आजाती है। अच्छा (अस्तु), परमेश्वर सब कुछ अच्छा करेगा। आपने कोई चिन्ता न करनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७७३) ७ जून, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए बड़ा काल बीत गया है। आप जल्दी-

जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। आपने दास पर दयादृष्टि रखनी। किसी बात पर रुष्ट नहीं होना। यहाँ किसी बात की फ़िक्र (चिंता) नहीं! आपने भी कोई चिंता नहीं करनी। आशा है कि कुछ उधार लेने के बाद अर्ज़ (भेंट) करूँगा। आप दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (७७४) १२ जून, १८९५

इस वक़्त आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मैंने पत्र लिखने में चार दिन से अधिक वक़्फ़ा (विलंब) कभी नहीं पड़ने दिया। आपने लिखा है कि इस बार पत्र आये सप्ताह बीत गया है। इससे मालूम होता है कि मेरा कोई पत्र आपको या तो मिला नहीं होगा, या देर से मिला होगा। मैं इन दिनों आपके पवित्र चरणों में हाज़िर तो हो जाऊँ मगर किसी क़दर आशा है कि शायद यहाँ रहने से दो एक अँग्रेज़ मेरे पास पढ़ना शुरू कर दें। साथ इसके विलायतवाले वज़ीफ़े का निर्णय भी अभी निकट ही होनेवाला है। हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना। मैं सदैव अपनी तरफ़ से तो आपकी बातों का उत्तर देता रहा हूँ। आप दया रखा करें। दास की किसी बात पर ख़फ़ा (रुष्ट) न होना। भजन मैं किया करता हूँ। यह बड़ी चीज़ है। थोड़ी सी अर्ज़ (भेंट) अभी की गई है। बाक़ी चंद (कुछ) दिनों को करूँगा। अभी इतना ही मिला था।

—:o—

संबोधन पूर्वोक्त, (७७५) १३ जून, १८९५

(१) ख़ुदा ख़ुद ख़ानसामानस्त अस्बाबे-तवक्कल रा।
(२) दरे फ़ैज़स्त मिनशीं अज़ कुशायश ना उमीद ईंजा।
मसाले-दानः अज़ हर कुफ़्ल मे रोयद कलीद ईंजा।

भावार्थः—(१) ईश्वर पर भरोसा करनेवाले (अथवा विश्वास रखनेवाले) पशुओं के लिये परमेश्वर आप रसोईया (भंडारी) बना रहता है।

(२) ईश्वर-कृपा का द्वार खुला हुआ है। कठिनाइयों के दूर करने से यहाँ त्यक्ताशा (आशा-हीन) होकर मत बैठ। बीज (दाना) के समान प्रत्येक रहस्य की ग्रन्थि यहाँ उत्पन्न हुई है।

आपकी दया से चित्त बड़ा आनन्द में है। आप इसी प्रकार कृपा-दृष्टि रखा करें।

(१) भीखा भूखा कोई नहिं, सबकी गठड़ी लाल।
गृह खोल नहीं जान दे, इत विधि भये कंगाल॥
सात गाँठ कौपीन में, साध न माने शंक।
राम अमल माता फिरे, गिने इन्द्र को रंक॥

(२) खिशत ज़ेरे-सरो बर तारके-हफ़्त अख़्तर पा।
पाये-रिफ़अते निगरो मन्सिबे-साहिब जाही॥

भावार्थः—(१) कोई प्राणी भी नँगा भूखा नहीं है, सबके भीतर घड़े जितना बड़ा रत्न (लाल) धरा पड़ा है, केवल उसकी ग्रन्थि खोलना नहीं जानते, इसलिये कंगाल बने हुए हैं।

निर्धन पुरुष को कंगाल (दीन या कृपण) नहीं कहते, क्योंकि मस्त साधु के पास एक कौड़ी नहीं होती बल्कि उसकी कौपीन भी फटी पुरानी सात आठ गाँठोवाली होती है, तथापि वह देवताओं के मालिक इन्द्र को भी कुछ नहीं गिनता। इसलिये जो अपने आत्मा से विमुख और मूढ हैं, वही दीन वा कृपण हैं, निर्धन पुरुष नहीं।

(२) ईंट तो जिसका सिरहाना हो और पाओं सातों आकाशों के ऊपर, ऐसे ब्रह्मवित् मस्त की पदवी तुम अनुभव करो।

यह कार्ड (पत्र) लिख चुकने के बाद आपका पत्र मिला। बड़ी ख़ुशी हुई। मैं हरड़ नहीं सेवन करा करता। ख़र्च इत्यादि का निर्वाह होता जायगा। आपने किसी को न लिखना।

——:०:——

गुरुजी की दृष्टि पर सारे संसार का उद्धार

संबोधन पूर्वोक्त, (७७६) १५ जून, १८९५

महाराजजी ! परसों सोमवार कोई दस बजे के लगभग विलायतवाले वज़ीफे, का निर्णय होना है। आपने दास के अपराध क्षमा करके अवश्य दयादृष्टि करनी। आपकी कृपादृष्टि पर सब कुछ सारा संसार निर्भर है।

आनौंकि ख़ाक रा बनज़र कीमिया कुनंद।
आया बुवद कि गोशाए-चश्मे बमा कुनंद॥

भावार्थः—जो महापुरुष कि अपनी एक दृष्टिमात्र से भस्म को सुवर्ण बना देते हैं, आशा है कि वह एक बार कृपादृष्टि हमारी ओर भी करेंगे।

मेरा मन अब आपकी दया से अच्छी अवस्था में है।

——:o:——

गुरुजी के लिये निज ख़र्च का कम करना

संबोधन पूर्वोक्त, (७७७) १६ जून, १८९५

आपके दो पत्र मिले, अत्यन्त ख़ुशी हुई। आपने मेरे देर से पत्र आने का कुछ ख़्याल न करना। इन दिनों दौड़ धूप बहुत रही है। और तबीयत (प्रकृति) ज़रा ठिकाने नहीं रही। इसलिये पत्र में विलम्ब होता रहा है। आपने क्षमा करना। मैंने अपना निजी ख़र्च अब बहुत कम कर दिया है। मगर चित्त पहले से भी अधिक प्रसन्न है। और सर्वप्रकार से आनन्द है। आपने अपना ख़र्च पहले से भी निःशंक अधिक कर देना, कुछ परवाह (चिन्ता) नहीं है। आपने कोई चिन्ता न करनी। मेरी चाहे कैसी ही दशा क्यों न हो, आपको किञ्चित् तंगी नहीं दी जायगी। मैं कल परसों तक कुछ अर्ज़ (भेंट) कर सकूँगा। पंडित गोपीनाथ *

---

* पंडित गोपीनाथजी वही हैं, जो कई वर्ष तक लाहौर सनातनधर्म सभा के प्रसिद्ध मंत्री रहे। और आजकल शायद महाराजा दरभंगा के पास नौकर (कर्मचारी) हैं।

को मैं मिला था, वह क्या कर सकता है। लाहौर में रहने से आशा है कि कोई न कोई सूरत (उपाय) निकल आवे। तलाश में हूँ। इस सप्ताह में किसी दिन विलायतवाले वज़ीफ़े * का निर्णय होना है। इसलिये यहाँ लाहौर में इन दिनों मौजूद रहना चाहिये। और अभी चरणों में उपस्थित नहीं हो सकता।

——:o:——

अपने बंधुजनों की आजीविका का ख़्याल

संबोधन पूर्वोक्त, (७७८) १७ जून, १८६५

आज कोई निर्णय नहीं हुआ। आज हमसे केवल यह पूछा गया है कि हमने मिडिल और इंट्रैंस परीक्षा किस-किस वर्ष में दी थी; आशा है कि इस सप्ताह में अवश्य निर्णय हो जायगा। यदि मैं (विलायत) गया, तो पीछे सबके लिये ठीक-ठीक पक्का प्रबंध किये बिना कदापि नहीं जाऊँगा। आप दया रखा करें। मैं अपनी ओर से शीघ्र अर्ज़ करने अर्थात् कुछ भेंट भेजने का यत्न करूँगा। आपने दयादृष्टि रखनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७७६) १६ जून, १८६५

परसों शुक्रवार साढ़े पाँच बजे सायं को उस वज़ीफ़े का निर्णय करने के लिए कमेटी बैठेगी। अगर आप कल तशरीफ़ ले आयें तो अत्यंत ख़ुशी की बात हो। मैंने दिल से तो संदेसा कल और परसों भी भेजा था। अब ऊपर से भी भेज दिया। मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ कि आपको मेरे कारण बड़ा कष्ट होता है। आपने मुआफ़ फ़रमाना। सुखदयाल और

* यह वज़ीफ़ा वही है, जो एम्० ए० की परीक्षा में प्रथम उत्तीर्ण होनेवाले मनुष्यों को विलायत में पढ़ने के लिए मिलता था। गत वर्ष के पहले पत्रों में जो वज़ीफ़े का वर्णन था वह बी० ए० की परीक्षा में प्रथम उत्तीर्ण होनेवालों के (विलायत में जाने के) संबंध में था।

हाकिमसिंह का मत्था टेकना। आपका पत्र और संदेसा भी मिले। बड़ी ख़ुशी हुई।

——:o:——

विलायत जाने से रह जाना

संबोधन पूर्वोक्त, (७८०) २१ जून, १८९५

मैं आशा करता हूँ कि कल फिर पिछली बार के बराबर अर्ज़ (भेंट) करूँगा। आपका बड़ा इंतज़ार रहा। आप तशरीफ़ लाये नहीं। विलायत का वज़ीफ़ा किसी और विद्यार्थी को मिल गया है। बरेली-कालिज का हाल देखिये क्या बनता (होता) है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७८१) १२ बजे रात, २३ जून, १८९५

आप जल्दी-जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

राज़ी हैं हम उसी में जो कुछ दिलरुबा करे,
ख्वाह वह जफ़ा व जौर करे या वफ़ा करे।

अर्थात् हमारा प्यारा चाहे वह हम पर अत्याचार करे, चाहे सख़्ती और चाहे वफ़ादारी, जो भी कुछ वह करे हम उसी में ख़ुश हैं।

लाला सुखदयाल और हाकिमसिंह का मत्था टेकना।

——:o:——

धन की अत्यंत न्यूनता (तंगी)

संबोधन पूर्वोक्त, (७८२) २२ जून, १८९५

आपका एक कृपापत्र कल मिला, अत्यंत ख़ुशी हुई। मैं तो आपको पहले ही लिख चुका हूँ कि आप कृपापूर्वक यहाँ पधारिये और यहाँ (आने का) कष्ट उठावें, (क्योंकि) मेरा वहाँ (आपके पास) आना किञ्चित् कठिन है। इसके कई कारण हैं, जिनमें से एक यह भी है कि

अब मेरे लिये किराये के वास्ते रुपया अथवा दो रुपया उपार्जन करना कुछ सुगम बात नहीं है। लाला मोहनलाल चाहल के लड़के बालमुकुंद का विवाह है। आप दया रखा करें।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (७८३) २६ जून, १८९५

आपकी दया से आनंद है। आप याद रखा करें। आप ही के चरणों का आश्रय है। मैं अब साहबों को मिलूँगा।

———:o:———

सनातन धर्म सभा की विद्यासंबंधीय समिति का सभासद् होना

संबोधन पूर्वोक्त, (७८४) ३ जुलाई, १८९५

जबकि आप तशरीफ़ ले गये हैं आपकी तरफ़ से एक पत्र भी नहीं आया, क्या कारण है ? आप दया रखा करें। मुझे उन्होंने (सनातन धर्म सभा के सभासदों ने) सनातन धर्म सभा की विद्यासंबंधीय समिति का सभासद् बना लिया है। वहाँ की इंट्रैंस-परीक्षा भी मैंने ली है। मैं आशा करता हूँ कि इस सप्ताह में कुछ अर्ज़ (भेंट) करूँगा।

———:o:———

सनातन धर्म सभा की सब-कमेटी (उप-समिति) का मन्त्री होना

संबोधन पूर्वोक्त, (७८५) ४ जुलाई, १८९५

लाला हंसराजजी * को भी मैं जाकर मिला था। सनातनधर्म सभा की एक उप-समिति का मैं मंत्री बनाया गया हूँ, जिसके सभासद निम्न लिखित पंडित हैं।

(१) पं० ईश्वरीप्रसाद साहब, (२) पं० भानुदत्तजी, (३) पं० गणपतिजी, (४) पं० दुर्गादत्तजी, (५) पं० शिवदत्तजी,

---

* लाला हंसराज भूतपूर्व प्रिन्सिपल डी. ए. वी. कालिज, लाहौर से यहाँ अभिप्राय है।

(६) लाला अयोध्यादासजी बी० ए०, और (७) मैं। छुट्टियों के कारण अभी साहबों को मिलने का इत्तिफ़ाक़ (अवसर) नहीं हुआ। वह चित्र-विद्या (इल्मे-ड्राइंग) बिना फ़ीस के सीखने की मुझे आज्ञा मिल गयी है वैदिक कालिज में। आप दास पर कृपादृष्टि रखा करें। आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७८६) ६ जुलाई, १८९५

चित्त आपके चरणों की तरफ़ रहता है और बड़ा आनंद है। किसी क़दर कोशिश भी की जाती है। और साहबों को मिलने-जुलने जाता हूँ। मगर दिल ख्वाहिशों से पाबंद (बद्ध) नहीं। आशा है कि जल्दी अर्ज़ (भेंट) कर सकूँगा।

गुज़श्तम अज़ सरे-मतलब तमाम शुद मतलब।
नक़ाब चेहरहे - मक़सूद बुवद मतलबहा॥

अर्थात् मुरादों से गुज़रना ही मुरादों का पूरा होना होता है। ये मुरादें (इच्छाएँ) ही ध्येय के मुख पर परदा हैं, अर्थात् ध्येय की प्राप्ति में रुकावट डाले हुए हैं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७८७) ८ जुलाई, १८९५

आपकी दया से बड़ा आनंद है। मैंने आज-कल श्रीभगवद्गीता का एक भोग पाया है। अत्यंत आनंद हुआ है। आप भी यह पुस्तक आज कल फिर पढ़ें। आप दया रखा करें।

——:०:——

पं० दीनदयालजी से भेंट (मुलाक़ात)

संबोधन पूर्वोक्त, (७८८) ८ जुलाई, १८९५

आज बेल साहब को भी मिला था। और वह कहते हैं कि एक प्रार्थना-

पत्र इस विषय का आप डायरेक्टर साहब को भेज दो कि "विद्या-विभाग (महक्मा-तालीम) में मैं नौकरी करनी चाहता हूँ। और जब आवश्यकता पड़े, मुझसे काम लिया जावे।" साथ इसके सुना है कि अमृतसर कालिज का गणित-शास्त्र का प्रोफ़ेसर अधिक वृद्ध होने के कारण नौकरी छोड़ने लगा है। मगर पक्का पता नहीं!

आज पं० दीनदयालजी से (जो कल के यहाँ आये हुए हैं) किसी ने सभा में मेरी मुलाक़ात करा दी थी, वह अत्यन्त प्रसन्न हुए थे। मित्रों के समान कंठ से लगे थे और कहते थे कि मैं इनको अर्थात् मुझको पहले ही जानता हूँ। आपके दो कृपापत्र मिले, बड़ी ख़ुशी हुई। वह किताब म भेज दूँगा। आप दास पर दया रखा करें। मैं आशा करता हूँ कि कल अर्ज़ कर सकूँगा। मुखदयाल और हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७८९) १० जुलाई, १८९५

पेशावर में एक हेडमास्टरी की जगह ख़ाली है। आज सविस्तर दर्ख़ास्त करूँगा। आप जल्दी जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। आपकी दया से बड़ा आनंद है। आपको किताब मैंने ख़रीदी हुई है। जल्दी भेज दूँगा। लाला मुखदयाल व हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना। इस पत्र को लिख चुकने के बाद आपका एक कृपापत्र मिला। बड़ा आनंद हुआ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७९०) १३ जुलाई, १८९५

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। अति आनंद हुआ। यह किताब जो मेहरचंद ने दी है, इसके पहले पृष्ठ पर "वेदांत नामावली भाषा" लिखा हुआ है। और पिछले पृष्ठ पर कोई नाम नहीं लिखा हुआ। अगर आप आज्ञा दें, तो भेज दूँ। अन्यथा न भेजूँ। मेहरचंद कहता था कि "मेरे

पास इस क़िस्म की और कोई किताब नहीं।" आप दया रखा करें। मेहरचंद ने यह किताब अभी मँगाई है। हाकिमसिंह व मुखदयालजी का मत्था टेकना।

——:o:——

पेशावर हाईस्कूल की हैडमास्टरी का ख़्याल

संबोधन पूर्वोक्त, (७९१) १४ जुलाई, १८९५

पेशावर में एक हेडमास्टरी मिल सकती है। मगर वेतन थोड़ा है। कोई पचास, साठ रुपये। जैसी आप आज्ञा करो, वैसा किया जायगा। यदि आपकी इच्छा हो, तो यत्न किया जाये। पत्र से शीघ्र सूचना दें। डायरेक्टर साहब की तरफ़ भी अर्ज़ी (प्रार्थना-पत्र) भेज दी हुई है।

——:o:——

गुसाईंजी का कार्य-क्रम

संबोधन पूर्वोक्त, (७९२) १६ जुलाई, १८९५

मेरे बड़े प्रोफ़ेसर साहब का कुछ काम करनेवाला है। मेरे दूसरे प्रोफ़ेसर साहब भी इस सोमवार मेरे मकान पर पधारेंगे, और कुछ काम (एफ़० ए० और बी० ए० के परचे देखने का) दे जायेंगे। अपनी पुस्तकें भी जितना हो सके देखता हूँ। सनातनधर्म स्कूल के सम्बन्ध में भी कुछ न कुछ कार्य रहता है; अर्थात् उनकी लिखित परीक्षा लेना, उनको विज्ञान-शास्त्र (साइन्स) और गणित-शास्त्र का कुछ बताना, इत्यादि। भजन भी करता हूँ। आपके चरणों का ध्यान रहता है।

पं० दीनदयालजी के पाँच व्याख्यान सुने, विश्वास पर। बड़ा आनन्द हुआ। अब उन्होंने इस वीरवार से उपासना पर व्याख्यान देने आरम्भ करने हैं। आपकी दया से बड़ा आनन्द रहता है। वह पोथी मैं आपकी सेवा में आज ही भेज दूँगा, हाकिमसिंह का मत्था टेकना।

——:o:——

प्रत्येक दशा में आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(७९३)　　　　१७ जुलाई, १८९५

एक पत्र जिसमें पेशावर की बाबत लिखा है उसके सम्बन्ध में यह प्रार्थना है कि मैंने बेल साहब से उसका ज़िक्र (चर्चा) किया था। वह कहने लगे कि "वहाँ कदापि न जाओ। क्योंकि प्रथम तो पेशावर का डिपुटी कमिश्नर उस स्कूल के अत्यन्त विरुद्ध है, द्वितीय डायरेक्टर और इन्स्पेक्टर साहब दोनों उसके विरुद्ध हैं। तृतीय वहाँ मैं तुमको कोई सहायता नहीं दे सकूँगा। चतुर्थ वहाँ तुम्हारे काम का मान नितान्त नहीं होगा, क्योंकि स्कूल सरकारी नहीं है। थोड़ा काल धैर्य धरो, परमेश्वर कोई बड़ा अच्छा अवसर निकाल देगा।" उस स्कूल से मुझे सत्तर ७०) रुपये मासिक मिल सकते थे। मगर बेल साहब ने बहुत रोका है। इसलिये वहाँ जाना उचित नहीं। मुझसे पूछिये तो मैं प्रत्येक दशा में बड़ा आनन्द हूँ। अभी कुछ दिनों तक मेरे वहाँ (आपके चरण-कमलों में) उपस्थित होने में कुछ प्रतिबन्ध (रुकावटें) हैं। पंद्रहवें या सोलहवें दिन तक उपस्थित हो सकूँगा। अभी न तो किराया पास है और न प्रोफ़सरों के नाना प्रकारों के कामों से अवकाश। आगे जैसे आप आज्ञा दें, वैसा कर देता हूँ। चित्त तो मेरा भी चाहता है कि आपके दर्शन करूँ, परन्तु हाल (अवस्था) यह है।

——:o:——

अमृतसर कालिज की प्रोफ़ेसरी निमित्त यत्न

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(७९४)　　　　१९ जुलाई, १८९५

आपके दो कृपापत्र आज मिले, अत्यन्त आनन्द हुआ। बेल साहब ने कहा है कि "तुम अमृतसरवाली जगह की बाबत सारा हाल पूछकर बिस्तार-पूर्वक मुझे सूचना दो। फिर मैं तुम्हारे लिये यत्न करूँगा। विशेष करके यह

पता लगाओ कि वह (प्रोफ़ेसर) कब जायेंगे।" मैं अब अपने गणित-शास्त्र के एक प्रोफ़ेसर से सम्मति लूँगा कि आया मैं अमृतसर जाऊँ और उस कालिज के प्रिन्सिपल से मिल आऊँ या क्या करूँ ? आज मैं रेशा (ज़ुकाम) के कारण बहुत तंग (दुःखी) रहा, आशा है कि कल आराम रहेगा। पंडित दीनदयालजी के व्याख्यान हो रहे हैं।

—:o:—

प्रिन्सिपल की डायरेक्टर के पास पहले से ही सिफ़ारिश

संबोधन पूर्वोक्त, (७९५) १२½ बजे रात, २० जुलाई, १८९५

कल एक प्रोफ़ेसर साहब से मालूम हुआ कि अमृतसर कालिज वाले गणित-शास्त्र के प्रोफ़ेसर ने पेन्शन निमित्त अर्ज़ी दी हुई है। मगर कमेटी ने (क्योंकि वह कालिज म्योनिस्पल कमेटी का है) उसकी अर्ज़ी डायरेक्टर साहब की तरफ़ भेजी है, और उसके साथ यह प्रार्थना लिखी है कि प्रोफ़ेसर को एक वर्ष और इस कालिज में रखा जाये। आज मैं बेल साहब को मिला था, वह कहते थे कि "तेरी बाबत मैंने पहले ही डायरेक्टर साहब को लिख भेजा है कि तुझे उस कालिज में ले लें।" अब जो परमात्मा की इच्छा होगी, हो जायगा। आप दया रखा करें। आपकी दया से आनंद है। हाकिमसिंहजी व लाला सुखदयाल का मत्था टेकना।

—:o:—

पंडित दीनदयालजी से मेल-जोल

संबोधन पूर्वोक्त, (७९६) २२ जुलाई, १८९५

कल पंडित दीनदयालजी से मैं उनके स्थान पर जाकर मिला था। बड़े खुश हुए थे। आपका भी कुछ हाल बताया था, और अपने विचार भी प्रकट किये थे। आज गवर्नमेंट कालिज के प्रोफ़ेसर साहब लगभग सारे कालिज के गणित-शास्त्र की परीक्षा के परचे मुझे नम्बर लगाने और

शुद्ध करने के लिये दे गये हैं। आप दया रखें। आपका कृपापत्र प्राप्त हुए बड़ा काल बीत गया है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७६७) २४ जुलाई, १८६५

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। अति आनंद हुआ। अख़लाक़े-नासरी का अनुवाद मैं ज़रूर तलाश करूँगा और भेज दूँगा। मैं छुट्टियों में सेवा में ज़रूर उपस्थित हूँगा। मगर अभी यह नहीं कह सकता कि किस दिन आऊँगा। ब्रजलाल आपको मिलने नहीं आया। बड़े अफ़सोस की बात है। यह कुसंग का फल है। भाई साहब का पत्र आया है कि वह मुरारी-वाला आये हुए हैं। आपको मिले हैं या नहीं? लाला सुखदयाल और हाकिमसिंह का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७६८) २५ जुलाई, १८६५

कल कशमीरी बाज़ार और लाहौरी दरवाज़े की एक एक दुकान से मैंने दर्याफ़्त किया कि किसी के पास अख़लाक़े-नासरी का उर्दू अनुवाद हो। मगर सबने "नहीं, नहीं" ही जवाब दिया। फिर मेरा एक पुराना सहपाठी मिला, वह कहने लगा कि "छपा हुआ तो है" मगर मैंने एक और दोस्त (मित्र) के पास देखा था, जो आज-कल फ़रीदकोट की रियासत में है। अगर संभव हुआ, तो मँगा दूँगा। आप दया रखा करें। दस बारह दिन को ब्रजलाल का विवाह है। हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (७६९) जंडियाला १०, अगस्त, १८६५

कल रात को हम यहाँ जंडियाला पहुँच गये। लाला अयोध्यादास की बैठक के ठीक सामने बरात उतरी है। लाला साहब बड़ी मुहब्बत (प्रेम) और कृपा के साथ पेश आये (मिले) हैं। आपको बड़ा याद करते हैं। बड़ा आनंद हुआ। कल उनके यहाँ दूध भी खूब पिया। परसों यहाँ से

रवाना होकर मुरारीवाला चलेंगे। लाला साहब को बड़ी मुहब्बत (भक्ति) से मत्था टेकना *।

——:o:——

धनाढ्य पुरुषों के घर में कमरों का घड़ी-घड़ी बदलना

संबोधन पूर्वोक्त, (८००) लाहौर, २३ अगस्त, १८९५

मैं आज कुशलता से यहाँ पहुँच गया हूँ। बादामी बाग़ के स्टेशन पर हाकिमसिंह और एक अन्य मनुष्य मुझे लेने के लिये आये हुए थे। अस्बाब उन्होंने उठा लिया। और हम सब कोठी को चले आये। मेरेवाले कमरे में एक अँगरेज़ इंजीनियर (जिसे लाला साहब ने नौकर रखा है) रहता है। मेरा अन्य अस्बाब तो उन्होंने बड़ी ड्योढ़ी में जहाँ डॉक्टर साहब रहते हैं, मेरे पीछे रखवा दिया हुआ था। मगर मेरी पुस्तकें वैसे ही अलमारियों में बन्द थीं। वह पुस्तकें भी मैं बड़ी ड्योढ़ी पर ले आया हूँ। एक तरफ़ डॉक्टर साहब रहते हैं, दूसरी तरफ़ मैं रहता हूँ। यह भी अच्छा मकान है। कष्ट कोई नहीं। लाला साहब पढ़ा करेंगे। आपने कृपापत्र भेजते रहना। हाकिमसिंह की ओर से अत्यंत (प्रेम से) हाथ जोड़कर मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८०१) २६ अगस्त, १८९५

आपका कोई कृपापत्र नहीं प्राप्त हुआ। आप जल्दी जल्दी कृपा करते रहा करें। आशा है लाला साहब पढ़ा करेंगे। मिशन कालिज के प्रिन्सिपल साहब से भी मिलता हूँ। सब कुछ परमेश्वर के हाथ है। हाकिमसिंह का हाथ जोड़कर मत्था टेकना।

——:o:——

* इसके बाद का बिना मोहर का एक पत्र मिला था जो यहाँ रह जाने से इसी वर्ष के अंत में दिया गया है।

संबोधन पूर्वोक्त, (८०२) २७ अगस्त, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अति आनंद हुआ। अभी कोई विशेष बात लिखने योग्य नहीं। साहब का स्यालकोटवाली मिशन से कोई संबंध नहीं। लाला साहब ने कल पढ़ना शुरू किया है। आप अमृतसर कब तशरीफ़ ले जाने का इरादा (विचार) रखते हैं? हाकिमसिंहजी का हाथ जोड़कर चरण बंदना।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८०३) २६ अगस्त, १८६५

आपका एक कृपापत्र मिला था। अति आनंद का कारण हुआ। आपकी कृपा से मेरा चित्त हर हाल से प्रसन्न है। आप दया रखा करें। आपने अमृतसर जाते हुए यहाँ कब आना है। हाकिमसिंह की तरफ़ से अत्यंत प्रीति के साथ हाथ जोड़कर चरण बंदना। मेरे कपड़े जो धोबी को धोने दिये हुए थे, अगर वापिस आये हों तो भेज देना। धोती की अधिक ज़रूरत है।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८०४) ३१ अगस्त, १८६५

आपका कृपापत्र आये ज़रा देर हो गई है, आपका इंतज़ार है। आज राय साँभीमल साहब यहाँ आये थे। मैंने कारख़ाना इत्यादि दिखलाया था। उस वक़्त लाला साहब यहाँ नहीं थे। राय साँभीमल साहब एक दो दिन लाहौर में ठहरेंगे, आज हमने चंद कार्ड छापे हैं। मगर डॉक्टर साहब ने जल्दी करके प्रेस ही बिगाड़ दिया है। हाकिमसिंह की हाथ जोड़ चरण बंदना।

———:o:———

तीर्थरामजी के साथ बड़े लाला साहब का बर्ताव (सलूक)

संबोधन पूर्वोक्त, (८०५) १ सितम्बर, १८९५

अभी यहाँ मेरी रोटी का कोई अच्छा प्रबन्ध नहीं है, क्योंकि बड़े * लालाजी ने उस मेरे रोटी पकानेवाले को मेरे पीछे मेरी रोटी पकाने से रोक दिया था। पर आशा है कि लाला रामशरणदास शीघ्र प्रबन्ध कर देगा। लाला रामशरणदास यहाँ कपास का कारखाना खोलने लगा है, जिससे अनेक बेकार आदमियों को रोजगार (कार्य) मिल जायेगा। आपका पत्र कोई नहीं आया।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८०६) ३ सितंबर, १८९५

आपका इंतज़ार है। आप जल्दी यहाँ पधारें तो उत्तम हो। अजमेर अगर जाऊँ तो हाँसी के रास्ते जाना पड़ता है। हाँसी से मासड़ (मौसा)जी का पत्र भी आया है। इन्होंने भी मिलने की अभिलाषा प्रकट की है। हाकिमसिंहजी की ओर से हाथ जोड़कर मत्था टेकना। आज लाला साहब का एक कारकुन (कारिन्दा) बूढ़ा मामा (लाला गुलाबराय) पूरा हो गया (मर गया) है।

—:०:—

वैकुंटपुरी भी दोष रहित नहीं

संबोधन पूर्वोक्त, (८०७) ८ सितंबर, १८९५

आपका एक कृपापत्र आज मिला, अत्यंत खुशी हुई। मैं तो आशा करता हूँ कि यहाँ रहने से आपको तंगी नहीं होगी। और मेरा यह भी निश्चय है कि किसी न किसी दोष से रहित तो यह लोक क्या बल्कि वैकुंटपुरी

* बड़े लालाजी से अभिप्राय यहाँ राय बहादुर रामशरणदास जी के स्वर्गबासी पिता राय बहादुर लाला मेला राम जी है।

का भी कोई मकान (स्थान) नहीं है। जहाँ आप होंगे, वहाँ तंगी भला कहाँ! यह मकान मेरी समझ में तो बहुत उत्तम है। हाकिमसिंह की ओर से हाथ जोड़कर चरण बंदना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८०८) १० बजे रात, ८ सितंबर १८९५

लाला सोहनलाल ने वह पत्र दिया। उन्होंने मंजूर कर लिया है। और वापसी डाक में जवाब माँगा है। सो मैंने मंजूरी का जवाब इस वक़्त भेज दिया है। कल प्रातः मिशन कालिज के प्रिन्सिपल साहब से मिलूँगा। अगर उनके कहने से सलाह बदल गई तो आपकी राय (सम्मति) से सियालकोट नामंज़ूरी की तार दे दूँगा। शायद परसों अगर मैंने आना हुआ तो आऊँगा। सियालकोट १६ सितंबर से पहले पहुँचना चाहिये। उस तारीख़ वह स्कूल खुलेगा। आप दया रखा करें। हाकिमसिंहजी का मत्था टेकना।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८०९) सियालकोट*, २० सितंबर, १८९५

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप दया रखा करें। जल्दी-जल्दी कृपापत्र से अनुगृहीत करते रहा करें। प्यारे ताराचंद का हाथ जोड़कर अति सत्कार व सम्मान से मत्था टेकना। शनिवार की प्रातः का आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ी ख़ुशी हुई।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८१०) २२ सितंबर, १८९५

आपकी दया से बड़ा आनंद है। मैं आशा करता हूँ कि छुट्टियों में हाज़िर हूँगा। ताराचंद भी आयेगा।

—:o:—

* यहाँ से अप्रैल १८९६ तक सब पत्र प्रायः सियालकोट से भेजे गये हैं। इसलिए बार-बार 'सियालकोट' देना उचित नहीं समझा गया।

संबोधन पूर्वोक्त, (८११) रात, २६ सितंबर, १८६५

कृपा करके दास के सब पाप व अपराध क्षमा फ़रमाने। आज रात को ग़ुलाम यहाँ आ पहुँचा। जब वज़ीराबाद था तब वैरोके भी गया था। और एक व्याख्यान वज़ीराबाद सनातन धर्म सभा में भी देने का इत्तफ़ाक़ हुआ था। आपके चरणों की तरफ़ चित्त रहता है। भगत हरभजरायजी आज वज़ीराबाद मिले थे। गुसाईं जोधारामजी ने अपना बड़ा लड़का गोबर्धनदास मेरे साथ भेजा है। यहाँ इंट्रैंस में पढ़ा करेगा। आपने दया रखनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८१२) १ अक्तूबर, १८६५

दास सकुशल है। आप कृपा करके दास को याद रखा करें। आपकी सेहत (स्वास्थ्य) का बहुत ख़याल रहता है। आप जल्दी-जल्दी अपने हालात से सूचित करवाते रहा करें। आशा है कि जल्दी अर्ज़ (भेंट) करूँगा। जब कुछ मिलेगा।

——:o:——

गुरु-इच्छा-विरुद्ध कोई बात न करना

संबोधन पूर्वोक्त, (८१३) ३ अक्तूबर, १८६५

मैं आशा करता हूँ कि कल अर्ज़ (भेंट) कर सकूँगा। महाराजजी आप दया रखा करें। मैं अपनी इच्छा से तो कोई बात भी नहीं करता, यदि अपनी बिरादरी, कुल अथवा जाति के बुज़ुर्गों (वृद्ध पुरुषों) के सम्मान के विचार से अथवा किसी और दबाओ (प्रेरणा) के प्रभाव से मुझसे कोई अपराध हो गया हो, तो आप कृपापूर्वक क्षमा करें। साथ इसके सर्व प्रकार से आप ही के सेवक अधिक हो रहे हैं। दास की तो उलट (प्रतिकूल) काम करने की मजाल (ताक़त) नहीं। आप यहाँ कब पधारेंगे ?

——:o:——

तीर्थरामजी का सियालकोट में व्याख्यान

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८१४)　　६ अक्तूबर, १८९५

आपके कृपापत्र मिले, बड़ा आनंद हुआ। आज यहाँ व्याख्यान हुआ था, लोग अत्यंत खुश हुए थे। आप यहाँ जल्दी तशरीफ़ ले आयें तो अच्छा हो। आपने दास के अपराधों को क्षमा फ़रमाना। छुट्टियों में आशा करता हूँ कि दीवाली को दो होंगी। कल गोबर्धनदास (गुसाईं जोधाराम का लड़का) यहाँ से चला गया है। अब शायद इम्तहान इंट्रैंस के समीप आये।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८१५)　　६ अक्तूबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। मैंने आपकी सेवा में अर्ज़ की थी कि मैं शायद दीवाली को लाहौर जाऊँ। मगर अब मालूम हुआ कि दीवाली की दो छुट्टियाँ इकट्ठी नहीं होनी। इसलिए आख़ीर (अंतिम) हफ़्ते को लाहौर जाने की सलाह करनी पड़ी है। क्योंकि तब शनिवार और रविवार की दो छुट्टियाँ होंगी। यह पत्र लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आपका यहाँ आने का इरादा पढ़कर बड़ी खुशी हुई।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　(८१६)　　११ अक्तूबर, १८९५

आपने यहाँ आने का इरादा तो लिखा था, मगर तशरीफ़ नहीं लाये। क्या कारण ? आपका दीवाली को अमृतसर जाने का संकल्प है कि नहीं। आपका चर्चा यहाँ बहुत किया जाता है। लोग बड़े खुश होते हैं।

—:०:—

तीर्थरामजी के पास आनेवाले सब खुदा बन गये

संबोधन पूर्वोक्त, (८१७) १८ अक्तूबर, १८९५

आपका पत्र कोई नहीं आया। आप दया रखा करें। आपकी दया से यहाँ आनेवाले सब लड़के खुदा (ईश्वर) बन गये हैं। मगर भजन भी किया करेंगे। आप दया रखा करें।

——:०:——

तीर्थरामजी के व्याख्यानों में प्रारम्भ से ही प्रभाव

संबोधन पूर्वोक्त, (८१८) २१ अक्तूबर, १८९५

पंडित साहब के नौकर कर्मचन्द ने मुझे दस १०) रुपये रखने को दिये थे। और मेरी बड़ी भूल थी कि मैंने रख लिये। वह रुपये मेरे सन्दूक में से किसी ने चुरा लिये हैं। और मैंने उसे उधार लेकर भर दिये (दे दिये) हैं। अस्तु, कुछ शोक नहीं, परमात्मा ने अच्छा किया, उपदेश मिल गया। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, बड़ा आनन्द हुआ। कल उन्होंने (सनातनधर्म सभा के लोगों ने) मेरे व्याख्यान का विज्ञापन नहीं दिया था, पर आपकी कृपा से मेरे बोलते-बोलते सनातन धर्म मंदिर का मैदान मनुष्यों से बिलकुल भर गया था। डिप्टी साहब और बड़े-बड़े राज्याधिकारी (ओहदेदार) भी थे। देश पर भी बोला था। पर लोगों के नेत्र अश्रुओं से भरे दिखाई देते थे। और तालियाँ भी बहुत बजी थीं। आपका दास शायद इस शुक्रवार रात की गाड़ी से लाहौर जायगा। आपने दया रखनी। छपे रजबजी के पहुँच गये हैं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८१९) २३ अक्तूबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। मैं आशा करता हूँ कि इस शुक्रवार की रात को जो गाड़ी लाहौर जाती है, उसमें सवार होकर वहाँ जाऊँगा। यहाँ से यह गाड़ी १२ बजे चलती है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८२०)　　　　२८ अक्तूबर, १८९५

मैं आज सायं को अमृतसर अर्ज़ी भेज देने का संकल्प रखता हूँ। जो परमात्मा की मरज़ी और आपकी मरज़ी है, हो जायगा। सुना है, कोई आदमी अभी वहाँ रखा नहीं गया।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८२१)　　　　३० अक्तूबर, १८९५

अमृतसर अर्ज़ी भेज दी है। आगे जो आपकी और परमात्मा की मरज़ी। आप जल्दी-जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८२२)　　　　३१ अक्तूबर, १८९५

आपका एक कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। महाराजजी ! मैंने आते ही एक पत्र लिखा था, मगर अब भाई भगवान-सिंह से दर्यास्त करने पर मालूम हुआ कि उसे डाक में डालना याद नहीं रहा था। अगर वह पत्र मिल पड़ा, तो सेवा में रवाना किया जायगा। आपने दास पर हर तरह से खुश रहना।

——:o:——

घर पर पं० गणेशदत्त शास्त्री गोस्वामी का आगमन

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(८२३)　　　　२ नवंबर, १८९५

कल अमृतसर से जवाब आया है कि वहाँ मेरी अर्ज़ी पहुँचने से पहले अन्य मनुष्य रखा गया है। आज पंडित गणेशदत्त शास्त्री गोस्वामी संस्कृत-प्रोफ़ेसर मिशन कालिज लाहौर के यहाँ आये हुए हैं। मेरे मकान (स्थान) पर उतरे हैं। सभा में व्याख्यान देंगे। आप कृपा रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८२४) ६ नवंबर, १८६५

आप जल्दी-जल्दी अपनी कुशलता की सूचना देते रहा करें। आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए थे। बड़ा आनंद हुआ। आपकी दया है।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८२५) १० नवंबर, १८६५

आपका शुक्रवार का लिखा हुआ कृपापत्र प्राप्त हुआ था। बड़ी ख़ुशी का कारण हुआ। मुझे शायद इस बार कार्ड लिखने में देर हो गई है। काम बहुत ज्यादा था। मुआफ़ फ़रमाना। आज कार्ड छापे हैं। एक लेक्चर अँग्रेज़ी में भी दिया था। अब एक और है। उर्दू के लेक्चर भी होते रहते हैं। भाई (गुरुदास साहब) यहाँ नहीं आये, न उनका पत्र ही आया।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८२६) १३ नवंबर, १८६५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। आप जल्दी-जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें। मैं आशा करता हूँ कि जल्दी लाहौर आऊँगा। और आपके भी दर्शन करूँगा। उस ग्रंथ का नाम क्या है, जो आप आजकल पढ़ते हैं।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८२७) १५ नवंबर, १८६५

आज पं० रामधनजी की मार्फ़त सरदार बगेलसिंह साहब के मकान में मैं आ गया हूँ। किराया मुआफ़ है। मकान पहले की अपेक्षा बहुत अच्छा है। आज भाई साहब यहाँ आ गये हैं। आप क्यों नहीं आये। आप भी उनके साथ चले आते। आप दया रखा करें।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८२८) १८ नवंबर, १८९५

महाराजजी ! जब का मैं इस मकान में आया हूँ, आपका एक कृपापत्र भी मुझे नहीं मिला। आप जल्दी-जल्दी दया करते रहा करें। आपकी कृपा से बड़ा आनंद है। यह मकान एकमंज़िला ही है और पहले से खुला है। इस पत्र को लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र मिला।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८२९) २० नवंबर, १८९५

इस वक़्त बहुत ही ज़्यादा काम है, मगर बड़ा आनंद है। आप कृपा रखा करें। भाई साहब अभी यहाँ ही हैं।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८३०) २२ नवंबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मैं इस आख़िरी हफ़्ते को जो आठवें दिन को है, लाहौर जाऊँगा। और आती बार आपके पास भी रहूँगा। आप कृपादृष्टि रखा करें।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८३१) २७ नवंबर, १८९५

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, जिनमें पुस्तकों की बाबत ज़िक्र (चर्चा) था। मैं आशा करता हूँ कि ग्रंथ ले आऊँगा। आगे जो परमात्मा की मरज़ी। आप दया रखा करें।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८३२) २ दिसंबर, १८९५

मैं यहाँ कुशलपूर्वक पहुँच गया हूँ। भगवानसिंह यहाँ नहीं हैं। शायद गाँव चला गया है। मैं आशा करता हूँ कि जल्दी अर्ज़ (भेंट) करूँगा।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८३३) ५ दिसंबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मैं पूरी रजाई ही बनवाऊँगा। आप कृपा रखा करें। जल्दी-जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३४) ८ दिसंबर, १८९५

आप जल्दी-जल्दी कृपापत्र से अनुगृहीत करते रहें। आपकी दया से बड़ा आनंद है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३५) ९ दिसंबर, १८९५

कल रावलपिंडी से वह व्यक्ति (सेवक) आया है, जिसको जब मैं पहलेपहल सियालकोट आया था तो भाई साहब ने बुला भेजा था। उसके इतनी मुद्दत (काल) तक न आने का कारण यह था कि वह चाचाजी के साथ पेशावर से भी परे दूर को गया हुआ था। अभी भगवानसिंह के जाने या रहने का कोई इंतजाम नहीं किया। आपकी बड़ी कृपा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३६) ११ दिसंबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। अस्तु, जो परमात्मा की मरज़ी। १५ तारीख तक अगर चोगा का बंदोबस्त न हुआ, तो मुझे लिखना। सियालकोट में भी चोगा तैयार हो सकता है। दर्याफ्त किया है। यहाँ के एक दरजी ने पहले भी बनाये हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३७) १२ दिसंबर, १८९५

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत खुशी हुई। बिशनदास ने मुगा॰-

वाले जाना है, आपको जरूर मिलेगा। आपने (अगर कष्ट न हो) तो उसके साथ ही वापस यहाँ पधारने की कृपा कर देनी। आकर भगवानसिंह के रखने या न रखने का भी बंदोबस्त कर जाना। और चोग़ा आदि का भी इंतज़ाम कर जाना। और यों दर्शन भी दे जाओगे। लगभग ग्यारह-बारह दिन बड़े दिनों की छुट्टियों में रह गये हैं।

दरूने-क़स्रे-दिल दारम यके शाहे कि गर गाहे।
ज़ि दिल बेरूँ ज़नद खेमा ब बेहरोबर नमे गुंजद॥

अर्थात्—मेरे हृदय-भवन में ऐसा बादशाह रहता है कि जब वह दिल से बाहर होकर अपना डेरा डालने लगता है, तो पृथ्वी व समुद्र में भी वह समाने नहीं पाता, अर्थात् वह देश कालातीत होता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३८) १६ दिसंबर, १८६५

आजकल यहाँ एक बड़े उत्तम पंडितजी आये हुए हैं। उनका यहाँ व्याख्यान भी कराया था। एक और संत भी उनके साथ हैं। आप यहाँ तशरीफ़ नहीं लाये, अफ़सोस है। चोग़ा का अभी तक कोई बंदोबस्त नहीं। बिशन यहाँ से गया तो है। आपको अभी मिला है कि नहीं। आपकी कृपा से बड़ा आनंद है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८३६) १८ दिसंबर, १८६५

आपका कृपापत्र इस समय प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मगर मैंने अभी तक कोई चोग़ा बनने नहीं दिया। बिशन ने आपको ग़लती से कहा है। बिशन को यहाँ जल्दी भेज देना। क्योंकि भगवानसिंह आज यहाँ से अपनी मरज़ी से चला गया है। और अब मेरे पास कोई आदमी नहीं। लक्ष्मीचंद भी किसी क़दर बीमार होने के कारण घर रहता है। आप दास पर कृपादृष्टि रखा करें।

फ़कर ज़ाहर मबीं कि हाफ़िज़ रा।
सीना गंजीना-ए-मुहब्बते-ओस्त ॥

अर्थात्—यहाँ परमात्मा के नाम के ख़ज़ाने हैं। यद्यपि देखने में फ़क़ीर हैं।

—:०:—

तीर्थरामजी का मिशन कालिज में प्रोफ़ेसर नियत होना

संबोधन पूर्वोक्त, (८४०) २१ दिसंबर, १८६५

आपके दो कृपापत्र मिले, बड़ी ख़ुशी हुई। बिशन अभी नहीं आया। ख़ैर (अस्तु), अब उसे भेजना भी न, क्योंकि तीन-चार दिन तक मैंने .खुद वहाँ आ जाना है। पंडित नानकचंदजी और पंडित रामधनजी यहाँ नहीं हैं, दौरे पर गये हुए हैं। चोग़ा अभी बनने नहीं दिया। लाहौर से आपकी कृपा और दया के कारण पत्र आया है कि मिशन कालिजवालों की समिति ने मुझे गणितशास्त्र के बड़े प्रोफ़ेसर की पदवी देना स्वीकार कर लिया है। और प्रिन्सिपल साहब ने मुझसे पूछ भेजा है कि वह मुझको स्वीकार है या नहीं। अप्रैल के अन्त से लेकर वहाँ काम करना है। पहले वर्ष वेतन १००) (एक सौ) रुपया, तत्पश्चात् अधिक। इस शुकराने (कृतज्ञता) में परमात्मा का भजन अधिक करना। और मेरी मंद मति में यह उचित है कि इस बात का चर्चा अभी सर्वसाधारण से न करना चाहिये। इस बात की स्वीकृति में पत्र का उत्तर मैं आज लाहौर लिखने लगा हूँ। महाराजजो ! यदि कोई अपराध हो तो क्षमा करना, मैं पत्र तो नित्य भेजता रहा हूँ।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८४१) २२ दिसंबर, १८६५

आपका कृपापत्र इस समय एक प्राप्त हुआ। बड़ी .खुशी हुई। मैंने अभी चोग़ा के लिए अल्पाका नहीं ख़रीदा। जैसा आप फ़रमायेंगे,

वैसा ही करूँगा। मैं बुद्ध या वीरवार को यहाँ से चलूँगा। क्योंकि मेरे ख्याल में बुद्ध से छुट्टियाँ शुरू होनी हैं।

—:o:—

दूध मात्र आहार होने पर ३० मील का चक्कर लगाना

संबोधन पूर्वोक्त, (८४२) २२ दिसंबर, १८६५

मैं शायद कल सोमवार ही यहाँ से रात की गाड़ी में चला आऊँ। मुझे आठ दिन अन्न (रोटी) खाये हो गये हैं। केवल दूध पीता हूँ। किन्तु आज पूरे तीस मील का चक्कर सैर (भ्रमण) की रीति से लगा आया हूँ, और ज़रा मालूम तक भी नहीं हुआ। आशा है कि चोग़ा (गौन) * यहाँ से भी मिल जायेगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८४३) † दुपहर, १७ अप्रैल, १८६५

अभी तक रिज़ल्ट नहीं निकला। आज सायं को देखिये, शायद निकल आये। महाराजजी ! आप दया रखा करें। आप ही का आश्रय है।

—:o:—

सन् १८६६ ई०

(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु साढ़े बाईस वर्ष के लगभगथी और इसी वर्ष मिशन कालिज में गणित-शास्त्र के प्रोफ़ेसर के स्थान पर वह नियुक्त हुए थे।)

संबोधन पूर्वोक्त, (८४४) ८ जनवरी, १८६६

भगवानसिंह इसी जगह है। वह मेरे पास रहेगा। मैं शायद कल

---

* चोग़ा से तात्पर्य वह गौन है जिसको पहन कर उत्तीर्ण विद्यार्थी बी० ए० या एम० ए० की पदवी कोन्वोकेशन हाल मे जाकर लेते हैं।

† यह पत्र भूल से अपने स्थान नं० ७५४ पर देने से रह गया था। इसलिए अब इसी वर्ष के अंत में नं० ८४३ पर दे दिया गया है।

अर्ज़ (भेंट) करूँगा। मैं कल यहाँ आया। इस जगह सब चीज़ अपनी अपनी थाँ (स्थान) पर ठीक पाई। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८४५) १२ जनवरी, १८९६

आपका कृपापत्र बिलकुल कोई प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है? आप जल्दी-जल्दी अपना हाल लिखा करें। कृपा रखनी। दया रखनी। अपराध मुआफ़ फ़रमाने। मुझे आज-कल बड़ा काम है।

——:o:——

अपयश दिलानेवाले का संग-त्याग

संबोधन पूर्वोक्त, (८४६) १४ जनवरी, १८९६

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। आप जल्दी-जल्दी अपने हालात से सूचना देते रहा करें। लक्ष्मीचंद का आचरण ठीक नहीं है, इसलिए उसको अपने पास से निकाल देने का विचार करता हूँ। वह बदनामी दिलानेवाला पुरुष है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८४७) १५ जनवरी, १८९६

कल एक पत्र मैंने लिखा था। वह मालूम हुआ कि ऐसी संदूकची में पड़ गया, जिससे डाक ली ही नहीं जाती। आपका केवल एक कृपापत्र आज तक मिला है। उसको पढ़कर बड़ी खुशी हुई। आप दास के अपराधों को मुआफ़ फ़रमा कर कृपादृष्टि रखा करें। लक्ष्मीचंद का आचरण खराब होने के कारण उसको अपने पास न रखने का विचार है।

——:o:——

अपने पास अच्छे विद्यार्थी रखने की प्रतिज्ञा

संबोधन पूर्वोक्त, (८४८) १८ जनवरी, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यन्त आनन्द हुआ। लक्ष्मीचंद अब

(अपने) घर रहता है। पढ़ने आया करेगा । मैं अपने पास अच्छे विद्यार्थियों को रक्खूँगा। आप कृपा करके यहाँ पधारिये ।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८४६) २१ जनवरी, १८६६

आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। आप जल्दी-जल्दी अपने हालात से सूचित करते रहा करें। मैं अत्यंत अफ़सोस करता हूँ कि आपकी सेवा में यह पत्र पहुँचने में देर हो गई है। डाकख़ाना यहाँ से दूर है, और मेरे पास आज-कल कोई आदमी न था। और काम बहुत ही ज्यादा था। इस वक़्त आपका कृपापत्र मिला है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८५०) २५ जनवरी, १८६६

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप कृपा करके जल्दी अपने हालात से सूचित करते रहा करें। काम बहुत रहता है, कई प्रकार का। आप दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८५१) ३१ जनवरी, १८६६

आपने मेरे सब अपराध मुआफ़ फ़रमाने, यद्यपि बाहर से पत्र लिखने में कभी देर कर दूँ। मगर दिल से तो सर्वदा आपके चरणों में हूँ।

हवाख़ाहे तो अम जानाँ व मी दानम कि मी दानी,
कि हम नादीदा मी दानी व हम ननविश्ता मी ख़्वानी।

भावार्थ—ऐ प्यारे! मैं जानता हूँ कि तुझे यह पता है कि मैं आपका प्रेमी हूँ और तू बिना मुझे देखे मेरे दिल को जान लेता है, और बिना पत्र लिखे मेरे हृदय को पढ़ लेता है।

भगवानसिंह एक और व्यक्ति के साथ किसी गाँव में एक साधु से

अपने रोग की दवा पूछने गया था। कल आ गया है। नुसख़ा लिखवा लाया है। वैरोकेवाले प्रभुदयाल के लड़के का विवाह है। उन्होंने वज़ीराबाद बरात बन के विवाह करने जाना है। मुझे उन्होंने पत्र भी लिखे हैं और बुला भी भेजा है। मेरा इरादा है कि वहाँ आज शुक्रवार जाऊँ और सोमवार वहाँ से चला आऊँ। जो नुसख़ा भगवानसिंह के लिए तजवीज़ करके आप लिखेंगे, वह उसको बनवा दिया जायगा। और कोई नहीं। लक्ष्मीचंद अब बराबर पढ़ने आता है। आपकी दया से बड़ा आनंद है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८५२) * ३ फ़रवरी, १८९६

मैं राज़ी हूँ। आज जंज (बरात) रुख़सत हो जानी है। अभी इस बात की कुछ सलाह नहीं हुई कि मैं किस दिन आपके पास आऊँगा, और कब लाहौर जाऊँगा। आपने दया रखनी।

—:o:—

गुजरात (पंजाब) में रहना

संबोधन पूर्वोक्त, (८५३) ५ फ़रवरी, १८९६

आपका एक कृपापत्र आज मिला, अत्यंत आनंद हुआ। मैं आज वज़ीराबाद से यहाँ आया हूँ। स्कूल में छुट्टी है। वज़ीराबाद से पत्र नहीं लिख सका। आपने दया करके मुआ़फ़ फ़रमाना। गुजरात भी एक रात गया था, भगत († हरभजराय) जी नहीं मिले। अल्बत्ता गुजरात और

* यह पत्र बिना डाक की मोहर के था, पर मज़मून पढ़ने से पता लगा कि इसका मेल यहाँ खाता है, इसलिए इसे यहाँ दे दिया गया है।

† भगत हरभजराय टंडन खत्री गुजरात (पंजाब) के निवासी थे। वहाँ स्टैम्प बेचते थे, पर चित्त से बड़े शान्त, शुद्ध और धार्मिक थे। तीर्थरामजी के साथ यह कटासराज, हरिद्वार और अमरनाथ यात्रा में भी गये थे।

वज़ीराबाद के एंट्रेंस क्लास में पढ़नेवाले विद्यार्थियों ने बहुत लाभ उठाया, और अत्यंत प्रसन्न हुए। अन्य भी कई महापुरुषों से मुलाक़ात हुई। आपके पत्र में स्वामीजी का हाल पढ़कर मेरा जी (चित्त) कर आया है कि लाहौर जाकर स्वामीजी के दर्शन भी करूँ और अन्य लोगों को भी मिल आऊँ। आप भी साथ चलें। उत्तर जल्दी लिखना और किस दिन चलें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८५४) ७ फ़रवरी, १८९६

आपका कृपापत्र इस समय प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। मैं आशा करता हूँ कि अधिक से अधिक तीन-चार दिन तक आपकी सेवा में अर्ज़ (भेंट) कर सकूँगा। इस समय तो मेरे पास केवल दो २) रुपये ही मौजूद हैं। आपने कोई भ्रम न करना। ऐसा इत्तफ़ाक़ हो गया है। मैं आपका दीन सेवक हूँ। आपने कृपादृष्टि रखनी। अपराध मुआफ़ फ़रमाने।

——:०:——

गुसाईंजी का चार घंटे तक व्याख्यान

संबोधन पूर्वोक्त, (८५५) ९ फ़रवरी, १८९६

आज मैं घड़तल * गया था। वह ग्राम मुरालीवाले † से कुछ बड़ा है, और केवल खत्री लोगों की बस्ती है। घर सब पक्के हैं। वहाँ की सभा में लाहौर की साधारण सभा से भी अधिक रौनक़ (शोभा) पाई। दो बजे से कुछ पीछे से लेकर छै बजे के लगभग तक मेरा व्याख्यान होता रहा। लोग जम्मू की अपेक्षा से भी अधिक प्रसन्न हुए। आप कृपा रखा करें। कुछ बराती के लोग भी आये हुए थे।

——:०:——

* घड़तल सियालकोट जिला में एक क़स्बा (बस्ती) है।

† गुसाईं तीर्थरामजी की जन्मभूमि है।

संबोधन पूर्वोक्त, (८५६) ११ फ़रवरी, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। लाहौर जाने का इरादा (संकल्प) तो था और अब भी है। मौक़ा मिला, तो शायद इसी हफ़्ता (शनिवार) को ही आ जाऊँ। मगर पक्की रीति से नहीं कह सकता। आपने कृपा रखनी। आपकी दया की ज़रूरत है।

——:०:——

पूरे दो घंटे निर्विकल्प समाधि

संबोधन पूर्वोक्त, (८५७) १४ फ़रवरी, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ था, अत्यंत आनंद हुआ। शायद इस बार मुझे पत्र लिखने में देरी हो गई है। मुआफ़ फ़रमाना। आपकी कृपा से पूर्ण आनंद (निजानंद) रहता है। कल यहाँ सत्संग था। पूरे दो घंटे तो निर्विकल्प शांतात्मा होकर चुपचाप सब समाधि में बैठे रहे। फिर दो घंटे मैं कुछ कहता रहा। आप कृपादृष्टि रखा करें। सब आपका ही ज़हूरा (चमत्कार) है। मैं लाहौर आना तो चाहता था, मगर कल शनिवार को वहाँ जाने से किसी साहब को नहीं मिल सकता, इसलिए इरादा मुल्तवी (संकल्प स्थगित) रखता हूँ। पंडित रामधनजी का नमस्कार।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८५८) १७ फ़रवरी, १८९६

आपका कृपाकांक्षी हूँ। पत्र में शायद एक दिन की देरी हो गई है। मगर चित्त से तो सदैव आपके चरणों में हूँ। आपकी दया से चित्त बड़े आनंद में है। यद्यपि ज़रा-ज़रा (किंचित्) रेशा (ज़ुकाम) ने तंग किया हुआ है।

अगर अज़ ख़िदमतत दूरं ज़ि दिल शर्मिंदगी दारम्।
वले क़ुमरी सिफ़त हस्तम कि तौक़े-बंदगी दारम्॥

अर्थात्—अगर आपकी सेवा से वंचित होता हूँ, तो चित्त में लज्जा सी आती है। मगर मैं बुलबुल के गुणवाला हूँ कि सेवा का पट्टा गले में रखता हूँ।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८५६) १६ फ़रवरी, १८६६

मुझे अब पहले की अपेक्षा आराम है। मगर बिलकुल सेहत (नीरोगता) नहीं आई। आप दया रखा करें। मैं होलियों में लाहौर और आपकी सेवा में उपस्थित होने की आशा करता हूँ।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८६०) २२ फ़रवरी, १८६६

मैं वैरोके गया हुआ था। मेरे लालाजी (रामचंद्र साहब) * अत्यंत बीमार हैं। शायद आज या कल गुज़र गये (स्वर्गवास) हो गये होंगे। उन्होंने बुला भेजा था। देखिये, क्या होता है। एक रात मैं वहाँ रहा था। मैं स्वयं भी अभी बिलकुल तंदुरुस्त नहीं हुआ। आप कृपापत्र जल्दी-जल्दी भेजते रहा करें, और दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८६१) २५ फ़रवरी, १८६६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मैं अब बिलकुल राज़ी हूँ। हमें तीन छुट्टियाँ होनी हैं। शुक्रवार, शनिवार और रविवार की। इनमें वैरोके भी जाना है, लाला रामचंद्रजी की सुरत (खबर) लेने। आपके चरणों में भी उपस्थित होना है। और हो सके, तो लाहौर और मुरारीवाला भी थोड़ा थोड़ा जाने का संकल्प है। आगे जैसी आप आज्ञा देंगे किया जायगा। आप दास पर दया रखा करें।

—:o:—

* लाला रामचंद्र से मुराद गुसाईं तीर्थरामजी के सुसर से है।

संबोधन पूर्वोक्त, (८६२) २ मार्च, १८९६

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हूँ। आप दया रखा करें। इस शनिवार को मेरा डसका जाने का संकल्प है। आप कब तशरीफ़ लायेंगे ?

——:o:——

बोर्डिंग का अध्यक्ष (मोहत्मिम) होना

संबोधन पूर्वोक्त, (८६३) ५ मार्च, १८९६

अभी कुछ मिला नहीं, आशा है कि जल्दी अर्ज़ (भेंट) करूँगा। हमारे स्कूल के बोर्डिङ्ग हौस का अध्यक्ष (सुपरिण्टैण्डैण्ट) पहले एक मुसलमान अध्यापक था। पिछले दिनों उसने यहाँ एक अत्यंत अनुचित चेष्टा की (अर्थात् हिन्दू जिस प्राणी की शपथ खाते हैं, उस का मांस बोर्डिङ्ग में मँगवाया)। इस बात की खबर हो गई, सो उस को निकाल दिया गया है। अब बोर्डिङ्ग का मुख्याधिकारी (सुपरिण्टेंडैंट) मेरे से अतिरिक्त और कोई हिन्दू अध्यापक नहीं बन सकता। इसलिये मुझको प्रबंध सँभालना पड़ा है। आज वहाँ (बोर्डिंग) में चले जाना होगा। जो जगह मैंने वहाँ ली है, वह इस स्थान से बहुत अच्छी है। और आपको वहाँ बहुत सुख होगा। एकान्त भी है। आप कब पधारेंगे ? पंडित रामधनजी की तरफ़ से बहुत-बहुत नमस्कार।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८६४) ७ मार्च, १८९६

आपका कृपापत्र एक आज मिला। अत्यंत आनंद हुआ। आप कल ज़रूर तशरीफ़ ले आयें। आज मैं अर्ज़ (भेंट) करने लगा था। किंतु अब मैंने कहा कि उन्होंने स्वयं यहाँ पधारना है। इस बोर्डिंग में परसों रात को एक युवक ब्राह्मण इंट्रैंस का विद्यार्थी अति सुंदर, तहसीलदार का दामाद स्वर्गवास हो गया है, अफ़सोस है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(८६५)		१४ मार्च, १८९९

आपने अपने स्वास्थ्य के विषय बहुत जल्दी लिखना। अगर कष्ट न हो तो वह उशबा जो आपके मकान में है, वह ज़रूर ही चाचाजीको भेज देना। आगे ही बड़ी देर हो गई है। संकोच न करना। उनका पता यह है:—

"इलाक़ा स्वात, मुक़ाम मलाकंड। केसरमल दुकानदार को पहुँचकर गुसाईं हीरानंद या गुरुदास को मिले।" उशबा चाहे नया ख़रीदना पड़े, भेज ज़रूर देना। डाकख़ाना से पूछकर उस पर टिकट लगवा देना। यह कष्ट देता हूँ। मुआफ़ फ़रमाना।

——:०:——

जगत् के सब पदार्थ खोये जानेवाले हैं

संबोधन पूर्वोक्त,		(८६६)		१६ मार्च, १८९९

आपके दो कार्ड प्राप्त हुए। आपकी धोती बोर्डिंग हाउस में कहीं नहीं मिली। पता नहीं कहाँ खोई गयी। इतना मैं कह सकता हूँ कि जिस किसी ने उस धोती को गँवाया है, ग़लती से गँवाया है, जान बूझकर अथवा बुरे चित्त से किसी ने यह काम नहीं किया। अच्छा, परमेश्वर और दे देगा। जगत् की सब वस्तु एक दिन खोई जानी हैं। आप दया रखा करें। उशबा अगर अभी तक नहीं भेजा, तो अब भेजना। मैं स्वयं भेज दूँगा। पर सूचना दे देना।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,		(८६७)		१८ मार्च, १८९९

मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ कि शायद इस वार मुझे पत्र भेजने में देर हो गई है। आपने मुआफ़ फ़रमाना। दया रखनी।

आपने उशबा भेज दिया है, बड़ा अच्छा काम किया। लेकिन मैं ख़याल करता हूँ कि जिस पता पर उन्हें भेजा है, शायद उस पते पर उन्हें न मिले। आपने ग़ुलाम पर दया रखनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८६८) २० मार्च, १८६६

सियालकोट के लड़के जो आज-कल गुजरात इम्तहान देने गये हुए हैं, उन्होंने मुझे बुला भेजा था किंचित् उत्साह के लिए। कल मैं वहाँ गया था। आज वापस आ गया हूँ। गुजरात से रियाज़ी (गणित) के परचे मैं साथ ले आया हूँ। आप दया रखा करें।

—:o:—

गुसाईंजी की अत्यन्त नम्रशीलता

संबोधन पूर्वोक्त, (८६६) १० बजे रात, २१ मार्च, १८६६

आपका ख़फ़गी (रोष) का पत्र मिला, चित्त को बड़ा ही रंज (खेद) हुआ। महाराजजी! मेरे अपराधों को मुआ़फ़ फ़रमायें। मैं बड़ा नालायक़ (अयोग्य) हूँ। आज-कल मेरी शारीरिक सेहत (स्वास्थ्य) में कुछ विकार है। क़ब्ज़ की शिकायत है, अर्थात् मलावरोध रहता है। और सिर भी ठीक अवस्था में नहीं। शायद कोई सख्त शारीरिक बीमारी (रोग) न आ घेरे। उधर से आप ख़फ़ा (रुष्ट) हो गये हैं। मैं तंगी की दशा में हूँ। अगर मुझसे अपराध हो गये हैं, तो मैं निश्चय दिलाता हूँ कि उनका कारण केवल यही है कि मेरी शारीरिक दशा (स्वास्थ्य) ठीक नहीं। आप दया करके मुआ़फ़ फ़रमावें। यद्यपि बाहर से पत्र भेजने में मैं कभी चूक भी जाऊँ, तथापि चित्त से तो मैं सर्वदा आपके चरणों में हूँ।

हवाख़ाहे तो अम जानाँ व मी दानम कि मी दानी।
कि हम ननविशता मी ख्वानी व हम नादीदा मी दानी॥

भावार्थ:—ऐ प्राणाधार! मैं तेरा प्रेमाकांक्षी हूँ और जानता हूँ कि तुझे यह पता है (कि मैं तेरा प्रेमाकांक्षी हूँ), और बिना पत्र लिखे तू मेरे हृदय को पढ़ लेता है, और बिना मुख देखे तू मेरे अन्तःकरण को जान लेता है।

आज मैंने थोड़ी सी सरना (सना) खाई है। शायद इससे कुछ

आराम आ जाये। अब मैं इंट्रेंस के परचे देखने आरम्भ करने लगा हूँ। आपने कृपादृष्टि से सब कार्य भले प्रकार से शीघ्र संपूर्ण करा देना। जैसी आप आज्ञा देंगे, वैसा बैसाखी मेले को जाने के विषय में किया जायगा।

जो अपराध इस दीन सेवक से हुआ है, उससे कृपया बहुत शीघ्र सूचना दें, ताकि भविष्य में एहत्यात (सावधानी) की जाये। इस अपराधी के अवगुणों को चित्त में न रखना। न पता, इस जगत् में कितने दिन और रहना है ताकि इस हसरत (शोक) को लेकर शरीर न त्यागूँ।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८७०) २३ मार्च, १८९६

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप जल्दी जल्दी दया किया करें। दो हजार के लगभग परचा (उत्तर-पत्र) देखनेवाला है। आप दयादृष्टि रखें।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८७१) २६ मार्च, १८९६

दास कुशल पूर्वक है। आप अपनी कुशलता (स्वास्थ्यादि) का हाल लिखें, काम बहुत है। कल शुक्रवार इन्सपेक्टर साहब हमारे स्कूल की इंट्रेंस कक्षा का इम्तहान लेंगे।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८७२) २८ मार्च, १८९६

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है? आप जल्दी-जल्दी दया किया करें। दास का चरणों की ओर ध्यान है।

———:o:———

शारीरिक आरोग्यता की आवश्यकता

संबोधन पूर्वोक्त, (८७३) ३० मार्च, १८९६

आपका कृपापत्र मिला, बड़ा आनन्द हुआ। शारीरिक सेहत

(स्वास्थ्य) वा नीरोगता निःसन्देह आवश्यक वस्तु है। इसके अच्छा होने से मन भी अच्छा रहता है। यहाँ एक जलसा (उत्सव) हुआ था जिसमें बाहर के सन्त, ब्राह्मण भी बुलाये गये थे। मगर उपदेशक मैं ही था। चार घंटे मेरा व्याख्यान होता रहा। आपकी दया से लोग बड़े प्रसन्न हुए। नगर के धनाढ्य लोग भी लगभग सब उपस्थित थे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८७४) ३ अप्रैल, १८६६

वैरोके समस्त सम्बन्धियों का इकट्ठ (जमाव) था, लालाजी की माई के पूरा (स्वर्गवास) हो जाने के कारण। लगभग चार सौ आदमी के एकत्र थे। मैं भी गया था। कल गया था, आज आ गया हूँ। लोग अभी वहीं हैं। भगवानसिंह आपकी सेवा में आया है। उसकी प्रार्थना सुन लेनी। और जो आपकी मरज़ी हो करनी। मगर दारोग़ा साहब की और मेरी राय (सम्मति) में आदमी बिल्कुल निर्दोष है। यद्यपि हमारी बुद्धि बहुत ही तुच्छ है। दिल उसका साफ़ है, यद्यपि बुद्धि बहुत मोटी है। आपने मेरे अपराध मुआफ़ फ़रमाने और दया रखनी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८७५) ५ अप्रैल, १८६६

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। अगर बैसाखी तक परचे ख़तम हो गये तो कहीं ज़रूर जाऊँगा, जहाँ आपकी मरज़ी हुई। अगर न हुई, तो शायद यहीं रहूँ। जो परमेश्वर की मरज़ी होगी, हो जायगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८७६) ६ अप्रैल, १८६६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। दोनों पंडित साहब राज़ी हैं, वह पिंडदादनखाँवाले भगतजी भी राज़ी हैं। उनकी तरफ़ से

मत्था टेकना। मैं कल अर्ज़ (भेंट) करूँगा। अब स्कूल में कक्षाबंदी हो गई है। मुझे काम बहुत बढ़ गया है। बोर्डिंग में लड़कों की संख्या भी बहुत बढ़ गई है। निःसंदेह चित्त की एकाग्रता में पूर्ण आनंद है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८७७) १० अप्रैल, १८९९

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। बड़ा आनंद हुआ। पत्र लिखने में देर इसवास्ते हो गई है कि मैं किंचित् बीमार था। कुछ पेट में दोष (विकार) था और कुछ दाईं आँख की ऊपर की तरफ़ एक फुंसी थी, जिससे तबीअत (चित्त) में व्याकुलता थी। इस समय दोनों को आराम मालूम होता है। भगवानसिंह जिस दिन आपसे रुख़सत हुआ था उससे अगले दिन बेचारह कुछ रास्ता पैदल चलकर और कुछ इक्के पर चलकर यहाँ पहुँच गया था। आपने लाहौर की बाबत जैसा फ़रमाया है, वैसा किया जायगा। परचे एक चौथाई रहते हैं।

—:o:—

संबोधन पर्वोक्त, (८७८) १२ अप्रैल, १८९९

कल बैसाखी का दिन बीत गया है। परमेश्वर के भजन में बड़े आनंद के साथ बीता है। अब मैं राज़ी हूँ। आप दया रखा करें।

—:o:—

तपोवन के दर्शन का संकल्प

संबोधन पूर्वोक्त, (८७९) !१२ अप्रैल, १८९९

आपकी दया से परचे आज समाप्त हो गये। अब यदि आपकी आज्ञा हो तो तपोवन के दर्शन के संकल्प से मैं यहाँ से चला आऊँ। वहाँ से वापस आकर लाहौर चले जायेंगे। लाहौर से मंज़ूरी आ गयी है। प्रथम मई मास तक वहाँ चले जाना है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८८०) १५ अप्रैल, १८९६

महाराजजी ! मैंने एक पत्र आपकी सेवा में भेजा हुआ है, जिसमें पूछा था कि मुझे अब क्या आज्ञा है। क्या इस नीयत से चला आऊँ कि इकट्ठे हरद्वार तपोवन की तरफ़ सैर दर्शन परशन कर आयें? भगत हरभजरायजी को भी बुलायें या किस तरह करें। अयोध्यादास की तरफ़ लिखें या न लिखें। आपने कोई उत्तर नहीं दिया। परचों का काम ख़तम हो गया हुआ है। अगर आप उचित समझें, तो स्वयं यहाँ आने की दया करें। मगर जल्दी।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८८१) २१ अप्रैल, १८९६

मुझे छुट्टी मिल गई है। वीरवार दो बजे की गाड़ी से मैं यहाँ से चलूँगा। और सीधा लाहौर चलूँगा। असबाब भी साथ होगा। आप दया रखा करें। आप मुझसे पहले जायेंगे, या साथ की गाड़ी में?

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८८२) लाहौर, ३० अप्रैल, १८९६

मैं यहाँ सकुशल पहुँच गया हूँ। आज रोटी मकान पर तैयार हुई थी। कल लड़कों को वैदिक* स्कूल में प्रविष्ट करा देने की मरज़ी है, क्योंकि वहाँ शास्त्री पढ़ाने का प्रबंध अत्यंत उत्तम है। उस स्कूलवाले लाला देवीदयाल साहब बी० ए० आज मेरे मकान बड़ी देर बैठे रहे। आप दया रखा करें। बड़ी जल्दी पत्र लिखा करें। आज मैं कालिज गया था। कल वहाँ काम शुरू करना है।

—:०:—

* वैदिक स्कूल से अभिप्राय आर्य-समाज के० डी० वी० कालिज के स्कूल से है।

बी०-ए० के सब विद्यार्थियों का गणित लेना

संबोधन पूर्वोक्त, (८८३) लाहौर *, २ मई, १८९६

आपका कोई कृपापत्र नहीं आया। आप दया रखा करें, इंट्रेंस का रिज़ल्ट (परिणाम) अभी नहीं निकला। बी० ए० श्रेणी के जितने विद्यार्थी हमारे कॉलिज में प्रविष्ट हुए हैं, सबने गणित लिया है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८८४) ५ मई, १८९६

आप कृपादृष्टि रखा करें। आज इंट्रेंस का रिज़ल्ट निकला है। भीड़ बड़ी थी। मकान की कोठड़ी वह नहीं खोल देता। और नलके का किराया भी हमारे ही ज़िम्मे डालता है। अभी तक तो और कोई मकान देखा नहीं। आगे जैसी आप आज्ञा देंगे, किया जायेगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८८५) ६ मई, १८९६

आपका एक कृपापत्र भी प्राप्त नहीं हुआ। इस पत्र के देखते ही आप कृपापत्र से कृतार्थ कीजिये। आप यहाँ तशरीफ़ कब लायेंगे? नलका अभी नहीं खुला।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (८८६) ८ मई, १८९६

मैंने कई पत्र भेजे हैं, आपकी ओर से एक भी नहीं पहुँचा। आज लक्ष्मणदास की ज़बानी मालूम हुआ कि आपने भी भेजे हैं। मकान का पता शायद आप ग़लत लिखते होंगे। पता यह है:—"लाहौर, गुमटी बाज़ार, गली चौधरी हरजसराय, मकान वैष्णोदास पर तीर्थराम को मिले।"

—:o:—

* इस पत्र से स्पष्ट हो रहा है कि गुसाईंजी अब लाहौर मिशन कालेज में गणित शास्त्र के प्रोफ़ेसर की पदवी पर नियत हो गये हैं। और आगे के सभी पत्र प्रायः लाहौर से हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (८८७) ६ मई, १८६६

आपके तीन पत्र आज कालिज में मिले, जो कालिज के पते पर लिखे हुए थे। एक के दो पैसे देने पड़े। बड़ा आनंद हुआ। मकान फ़िलहाल (अभी तो) यही रखेंगे। पता:—"लाहौर, गुमटी बाज़ार, गली हरजसराय जौहरी, मकान वैष्णोदास, तीर्थराम को मिले।" आज पिंडदादनख़ाँवाले कृष्णचंद का पत्र भी आया था। अपने पुत्र की बाबत लिखता है। जैसा फ़रमाओगे किया जायगा। जब कृपा हो तशरीफ़ ले आयें। और आनंद है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८८८) ११ मई, १८६६

आपका एक कृपापत्र कल और एक आज प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। आप अब जल्दी तशरीफ़ ले आयें। नलका अभी नहीं खुला। भूआ जी (फूफी) आँखें बनवाना चाहती हैं।

——:o:——

संबोधन पर्वोक्त, (८८६) * १३ मई, १८६६

कल कृष्णचंद और उसका लड़का यहाँ आ गये थे। रोटी अपने ख़र्च से खाते हैं। आपके दर्शन हुए देर हो गई है। यहाँ भी आज-कल काम का ज़ोर है। दया रखा करें।

संबोधन पूर्वोक्त, (८६०) १८ मई, १८६६

अभी नलका नहीं खुला। और वह कागज़ लिखवाने भी नहीं आया। इस बार आपको लाहौर में तकलीफ़ हुई है। मैं बड़ा अफ़सोस करता हूँ। आपने मेरे अपराध मुआफ़ फ़रमाने। और जल्दी तशरीफ़ लानी। चाचाजी आशा है कि आज मुरारीवाला आ गये होंगे। किरायानामा लिखवाकर ले गया है।

——:o:——

* यह पत्र बिना डाकखाने की मोहर के था, पर इसका मज़मून यहाँ मेल खाता देखकर इसे यहाँ न० ८८६ पर दे दिया गया है।

संबोधन पूर्वोक्त, (८९१) २१ मई, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। नलका अभी नहीं खुला। देखिये कब खुलता है। चाचाजी मुरारीवाले आ गये हुए हैं।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८९२) २२ मई, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। नलका आशा है कि खुल जायगा। किरायानामा लगभग उसी तरह से लिखा है जैसा कि मसौदा बनाया गया था। लक्ष्मीचंद सियालकोट से यहाँ पढ़ने आया है। सबसे ऊपर की मंज़िल में रहा है। कालिज अभी दाख़िल नहीं हुआ।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (८९३) २४ मई, १८९६

नलका तो खुल गया, बड़ा आनंद हुआ। लेकिन लक्ष्मीचंद के यहाँ होने से कल्पना है। शायद उसे जवाब देना पड़े। वह लड़कों के लिए बुरा नमूना सामने है। आप दया रखा करें।

———:o:———

साढ़े तीन सौ रुपयों का तत्काल खपा देना

संबोधन पूर्वोक्त, (८९४) २७ मई, १८९६

आपका कृपापत्र मिला, बड़ा आनंद हुआ। लक्ष्मीचंद स्वयं ही यहाँ से बोर्डिंग हौस में चला गया है। पंडित दीनदयालजी कश्मीर गये हुए हैं। विश्वविद्यालय से साढ़े तीन सौ रुपये ३५०) मिले थे। ऋण देने-वालों को भेज दिये हैं। मासिक भाड़ा, मास भर के लिये आटा, घर के लिये बर्तन, चारपाइयाँ और अल्मारी ख़रीद ली है। दूध का हिसाब ख़तम कर दिया है। अब केवल एक रुपया देना रहा है। इन रुपयों से पूर्वोक्त कार्यों से अतिरिक्त और कुछ कार्य नहीं हो सका। आपने ख़फ़ा ( ) न होना, आपको जिस बात की ज़रूरत हो, वह अब भी अच्छी तरह से

पूरी हो सकती है। पुस्तकें भी कुछ ली हैं। आपकी बड़ी कृपा हुई है। आपने दया रखनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८९५) ३० मई, १८९९

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आप दया रखा करें। चाचाजी शायद वैरोके से वापस होकर यहाँ आवेंगे। आप कब तशरीफ़ लावेंगे। ब्रजलाल आपको मिला ही होगा।

——:०:——

चाचाजी का रोष

संबोधन पूर्वोक्त, (८९६) ३१ मई, १८९९

चाचाजी मुझ पर अत्यंत ख़फ़ा (रुष्ट) हैं और विशेष करके इस बात पर कि मैं घरवालों को अपने साथ ले आया हूँ। शायद दो तीन दिन तक यहाँ आयें। पर कुछ पक्का पता नहीं। आपने दया रखनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (८९७) ३ जून, १८९९

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। बड़ा आनंद हुआ। महाराजजी! आपको जिस चीज़ की ज़रूरत हो, या जो कुछ आप चाहते हों वह आप इस दास को आदेश करें, हो जायगा। सब कुछ आपका ही है। लाला अयोध्यादास अब लाहौर ही में रहेगा। यहाँ आया हुआ है। उसका मत्था टेकना। अगर चाचाजी शनिवार तक यहाँ न आये, तो मैं स्वयं शनिवार को वहाँ जाने के लिए आऊँगा।

——:०:——

तीर्थरामजी का तीव्र त्याग

संबोधन पूर्वोक्त, (८९८) ४ जून, १८९९

आपका एक कृपापत्र आज मिला और एक कल मिला था। मैं तो

बिलकुल ही आपका हूँ। किसी वस्तु को अपना नहीं समझा हुआ। सांसारिक धन को एकत्र करना खुशी का कारण नहीं समझा हुआ। न गहना (भूषण) बनाने का और न पदार्थों के उपार्जन करने का ख़याल है। आपकी कृपा से वृक्ष की छाया अगर घर के बदले, भस्म वस्त्रों के बदले, भूमि शय्या के बदले और भिक्षान्न खाने के लिये यदि मिल जाये, तो भी बड़ा आनंद माना हुआ है। किस धन के लिये मैं आपको रुष्ट कर दूँ ? यदि भिक्षुओं की तरह रहने की मुझे आज्ञा दो, तो मैं तय्यार हूँ सब कुछ छोड़कर साधुओं के समान रहने को। कालिज में काम भी करता रहूँगा, जो कुछ वहाँ मिले, जिस तरह आपका चित्त चाहे, बर्त लिया करना। हमारे घर भी जो उचित समझें दे दिया करना। यह दीन सेवक तो केवल काम करने और परमात्मा को चित्त में धारण रखने से वह सुख पाता है कि जो किसी बाह्य विषय-सुख अथवा आडम्बर और ठाठ बाठ को किञ्चित् भी आवश्यकता नहीं रखता। मुझे तो जो ईश्वर निमित्त काम करने से सुख होता है, वही काफ़ी वेतन है। मेरा वेतन जाने और आप जानें। मेरा आत्मा तो इन चीज़ों से न घटता है, न बढ़ता है। सदा आनन्दरूप है। यह सब आपकी कृपा का फल है। जब आप पधारेंगे, विस्तारपूर्वक कथन करूँगा। कल के चाचाजी (पिताजी) यहाँ पधारे हुए हैं, सो मैं कल शनिवार को आपके चरण-कमल स्पर्श नहीं कर सकूँगा। जो आपकी मनशा (विचार) हो मुझे स्पष्ट लिख दिया करो।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (८३६)   ८ जून, १८६६

कृपापत्र आपका प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आप दास पर कृपा रखा करें। चाचाजी कल तशरीफ़ ले गये हैं। आपकी दया से आनंद है। आप कृपादृष्टि रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६००) [९ जून, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आपकी दया से सदा आनंद है। हर हालत में चैन (सुख) है। चाचाजी ज्यादा ख़फ़ा (रुष्ट) नहीं हुए।

—:o:—

शरीर से बाहर स्थिति

संबोधन पूर्वोक्त, (६०१) ११ जून, १८९६

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, बड़ा आनन्द हुआ। चाचाजी बहुत तो ख़फ़ा (रुष्ट) नहीं हुए। और होते क्योंकर ? मैं तो शरीर से बाहर स्थिति रखता था। परन्तु पचास रुपये जो मेरे पास बचे थे, वह उनकी सेवा में भेंट किये गये। अब मैं उधार लेकर काम चला रहा हूँ। और आनन्द हूँ। अयोध्यादास लाला गोविंदराम वकील के पास रहता है। मुझे केवल दो दिन मिला है। और रघुनाथ अपने भाँजे को यहाँ पढ़ने के लिए प्रतिदिन भेजा करता है।

जगद्गुरु स्वामी शंकराचार्य्यजी * मुझे अपने साथ एक दिन के लिये जम्मू ले जाना चाहते हैं। उनको जम्मू के राजा ने बुला भेजा है। उनका प्रस्थान कल शुक्रवार सायंकाल को यहाँ से होगा। परसों शनिवार को वहाँ रेल के रास्ते से पहुँच जायेंगे। उनके साथ राजा हरवंशसिंह का

* जगद्गुरु श्रीस्वामी शंकराचार्य्यजी से अभिप्राय द्वारकामठ (शारदापीठ) के परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीस्वामी राजराजेश्वर तीर्थजी हैं, जो उन दिनों देशाटन करते करते लाहौर पधारे थे और जिनके सिंहासन के इर्द-गिर्द दिन में भी दो दीपक (मशाल) जलते थे। इनही से गुसाईं तीर्थरामजी को संन्यास धारण करने की आज्ञा इन शब्दों से मिली थी कि "जब आत्मानुभव से तुम खूब मस्त हो जाओ, तो स्वयं विद्वत्-संन्यास ले लेना।" जिस आज्ञानुसार गुसाईंजी ने उस अवस्था को प्राप्त होते ही टेहिरी के समीप गंगा-तट पर संन्यास ले लिया, और उनको अपना परम गुरु मानकर अपने नाम के पीछे तीर्थ संज्ञा लगा ली, जिससे रामतीर्थ नाम प्रसिद्ध हुआ।

वज़ीर, पं० दीनदयालजी और लाहौर के कुछ एक धनाढ्य पुरुष होंगे। मुझे भी ले जाना चाहते हैं, केवल महाराजा जम्मू से मेल कराने के लिये। मैंने अभी कोई पक्का संकल्प नहीं किया। जैसे आपकी भीतर से आज्ञा होगी, वैसा किया जायगा। मैं आपका एक दीन दास हूँ। यदि आपको तकलीफ़ न हो, तो आपने भी गुजराँ-वाले रेल्वे स्टेशन पर तशरीफ़ ले आनी। यदि मैं (उनके साथ) हुआ, तो आपने भी जम्मू चले चलना।

——:o:——

शंकराचार्य्यजी की आज्ञानुसार तीर्थरामजी का जम्मू जाना

संबोधन पूर्वोक्त,		(६०२)		१३ जून, १८९९

महाराजजी ! मैं कल स्वामीजी के साथ जम्मू नहीं गया। क्योंकि आज छुट्टी नहीं थी। पर आज वहाँ पहुँच जाने का वचन (इक़रार) है, कल रविवार की रात्रि को यहाँ वापस आ जाना होगा। रात की गाड़ी में आना जाना होगा। दिन को सियालकोट भी शायद कुछ घंटे ठहरूँ। महाराजजी ! मैं चाहे क्या ही करूँ, मेरा चित्त आपही के चरणों में है। जगद्गुरुजी के साथ पं० भानुदत्त, पं० गणपति, पं० दीनदयाल, अमृतसर के पाँच बड़े प्रसिद्ध पंडित और लाहौर के कुछ धनाढ्य पुरुष गये हुए हैं। भुआ (फूफीजी) आज शायद मेरे साथ गाड़ी में बैठ कर मुरारीवाला जायें। आपने इस दीन और सदैव अपराधी दास के अवगुणों को क्षमा करना और कृपादृष्टि रखनी।

——:o:——

हरदिलअज़ीज़ी (सबसे प्रेम)

संबोधन पूर्वोक्त,		(६०३)		१५ जून, १८९९

मैं कल रविवार प्रातःकाल की गाड़ी से जम्मू गया था और कल रात की गाड़ी से लाहौर आ गया था। जो आज सोमवार प्रातःकाल लाहौर

पहुँची। स्टेशन से सीधा कालिज पढ़ाने चला गया था। सियालकोट के लोग रात को स्टेशन पर मिलने के लिये आ गये थे। पचास से अधिक मनुष्य थे। सब बड़े प्रेम से मिले, जम्मू में भी मुलाक़ात हुई। (वहाँ लोगों का) हुजूम (जनसमूह मिलने के लिये आया हुआ) था। महात्मा निरञ्जनदास भी मिले, अमृतसर के पंडित गिरधारीलाल शास्त्री और पं० मोहनलालजी बड़े प्रेमी हैं। आप शीघ्र पधारें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६०४) १७ जून, १८९६

आपका एक कृपापत्र इस समय आया। अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ। जिसमें मोहन और लद्धासिंह के यहाँ आने का ज़िक्र (चर्चा) था। आप कब तशरीफ़ लायेंगे ? अब आप भी तो इधर पधारें। ग़ुलाम पर दया रखा करें।

——:o:——

मिशन कालिज में व्याख्यान

संबोधन पूर्वोक्त, (६०५) २० जून, १८९६

कल मोहन, लद्धासिंह और हरिकर्मसिंह मुरालीवाले से यहाँ आये हैं। आप कब पधारेंगे ? मेरा आज मिशन कालिज में व्याख्यान* हुआ था। लोग बड़े ख़ुश हुए थे। और मिशन कालिज के प्रिन्सिपल साहब ने उसके छपवा देने की फ़रमायश (हिदायत) की थी। मैं शायद कल जम्मू जाऊँ, पर पक्का नहीं कह सकता। परसों छुट्टी है।

——:o:——

* यह व्याख्यान अंग्रेज़ी में था, जिसका विषय "गणितशास्त्र, उसकी आवश्यकता और उस में उन्नति पाने का उपाय" (Mathematics; Its importance and the way to excel in it) था। यह तत्पश्चात् पुस्तकाकार छप गया था और अब भी श्रीरामतीर्थ पब्लिकेशन लीग, लखनऊ से पुस्तकाकार में संक्षिप्त जीवनी-सहित ।!) को मिलता है।

संबोधन पूर्वोक्त,			(६०६)			२७ जून, १८६६

यहाँ कुशल है। आपकी कुशल सदा चाहता हूँ। बेबेजी (माताजी) तीन चार दिन तक यहीं ठहरेंगी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,			(६०७)			२६ जून, १८६६

कल आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। चाचाजी ने लिखा है कि मोहन को शुक्रवार भेजना गुजराँवाले। और शनिवार वापस लाहौर भेज देंगे! चाचाजी मौलवी साहब पर अत्यंत ख़फ़ा (रुष्ट) हैं। मुझे अंदेशा है कि चिट्ठी नालिश न कर दें। बेबेजी भी शुक्रवार यहाँ से जायेंगी। आपकी दया से चित्त आनंद रहता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,			(६०८)			१ जुलाई, १८६६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। मैं तो अपने नियमानुसार बराबर पत्र भेजता रहा हूँ। बदन के रेशा (जुकाम) के कारण किसी क़दर तंग होने की वजह से पत्र भेजने में एक दिन की देर शायद हुई हो, तो कुछ आश्चर्य नहीं। नहीं तो इससे ज्यादा देर कभी नहीं हुई होगी। आप गुलाम पर दया रखा करें, आशा है कि कल अर्ज़ (भेंट) करूँगा।

——:o:——

गुरुजी के लिये बोटी बोटी भी काटी जाय तो आनन्द है

संबोधन पूर्वोक्त,			(६०६)			२ जुलाई, १८६६

मैं आज तक अर्ज़ (भेंट) नहीं कर सका, क्षमा कीजियेगा। जब देर का कारण मालूम होगा, तो आप चित्त में कोई ख्याल (आशंका) नहीं रखेंगे। आप अपने दीन दास पर रुष्ट मत हुआ करें। इस दास

की बोटी बोटी भी अगर काटने की आज्ञा हो, तो पूर्ण आनन्द माना जाता है और बड़ी कृपा समझी जाती है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६१०) १० जुलाई, १८९९

मैं आज प्रातः जब जागा, तो मेरी घड़ी ठहरी हुई थी, कुंजी न लगाई जाने के कारण से। समय न मालूम हुआ। पर मैं फ़ौरन् बादामी बाग़ के स्टेशन की तरफ़ भागा। वहाँ जाने से मालूम हुआ कि गाड़ी थोड़ी देर पहले चली गई थी।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६११) ११ जुलाई, १८९९

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। सियालकोट से भगवानसिंह विना बुलाये कल यहाँ आ गया था, मुँह नहीं लगाया। चला गया है। कहीं जाने की बाबत फिर अर्ज़ करूँगा। जो भगवत् की इच्छा हो, हो जायेगा। वक़्त आयेगा तो देखा जायेगा। आपकी आज्ञानुसार सब कुछ होगा, और फिर सोच लिया जायेगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६१२) १५ जुलाई, १८९९

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, बड़ा आनंद हुआ। आपकी बड़ी कृपा है। जिस तरह आपकी मरज़ी होगी, वैसा हो जायगा। मुझे इस बार लिखने में शायद देर हो गई है। आप दया रखा करें। मुक़द्दमा का देखिये क्या होता है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६१३) १६ जुलाई, १८९९

आपके दो कृपापत्र मिले। बड़ा आनंद हुआ। मुक़द्दमा डिस्ट्रिक्ट इन्सपेक्टर (मदरसा का अफ़सर) पंडित हरचरणदास के पास आ गया

हुआ है। यह बात बिलकुल ठीक है। सुलह सफ़ाई हो जाय, तो अच्छा है। हाँसी से मासड़ (मौसा) का पत्र मदन* की सगाई के वास्ते आया था, मगर मैंने मासड़जी को जवाब दे दिया है। वह जगह भी ख़राब थी।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६१४) १८ जुलाई, १८६६

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत आनंद हुआ। आप जल्दी-जल्दी दया किया करें। आपके चरणोंकी तरफ़ ध्यान रहता है।

——:o:——

व्याख्यान पर पंडितों का विस्मित होना

संबोधन पूर्वोक्त, (६१५) २० जुलाई, १८६६

आप अब यहाँ तशरीफ़ ले आयें तो बड़ी कृपा हो। आपके चरणों की तरफ़ ध्यान रहता है। यहाँ कल मेरा एक व्याख्यान हुआ था। पं० दीनदयाल, पं० गोपीनाथ और सर्व श्रोतागण आपकी कृपा से बिलकुल हैरान (विस्मित) रह गये। आपकी दया से सब बड़ी कृपा करते हैं। छुट्टियाँ २६ जुलाई को होनी हैं। अब से नौ दिन को आप जब तशरीफ़ लायेंगे (पधारेंगे) तो जाने की सलाह की जायगी। आप दास पर कृपा-दृष्टि रखा करें।

——:o:——

मान में बोर्डिङ्गवालों की ओर से दावत

संबोधन पूर्वोक्त, (६१६) २५ जुलाई, १८६६

आज इस दास का कालिज के बोर्डिंगहाउस में रहनेवालों ने अपना प्रेम, भक्ति और उत्साह दर्शाने के लिये दावत (प्रीतिभोज) की थी। उन्हें उपदेश भी हुआ था। बड़े प्रसन्न हुए थे। उन्होंने बड़ी प्रीति और भक्ति प्रकट की। यह सब आपकी कृपा है। पं० दीनदयालजी

* मदन से अभिप्राय तीर्थरामजी के बड़े पुत्र गुसाईं मदनमोहन से है।

अमृतसर चले गये हैं। कुछ बीमार हैं। आप जल्दी तशरीफ़ लावें। कृपा रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६१७) भिवानी, १ अगस्त, १८६६

मैं कल रात के ग्यारह बजे भिवानी पहुँच गया। पंडितजी से मिल लिया। डॉक्टर साहब (मौसाजी) हिसार से हाँसी तक मेरे साथ रेल में सवार रहे। उनसे भी मिल चुका। अब पंडितजी की मरज़ी यकायक (एकाएक) वृंदावन जाने की हो गई है। आज या कल आशा है कि चल पड़ेंगे। आपके चरणों की तरफ़ ध्यान रहता है। आपकी दया से प्रसन्नता है, यहाँ वर्षा बहुत है। पर हिसार से फ़िरोज़पुर तक बिलकुल नहीं। अगर वृंदावन के रास्ते में मुझसे आपकी सेवा में पत्र भेजने में देर लग जाय, तो मुआफ़ फ़रमाना। रेल में मुझे ज़रा तकलीफ़ नहीं हुई।

——:o:——

मथुरा में गमन

संबोधन पूर्वोक्त, (६१८) मथुरा, ३ अगस्त, १८६६

पंडित (दीनदयाल) साहब के साथ मैं कल यहाँ (मथुरा में) पहुँच गया। भिवानी से यहाँ तक छब्बीस (२६) घंटे में आये। शहर अति सुन्दर है। और विशेष करके मंदिर तो अत्यंत ही नफ़ीस अजीब (अद्भुत और रमणीय) हैं। दो तीन दिन तक वृंदावन जावेंगे। वहाँ का पता इत्नीं काल में नारायण स्वामीजी का आश्रम है। फिरने का यहाँ अच्छा अवसर मिलता है। वर्षा इधर बहुत है। दूध का वही भाव है, जो लाहौर में।

——:o:——

व्रज की यात्रा

संबोधन पूर्वोक्त, (६१९) मथुरा, ९ अगस्त, १८६६

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत आनन्द हुआ। आज हम व्रज की

यात्रा को चले हैं। तीन चार दिन लगेंगे। गोवर्धन, बरसाना, नन्दग्राम, गोकुल, बलदाऊ यह मुक़ाम (स्थान) देखेंगे। आशा है कि मास सितम्बर में आपके चरण-कमलों में उपस्थित हो जाऊँगा। आपने तो पत्र पहले पते पर ही लिखना। तीन महात्माओं के दर्शन हुए। पताः—श्रीवृंदावन-धाम, केशी घाट, नारायण स्वामीजी के द्वारा तीर्थराम को मिले। पंडित (दीनदयाल) जी की ओर से जय श्रीकृष्णचंद्र महाराज की।

——:o:——

व्रज-यात्रा से वापसी

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(९२०)　　　　वृंदावन, १५ अगस्त, १८९९

हम सब कल व्रज की यात्रा से वापस आये। अब कोई दो सप्ताह से थोड़े दिन यहाँ रहने की आशा है। बहुत घूमे और फिरे। यह भूमि प्रत्येक प्रकार से सैर (भ्रमण) के योग्य है। आप दया रखा करें। पंडितजी का नमस्कार। मदन को बहुत जल्दी लाहौर वापस भिजवा देना। उसको ज्ञान लाहौर से मुरालीवाला ले गया था। सविस्तर जब आऊँगा अर्ज़ करूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(९२१)　　　　२० अगस्त, १८९९

आपका कृपापत्र कोई इन दिनों प्राप्त नहीं हुआ। आपने कृपा करके दास के अपराधों को मुआफ़ फ़रमाकर कृपापत्र रवाना करना, यहाँ लिखने लिखाने का अवसर ज़रा कम मिलता है। आज-कल यहाँ सत्संग का अवसर प्रायः मिल जाता है।

पता—"वृंदावनधाम, केशीघाट, नारायण स्वामी का आश्रम।" यह कार्ड लिख चुकने के बाद आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ।

——:o:——

वृंदावन से वापसी

संबोधन पूर्वोक्त, (६२२) मथुरा, २४ अगस्त, १८६६

अब हम वृंदावन से रुख़सत होकर मथुरा चले आये हैं। दो तीन दिन यहाँ रह कर दिल्ली जायेंगे। वृंदावन में व्याख्यान हुए, यहाँ भी होंगे। दिल्ली (देहली) से शायद मैं भी पंडितजी के साथ शिमले जाऊँ, मगर पक्के निश्चय से कुछ नहीं कह सकता। हर हालत में दो सप्ताह तक लाहौर पहुँच जाने की आशा है। अब मदन की छुट्टियाँ ख़तम हो गई होंगी। उसे लाहौर पहुँचा देना।

——:०:——

मथुरा में व्याख्यान

संबोधन पूर्वोक्त, (६२३) मथुरा, २८ अगस्त, १८६६

आपका एक कृपापत्र मिला, अत्यंत आनन्द हुआ। मेरा अपना चित्त भी अति शीघ्र आपके चरणों में उपस्थित होने को चाहता है। परंतु अब शिमले में जन्माष्टमी के दिन वार्षिक उत्सव है। पंडितजी ने मेरे वहाँ जाने की भी सूचना शिमला-निवासियों को भेज दी हुई है। और उन्होंने वहाँ विज्ञापन इत्यादि में मेरा नाम भी छाप रखा है। और आज पंडितजी मुझे वहाँ ले जाना चाहते हैं। येन केन रीति से वहाँ (शिमला) से नौ दस (९, १०) दिन तक लाहौर पहुँच जाने की आशा है। चित्त आपके चरणों में रहता है। कल मेरा यहाँ अंग्रेज़ी भाषा में व्याख्यान हुआ था। आज पंडितजी का है। नगर के सारे धनाढ्य और सभ्य पुरुष भी सुनने आये थे। आप दया रखा करें। पंडितजी की ओर से आपको जय श्रीकृष्णचंद्रजी की। शिमले का पता यह है — "मुक़ाम शिमला, पास बाबू नानकचंद साहब प्रेज़ीडेण्ट सनातन धर्म सभा के पहुँचकर गुसाईं तीर्थराम को मिले।"

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६२४)　　शिमला, ६ सितंबर, १८६६

मैं इस वीरवार १० सितंबरको यहाँ से रवाना होने की आशा करता हूँ। मेरा अपना चित्त भी उदास है। आपके चरणों का ध्यान रहता है। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६२५)　　शिमला, ८ सितंबर, १८६६

मैं परसों शायद यहाँ से चलूँगा। यहाँ कालिज के प्रिन्सिपल साहब, तालीम के महकमा के समग्र अफ़सर और डॉक्टर साइम डायरेक्टर साहब से मुलाक़ात हुई। व्याख्यान भी हुए। आपने दया रखनी। पंडित साहब की आपको जय श्रीकृष्ण स्वीकार हो। यहाँ से हरद्वार समीप है। मैं शायद वहाँ भी हो आऊँ, पर पक्का पता नहीं।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६२६)　　लाहौर, १४ सितंबर, १८६६

मैं कल प्रातः चार बजे शिमला से रवाना हो आज प्रातः ५ बजे यहाँ पहुँच गया हूँ। हरद्वार नहीं गया। यहाँ से शुक्रवार गुजराँवाले हाज़िर होने की आशा है। इतने में आप अगर यहाँ पधारने की तकलीफ़ उठायें तो अत्यंत कृपा हो। पंडित साहब शिमले में हैं, किसी क़दर बीमार थे।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६२७)　　२२ सितंबर, १८६६

चाचाजी हरद्वार नहीं गये। और मेरा पैर अभी राज़ी नहीं हुआ। शुक्रवार पंचमी का श्राद्ध माई का (माता का) करके मैं सेवा में उपस्थित होने की आशा करता हूँ। आपने कृपादृष्टि रखनी।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६२८) मुरारीवाला, २४ सितंबर, १८६६

कल पता लगा कि पंचमी की तिथि जो मैं शुक्रवार को समझे हुए

था रविवार को है। सो मैं शुक्रवार को सेवा में उपस्थित नहीं हो सकता। चाचाजी यहाँ हैं, गंगाजी नहीं गये, आपने कृपादृष्टि रखनी।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६२६) लाहौर, १० अक्तूबर, १८६६

मैं कुशलपूर्वक यहाँ पहुँच गया हूँ। ब्रज * और मदन कल सायं की गाड़ी में यहाँ नहीं आये। देखिये आज सायं को आते हैं कि नहीं। आज लाला सोहनामल आदि कोई नहीं मिला।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६३०) १२ अक्तूबर, १८६६

कल ब्रज * और मदन प्रातः की गाड़ी से यहाँ आ गये। चले तो परसों थे और टिकट भी ख़रीद चुके थे, पर परसों ऐमनाबाद के स्टेशन पर गाड़ी में सवार न हो सके। और वह टिकट भी ज़ाया (व्यर्थ) गये। लाला सोहनलाल अभी तक नहीं मिले। और कोई मित्र भी छुट्टियों के कारण से यहाँ नहीं है। आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६३१) १४ अक्तूबर, १८६६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। हाल मालूम हुआ। मैं आशा करता हूँ कि कल शायद कुछ थोड़ी सी अर्ज़ (भेंट) कर सकूँगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६३२) १७ अक्तूबर, १८६६

मंगलवार कालिज खुलेगा। बेबे भी शायद मंगलवार यहाँ आँखें बनवाने आयेंगी। आप दया रखा करें।

—:o:—

---

* ब्रज तो तीर्थरामजी का भतीजा है और मदनमोहन पुत्र है।

संबोधन पूर्वोक्त, (६३३) १६ अक्तूबर, १८६६

आपका पत्र आज एक प्राप्त हुआ। बड़ी खुशी हुई। कल हमारा कालिज खुलेगा।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६३४) २१ अक्तूबर, १८६६

आपका कृपापत्र कल प्राप्त हुआ। बड़ा आनन्द हुआ। मैं आशा करता हूँ कि कल आपकी पुस्तक आपकी सेवा में भेज दूँगा। और कुछ थोड़ी सी अर्ज़ (भेंट) भी कर दूँगा। आज-कल काम बहुत बढ़ गया है कालिज का। पंडित देवकीनंदन आज मिला था। वैरोकेवाला मुकुंदलाल यहाँ नौकरी की तलाश में आया हुआ है। बेबे (माता) अभी नहीं आई।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६३५) २२ अक्तूबर, १८६६

न पंडितों के पुस्तकालय में और न मेहरचंद के पास सरल व्याकरण नवीनचंद्रकृत मौजूद है। वह कहते हैं अब कहीं नहीं मिलती। कल अर्ज़ (भेंट) की जावेगी।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६३६) २५ अक्तूबर, १८६६

परसों रात के चाचा (पिताजी), बेबे (माताजी) और हमारे ग के दो और आदमी यहाँ आये हुए हैं। बेबे की आँखें कल दिखायेंगे। आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। एक सप्ताह तक कुछ और अर्ज़ (भेंट) की जावेगी। आप दया रखा करें। इति।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६३७) २५ अक्तूबर, १८६६

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत आनंद हुआ। मेरे पास व्याकरण हैं। कल भेज दूँगा, आप निःसंदेह तशरीफ़ ले आवें।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६३८) २७ अक्तूबर, १८९६

आपका कृपापत्र आज एक मिला, अत्यंत आनंद हुआ। गुलाबसिंह के पास भी दरियाफ़्त करने से आज किताब नहीं मिली। अगर लिखो तो और कोई किताब व्याकरण की आपकी सेवा में भेज दूँ। नहीं तो आपने स्वयं आकर ले लेनी। चाचाजी और बेबेजी सब यहीं हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६३९) ३१ अक्तूबर, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। दो व्याकरण भेज दिये हैं। बेबेजी को आँखों में दारू (औषधि) प्रतिदिन डलवाया जाता है, पर अस्पताल में अभी दाख़िल नहीं की गईं। चाचाजी यहीं हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६४०) ६ नवंबर. १८९६

आपका कृपापत्र दो तीन दिन हुए प्राप्त हुआ था। बड़ी ख़ुशी हुई। चाचाजी घर गये हुए हैं। शायद आजकल आ जायें। आप अपना हाल लिखें, इति वारंवार प्रणाम।

——:o:——

अतिथियों की अधिकता और उधार लेकर काम चलाना

संबोधन पूर्वोक्त, (६४१) ९ नवम्बर, १८९६

यहाँ पं० रामधन * और एक अन्य पुरुष आये हुए थे। आज प्रातःकाल की गाड़ी से चले गये हैं। किसी कार्य-निमित्त आये थे। आप कब पधारेंगे?

यहाँ बहुत अतिथि आते हैं। मुरालीवाला (जन्मभूमि) के दो और मनुष्य इस समय आये हैं। कम से कम तीन रुपये प्रतिदिन का ख़र्च है। ऋण (उधार) उठा रहा हूँ।

——:o:——

* पं० रामधन उन दिनों जम्मू रियासत में सैटलमेंट आफिसर थे।

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६४२)　　१६ नवंबर, १८९६

मैं आज बैठने योग्य हुआ हूँ। बहुत बीमार पड़ गया था। तप (ज्वर) था और गला सारा दर्द से व्याकुल किये हुए था। कालिज भी तीन दिन नहीं गया। इस वक़्त बहुत आराम है। बेबेजी को हस्पताल से जवाब मिल गया है। वह कहते हैं यह आँखें बनने योग्य नहीं। अब अमृतसर मिलरौनी साहब को आँखें दिखाने का इरादा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६४३)　　२२ नवंबर, १८९६

मैं अब पहले की अपेक्षा बहुत आराम में हूँ, यद्यपि अभी कुछ दर्द गले में बाक़ी है। आप दया रखा करें। चाचाजी अभी इसी जगह हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६४४)　　प्रातः, २४ नवंबर, १८९६

आपके दो कृपापत्र मिले। बड़ी ख़ुशी हुई। मैं पिछले सप्ताह एक दिन भी कालिज नहीं जा सका, कल गया था। पर आते ही हरारत हो गई थी (ज्वर चढ़ गया था)। रात-भर तंग रहा। इस वक़्त आराम है। शायद कालिज जाऊँ। मासड़ (मौसा) जी ने बहुत दवाइयाँ बड़े प्यार से भेजी हैं। अब पुड़िया खायी है। तबीयत (चित्त) को शांति हुई है। रात को हलवा खाऊँगा। चाचाजी, बेबेजी, कृष्णचंद, हाकिमसिंह सब यहीं हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६४५)　　२७ नवंबर, १८९६

मुझे अब पहले की अपेक्षा आराम है, यद्यपि बिलकुल सेहत (आराम) नहीं। चाचाजी यहीं हैं। उन्होंने अख़राजात (अपने ख़र्च) बहुत कम कर दिये हुए हैं। मालूम हुआ है कि भाई बहुत ही कसीर रक़म (बहुत ज्यादा रुपया) खाता रहा है। आप दया रखा करें।

ऐनीबिसंट यहाँ है। कल शायद चली जाये। समाजों के जलसे रविवार और शनिवार को होने हैं। मुझे काम अभी बहुत है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९४६) २९ नवंबर, १८९६

आपके दो कृपापत्र इस वक्त प्राप्त हुए, एक कल मिला था। अत्यंत आनंद हुआ। मुझे अभी ज़ुकाम है। आशा है कि जल्दी अर्ज़ (भेंट) करूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९४७) ३० नवंबर, १८९६

आपका एक कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आशा है कि कल अर्ज़ (भेंट) करूँगा। चाचाजी वीरवार थोड़े काल के लिए शायद गाँव (मुरारीवाले) जायेंगे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९४८) ४ दिसंबर, १८९६

मैं कल फिर बीमार हो गया था। कालिज से आते ही बेहोश सा होगया। कल चाचाजी और बेबेजी मुरारीवाला गये हैं। चाचाजी दो तीन दिनों को फिर आ जायेंगे। आज कृष्णचंद रोटी पकायेगा, आप अपना हाल लिखें। कृपा रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९४९) ५ दिसंबर, १८९६

आपका कृपापत्र इस वक्त प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। कृष्णचंद को बड़ी मुद्दत (अवधि) का अपने कालिज में मिठाई इत्यादि बेचने की दुकान का ठेका दिलवा दिया हुआ है। हाकिमसिंह भी यहीं है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९५०) ७ दिसंबर, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। अब मुझे ऐसा

(जुकाम) का आराम है। मगर पेट में कुछ खलल (गड़बड़) अभी है। आशा है, जल्दी सेहत (स्वास्थ्य) हो जायगी। आप कृपा रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६५१)　　　　६ दिसंबर, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, हाल मालूम हुआ। आप जरूर जल्दी कृपया यहाँ पधारकर दर्शन दें। अत्यंत दया होगी। मैं तो सदैव दर्शन का अभिलाषी हूँ। आपकी दया जब होती है, आप कृपा करते हैं। आप मालिक हैं। मालिक को कुल्ली इख्तियार (पूरा-पूरा अधिकार) होता । दास के कहने की कुछ जरूरत नहीं। आप दया रखा करें। चाचाजी कल के आये हुए हैं।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६५२)　　　　१६ दिसंबर, १८९६

चाचाजी को घर पत्र लिख दिया है कि वह आपको मिल जायें। मैं पक्का तो नहीं कह सकता, पर संभव है कि मैं भी एक दिन के लिए लड़कों के साथ गाँव (मुरारीवाला) तक चला आऊँ। पर संभवतया नहीं आऊँगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६५३)　　　　२१ दिसंबर, १८९६

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मैं २४ की सायं को यहाँ से चलकर सेवा में उपस्थित हूँगा। और एक रात गाँव रहकर फिर हाँसी जाने का इरादा रखता हूँ। हमारा कालिज क्रिकट में पंजाब में प्रथम रहा है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(६५४)　　　　२२ दिसंबर, १८९६

इस वक्त कालिज जाते हुए आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। मैं हैरान

हूँ कि आपको यह ख्याल क्योंकर आ गया कि मैं आपके दर्शन किये बिना मुरारीवाले चला जाऊँगा। कभी ऐसा हुआ है? असल मंशा तो गुजराँवाले आने का होता है। मुरारीवाले जाना तो बहाना है। वहाँ मेरा काम ही क्या है? वहाँ थोड़ी सी किताबें पड़ी हैं, वह लानी चाहता था। जैसी आज्ञा दोगे किया जायेगा, पिछले दिनों कई कारणों से चित्त को अशांति रही है। अब आपकी दया है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५५) २५ दिसंबर, १८९६

ब्रजलाल और मदन ने मेरे न आने का कारण तो अर्ज़ किया ही होगा? आज मैं अकेला हाँसी चला हूँ। हाकिमसिंह हाफ़िज़ाबाद जायेगा। मकान पर कृष्णचंद सोया करेगा। ३१ दिसंबर तक वापिस आ जाने का इरादा है। कालिज ५ जनवरी को खुलेगा। हाँसी से वापिस आने पर भी मुरारीवाला जाने को जी (चित्त) नहीं चाहता। आप दया-दृष्टि रखा करें। आपके चरणों का ध्यान है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५६) हाँसी, २८ दिसंबर, १८९६

मैं परसों रात को कुशलपूर्वक यहाँ पहुँच गया। ३१ (दिसंबर) को लाहौर पहुँच जाने की आशा है। आप अपनी कुशलता की जल्दी सूचना दें। मासड़ (मौसा) जी का आदाब व न्याज़ (अति सम्मानपूर्वक प्रणाम वा नमस्कार)।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६५७) हाँसी, ३१ दिसंबर, १८९६

आपका कोई भी कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। मैं आज सायं की गाड़ी यहाँ से रवाना होने का इरादा रखता हूँ। कल प्रातः लाहौर पहुँच जाऊँगा। आपके दर्शन कब होंगे? जल्दी हों।

——:o:——

सन् १८९७ ईसवी

(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईं रामतीर्थजी की आयु साढ़े तेईस वर्ष के लगभग थी।)

संबोधन पूर्वोक्त, (६५८) २ जनवरी, १८९७

मैं कल यहाँ पहुँच गया हूँ। अगर गुजराँवाले आऊँ, तो मुरालीवाले भी जाना पड़ेगा। और वहाँ मैं अभी जाना चाहता नहीं। अगर आप यहाँ तशरीफ़ ले आयें, तो अत्यंत कृपा हो। इति।

———:०:———

धन की तंगी और संबंधियों का क्रोध

संबोधन पूर्वोक्त, (६५९) ५ जनवरी, १८९७

मैं कल आपकी सेवा में अठाईस २८) रुपये अर्ज़ (भेंट) करूँगा। आधे चाचाजी (पिताजी) को दे देने। उनको लिख चुका हूँ। इस मास मेरे पास केवल तीन रुपये बचे हैं। और सारे मास का ख़र्च अभी सिर पर है। न आटा ही है, और न अन्य कुछ घी के अतिरिक्त है। इस बार ऋण (उधार) की एक कौड़ी भी नहीं वापस की। और किसी विद्यार्थी को भी किञ्चित् सहायता नहीं दी। तिस पर भी सब रुष्ट हैं। और उलाहना पर उलाहना (उपालम्भ) दे रहे हैं। इस समय मेरे पास कोई भोजन बनानेवाला मनुष्य (रसोइया) नहीं है। तंग हूँ।

———:०:———

संबोधन पूर्वोक्त, (६६०) ८ जनवरी, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। आप दया रखा

करें। आपके चरणों का ध्यान रहने से सदा आनंद रहता है। अगर चाचाजी तीन चार दिन तक आपसे रुपया लेने न आयें, तो उनमें से तेरह १३) रुपये आपने मुझे भिजवा देने।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६१) ६ जनवरी, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। जवाब मैं पहले लिख चुका हूँ। रोटी की अत्यंत तंगी थी। आज एक आदमी रखा है। मालूम तो होशियार (चतुर) होता है, आगे देखिये। आप यहाँ कब तशरीफ़ लायेंगे। दर्शनों को चित्त चाहता है। हाकिमसिंह आज यहाँ आया है। लोहड़ी (सकट) के बाद फिर हाफ़िज़ाबाद जायेगा। यह आदमी ३) रुपये और रोटी पर रहा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६२) १३ जनवरी, १८६७

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। आपकी बीमारी का हाल पढ़कर अत्यंत अफ़सोस हुआ। अब तबीअत (स्वास्थ्य) कैसी है ? यह रसोइया राय मेलाराम के लड़के रामशरणदास के रसोइये के द्वारा तथा कालाराम के द्वारा मेरे पास आया है। अब प्रबंध अच्छा है। आपका इन्तज़ार है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६३) १६ जनवरी, १८६७

आपकी बीमारी का बड़ा अफ़सोस है। आप जल्दी अपनी सेहत (स्वास्थ्य) से सूचित करें। अभी रेशा (ज़ुकाम वा श्लेष्मा) दूर हुआ कि नहीं ? आप व्यायाम शायद नहीं करते और पानी का अधिक इस्तेमाल (प्रयोग) हो गया है। भगत हरभजरायजी अगर आपके पास हों,

तो उनको मेरा बहुत-बहुत नमस्कार। चाचाजी इस बात से ख़फ़ा (रुष्ट) हो गये हैं कि मैंने रुपये आपके द्वारा उनको भेजे।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६६४)　　१८ जनवरी, १८९७

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। स्वास्थ्य का हाल सुनकर बड़ा आनंद हुआ। हमारे मना करने के बावजूद भी चाचाजी ने भरोके पत्र लिख दिया था कि वहाँ से उनका लड़का मेरे पास काम करने को आ जाये। वह कल चला आया है। अब क्या किया जाये। आप जब तशरीफ़ लाओगे, काम ठीक हो जायेगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६६५)　　२६ जनवरी, १८९७

आपका कोई पत्र प्राप्त नहीं हुआ, क्या कारण है? आप कृपापूर्वक जल्दी-जल्दी अपने हालात से सूचित करते रहा करें। गुलाम पर दयादृष्टि रखा करें। अपराधों को मुआफ़ फ़रमावें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६६६)　　२६ जनवरी, १८९७

आपका एक कृपापत्र भी प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है? आप दया करके जल्दी-जल्दी अपने कुशल-समाचार से सूचित करते रहा करें। मैं शायद अगले सप्ताह को अगर वसंतपंचमी की छुट्टी हुई तो सेवा में उपस्थित हूँगा, और मुरारीवाले भी हो आऊँगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,　　(६६७)　　३० जनवरी, १८९७

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए, जिनमें वसंतपंचमी के अवसर पर वज़ीराबाद जाने का संकल्प जाहिर किया हुआ था। आप वहाँ निःसंदेह तशरीफ़ ले जायें, लोगों को कृतार्थ करें। मेरा उस दिन लाहौर छोड़ने का

अभी कोई पक्का इरादा नहीं। जैसी आज्ञा दोगे, करूँगा। घर से पत्र आया था, उन्होंने बुला भेजा था, इसलिए इरादा हो पड़ा था। अव्वल तो छुट्टी की पक्की ख़बर नहीं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९६८) १ फ़रवरी, १८९७

आज अर्ज़ (भेंट) की गई है, आशा है मिल गई होगी। मैं शुक्र की रात को आने की आशा करता हूँ। शर्त यह कि छुट्टी वसंत-पंचमी को हो जाये, और कुशल रहे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९६९) ११ फ़रवरी, १८९७

आपका कृपापत्र आज प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। चाचाजी का पत्र भी आज मिला। कहते हैं कि उनके पत्र में कार्यवाही हो गई। मगर ठीक-ठीक तौर पर नहीं लिखा। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९७०) १२ फ़रवरी, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। मैं तो पत्र अपने समय पर सेवा में भेज दिया करता हूँ, शायद आपको मिला देर से होगा। आपकी कृपा है। चित्त आनंद में है। अगर हो सके, तो सभापति की किताबवाले श्लोक लिखवाकर भिजवा देने।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९७१) १५ फ़रवरी, १८९७

आपका कृपापत्र बहुत देर हुई नहीं मिला। आप दया रखा करें। यहाँ तीन-चार आदमी मुरारीवाला के रात आये थे। आज शायद चले जायेंगे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,	(९७२)	१७ फ़रवरी, १८९७

वह पहाड़ी ब्राह्मण जो हमारा नौकर था, वह चोर निकला। चीज़ें चुराकर बेचता कल पकड़ा गया। उसे मौक़ूफ़ कर दिया है। आज और लड़का रखा है। यह कामोंके का है। छत्री है। आप दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,	(९७३)	१९ फ़रवरी, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अति आनंद हुआ। मुझे आज-कल काम अति अधिक रहता है, लड़कों के इम्तहान समीप होने के कारण और अन्य कारणों से। आप कब पधारेंगे? शायद २१ फ़रवरी को सनातनधर्म सभा, लाहौर का जलसा है। २४ फ़रवरी को हमारे प्रिंसिपल साहब ने लाहौर से विलायत को रवाना होना है। आप दया रखा करें।

—:o:—

स्वरूप में स्थित होने से आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त,	(९७४)	२१ फ़रवरी, १८९७

जब अवकाश मिलता है, वेदान्त के ग्रंथ अंग्रेज़ी में देखता हूँ। और छुट्टी के दिन चित्त एकाग्र करने का भी अधिक समय मिलता है। आनन्द केवल अपने स्वरूप में स्थित होने में है। और अधिकार (इख़्तियार) भी समस्त जगत् पर अपना ही है। व्यर्थ हम अपने आपको औरों (अफ़सरों इत्यादि) के अधीन मान लेते हैं। आप दास पर दया रखा करें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त,	(९७५)	२५ फ़रवरी, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। आपके कल तशरीफ लाने की आशा है। आज हमारे कालिज के प्रिंसिपल साहब विलायत चले गये। उनके स्थान पर और साहब काम करते हैं।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६७६) ७ मार्च, १८६७

आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है ? आप जल्दी-जल्दी लिखते रहा करें। मुझे पिछले दिनों काम अत्यंत ज़्यादा था।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (६७७) ६ मार्च, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। बड़ा आनंद हुआ। जिस दिन आप तशरीफ़ ले गये हैं, उस दिन कालिज से जल्द वापिस आने की आशा थी, पर आना नहीं हुआ था। मैं १२॥ बजे मुक़ाम पर पहुँचा था। फिर बादामीबाग़ गया था, पर गाड़ी चली गई थी।

———:o:———

ज़ुकाम से शरीर तंग, पर पारमार्थिक ग्रंथों से आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त, (६७८) १० मार्च, १८६७

आपकी कृपा से अत्यंत आनन्द रहता है। ज़ुकाम ने शरीर को किसी क़दर तंग कर रखा है। परंतु पारमार्थिक ग्रंथ देखने और अन्य काम से चित्त प्रसन्न रहता है। आप दया रखा करें।

———:o:———

चित्त की स्थिरता

संबोधन पूर्वोक्त, (६७६) १२ मार्च, १८६७

आपका कृपापत्र आज मिला। अत्यन्त आनन्द हुआ। जिस समय आपने कल लिखा था, मैं भी उस समय ठीक उसी अवस्था में था, जिसमें आप थे। और आपकी ओर लिखने के लिये यह कार्ड उठाया था। पर फिर सिरनामा लिखकर रख छोड़ा था। आपकी दया से अब भी अत्यन्त आनन्द है। बड़े अच्छे भाग्य होने से चित्त स्थिर होना सीखता है। *

———:o:———

* भगत धन्नारामजी का उन दिनों यह अभ्यास था कि जिस किसी से कोई

संबोधन पूर्वोक्त, (९८०) १४ मार्च, १८९७

हमें होली की छुट्टियाँ नहीं हुआ करतीं। और काम इन दिनों बहुत ज्यादा है। पर शायद मैं कल कालिज में काम करके चल पड़ूं, और गुजराँवाले मुरारीवाले होकर परसों कालिज पढ़ाने के वक्त वापिस चला आऊँ। और वक्त नहीं मिल सकता।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९८१) १९ मार्च, १८९७

मैं सकुशल यहाँ पहुँच गया हूँ। हमें अगले शनिवार से छे छुट्टियाँ होंगी। पर तब मेरे पास परचे कालिज के और इंट्रैंस के देखने को होंगे। यह छुट्टियाँ वैसाखी से पहले खतम हो जानी हैं। मेरा आना मुश्किल है। वैसाखी की एक छुट्टी होगी। आप दया करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (९८२) २० मार्च, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। तार के इम्तहान का प्रॉस्पैक्टस भेज दूँगा। आज प्रातः ८ बजे से ४ बजे सायं तक जहाँ बी० ए०, एम० ए० के इम्तहान होते हैं, वहाँ निगरानी के लिए रहना पड़ा। सोमवार को अपने कालिज के सिमाही इम्तहान की निगरानी करनी है।

काम कराना हो, वह मनुष्य चाहे कितनी ही दूरी पर क्यों न हो, अपने आध्यात्मिक बल से वह उस मनुष्य से काम करा लिया करते थे। इस बार तीर्थरामजी से उन्होंने वही विषय लिखवाना चाहा, जो आप स्वयं लिखकर तीर्थरामजी को भेज रहे थे। और इस पत्र में तीर्थरामजी ने स्वयं माना भी है कि उनके भीतर भी वही विषय लिखने का फड़का है। यह दो चित्तों की अभेदता वा मिलाप का प्रत्यक्ष प्रमाण है और इससे स्वतः स्पष्ट हो रहा है कि दो मनुष्य हजारों मीलों की दूरी पर रहते हुए भी अपने चित्तों की अभेदता से विना बाह्य तारबर्क़ी के भी बातें कर सकते हैं।

घर पर भी पढ़ना-लिखना होता है। व्यायाम और भजन के लिए समय निकाल लेता हूँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८३) २२ मार्च, १८९७

मुझे तार या रेल के महकमे के साथ संबंध रखनेवाला कोई आदमी अभी मिला नहीं। नहीं तो तार का प्रॉस्पैक्टस लेकर जल्दी भेज देता। आशा है कि कल या परसों तक लेने का इत्तफ़ाक़ हो जायेगा। आजकल काम की भी बहुत अधिकता है। आप दया रखा करें। कल बी० ए०, एफ़० ए० और इंट्रैंस के गणित का इम्तहान है। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८४) २४ मार्च, १८९७

आपकी अत्यंत कृपा है। चित्त को शांति है, यद्यपि ऊपर से कई प्रकार का काम रहता है। हमारी छुट्टिया की तारीख़ बदल गई है। ६ अप्रैल से लेकर सात छुट्टियाँ होंगी। संभव है कि मैं सेवा में उपस्थित हो सकूँ।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८५) २६ मार्च, १८९७

मैं आशा करता हूँ कि रविवार को मैं तार का प्रॉस्पैक्टस रवाना कर दूँगा। परचे इंट्रैंस के जितने आने थे, आ चुके हैं। आप दया रखा करें।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६८६) २९ मार्च, १८९७

आपका एक कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद प्राप्त हुआ। मैं रविवार को प्रॉस्पैक्टस के लिए स्टेशन पर गया था। पर उस दिन नहीं मिला। फिर किसी दिन जाना पड़ेगा। वैसाखी के लगभग मुझे शायद एक आध दिन की फ़ुरसत मिलेगी। तब अगर आपकी इच्छा हुई तो या

अमृतसर या वज़ीराबाद हो आयेंगे, पर समय बहुत कम मिलेगा। आप कृपा रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (९८७)   ३१ मार्च, १८९७

आपके चरणों का ध्यान है और चित्त को अत्यंत आनंद है। काम बहुत है, पर फिर भी आपकी अत्यंत दया है। मैं अभी तक प्रॉस्पेक्टस न भेज सकने के कारण शरमिंदा हूँ। मुआफ़ फ़रमावें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (९८८)   ३ अप्रैल, १८९७

हमें सोमवार को कॉलिज से रुपये शायद मिलेंगे। अभी तक नहीं मिले। फिर अर्ज़ (भेंट) करूँगा। मुझे इस बार पत्र लिखने में भी शायद देर हो गई है। क्षमा फ़रमावें। सुना है, चाचाजी पेशावर चले गये हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,   (९८९)   ६ अप्रैल, १८९७

आज अर्ज़ (भेंट) की गई है। वैरोके और वज़ीराबाद जाना भी तो अत्यंत उचित है, पर अमृतसर सभा से मुझे पूरे सात पैग़ाम (संदेसे) अत्यंत प्रेम भरे आये हैं कि वैसाखी के अवसर पर वहाँ व्याख्यान दूँ। पिछले वर्ष भी मैंने इनकार किया था। और इस बार उन्होंने अत्यंत इसरार (आग्रह) किया है। आगे जैसी आप आज्ञा दें। अगर अमृतसर जाना पसंद करें, तो शनिवार प्रातः आप यहाँ तशरीफ़ ले आयें। इकट्ठे चलेंगे। शायद मैं स्वयं ही चला आऊँ। पर पक्का नहीं। अमृतसरवाले इश्तहार में भी मेरा नाम छाप चुके हैं। बालमुकुंद को पत्र पहुँचा दिया है।

——:o:——

बी० ए० परीक्षा का खराब परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (६६०) १६ अप्रैल, १८९७

मेरे पैर का छाला अब बहुत दर्द (दुःखी) करता था। आज बी० ए० की परीक्षा का रिजल्ट (नतीजा) निकला है, ऐसा बुरा नतीजा कभी नहीं निकला। सारे पंजाब में चौथा भाग भी विद्यार्थी पास नहीं हुए। सब विषयों में बहुत फ़ेल हुए हैं। मेरे शिष्यों में से एक तीसरा नम्बर रहा है और एक पाँचवाँ रहा है। गणित-शास्त्र में भी सारे कालिजों के बहुत विद्यार्थी फ़ेल हुए हैं। मेरे वेतन में वृद्धि इस वर्ष नहीं होगी। इतना तो परिश्रम किया और परिणाम यह निकला। चित्त अब बहुत उचाट (उपराम) हो रहा है। आप कब आयेंगे ?

——:o:——

विशेष वेदान्त-चर्चा

संबोधन पूर्वोक्त, (६६१) १८ अप्रैल, १८९७

मैं आपकी कृपा से अपना समय व्यर्थ कामों में ख़र्च नहीं करता। और विशेष करके वेदान्त-चर्चा ही होती है। भविष्य में आपकी आज्ञानुसार अन्य प्रकार की बातचीत बिलकुल त्यागने का यत्न करूँगा। आप दया रखा करें। चित्त आज-कल उदास है। गुराँदित्ता ठठियार आपसे मिला था कि नहीं ?

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६२) २५ अप्रैल, १८९७

आपकी कृपा से अब चित्त आनंद में है। आज पाँव के छाले में से बहुत सा गंदा मादा निकला है। एफ़० ए० का रिज़ल्ट (नतीजा) अभी नहीं निकला। हाकिमसिंह कल आ जायेगा।

——:o:——

एफ़० ए० परीक्षा का अच्छा परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (६६३) २८ अप्रैल, १८९७

कल एफ़० ए० का रिज़ल्ट (नतीजा) निकला है। समस्त कालिजों के विद्यार्थी आधे के लगभग पास (उत्तीर्ण) हुए हैं, मिशन कालिज अच्छा रहा है। आपकी कृपा से गणित-शास्त्र में भी अच्छा रहा है। केवल पाँच विद्यार्थी गणित-शास्त्र में फ़ेल हुए। वह भी साठ (६०) में से। वज़ीफ़े (छात्र-वेतन,) भी चार मिशन कालिज में आये हैं।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६६४) २ मई, १८९७

आपके शरीर में किस प्रकार का विकार है ? रेशा है या और कुछ ? अगर ज़्यादा तकलीफ़ है, तो मैं भी किसी दिन ख़बर ले आने जल्दी आ जाऊँगा, आप वापसी डाक से सूचना दें। परमेश्वर जल्दी सेहत (स्वास्थ्य) दे।

—:०:—

संबोधन पूर्वोक्त, (६६५) ४ मई, १८९७

हमें अभी तक कालिज से कुछ मिला नहीं। नया प्रिंसिपल ज़रा सुस्त है, इसलिए देर कर देता है। इन दिनों अज़हद तंगी है। जो भगवत् की इच्छा सो वाह वा। धन्य परमात्मा है। आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। किसी क़दर सेहत (स्वास्थ्य) होने का हाल पढ़कर आनंद हुआ। परमात्मा बिलकुल शफ़ा (नीरोगता) बख़्शे। मोहनलाल यहाँ है। आज जिस समय मैं कालिज गया हुआ था, मेरे पीछे एक सिपाही हमारा घर दरियाफ़्त करके मोहन को पूछता हुआ आया। घर में उस समय और कोई नहीं था। केवल मोहन ही मौजूद था। वह बहुत डर गया और उसने कहा कि मोहन यहाँ नहीं है। तिस पर सिपाही वापिस चला गया। मालूम होता है कि मौलवी साहबवाले मुक़दमे की फिर तहक़ीक़ात होने

लगी है। कल प्रातः हाकिमसिंह और मोहन को यहाँ से मुरारीवाले को रवाना कर दूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६६) १० मई, १८६७

आपके दो कृपापत्र मिले। बीमारी का हाल पढ़कर बड़ा शोक हुआ। मेरा ध्यान उसी तरफ़ है। शायद शनिवार को मैं आ ही जाऊँ। आप क़ुनैन का प्रयोग ज़रूर करें। हाकिमसिंह यहाँ नहीं है। रोटी की बड़ी तंगी है। वह कभी आता है, कभी चला जाता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६७) १२ मई, १८६७

आज मैं भी बीमार हूँ। कल का रेशा ने बहुत तंग किया हुआ है। आप अपना हाल लिखें। दिल आपकी तरफ़ है। आप जल्दी हाल लिखें। हाकिमसिंह अभी नहीं आया। लाला सोहनलालजी व बालमुकुंद का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६८) १४ मई, १८६७

अगर मुझको कहीं से किराया के लिए कुछ मिल गया, तो कल मैं अवश्य सेवा में हाज़िर हो जाऊँगा। परमात्मा आपको जल्दी शफ़ा (स्वास्थ्य) बख़्शे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (६६६) १६ मई, १८६७

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। आप जल्दी अपनी तबीयत के हाल से सूचित करें। अब सेहत (स्वास्थ्य) कैसी है? आपके चरणों का ध्यान है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१०००)　　　　२४ मई, १८९७

परमात्मा आपको बहुत जल्द बिलकुल सेहत दें। तप (ज्वर) अभी टूटा कि नहीं? और गिलटी का क्या हाल है? ध्यान आपकी तरफ़ रहता है। काम आज-कल बहुत ज़्यादा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१००१)　　　　२४ मई, १८९७

आपके दो कृपापत्र इस वक़्त मिले। परमेश्वर बहुत जल्द बिलकुल सेहत (स्वास्थ्य) दे देगा। यद्यपि मुझसे पत्र लिखने में देर हो गई है, दिल तो आप ही के पास रहा है। ज़ाहरी (बाह्य, दिखलावे-मात्र की) देर का मुआफ़ फ़रमावें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१००२)　　　　२६ मई, १८९७

आपके कृपापत्र प्राप्त हुए। धन्य है, आपकी बीमारी ज़रा कम है। परमेश्वर करे, बहुत जल्दी बिलकुल आराम आ जावे। अब अपना हाल जल्दी-जल्दी लिखते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१००३)　　　　३० मई, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। परमात्मा जल्दी शफ़ा (स्वास्थ्य) दें। मदन * के गले में आप जैसी गिलटियाँ हैं। और आज-कल दो और लड़के भी मैंने देखे हैं, जिनको यही बीमारी है। मेरा यह ख़्याल है कि कुछ बीमारियाँ (रोग) दवाई से तत्काल नहीं चली जातीं। ज़रा धीरज से इलाज करना चाहिये। आप सब कुछ जानते हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　　　(१००४)　　　　५ जून, १८९७

मैं आज अर्ज़ करने गया। पर चूँकि ४ बजे से पीछे अवसर मिला

---

* मदन से अभिप्राय तीर्थरामजी का बड़ा पुत्र गुसाईं मदनमोहन है।

था, समय नहीं था। कल रविवार है। परसों काम किया जायगा। आप अब अपनी तबीअत का हाल लिखें। बालमुकुंद का मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१००५) ८ जून, १८९७

अब आप तबीअत (स्वास्थ्य) का हाल लिखें। दूध निःसंदेह उत्तम चीज़ है, बहुत मुफ़ीद है। इसके प्रयोग से सब रोग भाग जाते हैं। परमात्मा आपको बहुत जल्दी यहाँ तशरीफ़ लाने (पधारने) के योग्य बना दे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१००६) १० जून, १८९७

आपके दो कृपापत्र प्राप्त हुए। आपकी सेहत (स्वास्थ्य) की सूचना पाकर अत्यंत आनंद हुआ। मैं तो सदैव आपका ग़ुलाम हूँ। आप कोई किसी प्रकार का ख़याल दिल में मत रखें। मैं तो अपने ख़याल में अवसर-अवसर पर नियमानुसार पत्र भेजता रहा हूँ। अगर ग़लती हो गई हो, तो कृपापूर्वक मुआफ़ फ़रमावें। महीने को शायद हमें छुट्टियाँ होंगी। हाकिमसिंह को आज मुरारीवाले भेज देना है। उसके दिन समीप आ गये है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१००७) १४ जून, १८९७

मैं जिस दिन मदन को स्टेशन पर किसी आदमी को आपकी सेवा में पहुँचा देने निमित्त सिपुर्द करने गया था, उसी दिन घर आनकर तप (ज्वर) से बीमार हो गया। कल सायं को आराम आया। अब सेहत (स्वास्थ्य) है। पढ़ाने भी चला गया था। आपके चरणों का ध्यान है। आपका पत्र भी मिला। अत्यंत आनंद हुआ। आप कब तशरीफ़ लायेंगे?

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१००८) १६ जून, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। आनंद हुआ। मदन वैरोके चला गया है। अच्छा हुआ। हाकिमसिंह यहाँ से मुरारीवाला गया हुआ है। उसके वैसे दिन हैं। अर्थात् ढाई महीने हो जाने का मौक़ा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१००६) १७ जून, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मुझे अब बिलकुल सेहत (स्वास्थ्य) है। आप कृपा रखा करें। मदन अभी नहीं आया।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१०) २१ जून, १८६७

आप अभी तक पधारे क्यों नहीं ? मदन को मैं इस वक्त लिखने लगा हूँ कि फ़ौरन यहाँ चला आवे।

——:o:——

वेदपाठ के श्रवणमात्र से समाधि

संबोधन पूर्वोक्त, (१०११) २३ जून, १८६७

आपका कृपापत्र आज मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ। वेदों का केवल पाठमात्र सुनने से मेरे चित्त को समाधि की दशा प्राप्त हो जाया करती है, और अत्यन्त आनन्द की अवस्था आच्छादित हो जाती है। यह अति उत्तम कार्य है। ऐसे (वेदपाठी) पुरुष * की सहायता करनी उचित है। भोग के बाद आप तशरीफ़ ले आयें।

——:o:——

* दक्षिण देश का एक पंडित था जो केवल वेदपाठ ही करना जानता था और अर्थ से कोई बोध नहीं रखता था, और अत्यन्त मधुर स्वर से वह वेदपाठ करता था। उसकी प्रार्थना पर उसका पाठ रखवाया गया। और जो प्रभाव इस पाठ से गुसांईजी के चित्त पर पड़ा, वह उन्होंने वर्णन किया है। ऐसे पुरुष की सहायता के लिये गुसाईजी अपने गुरु के पास लिखते हैं।

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१२) २६ जून, १८९७

आपका पत्र एक आज मिला। अत्यंत आनंद हुआ। आपकी दया से आपका दास अति आनंद की हालत में है। आपके चरण का ध्यान रहता है, और सरूर (प्रसन्न चित्त वा हर्ष) रहता है। आप दया रखा करें। सरदार निहालसिंह की तरफ़ से हाथ जोड़कर मत्था टेकना।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१३) २८ जून, १८९७

आपका कृपापत्र मिला, गुजराँवाला में तो आप ही हैं, जिनकी हमें ज़रूरत है। आप अपने आपको ही ले आयें। मदन को बुलाने के लिए मैंने पहले वैरोके लिखा था। कोई जवाब नहीं आया। अब फिर लिखता हूँ।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१४) ६ जुलाई, १८९७

आपका कोई कृपापत्र प्राप्त नहीं हुआ। जल्दी अपने हालात से सूचित करें। काम बहुत है। पर आपकी दया से आनंद है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१५) १२ जुलाई, १८९७

एक पत्र मिला, अत्यंत आनंद हुआ, जो कुछ मंगलकरण महाराज की इच्छा होगी, उसमें दास अत्यंत ख़ुश (प्रसन्न) है। आप ही ग़ुलाम के हाकिम (दास के मालिक) हैं और आप ही अफ़सर। आपके पास आने से सब कार्य सिद्ध हो जाते हैं। हाकिमसिंह कल गाँव गया है। वैरोके की बाबत ठीक फ़ैसला अभी कुछ नहीं किया।

——:o:——

र्वोक्त, (१०१६) १६ जुलाई, १८९७

आये देर हो गई है। यहाँ तो हर रोज़ (प्रतिदिन)

आपका चर्चा लोगों से हो जाता है और आपका ध्यान रहता है। काम आज-कल ज़रा ज़्यादा है। आप कृपादृष्टि रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१७) १६ जुलाई, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आप दया रखा करें। ग़ुलाम का आपके चरणों में ध्यान है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१८) २२ जुलाई, १८९७

आपका पत्र मिला, अत्यंत आनंद हुआ। मकान* की तजवीज़ हो गई है। हरिचरण की पौड़ियों में परसराम तहसीलदार का मकान लाला सोहनामल ने १०) रुपया मासिक किराये पर नियत करा दिया है। नल का किराया अलग देना पड़ेगा। मकान में मैदान भी है और मकान अत्यंत नफ़ीस है। आज शायद काग़ज़ लिखा जाय। हाकिमसिंह अभी इसी जगह है, शायद जायगा नहीं। मदन के बदन पर आराम है। कोई शिकायत नहीं। वर्षा यहाँ भी हुई है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०१९) २४ जुलाई, १८९७

मैं आज वैरोके चला हूँ। सोमवार का कालिज लगना है और प्रातः से पहले की गाड़ी में मुझे वापिस आ जाना चाहिये। शायद गुजरात भगत हरभजराय के पास भी हो आऊँ। फिर कहीं जाने-आने की सलाह करेंगे।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२०) २७ जुलाई, १८९७

मैं वैरोके और गुजरात हो आया हूँ। जाती दफ़ा भी लाहौर से रात

* इस मकान में तीर्थरामजी जुलाई १९०० तक बसे और यहाँ ही से जंगलों को पधारे थे।

की गाड़ी पर जा सका और आती बार भी रात की गाड़ी में आया। रास्ते में आपके दर्शनों से वंचित रहा। हाकिमसिंह की नौकरी का और किसी जगह इत्तफ़ाक़ बनने की आशा नहीं रही। क्योंकि आज मिंटगुमरी से बाबू लद्धासिंह का पत्र आ गया है कि वहाँ कोई जगह नहीं। अमरदास को नौकर करा दिया था, मगर वहाँ से उसने छोड़ दी है। अब और जगह नौकरी तलाश करनी चाहता है। यह उसने अच्छा काम नहीं किया। वैरोके से अभी मैं किसी को साथ नहीं लाया। भगत हरभजरायजी राज़ी थे।

कल या परसों हम दूसरे मकान में चले जायँगे। काग़ज़ लाला सोहनलाल के द्वारा लिख दिया है। यह मकान हरिचरण की पौड़ियों में लाला परसराम तहसीलदार का है। आप कब इस मकान को पवित्र करेंगे ?

आपने ग़ुलाम पर हर प्रकार से खुश रहना। ग़ुलाम आपका ही है। सब अपराध मुआफ़ फ़रमावें।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२१) २६ जुलाई, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। आज अर्ज़ (भेंट) की गई है। कल सायं को उस मकान में चले जाना है। आज किसी क़दर अस्बाब वहाँ पहुँचाया गया। मैं शायद १० अगस्त को आपके चरणों में आऊँगा। आप ग़ुलाम पर दया रखा करें।

———:o:———

हरिचरण* की पौड़ियों में निवास

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२२) १ अगस्त, १८६७

हम इस नये मकान में आ गये हैं। यह हरिचरण की पौड़ियों में है।

* लाहौर नगर में बच्छोवाली बाज़ार के समीप एक गली है जिसका नाम हरिचरण की पौड़ियाँ है।

हरिचरणों में (तीर्थ) श्रीगंगाजी का निवास है, और तीर्थ (राम) को भी हरिचरणों ही में रहना उचित है। यहाँ जब का आया हूँ, हरिचरणों में ही ध्यान है। और अपने स्वरूप के श्रीगंगाजल में आपकी दया से स्नान कर रहा हूँ। लाला कृष्णचंद, बालमुकुंद, पंडित प्रभुदत्त और रामजी का मत्था टेकना।

——:०:——

वेदान्त विचार और भजन

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२३) ५ अगस्त, १८९७

आपके कृपापत्र मिले, अत्यन्त आनन्द हुआ। मैं छुट्टियों के अन्त में गणितशास्त्र की कोई पुस्तक लिखूँगा। आज-कल तो वेदान्तविचार, भजन और एकान्त-सेवन ही को कुल समय देता हूँ। इसमें वह आनन्द है कि छोड़ने को जी (चित्त) नहीं चाहता। आपकी अत्यन्त दया है। लड़केबाले (बालक) सब भेज दिये हुए हैं। मैं अकेला ही हूँ। थोड़े दिनों को शायद आपके चरणों में आऊँ।

——:०:——

मनुष्य-देह कब सफल है

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२४) ७ अगस्त, १८९७

यदि व्यवहार-काल में चलते-फिरते और सब काम करते हमारी वृत्ति ब्रह्माकार रहे और चित्त अर्शे-आला (सबसे ऊँचे आकाश अर्थात् उच्च अवस्था) से कभी नीचे न उतरे, तो धन्य है हमारा जीवन, नहीं तो मनुष्य-देह निष्फल खो दिया।

——:०:——

वेदान्तशास्त्र ही परम सत्य है

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२५) ९ अगस्त, १८९७

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ। वास्तव में किञ्चित्-

मात्र अभ्यास करने से शास्त्रों के बिलकुल अनुसार फल प्राप्त होते हैं। संसार में यदि कोई वस्तु सत्य है, तो वेदान्तशास्त्र है। बड़ी कृपा आपने की है। धन्य है।

——:o:——

वेदान्त के मनन से आनन्द

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२६) ११ अगस्त, १८९७

आपका कृपापत्र कल मिला। अत्यन्त आनन्द हुआ। वेदांतशास्त्र के सम्बन्ध में अँग्रेजी में बहुत से ग्रन्थ पढ़ता हूँ। मगर पढ़ने में वह आनन्द नहीं आता, जो उनको एकान्त में बैठकर विचारने और अपने भीतर धारण करने में आता है। जो कुछ इस प्रकार आपकी दया से प्राप्त होता है, वह बहुधा जिज्ञासुओं को अँग्रेजी में उपदेश भी कर देता हूँ। जी (चित्त) चाहता है कि इसी आनन्द में छुट्टियाँ व्यतीत करूँ। मगर हाँसी से मासड़ (मौसा) ने लिखा है कि नौ-दस दिन को बच्चों की रीताँ (रीतियाँ) हैं, वहाँ मेरा आना लाजमी है। क्या करूँ। वहाँ जाने से पहले आपकी सेवा में जरूर हाज़िर हूँगा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२७) १३ अगस्त, १८९७

यहाँ कल भी वर्षा हुई थी, आज भी हो रही है। मैं कल सेवा में उपस्थित होने का इरादा रखता हूँ। २० अगस्त को हाँसी में बच्चों की रीताँ (रीतियाँ) हैं। तब से पहले वहाँ पहुँचना जरूरी है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२८) हाँसी, २१ अगस्त, १८९७

कल बच्चों को रीतें हो गई हैं। मैं अब जल्दी लाहौर आने की कोशिश करूँगा। यहाँ भी सत्संग बहुत है, और अति उत्तम मकान मेरे रहने के लिए मुझे मिला हुआ है। आपके चरणों का ध्यान रहता है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०२९) लाहौर, ३० अगस्त, १८९७

मैं लाहौर आ गया हूँ। हाँसी से आती बार रस्ते में भी ठहरा था। आपकी कृपा से अधिकतर आप ही के असली स्वरूप में निवास था, बैरूनी तौर पर (बाहर देखने में) पत्र लिखने में यद्यपि कोताही (.कसर) हो गई है।.....* रोटी (चावल) उनके हाँ से खाना मंज़ूर करा लिया है। इसलिए रोटी का फ़िक्र भी नहीं।

—:o:—

मौसाजी से स्वर्ण की घड़ी का उपहार

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३०) २ सितंबर, १८९७

आपका केवल एक कार्ड हाँसी मिला था, और एक फिर लाहौर आनकर। आपने दास पर दया रखनी। शायद पुस्तक तो मैं लिख डालूँ और लिखूँगा अवश्य, पर आज-कल तो वेदान्त-विचार और एकान्त-सेवन पर जी (चित्त) लगा हुआ है। हाँसी के लोग आस्तिक थे, और कोई-कोई वेदान्त को भी अच्छी तरह समझते थे। भिवानी के लोग अधिक सत्संगी थे। हिसार के लोग बहुधा आर्यसमाजी थे। पर खुशखू (अच्छे स्वभाववाले) थे। मुझसे सब प्रीति करते थे। मासड़ (मौसा) जी ने मुझे एक सुनहरी घड़ी उपहार में दी है। आपका चर्चा सत्संगियों से बहुत आया था।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३१) ५ सितंबर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए देर हो गई है। क्या कारण है? अगर आपकी इच्छा हो, तो आप यहाँ तशरीफ़ ले आयें। और अगर उचित समझें, तो रामजी को यहाँ रवाना कर दें। आपकी कृपा से दास बहुत

* इस पत्र का कुछ टुकड़ा फटा हुआ है।

आनंद में है। मुझे मालूम होता है कि मुझे जल्दी आपकी सेवा में और मुरारीवाले आना पड़ेगा।

—:o:—

वेदान्त-अभ्यास से धारणा का बढ़ना और संकल्प-सिद्धि की विधि

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३२) ८ सितम्बर, १८६७

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत आनन्द हुआ। मैं कोई पाँच-छे दिन को चरणों में उपस्थित हूँगा। मैंने लाहौर में रहकर बीस से अधिक पुस्तकें अँग्रेजी में वेदान्त की देखीं और विचारपूर्वक पढ़ी हैं। इन पुस्तकों में उपनिषदों और अन्य प्रामाणिक ग्रन्थों के भाग प्रायः दिये हुए थे। ग्रन्थों के सत्संग से धारणा बहुत बढ़ती है, और वास्तविक आनन्द धारणा ही में है। स्फुरणा और संकल्प के रोकने से संकल्प-सिद्धि होती है, जैसे बीज पृथिवी में दाबने से उगता है। आपका इस विषय में बहुत अनुभव है। माया और जगत् से चित्त हट जाने (उपराम होने) से जगत् सेवक बन जाता है, जैसे छाया की ओर पीठ करके सूर्य की ओर जाने से छाया पीछे आती है। आप दास पर कृपादृष्टि रखा करें।

—:o:—

निर्भय पद की प्राप्ति

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३३) ११ सितम्बर, १८६७

मैं संभवतः परसों यहाँ से रवाना होकर सेवा में उपस्थित हूँगा। रामजी मेरे पास है। आपकी दया से आज कल तो निर्भय पद प्राप्त है, अर्थात् नितान्त निर्भयता, और सर्व दशा में आनंद की अवस्था है। आपकी दया हुई, तो मुरारीवाला इत्यादि सब जगह यह दशा रहेगी।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३४) गुजरात, २४ सितंबर, १८६७

मैं अभी गुजरात में हूँ। मकान का पता यह है "गुजरात (पंजाब)

कोठी पंडित किशोरीलाल, तीर्थराम गोस्वामी।" पंडित किशोरीलाल के साथ मैं शादीवाल भी हो आया हूँ और एक और मुक़ाम 'क़िलादार' भी गया था। स्वामी शिवगणचंद्र का आश्रम इस कोठी के समीप ही है। ये दिन आपकी दया से आनंद में गुज़रे हैं। यहाँ एक-दो दिन और ठहरने का संकल्प है। आप दया रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३५) गुजरात, २८ सितंबर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। मेरा चित्त अब आने को चाहता है। आज यहाँ से रुख़सत हूँगा। सियालकोट एक-आध दिन ठहरकर जल्दी चल पड़ूँगा। यहाँ सत्संग का अत्यंत सुख पाया। भगत हरभजरायजी भी हरदम साथ रहे। लेक्चर भी यहाँ बहुत हुए। आप दयादृष्टि रखें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३६) लाहौर, ४ अक्तूबर, १८९७

मैं यहाँ कुशलपूर्वक पहुँच गया हूँ। एक आदमी रख लिया है, दो रुपये महीना और रोटी पर, आप जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३७) ७ अक्तूबर, १८९७

कुछ दिन हुए कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत ख़ुशी हुई। अभी मैंने कोई किताब नहीं ख़रीदी, रुपये के न मौजूद होने के कारण। बड़ी ख़ुशी की बात है कि आप दीवाली के मौक़े से पहले यहाँ तशरीफ़ ले आयेंगे।

——:o:——

चित्त निजस्वरूप के आनंद में रहता है

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३८) १० अक्तूबर, १८९७

आपका कृपापत्र मिला, अत्यंत आनंद हुआ। मैं लघुकौमुदी आपकी

सेवा में थोड़े दिनों को रवाना कर दूँगा। आप दयादृष्टि रखा करें। आपकी कृपा से चित्त निज स्वरूप के आनंद में रहता है। यही दौलत और धन सच्चा है। आपकी अत्यंत दया है।

——:o:——

सुख केवल ब्रह्मनिष्ठ पुरुष को है

संबोधन पूर्वोक्त, (१०३६) १३ अक्तूबर, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। बड़ी ख़ुशी की बात है कि आप यहाँ पधारने का संकल्प रखते हैं। सुख केवल ब्रह्मनिष्ठ पुरुष को है।

——:o:——

आज-कल का अभ्यास

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४०) १८ अक्तूबर, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। निरंजन के बीमार होने का अफ़सोस है। आज हमारा कालिज खुला है। आज-कल इस पर अभ्यास है—

'तमेवैकं जानथ आत्मानमन्या वाचो विमुञ्चथ अमृतस्यैष सेतुः।

(मुंडकोपनिषद्)

एकमात्र आत्मा को जानो, इसके बिना और कोई वार्ता कदापि मत करो, सुनो, यही अमृत का सेतु (पुल) है।

——:o:——

अपने पिता को पत्र*

मेरे परम पूज्य पिताजी महाराज ! (१०४१) २५ अक्तूबर, १८६७

आपकी कृपा मुझ पर नित्य रहे। चरण-वन्दना। आपका कृपा-

* यह पत्र गोस्वामी तीर्थरामजी ने अपने पिताजी को भेजा था। पर पिताजी ने इसके ऊपर निम्नलिखित शब्द लिखकर भगत धन्नारामजी के पास भेज दिया:—

पत्र प्राप्त हुआ, अत्यन्त आनंद हुआ। आपके पुत्र तीर्थराम का शरीर तो अब बिक गया। बिक गया राम के आगे। उसका अपना नहीं रहा। आज दीपमाला (दीवाली) को अपना तन हार दिया और महाराज को जीत लिया। आपको धन्यवाद हो। अब जिस वस्तु की आवश्यकता हो, मेरे मालिक (स्वामी) से माँगो। तत्काल वह स्वयं देंगे, या मुझसे भिजवा देंगे। पर एक बार निश्चय के साथ आप उनसे माँगो तो सही। उन्नीस-बीस (१९-२०) दिन के मेरे सारे काम बड़ी निपुणता से अब वह आप करने लग पड़े हैं, आपके क्यों न करेंगे। घबराना ठीक नहीं। जैसी उसकी आज्ञा होगी, वैसा बर्ताव में आता जायगा। महाराज ही हम गुसाइयों का धन हैं। अपने निज के सच्चे और अमूल्य धन को त्यागकर संसार की झूठी कौड़ियों के पीछे पड़ना हमको उचित नहीं। और उन कौड़ियों के न मिलने पर शोक करना तो बहुत ही बुरा है। अपने वास्तविक धन और सम्पत्ति का आनंद एक बार ले तो देखो।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४२) ३० अक्तूबर, १८९७

आपका कृपापत्र कोई प्राप्त नहीं हुआ। क्या कारण है? आप दया रखा करें। आपकी दया से दास अत्यंत आनंद में है।

——:o:——

जब अपना आप हो गये तो पत्र किसको?

सबोधन पूर्वोक्त, (१०४३) ८ नवम्बर, १८९७

महाराजजी! चाचाजी यहाँ आये थे और होकर चले गये हैं। यद्यपि मैंने

"भगतजी! आपकी सगत से आज टब्बर नूँ अर्थात् सारे कुटुंब को जवाब मिला है। हमने आपको बुद्धिमान् समझकर इसको आपके सिपुर्द किया था (पर यह परिणाम निकला)।" इसलिये यह पत्र भी भगतजी से ही मिला था और अब उनके पत्रों के साथ ही दे दिया गया है।

इतने दिन पत्र नहीं लिखा, परन्तु आपके स्वरूप में स्थित रहने के अतिरिक्त और कोई काम भी नहीं किया। जब अपना आप हो गये, तो पत्र किसको लिखें?

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४४) १३ नवंबर, १८६७

स्वामी विवेकानंदजी के लेक्चर सुने। अत्यंत लायक़ (योग्य) हैं। इन दिनों अवकाश बहुत कम मिला। आपका कृपापत्र भी कोई प्राप्त नहीं हुआ। आर्यसमाज को बहुत ज़वाल (क्षति) पहुँचा है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४५) १६ नवंबर, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। स्वामी विवेकानंदजी अब चले गये हैं। मेरे पास इन दिनों ख़र्च इत्यादि का तंगी है। जब हो सकेगा, आपको पोथी भज दी जावेगी।

——:o:——

किसी काम के लिए तीव्र संकल्प नहीं फुरता

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४६) २१ नवंबर, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। आनंद हुआ। कल पंचदशी सेवा में भज दी जायगी। महाराजजी! सचाई से इतर और कोई चीज़ आपकी सेवा में बनावट बनाकर कभी नहीं लिखी जाती। आपकी ज़रूरतें मेरी अपनी ज़रूरतें हैं। मगर मेरी अन्य ज़रूरतों का अब यही हाल है कि किसी काम के लिए तीव्र संकल्प नहीं फुरता। जैसा हो जाय आनंद रहता है। ख़ुदमुख़्तारी के संबंध में यह अर्ज़ (विनय) है कि कर्त्ता (या मुख़्तार) बनकर बहुत कम चेष्टा की जाती है। और यह हालत आप ही की कृपा की बदौलत (कारण से) है। यह आपका अपना काम है। इसे ख़्वाह अच्छा समझो, ख़्वाह बुरा। जैसा गुजराँवाला शरीर

आपका है वैसा ही लाहौरवाला। दोनों मे काम लेना या न लेना आपके इख़्तियार (अधिकार) में है। जब रुपया दिलवाओगे, किताब को जल्दी सेवा में भेज दूँगा।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४७) २६ नवंबर, १८६७

जिस दिन मैंने आपकी सेवा में इससे पहले का कार्ड रवाना किया था, उसी दिन उसी वक़् अकालगढ़ के एक गुसाईं विद्यार्थी के हाथ पंचदशी भी सेवा में भज दी थी। आपने उसके पहुँचने की सूचना नहीं दी। क्या कारण है ? आप दास पर कृपादृष्टि रखा करें। बिलकुल आपका हूँ।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४८) ३० नवंबर, १८६७

अभी पोथी आपको मिली है कि नहीं ? उस गुसाईं विद्यार्थी का नाम विश्वनाथ है। वह शायद अकालगढ़ चला गया होगा। अगर नहीं मिली तो कोई ख्याल न करें। उस व्यक्ति ने लाहौर आना है। वह यहाँ पढ़ता है और हमारा सम्बन्धी भी है। उससे लेकर रवाना कर दी जायगी। आपकी कृपा से अत्यंत आनंद रहता है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०४६) ३ दिसंबर, १८६७

आपके पिछले दो कृपापत्र प्राप्त हुए, मगर वह कृपापत्र जिसका आपने जिक्र (चर्चा) किया है नहीं मिला। अभी कालिज से कुछ नहीं मिला। आज मदन की माता को साथ लेकर चाचाजी शायद आयें। भगत हरभजरायजी यहाँ हैं; एक दो दिन के आये हुए हैं और उनके ठहरने की अवधी का कुछ पता नहीं। आपकी कृपा से हरवक्त ही मस्ती

का-सा आलम (दशा) रहता है। आज-कल इस आनंद के कारण से पढ़ा भी नहीं जाता।

——:०:——

स्वरूप में स्थिति और संन्यासावस्था का आच्छादन होना

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५०) ६ दिसंबर, १८९७

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ। आपकी अत्यन्त दया है। बहुत आनन्द है।

मैं तो आप कुछ नहीं करता। उचित समय पर सब काम अपने आप हो रहे हैं। किसी दिन मस्ती और संसार की ओर से बेहोशी (असावधानता) बिना बुलाये आ जाये, तो मेरा क्या अपराध? बिना किये काम हो रहे हैं। सूर्य और शेषनाग तो हमारे दास हैं। हमारा काम तो शेषनाग की शय्या पर आराम (शयन) करना है। सूर्य को हम प्रकाशित करते हैं, और आज्ञाधीन बनकर वह चक्कर लगता है। स्वरूप तो सबका एक ही है, पर स्वरूप में स्थिति की जरूरत है। और तुर्यावस्था तथा समाधिकाल की कहाँ महिमा नहीं आई? श्रीरामचन्द्रजी तथा श्रीकृष्णचन्द्र परमात्मा आप ऐसे महात्माओं के चरणों पर सिर (मस्तक) रखते रहे हैं। और याज्ञवल्क्य तथा अष्टावक्रजी की पदवी राजा जनक से बढ़कर है।

राजा जनक और कृष्ण परमात्मा तो बी० ए० श्रेणी के हैं, और याज्ञवल्क्य तथा अष्टावक्र एम्० ए० श्रेणी के। मान यद्यपि बी० ए० और एम्० ए० का एक समान होता है, मगर सचाई को छुपाना ठीक नहीं। जो बड़ा है, उसी को बड़ा कहना ही उचित है।

दास के विषय अभी कुछ काल तक कोई चिन्ता तथा भय नहीं करना चाहिये। मलाईवाला दूध और वह भी मिसरी से मिला हुआ तो एक ओर पीने को मिलते हैं, और बाजरा वा ज्वार की रोटी दूसरी ओर।

मैं यह नहीं कहता कि बाजरा तथा ज्वार की रोटी बुरी है (क्योंकि वह भी तो मैं ही हूँ), मगर मेरे उदर के अनुसार नहीं। मेरे उदर में तो दूध मिसरी ही पचते हैं।

जब राजाधिराज के काम विना हाथ-पाँव हिलाये हो रहे हैं, तो वह मजदूरों के साथ मिलकर टोकड़ी क्यों ढोये ?

बल्टोही (बटलोही) में गरम जलानेवाले पानी में उबलने से बचने के लिये देगची (बटलोही) से बाहर जा पड़ना ही उचित है, देगची के साथ लगे रहना उचित नहीं।

श्रीशंकराचार्यजी ने गीता-भाष्य में अत्यन्त स्पष्ट रीति से सिद्ध कर दिखाया है कि अन्त में कर्म का नितान्त त्याग हो जाना चाहिये, यद्यपि आप उन दिनों वह थोड़ा बहुत कर्म करते ही थे। दास के लिये भी ऐसे दिन आने में अभी देर है।

काश आनाँ कि ऐबे-मन जुस्तन्द।
रूयत ऐ दिलस्ताँ बदीदंदे॥

अर्थात्— ईश्वर करे जिन्होंने मेरे पाप (अपराध) देखे हैं, ऐ प्यारे ! वह तेरा मुख देखें।

ईं खिर्कः कि मन दारम, दर रहने-शराब औला।
व ईं दफ़तरे-बेमानी गर्क़े-मये-नाब औला॥

अर्थात्—यह कंथा जो मैं पहनता हूँ निजानन्दरूपी मदिरा के बदले गिरवी (रखी गई) है, और यह निरर्थक पुस्तकें उस आनन्दरूपी वास्तविक मदिरा में डूबी हुई हैं।

अन्त के पद का तात्पर्य यह है कि:—"यह किताबें, पुस्तकें, दफ़्तर इत्यादि नितान्त व्यर्थ, निरर्थक, निष्फल और निकम्मे हैं, यदि उनके पढ़ने से यह परिणाम नहीं निकलता कि हम उनको शुद्ध मस्ती की शराब में ऐसा डाल दें कि वहाँ नितान्त गल-सड़ कर क्षीण हो जायें, और उनका

नाम तथा चिह्नमात्र शेष न रहे, बल्कि शराब रूप हो जाये । शराब से अभिप्राय अद्वैतानुभव की मस्ती या नशा है।" यह वस्त्र (अर्थात् गृहस्थ) शव का कफ़न (शव-वस्त्र) हैं, यदि अन्त में इनको बेचकर (छोड़कर) अनुभवरूपी मदिरा के रंग में हम रत्ते (रँगे) नहीं जाते। इति अलम्, विशेष आनन्द * ।

——:o:——

निजानन्द के कारण पढ़ा नहीं जाता

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५१) ६ दिसंबर, १८९७

आपकी कृपा से सदा ही मस्ती (निजानन्द) की अवस्था आच्छादित रहती है । आज-कल इस आनन्द के कारण पढ़ा भी नहीं जाता ।

——:o:——

गुसाईंजी की वैराग्य और त्याग की उमंगें

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५२) १२ दिसंबर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए देर हो गई है । जल्दी-जल्दी कृपापत्र भेजते रहा करें । हमारे कालिज के सिमाही इम्तहान हो चुके हैं और कल परसों का परचा देखने से फ़ारग़ हो गया हूँ । और आपकी दया से आनन्दस्वरूप के साथ संग बढ़ता जा रहा है । वाह, धन्य हो ! इत्यलम्, विशेष आनन्द । लेखक, राम

पहला कार्ड लिख रहा था कि आपके तीन कार्ड और मिले । बहुत ही आनन्द हुआ । आपने जो लिखा है, बिलकुल ठीक और उचित लिखा है । जो आपकी इच्छा है, वही होगी । करने करानेवाले सब आप हैं। वैराग्य की उमंगें जो यहाँ आती हैं, आपकी भेजी हुई हैं, और आप ही

* इस पत्र से अभिप्राय यह है कि गृहस्थ का अंत में त्यागना ही उचित है, गृहस्थाश्रम में फँसे रहना उचित नहीं ।

रोकते हो ? अजब तमाशा (अद्भुत लीला) है । वाह ! क्या खूब खेल है । बलिहार !

सबके लिये संन्यास ठीक नहीं, और संन्यास का संसार में न होना भी दुरुस्त नहीं । हर रंग का मसाला जगत् में बनाया हुआ है। किसी को हँसाना, किसी को रुलाना और आप अलग खड़े होकर तमाशा देखना, यह हमारा काम है, जिस प्रकार कि आतशबाज़ अनार के मसालह को गरम-गरम आग से जलाता है और उस बिचारे मसालह से शूँ शूँ रूपी हाय हाय का शोर (शब्द) कराता है, पर आप सदा प्रसन्न रहता है, साक्षीरूप बनकर । कुछ फल पककर भी वृक्ष के साथ लगे रहते हैं, पर कुछ फल पककर गिर पड़ते हैं। इति विशेष आनन्द । लेखक, राम

——:o:——

कुछ प्रश्नों का उत्तर

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५३) १६ दिसम्बर, १८९७

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ । आजकल कई पुरुष, जो मुझे मिलते हैं, आपके दर्शनों की इच्छा करते हैं। परसों मुझे तप (ज्वर) हो गया था, पर वह ज्वर भी अपना आप अनुभव होने के कारण अत्यन्त आनन्ददायक हुआ। रेशा (ज़ुकाम) भी अत्यन्त ज़ोर करके आया था । पर बहुत जल्दी अपने आप ही हारकर बिदा हो गया है ।

आजकल के पद्यों में से कुछ पद्य निम्न-लिखित हैं, इस प्रश्न के उत्तर में कि "आपका क्या हाल है, प्रसन्न हो ?"

"चे: पुरसी हाले-मन जानम कि जानम जान आरामस्त ।
व तन ख़ुद गोयदत मक़बूज़े-रद्दो बदलो हिरमानस्त ॥

भावार्थ:—मेरे अपना आप ! तुम मुझसे मेरी सेहत (स्वास्थ्य) के विषय में क्या पूछते हो, क्या तुमको पता नहीं कि मेरा आत्मा तो आनन्द की

रूह व जान (खानि) है, पर शरीर बेचारा सर्वदा बदलता रहता है और प्रतिक्षण मृत्यु के समीप जा रहा है, और कदापि सुखी नहीं रह सकता।

आत्मा के विषय में तुम्हारा प्रश्न नहीं बन सकता, क्योंकि वह नित्य ही आनन्दघन है। और ऐसे ही किसी शरीर के विषय में भी तुम्हारा पूछना योग्य नहीं हो सकता, क्योंकि यह तो सदा ही महादुःखी है। तो फिर दशा किसकी पूछते हो?

संसार क्या है? इसके उत्तर में दृष्टान्त—

बजे थे चार मुस्तक़बिल। ज़माँ के।
अक़ीमाः के पिसर हरसू दवाँ थे॥
अजब मल मल सुराबों में नहाये।
जबीं पर रोज़ के तारे लगाये॥
व फिर सबने की उन्क़ा पर सवारी।
ससी के सींग से की तीर बारी॥
अरे ओ आस्माँ! यह नील दे जा।
हमारी कुमक को आता है हव्वा॥

भावार्थः—भविष्यकाल के चार बजे थे। बंध्या (बाँझ) स्त्री के बालक सर्व ओर दौड़ रहे थे। मृगतृष्णा के जल में विचित्र रीति से मल-मलकर स्नान किया था। भाल (माथे) पर दिन के समय के तारे लगाये, और फिर हुमा पक्षी (जो कदापि आकाश से पृथिवी पर उतरता नहीं है) की पीठ पर हमने सवारी की। और शशक (ख़रगोश) के सींग से तीर चलाये। फिर आकाश को कहा कि ऐ आकाश! तू नीला रंग दे जा, नहीं तो तेरे मारने के लिये हमारी सहायता को हव्वा आता है। तात्पर्य यह कि जैसे यह सब पूर्वोक्त कथन असंभव, मिथ्या और कहनेमात्र हैं, ऐसे ही यह संसार मिथ्या और कहनेमात्र है।

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५४) २३ दिसम्बर, १८९७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए देर हो गई है। हमें कल से बड़े दिन की छुट्टियाँ होंगी। गुजरात आश्रम से तीन चार पत्र आये हैं। वहाँ इतवार को जलसा है। मेरा अभी तक कोई किसी तरह का संकल्प नहीं। शायद शनिवार को यहाँ से चलूँ और आपकी सेवा में उपस्थित होकर गुजरात जाने का इरादा करूँ। आपकी इच्छा हो, तो आप भी वहाँ तशरीफ़ ले चलें। संभव है कि गुजरात से आनकर आपके चरणारविंद में उपस्थित हो सकूँ। अभी कोई पक्का संकल्प नहीं। आपके असल स्वरूप की अ़कसी (प्रतिबिंबित) तस्वीर दिल में ज्यादा रहने लगी है। लेखक, राम

——:o:——

गुरुजी से संपूर्ण अभेदता

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५५) २४ दिसम्बर, १८९७

रात के आठ बजनेवाले हैं। व्यायाम कर चुका हूँ। अंदर बिलकुल साफ़ है, और अत्यन्त आनन्द की अवस्था है। इस समय अत्यन्त प्रेम के साथ आप याद आते हैं। आप धन्य हैं, जिनकी कृपा से इस प्रकार आनन्द के समुद्र में स्नान होते हैं। आप पर बलिहार। संपूर्ण एकता (अभेदता) की दशा है। आपसे इस समय एक बाल-मात्र भी किसी बात में किञ्चित् भेद नहीं।

मन तो शुदम, तो मन शुदी, मन तन शुदम तो जाँ शुदी।
ता कस न गोयद बाद अ़ज़ीं, मन दीगरम तो दीगरी॥
भावार्थ—मैं तू हुआ, तू मैं हुआ, मैं देह हुआ तू प्राण हुआ।
अब कोई यह न कह सके, मैं और हूँ तू और है॥

लेखक, आप स्वयं।

——:o:——

सन् १८६८ ईसवी

(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु साढ़े चौबीस वर्ष के लगभग थी।)

भ्रम से रोकने का यत्न

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५६) १ जनवरी, १८६८

आप कृपा करके यहाँ शीघ्र पधारिये। यहाँ आने पर किसी प्रकार विरोध नहीं रहेगा। मेरा और आपका प्रत्येक बात में इत्तफ़ाक़ (एकमत) है। लोगों से हाल सुनकर या ऊपर की किसी क़ारवाई से कोई परिणाम कदापि न निकालना, जब तक कि सामने बातचीत करने से यह न देख लोगे कि सेवक बिलकुल आपका हमदिल (एकदिल) और हमख्याल (एकचित्त) है। लेखक, राम

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५७) २ जनवरी, १८६८

आजकल काम बहुत ज्यादा है, और सब तरह से आनंद है, आप आनंददृष्टि रखा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०५८) १५ जनवरी, १८६८

एक जगजीत प्रश्न की कापी (जो ईशावस्योपनिषद् का उर्दू अनुवाद है) सेवा में भेजी है। यह वह पुस्तक है, जिसका यहाँ आपसे ज़िक्र आया था (बातचीत हुई थी)। अत्यंत उत्तम अनुवाद है। कृपापत्र से कृतार्थ करते रहा करें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०५९)　　१७ जनवरी, १८९८

आपका कृपापत्र मिला, आनंद हुआ। वह गुच्छियाँ* पंडित गोपालदासजी दे गये थे, मेरी अनुपस्थिति में। ब्रज † कहता है कि वह पंडित देवकीनंदनजी के पिताजी को देनी हैं। आज-कल मेरे मकान के दो ख़ाली चुबारों में दो व्यक्ति रहते हैं। एक तो स्वामी बोधानंदजी साधु हैं, दूसरा लाला अमीचंद हमारे कालिज का एक ग़रीब विद्यार्थी है।

——:o:——

दोनों लोकों का क्षेत्र हमारे बाग़ का कोणा है

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०६०)　　२५ जनवरी, १८९८

आपका कृपापत्र मिला, आनन्द हुआ।

हासले हर दो जहाँ ख़ोशाए अज़ ख़िरमने-मास्त।
साहते - कौनो - मकाँ गोशाए अज़ गुल्बुने - मास्त॥

भावार्थः—दोनों लोकों की आमदनी (आय) हमारे खलियान का एक गुच्छा (सिट्टा) है, और दोनों लोकों का क्षेत्र (मैदान) हमारे बाग़ का एक कोना है, अर्थात् हमारे स्वरूप के साक्षात्कार की अपेक्षा यह सब कुछ भी नहीं।

मेरा थोड़े से दिनों का एक दोहा है—

हे मृग, तेरी सुगन्ध सों भयो यह वन भरपूर।
कस्तूरी तो निकट है, क्यों धावत है दूर॥

——:o:——

अद्वैतामृतवर्षिणी सभा की स्थापना

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०६१)　　४ फ़रवरी, १८९८

कल अर्ज़ (भेंट) की जावेगी। यहाँ एक "अद्वैतामृतवर्षिणी सभा"

* एक प्रकार की पंजाब की तरकारी है।

† ब्रज से अभिप्राय गोस्वामी ब्रजलाल है जो गोस्वामी तीर्थरामजी का भतीजा है।

स्थापित की है, जिसमें विशेष करके साधु-महात्मा ही प्रविष्ट हैं। इसके इकठ (एकत्र) होने का स्थान मेरा ही घर है, और प्रत्येक बृहस्पतिवार को इकठ होता है, जिसमें उपदेश इत्यादि भी होते हैं, पर केवल वेदान्त पर।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६२) १० फ़रवरी, १८६८

पेशावर सभा का जलसा फ़रवरी के अंत में है। उन्होंने मुझे बुलाया है। शायद मैं चला जाऊँ। लेकिन चाचाजी की यह राय (सम्मति) है कि ब्रजलाल को साथ ले जाकर उसकी बहू को भी वहाँ से साथ लाना चाहिये। अगर आपके चित्त में संकल्प यहाँ आने को फुरा है, तो फ़ौरन तशरीफ़ ले क्यों नहीं आते ?

—:o:—

एकान्त-सेवन और अन्तर्मुख होने का फल

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६३) १४ फ़रवरी, १८६८

जिन दिनों पेशावर जलसा है, हमारे कालिज में छुट्टियाँ हैं। लाहौर सनातन धर्म का जलसा इसी बुद्धवार से शुरू होगा और रविवार तक रहेगा। अब आप तशरीफ़ ले आओ। भाई गुरुदास आज यहाँ लाहौर आया है। आपका इंतज़ार है। इसमें कुछ संदेह नहीं कि जो आनन्द एकान्त-सेवन और अंतर्मुख होने में है, और कहीं नहीं। और करोड़ों अश्वमेध-यज्ञ किये हुए हों, तो हरदम स्वरूप में निष्ठा रहती है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६४) १६ फ़रवरी, १८६८

यहाँ वर्षा बहुत हुई है। मौसम अच्छा है। आप भी कृपा करके इस अच्छे मौसम (ऋतु) को और अच्छा कर दो। और तशरीफ़ ले आओ।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६५) २ मार्च, १८६८

मैं परसों का पेशावर से आ गया हूँ। जलसा समाप्त हो गया है। आनंद से सब काम संपूर्ण हुए। आयन्दा लैक्चर आदि देने का इरादा मौक़ूफ़ किया। घड़ी मुझे पंडितजी ने वापिस दे दी है। आपकी कृपा से सब तरह से आनंद है। आप दया रखा करें। आप कृपापत्र जल्दी अरसाल फ़रमावें।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६६) ४ मार्च, १८६८

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। पेशावर का जलसा २८ फ़रवरी तक रहा। मगर मैं जलसे के पूरे दिन शरीक नहीं रह सका, छुट्टियों के काफ़ी न होने के कारण। आती बार जिस दिन रेल में रहा, उस दिन कालिज लगा था, बल्कि एक दिन की ग़ैरहाज़िरी रही। इस कारण गुजराँवाले उतरने का मौक़ा (अवसर) नहीं मिला। मुआफ़ फ़रमावें। साथ इसके गुजराँवाले में केवल आप ही के साथ दिली प्रीति है, और कोई कशिश (आकर्षण) वहाँ नहीं। और आपके दर्शन तो आपकी दया से होते ही रहते हैं। साथ इसके वहाँ उतरने में एक रुकावट है, जो आपको विदित ही है। आज अर्ज़ (भेंट) की गई है।

—:o:—

बाहर होली और भीतर समाधि

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६७) ८ मार्च, १८६८

मिडिल (परीक्षा) का नतीजा कल निकल गया। मेरे मकान के समीप इस समय बड़ा रौला (शोर) पड़ रहा है, होली के कारण। पर आपकी कृपा से दिल के मकान में (चित्त के भीतर) कोई किसी प्रकार का शोर-शराबा नहीं। आनन्द है। जिस प्रकार शिवजी के चारों ओर भूत-प्रेत रौला और वावेला (शोर-गुल) मचाते रहते हैं, पर वह आनन्द

की समाधि में निर्विघ्न मग्न रहते हैं, इसी प्रकार संसार के जीव अज्ञान की कालिमा और गुलाल मुखों पर मले अपने निज स्वरूप को छुपाकर नित्य शोर मचाते रहते हैं। इस सबके होते हुए शिवस्वरूप अपने आपमें किसी क़दर निवास होने के कारण क्षीरसमुद्र में रहने का सुख है।

अब आपके सेवक को एफ़० ए० के गणित-शास्त्र की परीक्षा का भी परीक्षक बनाया गया है, फ़ारसी और संस्कृत-भाषा के विद्यार्थियों के लिये।

———:o:———

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६८) १५ मार्च, १८६८

मैं निकट ही एक सविस्तर पत्र आपकी सेवा में भेजता हूँ। आपकी कृपा से बहुत आनंद है।

जिनके पिया परदेश बसत हैं, लिख-लिख भेजें पाती।
मेरे पिया मेरे हृदय बसत हैं, न कहीं आती न जाती॥

———:o:———

मिज़ाज-पुरसी (प्रकृति-सम्बन्धी प्रश्न) का उत्तर

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६६) १८ मार्च, १८६८

आपके कृपापत्र प्राप्त हुए। अत्यन्त आनन्द का कारण हुए। एक राजा ने एक महात्मा से पूछा कि आपकी तबीअ़त (प्रकृति) कैसी है? उन्होंने उत्तर दिया कि—"जिसकी इच्छा विना एक पत्ता न हिल सके, जिसकी आज्ञा सूर्य और चन्द्र मानें, नदियाँ और पवन जिसकी आज्ञा को एक क्षणमात्र के लिये भी न तोड़ सकें, जहाँ चाहे ख़ुशी भेज दे और जहाँ चाहे शोक भेज दे। और ऐ राजन्! जिसकी आज्ञा के विना तेरे मुख के दाँत हिल नहीं सकते, और जिसकी इच्छानुसार राजाधिराजों की नाड़ियों में रुधिर चक्कर लगाता है, ऐसे सामर्थ्यवान् (सर्वशक्तिमान्) के आनन्द का क्या ठिकाना है? हे राजन्! तू आप ही अंदाज़ा लगा ले (अनुमान कर ले)।"

राजा बोला:—धन्य हो, ऐसा ही है। जिसका अल्पज्ञ भाव उठ गया है, और जिसकी जीव-बुद्धि नष्ट हो गई है, और ब्रह्ममय हो गया है, वह प्रजापति (ब्रह्मा) स्वरूप बना हुआ समस्त जगत् के सारे काम कर रहा है। और उसकी सारी इच्छायें नित्य पूरी हो रही हैं। और आनन्द का समुद्र है।

"अहो अहं ! यस्य मे नास्ति किञ्चिन।
अथवा यस्य सर्वं यद्वाङ् मनसि गोचरं ॥"

भगवान् शंकर कहते हैं:—"वाह कैसा सुन्दर और आश्चर्य है मेरा अपना आप ! कि जिस मेरे अपने आपका जितना यह जगत् है (जो कुछ देखने, सुनने और ख़्याल में आ सकता है), यह सब कुछ जिस मेरे अपने आपका है (परन्तु ऐसा होते हुए भी मेरे अपने आपका कुछ नहीं है), ऐसा जो मैं हूँ, उसके तईं मेरा बहुत बहुत नमस्कार और प्रणाम है।"

आजकल काम बहुत अधिक रहा, इम्तहानों के निकट होने के कारण। कालिज की परीक्षाओं के लिए परचे भी बनाने थे। साथ इसके विद्यार्थियों की दिक़्क़तें भी निवारण करनी पड़ती हैं। मगर चित्त एकान्त में रहा।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त,　　(१०७०)　　२२ मार्च, १८९८

चाचाजी बहुत बीमार हैं, फोड़ों के कारण से। आप अगर उचित समझो, तो जाकर उनकी ख़बर ले आओ। मैं भी, आशा है कि आऊँगा, मगर इन दिनों आपका मुरारीवाले अकेले जाना ही दुरुस्त है। बी० ए०, एम्० ए० आदि के इम्तहान हो रहे हैं। मुझे वहाँ निगरानी (देख-भाल) के लिए जाना पड़ता है। इसके बाद इंट्रेंस के परचे भी आ जाते हैं। फिर भी मैं जल्दी आने की कोशिश करूँगा।

——:o:——

लोगों का परिचय कम करना

संबोधन पर्वोक्त, (१०७१) ४ अप्रैल, १८६८

आपका कृपापत्र मिला, अत्यन्त आनन्द हुआ। परचे बहुत हैं। परन्तु देखे अभी थोड़े हैं। विशेषत: सत्संग के कारण परचे कम देखे जाते हैं। पर लोगों का परिचय मैं दिन प्रति दिन कम कर रहा हूँ। आपसे मिलने को जी (चित्त) चाहता है, बैसाखी (मेला) को इकट्ठे कहीं जायें, तो अति उत्तम हो।

——:०:——

सब वेद-वेदांग हमारे भीतर हैं

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७२) १७ अप्रैल, १८६८

कटास* की यात्रा ने जो उपदेश दिया, वह अत्यन्त ठीक है। जो सुख एकान्त-सेवन और निजधाम में है, वह कहीं भी नहीं।

"हे मृग, तेरी सुगंध सो भयो यह वन भरपूर।
कस्तूरी तो निकट है, क्यों धावत है दूर॥"

अपना ही आनन्द जगत् के पदार्थों में आनन्द भावना कर दिखलाता है। सब वेद-वेदांग हमारे भीतर ही हैं।

——:०:——

मिशन कालिज के बी० ए० श्रेणी की परीक्षा का परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७३) २२ अप्रैल, १८६८

आज बी० ए० का नतीजा निकला है। मिशन कालिज के विद्यार्थी सब कालिजों से अधिक पास हुए हैं। और मेरा एक विद्यार्थी पंजाब

* कटासराज एक तीर्थ का नाम है, जो पिंडदादनखाँ नगर और ख्योरा की निमक की खानि के समीप है। यहाँ प्रतिवर्ष वैसाखी के दिन मेला लगता है, और इस मेले में साधु-महात्मा बहुत दूर-दूर से आकर एकत्र होते हैं।

में तीसरा नम्बर रहा है। और जो विद्यार्थी प्रथम रहा, वह एक वर्ष और आठ मास मेरे पास हमारे कालिज में पढ़ता रहा, पीछे किसी साहब से लड़कर आर्या कालिज में जा प्रविष्ट हुआ था। और जो विद्यार्थी द्वितीय रहा, वह भी मेरा मित्र गवर्नमेंट कालिज में पढ़नेवाला था। यह सब आपकी कृपा है। दया रखा करें। गणित-शास्त्र में इस बार तेईस (२३) में से केवल तीन फ़ेल हुए हैं।

——:o:——

एकान्त-सेवन में अधिक आनन्द

संबोधन पूर्वक्त, (१०७४) २७ अप्रैल, १८६८

पिछले दो-तीन दिन (तबीअत) किञ्चित् तंग (ख़राब) रही है। ऋतु कठिन (प्रतिकूल) है। आज कुछ सेहत (स्वास्थ्य) प्रतीत होती है। सर्वसाधारण के मेल-मुलाक़ात की अपेक्षा एकान्त-सेवन में अधिक आनन्द और सुख है।

——:o:——

तीक्ष्ण वस्तुओं का त्याग और एफ़० ए० का परिणाम

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७५) २६ अप्रैल, १८६८

मुझे अब पहले की अपेक्षा रेशा (ज़ुकाम) कम है। तीक्ष्ण वस्तुओं का सेवन आज कल नितान्त त्याग देना चाहिये। सब विकार इनसे उत्पन्न होते हैं। इनसे तृषा लगती है और अधिक जल तब बहुत हानिकारक होता है। एफ़० ए० की वार्षिक परीक्षा का रिज़ल्ट (नतीजा) निकला है। मिशन कालिज का विद्यार्थी पंजाब में प्रथम रहा है, और यहाँ से विद्यार्थी भी अन्य सब कालिजों की अपेक्षा अधिक पास हुए हैं।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७६) १० मई, १८६८

जब के आप तशरीफ़ ले गये हैं, कोई कृपापत्र आपकी ओर से प्राप्त नहीं हुआ। आपकी सेहत (स्वास्थ्य) कैसी है, लिख भेजें।

——:o——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७७) १२ मई, १८६७

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ। अत्यंत आनंद हुआ। हरभगवान् और ठाकुरदास को कालिज में दाखिल कर लिया है। उनकी फ़ीस इत्यादि का प्रबंध हो जायगा। लड़के अच्छे हैं, आपकी बहुत तारीफ़ (प्रशंसा व उपमा) करते हैं।

——:o:——

संबोधन पर्वोक्त, (१०७८) १७ मई, १८६८

मैं आशा करता हूँ कि मैं गुजराँवाला आऊँगा। मगर यह नहीं मालूम कि कब आऊँगा। मुहब्बतवालों के लिए अब भी गुजराँववाले ही हूँ।

——:o:——

चित्त अचल

संबोधन पूर्वोक्त, (१०७६) २५ मई, १८६८

आपका कृपापत्र मिला, आनन्द हुआ। आपकी दया से चित्त तो दिन प्रति दिन अचल होता जाता है। इसमें किञ्चित् अंतर नहीं आता। मेरे शारीरिक व्यवहार से चित्त-वृत्ति का अन्दाजा लगाना ठीक नहीं। पिछले दिनों काम किञ्चित् विशेष रहा।

——:o:——

ख़रबूज़ा खाने का फल

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८०) ३० मई, १८६८

आपकी दया से बहुत आनन्द है। ख़रबूजा खाना दिमाग़ को थोड़े काल के लिये अति लाभदायक प्रतीत होता है, परन्तु अन्त में अत्यन्त

हानिकारक सिद्ध होता है। प्रकृति को तंग रखता है और उदर को बिगाड़ता है।

—:o:—

गणितशास्त्र पर गुसाईं तीर्थरामजी का लेख *

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८१) १ जून, १८६८

जो पुस्तक मैंने बनाई है, उसकी एक प्रति भी मेरे पास नहीं है। लाहौर में अनारकली बाज़ार के "लाला रामकृष्ण ऐंड संस" अँगरेज़ी पुस्तक बेचनेवाले की दुकान पर बिकती है। दुकान का पता यह है:—Messrs Rama Krishna & Sons, Anarkali, Lahore। पुस्तक का मूल्य चार आना है। पुस्तक पर सहित विज्ञापन की छपाई इत्यादि के एक सौ पच्चीस १२५) रु० खर्च आये हैं। एक सौ प्रति पुस्तक की मैंने मुफ्त बाँटी है। भारतवर्ष के अँगरेज़ी गणितज्ञों ने अत्यन्त उत्तम समालोचनाएँ इसकी प्रशंसा में लिखी हैं।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८२) ५ जून, १८६८

आपका कृपापत्र प्राप्त हुए देर हो गई है। आपकी दया से आनंद है।

—:o:—

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८३) १६ जून, १८६८

बरेली के एक अति विद्वान् पंडित लाहौर में आये हुए हैं। उनके छे व्याख्यान भी हुए। मदनलाल की माता एक विवाह के सम्बन्ध में बैरोके

* यह पुस्तक 'How to excel in Mathematics' है, जो पहिले अँगरेज़ी विभाग चौथा (English Complete Works of Rama vol. IV) में छपवाई गई थी, अब अँगरेज़ी जिल्द आठ और अलग पुस्तकाकार में भी प्रकाशित की गई है।

में है। मुझे कल तप (ज्वर) हो गया था। अब सेहत (स्वास्थ्य) है। आपका कृपापत्र मिला।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८४) २७ जून, १८६८

आज-कल कालिज के इम्तहान शुरू होनेवाले हैं, इसलिए काम बहुत है। बात जो आप कहनी चाहते हैं, चाहे किस तरह कह दें, जिस तरह आप आनंदपूर्वक करनी चाहें कर दें।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८५) २ जुलाई, १८६८

आपका कृपापत्र प्राप्त हुआ, अत्यंत आनंद हुआ। उस लड़के की सारी कैफ़ियत (विवरण) मुझे लिखो, या आकर बता जाओ। जो कुछ मेरी ताक़त (शक्ति या अधिकार) में होगा, अवश्य कर दूँगा।

बख़्वाबे-ख़ुद दर आ ता क़िब्ला-ए-रूहानियाँ बीनी।
बबीं दर आयना ता आतशे-सद्ख़ान्माँ बीनी॥

——:o:——

घट में घट जाना

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८६) हरिद्वार, १४ अगस्त, १८६८

आज † ठाकुरदास को लाहौर भेज दिया है। इतने दिनों में यहाँ के देखने योग्य मुक़ामात (स्थान) देखे हैं। सन्तों के दर्शन किये हैं। अब

† यह ठाकुरदास गुजराँवाले का विद्यार्थी था। मिशन कालिज लाहौर में गुसाईं तीर्थरामजी के पास पढ़ता था। निर्धन होने के कारण गुसाईंजी ने इसकी फ़ीस भी कालिज-कमेटी से आधी मुआफ़ करवा दी थी। इसका छोटा भाई इसका हमजमाअत (सहपाठी) था, उसकी फ़ीस भी आधी मुआफ़ करवा रखी थी। इसलिये यह दोनों प्रतिदिन गुसाईंजी के पास आया-जाया करते थे। इस बार गुसाईंजी ठाकुरदास को हरिद्वार अपने साथ ले गये थे। इनका घर गुजराँवाले में भगत धन्नारामजी के घर के पास है। सुना जाता है कि आज-कल यह प्यारे गुजराँवाले खालसा स्कूल में हेडमास्टर हैं।

रजकर (तृप्त होकर) अपने घर के द्वार बन्द करके अपने घट में घट जाने को जी (चित्त) चाहता है। महाराजा जम्मू की हवेली में ठहर रहा हूँ। मेरे रहने का कमरा हरिद्वार में सबसे उत्तम है।

——:०:——

घर आने की प्रार्थना पर उत्तर

संबोधन पूर्वोक्त, (१०८७) हृषीकेश, २२ अगस्त, १८९८

एक कृपापत्र प्राप्त हुआ, जिसमें घर आने के लिये प्रेरणा थी। इस पत्र को लेकर मैंने फ़ौरन् परमधाम को भेज दिया, अर्थात् श्रीगंगाजी में प्रवाह दिया। यदि किसी ख़ानगी (गृहस्थी वा कुटुंब सम्बन्धी) मुआमले (कामधंधों) के शोक की बाबत पूछो, तो आपकी अत्यन्त कृपा है।

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत !
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥

अर्थः—इन पदार्थों के आदि और अन्त का पता नहीं। केवल मध्य-मध्य का पता है, ऐसी अवस्था में शोक किस काम का ?

रहा लोगों के गिले उलाहने, उनके विषय में यह निवेदन है:—

कफ़न बाँधे हुए सिर पर तिरे कूचे में आ बैठे।
हज़ारों ताने अब हम पर लगा ले जिसका जी चाहे ॥

भावार्थः– ऐ प्यारे ! तेरे द्वार पर शव-वस्त्र सिर पर ओढ़े हुए हम बैठे हैं (तेरे निमित्त मरने के लिये उद्यत हैं)। अब हमें कोई चिन्ता नहीं, जिसको चित्त चाहे, अनन्त उलाहने या ताने लगाये।

हे भगवन् ! आप ही की आज्ञा पालन कर रहा हूँ। अपने घर (निज धाम) को जा रहा हूँ। आपके असल (वास्तविक) स्वरूप से मिल रहा हूँ। पंजाब जो पाँच नदियों (रक्त, वीर्य, मूत्र, स्वेद, राल) से मिलकर बना हुआ हमारा शरीर है, इसके अध्यास को त्यागकर ही अपने असल (वास्तविक) धाम (हरिद्वार) की प्राप्ति होती है।

इस समय रात के बारह बज चुके हैं। न आदमी है, न आदमी की जात, अन्दर से अनहद (अनाहत) की घनघोर है और बाहर से श्रीगंगाजी ने अनाहत की गरज लगा रक्खी है। भीतर से ठंढ है और बाहर से आनन्द है। गार (अपने स्वरूप) से मिलनेवाली अँधेरी रात ने जगत् के नाम-रूप पर कालिमा फेर रक्खी है, अर्थात् जगत् को बाहर और भीतर दोनों ओर से शून्य कर दिया हुआ है। इस अँधेरी रात्रि में क्या भीतर, क्या बाहर? सम्मुख डलकते हुए अमृत के दरया (नद) बह रहे हैं। ऐसे समय पर जगत् (संसार) का स्मरण कराना? हाय शोक!

"ऐ सिकन्दर ! न रही तेरी भी आलमगीरी।
कितने दिन आप जिया जिस लिये दारा मारा॥"

भावार्थ—सिकंदर! तेरी भी विश्वजित् अन्त में न रही, यह बता, कितने दिन तू आप जिया है जिस (क्षणभंगुर जीवन) निमित्त तूने दारा मारा।

ऐसे अवसर पर सिकंदर का अमर जीवन एक ओर था, और जवाना-मर्ग (जवानों की मृत्यु) दूसरी ओर।

चिः निस्बत ख़ाक रा ब आलिमे-पाक।

भावार्थः—पर आप जैसे शुद्धात्मा महापुरुष की उस विषयगामी तथा देहाध्यासी सिकन्दर से भला क्या तुलना?

घरवालों को कह दो कि मिलना अब केन्द्र पर ही उचित है, जहाँ पर मिलने से फिर जुदाई न हो।



स्फुरत्स्फारज्योत्स्नाधवलिततले क्वापि पुलिने
सुखासीनाः शान्तध्वनिषु रजनीषु द्युसरितः

(भर्तृहरि-वैराग्यशतक)

अनुवाद—जहाँ पर उज्ज्वल और फैली हुई चाँदनी के सदृश जल है,

ऐसे गंगातट पर आराम से (सुखपूर्वक) बैठा रहूँ। जब सारे शब्द (अथवा ध्वनियाँ) बंद हों, तब रात्रि में शिव शिव (प्रणवरूप) हृदयवेधक ध्वनि द्वारा सांसारिक दुःख और शोक से मुक्त होकर आनन्दाश्रुओं से नेत्रों का होना सफल करूँ। ऐसे मेरे दिन कब आवेंगे ?

राजा लोग, राज-पाट का त्याग करके, ऐसे आनन्द की इच्छा करते थे। देवतागण स्वर्ग, वैकुण्ठ का ध्यान छोड़कर इस गंगा-तीर की कामना रखते थे। तो मेरी ही क्या प्रारब्ध फूट गयी है कि इस प्राप्त हुए आनन्द को छोड़कर झूठे पदार्थों के पीछे दौड़ूँ ?

लोग तीर्थों पर आया करते हैं। तीर्थ कभी लोगों के पास चलकर नहीं जाते। घरवालों का कह दो कि तीर्थ में रमण करनेवाला जो तीर्थराम परमात्मा है, उसके चरणों में चलें, तब तीर्थराम गुसाईं का मिलाप हो सकता है, नहीं तो नहीं। जब तक हमारे घर में सत्संगरूपी गंगा न बहेगी, मेरा वहाँ चित्त नहीं लगेगा, एक पल-भर नहीं ठैहर सकूँगा।

मरे हुओं को मिलने के लिये लोग उनको संदेशा भेजकर अपने पास नहीं बुला सकते। अल्बत्त आप मरकर उनसे मिल सकते हैं। हम तो मर चुके। जीते जी ही मर चुके। घरवाले हमको बुलाने का यत्न न करें। हम-जैसे हो जायेंगे, तो तब मेल बहुत सुगमता से हो सकता है।

मुरालीवाला अगर मुरारीवाला होकर तीर्थ बन जाये, तो तीर्थों को रमणीक बनानेवाला तीर्थराम वहाँ आ सकता है। सत्त्वगुण की गंगा जहाँ न हो, हमारा वहाँ होना कठिन है।

जब सब ही ने अंत में सूखे फूल (हड्डियाँ) बनकर गंगा में आना है, तो क्यों नहीं अपने हरे फूल की न्याईं शरीर को ज्ञान-गंगा में आनंदपूर्वक प्रवाह देते ? अथवा अपनी अस्थियों को ईंधन (लकड़ी) बनाकर,

मज्जारूपी घृत डालकर, प्राणरूपी वायु (पवन) से ज्ञानाग्नि में स्वाहा कर देते और इस प्रकार नरमेध का पुण्य लेते ?

यहाँ आठ पहर में केवल रात्रि को संतों के दर्शन के लिये कभी बाहर निकलना होता है। नहीं तो कोई आना-जाना नहीं। और आठ दिन में केवल रविवार को ब्राह्मणों और संन्यासियों की सभा में व्याख्यान देने के लिये जाना पड़ता है। और कहीं नहीं।

पाँच-छे दिन हुए, कोई सौ के लगभग महात्माओं को भोजन कराया था। अत्यंत आनंद हुआ। यहाँ सत्त्वगुण का प्रभाव था। इन दिनों बालमुकुंद और ठाकुरदास दोनों को रवाना कर दिया हुआ है।*

आपका अपना आप,
तीर्थराम

——:o:——

हृषिकेश, ब्रह्मपुरि, तपोवन, लक्ष्मणझूला के समीप।

(१०८८) ३० अगस्त, १८९८

पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते ।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ॥

* गुसाईं तीर्थरामजी तीव्र वैराग्य-वश हुए इस बार हरिद्वार, हृषीकेश और तपोवन एकांत अभ्यास के लिये आये थे। उनके पिताजी ने कुछ पत्र इनको लिखे होंगे, जब उनके एक पत्र का भी उत्तर उनको न मिला, तो उन्होंने भगत धन्नारामजी को पत्र लिखने के लिये प्रार्थना की होगी जिस पर भगतजी ने अपनी ओर से बहुत युक्ति-सहित विस्तार-पूर्वक गुसाईंजी को वापस घर में शीघ्र आने के लिये लिखा होगा, जिसके उत्तर में यह पत्र है। पर इस उत्तर के पश्चात् फिर गुसाईंजी की लेखनी ने भगतजी को पुनः उस पदवी तथा उपमा से नहीं संबोधन किया, जो आज तक वह सन् १८८९ से करते आये थे। और जल्वा कोहसार नामी उर्दू लेख में (जो उर्दू कुल्याते-राम जिल्द दूसरी में प्रकाशित है) राम ने स्वयं अपनी लेखनी से इस उत्तर को अधिक विस्तार से दिया है।

अर्थः—पूर्ण वह (लोक) है, पूर्ण यह (लोक) है, पूर्ण से पूर्ण निकाल लिया जाय, पूर्ण का पूर्ण लिया जाय, तो पूर्ण ही बाक़ी रह जाता है।

क्या हम अकेले हैं ?

(१) तनहास्तम तनहास्तम दर बैहरो-बर यक्तास्तम।
जुज़ मन नबाशद हेच शै मन जास्तम मन मास्तम॥

भावार्थः—(१) मैं अकेला हूँ, मैं अकेला हूँ, पृथिवी और समुद्र में भी अद्वितीय हूँ। मेरे से अतिरिक्त अन्य कोई वस्तु है नहीं। मैं ही भूमि हूँ, मैं ही जल हूँ।

कोई विद्यार्थी साथ नहीं, नौकर पास नहीं, गाँव बहुत दूर है। मनुष्य का नाम काफ़ूर है। अरण्य है, सुनसान है; तारों-भरी रात, आधी इधर, आधी उधर है, पर क्या हम अकेले हैं ?

अकेली हमारी बला ! अभी वर्षा लौंडी स्नान करा कर गयी है। हवा बाँदी (दासी) चारों ओर दौड़ रही है। वह किसी रफ़ीक़ (साथी) ने वृक्षों में से आवाज़ दी "हाज़िर जनाब" (अर्थात् सेवक उपस्थित है)। (मालूम होता है, सिंह-नाद है अथवा हाथी की चिंघाड़ है)। सैकड़ों नौकर हमारे झाड़ियों में दबे बैठे हैं, बिलों में शयन कर रहे हैं।

हम अकेले क्यों ?

पर हाँ, हम अकेले हैं। यह ख़ादम-वादम (नौकर-चाकर) कोई नहीं, हम ही हैं ; यह वृक्ष नहीं हैं, हम ही हैं ; पवन नहीं, हम ही हैं ; गंगा कहाँ ? हम हैं ; यह चाँद नहीं, हम हैं ; ख़ुदा (ईश्वर) नहीं, हम हैं ; प्रियवर कौन ? हम हैं ; मिलाप क्या ? हम हैं। अरे "अकेले" का शब्द भी हमसे दौड़ गया।

(२) ईं नारह-ओ-ईं नारहज़नो, नीज़ ईं सहरा।
अशजारो कोहस्तानो शबो-रोज़ो-नगारा॥

ईं मारो-माशूक़ वसालो दमे-हिजराँ।
बाद अन्जमो गंगा-जलो-अबरो-महे-ताबाँ॥
काग़ज़ क़लम चशमत व मज़मून् तो ख़ुद जाँ।
ईं जुमलगी रामस्त मरा दाँ मरा दाँ॥

भावार्थः—यह गरज, यह गरजनेवाला, और यह अरण्य, वृक्ष, पर्वत, रात, दिन, भ्रमरका (ज़ुल्फ़, बाल) और प्यारा, मिलाप और विरह का समय, वायु, तारे, गंगाजल, बादल और चमकता हुआ चाँद, काग़ज़, लेखनी और मेरे नेत्र, विषय और ऐ प्यारे ! तू स्वयं, यह सबके सब राम हैं, ऐसा मुझको तू समझ, ऐसा मुझको तू समझ।

हमारा पता पूछो, तो यह है

निशानम बेनिशाँ मे दाँ। मकानम दर क़ल्ब मे ख़्वाँ।
जहाँ दर दीदहअम पिन्हाँ। मरा जोयन्द गुस्ताख़ाँ।

भावार्थः—मेरा निशान बेनिशान समझ। मेरा स्थान अपने हृदय में देख। जगत् मेरी दृष्टि में छुपा है। मुझको गुस्ताख़ लोग (अपने से बाहर) ढूँढ़ते हैं।

आत्मसाक्षात्कार की अवस्था व स्थान

मन का मानसरोवर अमृत से लबालब (भरपूर) हो रहा है, और आनन्द की नदी हृदय में से बह रही है। प्रत्येक रोम कृतकृत्य है। विष्णु के भीतर सत्त्वगुण इतना भरपूर हुआ कि समा न सका। उस सत्त्वगुण के सरोवर (धारा) से चरणों द्वारा गंगा-जल बनकर सत्त्वगुण बह निकला। ठीक उसी प्रकार से इस समय

नारा (जल या सत्त्वगुण) में शयन करनेवाला नारायण

तीर्थ (जल रूप-सत्त्वगुणी) में रमण करनेवाला
तीर्थों को रमणीय (शोभावाला) बनानेवाला } तीर्थराम नारायण

सत्त्वगुण या आनन्द से भरपूर हो रहा है। उसका ब्रह्मानंद समेटे से समिटता नहीं। परमानंद की सरिता या स्रोत बनकर यह तीर्थराम साक्षात् विष्णु, पूर्णानन्द की धारा (नदी) जगत् को कृतार्थ करने के लिये भेज रहा है। खुशहाली (प्रसन्नता) और फ़ारग़ुलबाली (विश्रामता) की विभात-वायु संसार को भेज रहा है। कौन कहता है, वह बेकार (निष्कर्मी) बैठा है ? मैं सच कहता हूँ, इस तीर्थराम के दर्शनों से कल्याण होता है, वह गंगा है, वह तुर्या राम है, वह राम है।

धन्य भूमि धन्य काल देश वह।
धन्य माता, धन्य कुल, धन्य समधी ॥
धन्य धन्य लोचन करहें दरस जो।
राम तिहारो सर्वज्ञ समधी ॥

मेरी

बाँकी अदायें देखो ! चँद का सा मुखड़ा पेखो (टेक)
वायु में, बहते जल में, बादल में मेरी लटकें।
तारों में, नाज़नीं में, मोरों में मेरी मटकें ॥ (टेक)
चलना ठुमक-ठुमक कर बालक का रूप धरकर।
घोंघट अब्र उलटकर, हँसना यह बिजली बनकर ॥ (टेक)
शबनम गुल और सूर्य, चाकर हैं तेरे पद के।
यह आन बान सज धज, ऐ राम ! तेरे सदक़े ॥ (टेक)
जगत् सारा वार डारूँ, राम तेरे नाम पर।
इन्द्र ब्रह्मा वार डारूँ, राम ! तेरे धाम पर ॥

मैं कैसा ख़ूबसूरत (सुंदर) हूँ ! मेरी सोहनी सूरत, मेरी मोहनी मूरत, मेरी झलक, मेरी डलक, मेरा हुसन (सौंदर्य), मेरा जमाल

(शोभा वा कांति), इसको मेरी आँख से अतिरिक्त किसी और की आँख देखने की ताब (शक्ति वा साहस) नहीं ला सकती।

आजकल लक्ष्मणझूले से परे गंगा-तट पर पर्वतों में निवास है। गंगा क्या है विराट् भगवान् परमात्मा का हृदय। परमात्मा के हृदय या छाती पर परमात्मा का आत्मा बनकर विश्राम करता हूँ।

लेखक, राम

——:०:——

मेरा अटल राज, बड़े-बड़े प्रताप

(१०८६) हरद्वार, १६ सितंबर, १८६८

ॐ

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे परावरे॥

अर्थः—उस परम स्वरूप के दर्शन से हृदय की सब ग्रन्थियाँ खुल जाती हैं, सारे संशय दूर हो जाते हैं और सब कर्म नष्ट हो जाते हैं।

बाहर जिस ओर ध्यान करता हूँ, प्रत्येक परमाणु से इस झंकारे की गूँज उठती है। तत्त्वमसि (तू ही है, तू ही है)। अन्दर की ओर मुख करता हूँ अर्थात् ध्यान देता हूँ, तो यह ढोल कुछ और सुनने नहीं देता। अहं ब्रह्मास्मि, अहं ब्रह्मास्मि। मैं कहाँ हूँ, क्या हूँ ?, मेरे महलों में कौन, कब, क्या, इत्यादि चूँ-चरा (क्यों, कब) का दख़ल नहीं। मन को बन्दरों ने छीन लिया, बुद्धि गंगा में बह गयी। चित्त को चीलें (पक्षी) चाब गयीं। अहंकार मछलियों की भेंट हुआ। पापों को हवा उड़ा ले गयी। सारा संसार जीत लिया है। मेरा अटल राज, बड़े-बड़े प्रताप।

नास्ति ब्रह्म सदानन्दमिति मे दुर्मतिः स्थिता।
क्व गता सा न जानामि यदाहं तद्वपुः स्थितः॥

अर्थः—मैं ब्रह्म नहीं हूँ, ऐसी मेरी गधे की बुद्धि थी। वह ख़्याल अब कहाँ छुप गया, किधर उड़ गया, कहीं दृष्टि में नहीं आता।

चशमे-लैला हूँ दिले-क़ैस व दस्ते-फ़रहाद।
बोसा देना हो तो दे ले, है लबे-जाम मेरा॥

अर्थः—लैला की आँख हूँ। मजनूँ का दिल और फ़रहाद का हाथ हूँ। मेरा ओष्ठ समीप है; यदि चूमना हो, तो चूम ले।

——:०:——

दुनिया नहीं, पार्वती है

(१०६०) लाहौर, २८ सितम्बर, १८६८

आ मेरे भंगिया ! तू आ भंग पी जा।
आ मेरे भंगिया ! निशंग भंग पी जा॥
भर-भर देनियाँ में भंग दे प्याले।
निशंग भंग पी जा, निहंग भंग पी जा॥

दुनिया नहीं, पार्वती है, भंग हर वक़्त घुट रही है। शिव की आँख खुली, प्याला झट हाज़िर हुआ। बल्कि इसको भंग या शराब कहना भी ठीक नहीं। यह तो शराब का नशा है, यह तो भंग की मस्ती है। आपको मेरी क़सम (शपथ), सच कहो, इस मस्ती और आनन्द के बिना जगत् तीन काल में कभी कुछ और भी हुआ है ? कदापि नहीं।

मैं यह नशा, यह मस्ती, शिव, भला क्या सोचूँ, क्या समझूँ ? राम क्या सोचे-समझे ?

(१) सोचना नामालूम (अज्ञात) वस्तु के लिये होता है, उसे सब मालूम (ज्ञात) है।

(२) सोचना ग़ायब (अदृष्ट) वस्तु के लिये होता है, उसके लिये सब हाज़िर (दृष्ट) है।

(३) सोचना किसी मुराद (इष्ट) की प्राप्ति के लिए होता है, उसकी

समस्त मुरादें (इच्छायें) सदा प्राप्त हैं। जिसको संसार में सोच-समझ और बुद्धि कहते हैं, यही महान् मूर्खता है।

जित देखूँ तित भरया जाम।
पी पी मस्ती आठों याम ॥
नित्य तृप्त सुख-सागर नाम।
गिरे बने हम तो आराम ॥
देखा सुना खपाना काम।
तीन लोक में है विश्राम ॥
क्या सोचे क्या समझे राम।
तीन काल जिसको निज धाम ॥

महावाक्य

(१) घुंड कढ़ के क्यों चन्न मुँह उत्ते, ओहले रह्यों खलो ?
फ़क़ीरा ! आपे अल्लाह हो। (टेक)
(२) तेरे घट बिच राम बसेंदा, क्यों पया भरना हैं तो ? ,,
(३) राम रहीम सब बंदे तेरे, तैनूँ किस दा भौ ? ,,
(४) तू मौला, नहीं बंदा चँदा, झूठ दी छड दे खो। ,,
(५) छड मौहरा सुन राम दोहाई, अपना आप न कोह ? ,,

राम

——:o:——

राम का नाच

लेखक श्रीधन्नाराम*। (१०६१) अज़ लामकाँ (स्थानातीत से)
लाहौर, १ अक्तूबर, १८६८

मा रा नकुनेद याद-हरगिज़। मा ख़ुद हस्तेम याद बे मा।

* यह पत्र गुसाईं तीर्थरामजी ने अपने गुरुजी से ऐसा अभेद होकर लिखा है कि अपने स्थान पर गुरु का नाम लेखक के रूप में लिख मारा है।

भावार्थः—मुझको आप याद कदापि नहीं करते, अथवा न करें, हम स्वयं अपने अहंकार से रहित हुए याद स्वरूप हो गये हैं।

रो के जो इल्तमास की, दिल से न भूल्यो कभी।
दुई मिटा, अहद बना, उसने भुला दिया कि यूँ ॥

भावार्थः—मैंने रोकर प्रार्थना की मुझे चित्त से कदापि न भूलिये। पर उत्तर में उसने अपना द्वैत भाव मिटा दिया, और इस प्रकार से मुझे और परिच्छिन्न अपने आप दोनों को नितान्त भुला दिया।

आज तो नाचने को चित्त चाहता है।

नाचूँ मैं नटराज रे, नाचूँ मैं महराज ! (टेक)
(१) सूरज नाचूँ, तारे नाचूँ, नाचूँ बन महताब रे। (टेक)
(२) तन तेरे में दम हो नाचूँ, नाचूँ नाड़ी नाड़ रे। „
(३) बादर नाचूँ, बायु नाचूँ, नाचूँ नदी अरु नाव रे। „
(४) जर्रह नाचूँ, समुद्र नाचूँ, नाचूँ मोघरा काज रे। „
(५) गीत राग सब होवत हरदम, नाचूँ पूरा साज रे। „
(६) घर लागो रंग, रंग घर लागो, नाचूँ पा पा दाज रे। „
(७) मधुआ लब, बदमस्ती वाला, नाचूँ पी पी आज रे। „
(८) राम ही नाचत, राम ही बाचत, नाचूँ हो निरलाज रे। „

——:०:——

व्याधिरूपी भाँडों का मुजरा (नाच)

(१०६२) ६ नवंबर, १८९८

ॐ श्रीः

सत्यं ज्ञानमनन्तं (ब्रह्म) आनन्दामृत, शान्ति निकेतन,
मंगलमय शिवरूपं, शुद्धमपापविद्धम् ॥

हमारे शरीररूपी महल में तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) रूपी कंचनी को अपना राग-रंग सुनाते और तमाशा दिखाते बहुत देर हो गयी थी। अब

ज्वर, उदर-पीड़ा, श्वास-रोग और खाँसीरूपी भाँडों के मुजरे (नाच) की बारी थी। सो उन्होंने एक पूरा सप्ताह अपनी शोर-ग़ुलवाली नक़्लों से धूम मचाये रखी। कालिज जाना बंद रहा, आज भाई गुरुदास और बाग़ बूटामल भी यह तमाशा देख कर मुरारीवाला को रुख़सत हुए (गये) हैं। अमृतसर जाना हो तो वीरवार से पहले चले आना।

ॐ ॐ ॐ

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (१०९३) १९ नवंबर, १८९८

हे भगवन्! चोग़ा तैयार पड़ा है। कोई आदमी मिला, तो उसके हाथ भेज दिया जायगा, आपको कोई आदमी लाहौर आनेवाला मिले तो उसके हाथ मँगा लेना। खाँसी पहले से कम है।

ॐ ॐ ॐ

——:०:——

वास्तविक आनन्द दिन प्रति दिन बढ़ता जाता है

ॐ श्रीः

संबोधन पूर्वोक्त, (१०९४) २७ नवंबर, १८९८

शरीर में रेशा (ज़ुकाम) अभी है। मिशन कालिज की नौकरी में शायद कोई तबदीली (हलचल) शीघ्र पड़ जाये। असली (वास्तविक) आनन्द दिन प्रति दिन बढ़ता जाता है।

मरे न टरे न जरे हरे तम, परमानंद सो पायो।
मंगल मोद भरयो घट भीतर, गुरु श्रुति 'ब्रह्म त्वमेव' बतायो॥
लय मुझमें सब गयो रहे बाक़ी, वासुदेव सोहं कर भाकी।
टूटी ग्रन्थी अविद्या नाशी, ठाकुर सत्य राम अविनाशी॥

——:०:——

बिना कौड़ी राम बादशाह

संबोधन पूर्वोक्त, (१०९५) ११ दिसंबर, १८९८

कृपापत्र मिला। जिसमें लिखा था कि "पता नहीं आप क्या ख्याल करते रहते हैं"। निश्चय जानो कि जिस तरह आपके गुजराँवाले शरीर को पता नहीं कि तीर्थराम क्या ख्याल करता रहता है; ठीक उसी तरह आपके लाहौरवाले शरीर को भी कुछ पता नहीं कि राम क्या ख्याल करता रहता है। राम में कोई ख्याल दृष्टि में नहीं आता, कोई ख्याल हो तो दिखाई दे। निःशंक स्वरूप और निर्मल चिदाकाश में ख्याल रूपी धूल कहाँ?

राम—चिदाकाश निर्मल घन माँहि।
फुरना धूल कदाचित् नाँहि॥

पत्र लिखने में देर का एक कारण यह है कि कोई कार्ड लिफ़ाफ़ा पास नहीं था और कोई पैसा इत्यादि भी पल्ले न था। आज एक पुस्तक में से तीन टिकट मिल गये, और आपका उत्तर माँगता हुआ कार्ड सम्मुख मौजूद पाया। पत्र लिखा गया है। यही हाल खाने पीने के सम्बन्धी पदार्थों (आटा घृत इत्यादि) के विषय में रहता है। आज लैम्प में तेल नहीं है, इसलिये आज रात घर नहीं ठहरेंगे। नगर के चारों ओर सैर की जायगी। दोनों हाथों में लड्डू हैं।

पूर्वोक्त वृत्तान्त से यह न नतीजा निकाल लेना कि हाय! हाय!! राम बड़ा तंगदस्त (धनहीन) और दुःखी रहता है, कदापि नहीं। इस बाह्य निर्धनता और तंगी के कारण से ही आत्यन्तिक (परले सिरे की) अमीरी अर्थात् धनाढ्यता और बादशाही कर रहा है। यह पाठ पक गया है कि जब किसी अर्थ को सिद्ध करने के साधन उद्यत न हों, तो उसकी आवश्यकता ही प्रतीत नहीं होती। (और वास्तव में जब साधन पास न हों, तो आवश्यकता का प्रतीत होना केवल झूठी भूख है)।

पहले तो बड़ी चिन्ता के साथ आवश्यकताओं को पूरा करने का यत्न हुआ करता था, पर अब आवश्यकताएँ बेचारी स्वयं पूरी होकर सम्मुख आ जायें, तो उन पर दृष्टि पड़ जाती है, नहीं तो उनके भाग्य में राम का ध्यान कहाँ? प्रारब्ध कर्म और कालरूपी सेवकों को सौ बार आवश्यकता हो, तो आनकर राम बादशाह के चरण चूमें। नहीं तो उस शाहनशाह को क्या परवाह है इस बात की कि अमुक सेवक मुजरा कर गया है कि नहीं।

राम—सौ बार ग़र्ज़ होवे तो धो धो पियें क़दम।
क्यों चर्ख़ो-मिहरो-माह पै मायल हुआ है तू॥
ख़ंजर की क्या मजाल कि इक ज़ख़्म कर सके।
तेरा ही है ख़याल कि घायल हुआ है तू॥

——:o:——

सूर्य में न रात है न दिन

ॐ, ॐ, ॐ

संबोधन पूर्वोक्त, (१०६६) १६ दिसंबर, १८६८

आनन्द, आनन्द, आनन्द, बहुत आनन्द है।

रात और दिन केवल पृथिवी ही के लिए हैं, सूर्य में न रात है न दिन है। वहाँ तो प्रकाश ही प्रकाश है। सुख-दुःख, तृष्णा और सन्तोष सांसारिक लोगों के लिए हैं, आप तो परमानन्दघन हो। प्रकाश ही प्रकाश हो।

राम—अहर्निश का सूर्य में नाश।
अहं प्रकाश, प्रकाश, प्रकाश॥
अग्नि को ठंडक लगे, जल को लगे प्यास।
आनन्दघन मम राम से क्या आसा को आस॥

इकाई ज़ात में मेरी असंखों रंग दीखें हैं।
मज़े करता हूँ मैं क्या क्या, अहाहाहा ! अहाहाहा !!

बेबेजी की बाईं आँख बन गयी है। बाबू नानकचंद मिश्र को ख़बर देनी। राम

——:o:——

ॐ

संबोधन पूर्वोक्त, (१०९७) २७ दिसम्बर, १८९८

छुट्टियों में अभी तक तो कहीं शरीर के जाने की आशा नहीं, कुछ पता भी नहीं।

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः ॥

भावार्थः—हम चल हैं, हम चल हैं नाहीं, हम नेड़े, हम दूर।
अन्दर सबके चानन हम ही, बाहर हैं हम नूर॥

राम

——:o:——

सन् १८९९ ई०

(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु २५½ वर्ष के लगभग थी।)

संबोधन पूर्वोक्त, (१०९८) ८ जनवरी, १८९९

यदि हो सके तो किसी दिन यहाँ लाहौर तशरीफ़ ले आओ। ज़रूर। अंदर आनंद है, बाहर आनंद है। राम

——:o:——

मिशन कालिज का छोड़ना और ओरियंटल कालिज में नौकरी करना

संबोधन पूर्वोक्त, (१०९९) २२ जनवरी, १८९९

आनन्द, आनन्द, आनन्द,

मिशन कालिज में आजकल काम छोड़ दिया हुआ है। केवल एक

घंटा अभी वहाँ काम किया जाता है। यह भी महीना आध तक छोड़ दिया जायगा। ओरियंटल कालिज में दो घंटा प्रतिदिन काम आरम्भ कर दिया हुआ है। जवाहरसिंह को कोई किसी प्रकार का पैग़ाम (संदेसा) नहीं भेजा। राम

——:०:——

संबोधन पूर्वोक्त, (११००) ३ फ़रवरी, १८६६

स्थान—आपका दिल, तारीख़—अब।

(१) जाँ तूँ दिल दियाँ चशमाँ खोलें।
हू अल्लाह, हू अल्लाह बोलें॥
मैं मौला कि मारें चीक़।
अल्लाह शाहरग थीं नज़दीक॥

(२) जाम शराबे — वहदतवाला।
पी, पी हरदम रहो मतवाला॥
पी मैं वारी ला के डीक।
अल्लाह शाहरग थीं नज़दीक॥

(३) गिरजा तसबीह जंजू तोड़ें।
दीन दुनी बल्लों मुँह मोड़ें॥
ज़ात पाक नूँ ला न लीक।
अल्लाह शाहरग थीं नज़दीक॥

(४) जे तैनूँ राम मिलन दा चाओ।
ला लै छाती लग्गा दाओ॥
नाम लोहे दा धरिया पीक।
अल्लाह शाहरग थीं नज़दीक॥

(५) सुन सुन सुन लै राम दोहाई।
बे अंता क्यों अंत है चाई॥

मालिके-कुल तूँ मँग न भीक।
अल्लाह शाहरग थीं नज़दीक॥
(६) न दुन्या दी खेह उड़ा।
हाहाकार न शोर मचा॥
छड़ रोना हस्स गाओ ते गीक।
अल्लाह शाहरग थीं नज़दीक* ॥

——:o:——

मज़हबे-इश्क़ अज़ हमा मिल्लत जुदास्त।
आशिक़ाँ रा मज़हबो-मिल्लत ख़ुदास्त॥

भावार्थः—प्रेम का धर्म सब मतों से भिन्न है, और प्रेमियों का मत व धर्म तो केवल ईश्वर है।

——:o:——

संबोधन पूर्वोक्त, (११०१) १२ फ़रवरी, १८९९

आनंद, आनंद। पूर्ण आनंद है।
घट घट अंतर सर्व निरंतर
पूर्ण पूर सरूर रह्यो है

——:o:——

समुद्र में एक और नदी आन पड़ी

संबोधन पूर्वोक्त, (११०२) २५ फ़रवरी, १८९९

आनंद, आनंद,

आपके एक पत्र से, जो ग़ालबन (संभवतः) सरदार साहबसिंहजी के

* यह पत्र सारा का सारा कार्ड पर छपा हुआ है। ऐसा मालूम होता है कि मुफ़ीदे-आम प्रेस में गुसाईं तीर्थरामजी ने इसे कार्डों पर छपवाकर सर्वत्र अपने परिचित सज्जनों के पास भेजा है।

हाथ का लिखा हुआ था, मालूम हुआ कि लड़का (पुत्र) * उत्पन्न हुआ है। समुद्र में एक नदी आन पड़े तो कुछ अधिकता नहीं हो जाती, और यदि नदी कोई न गिरे तो कुछ न्यूनता नहीं हो जाती। सूर्य का जहाँ प्रकाश हो, वहाँ एक दीपक रखा गया तो क्या और न रखा गया तो क्या। जो ठीक उचित है वह स्वतः पड़ा होगा। किसी प्रकार का शोक तथा चिंता हम क्यों करें ? यह शोक या चिन्ता करना ही अनुचित है। हम ज्ञानी नहीं, ज्ञान हैं। देह से सम्बन्ध ही कुछ नहीं, देह और उसके सम्बन्धी जानें और उनकी प्रारब्ध जाने। हमें क्या ?

मनो बुद्ध्यहंकारचित्तानि नाहं।
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राण नेत्रे॥
न च व्योमभूमिर्न तेजो न वायुः।
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहं॥

अभिप्रायः—न मन हूँ न बुद्धि, न हूँ चित्त अहंकार।
नहीं कर्ण जिह्वा न चक्षु निराकार॥
न हूँ पृथिवी, अप, तेज, नाकाश इव हूँ।
चिदानन्द हूँ रूप, शंकर हूँ, शिव हूँ॥

——:o:——

गृहस्थियों की आवश्यकताओं से साधुओं की आवश्यकताओं की तुलना

संबोधन पूर्वोक्त, (११०३) ६ मार्च, १८६६
आनंद, आनंद, आनंद,

सविनय प्रार्थना यों है कि यहाँ कोई किसी प्रकार का अनुमान नहीं दौड़ाया गया। सत्तर से भी एक दो कम रुपये मास के मिले

* लड़के से अभिप्राय यहाँ गोस्वामी तीर्थरामजी के दूसरे पुत्र गोस्वामी ब्रह्मानन्दजी से है, जो आजकल किसी रियासत के बच्चों का गार्डियन (संरक्षक) है।

थे। उसमें से कौड़ी तो संचय करनी नहीं। जो जो आवश्यकतायें सामने आईं भुगत गयीं (पूर्ण की गयीं)। शेष आवश्यकताओं को जवाब देना पड़ा, अर्थात् बिना पूर्ण किये छोड़ना पड़ा। कुल (केवल) बारह रुपये घर भेजे गये, जहाँ आठ मनुष्य खानेवाले हैं। गृहस्थ, स्त्रियों, बच्चों और बूढ़ों को अधिक आवश्यकता होती है और अत्यंत हाजतमंद (ज़रूरतोंवाले) होते हैं साधुओं की अपेक्षा कि जिनके लिये शहद की मक्खी (मधुकर) की न्याईं अनेक पुष्पों (घरों) से मधूकरी (भिक्षा) लाना भूषण है। और जो हो रहा है वह अति उचित और ठीक हो रहा है।

——:o:——

हे भगवन्!　　(११०४)　　१३ मार्च, १८६६

मिशन स्कूल के दो विद्यार्थी तो ज़ेर तजवीज़ (विचाराधीन) हैं, जिनकी बाबत अभी कुछ नहीं कह सकते। बाक़ी कुल (समस्त) विद्यार्थियों के नंबर निम्न-लिखित हैं—

रामलाल,	सुलतानअली,	रहीमदाद,	गुरुदास,	विहारीलाल,	सावनमल,	
३४१	५०८	५१४	५५१	४४७	३६८	
बेलीराम,	महम्मदहसन,	मुहम्मदअली,	मतिराम,	लाभचंद,	रलाराम,	
३३३	२५६	३५०	३७६	३२७	३०२	
बद्रीनाथ,	हरिचंद,	जार्ज,	फ्रेड्रक,	मुहम्मद अफ़ज़ल,	दीवानचंद,	प्रभुदयाल,
३३४	३३३	३०२	३००	५१६	२१४	२३१
अब्दुलहाजी,	हंसराज,	हरिचंद प्रथम,	दीवानचंद,	बलवंतसिंह,	मूलराज,	
२५८	३७३	५७८	४६८	२२६	२७५	
केसरमल,	सरदारीमल,	बाँशीराम,	बोधराज,	अरोड़ामल,	कृपाराम,	
३५६	३७६	५४३	४६७	४२६	४४२	
ग़ुलाममुहम्मद,	मोहनलाल,	दीनानाथ,	इक़बालसिंह,	अमरसिंह,		
५५५	३३८	३३७	२६८	३२३		

मुहम्मदरमज़ान, गंडामल।
३०६ ४३४

खाँड का कुत्ता गधा चूहा बला।
मुँह में डालो ज़ायक़ा है खाँड का॥

आपका अपना आप, राम

——:०:——

प्रारब्ध और काल हाथ बाँधे ग़ुलाम (दास) हैं

संबोधन पूर्वोक्त, (११०५) १७ मार्च, १८९९

विचाराधीन विद्यार्थियों (Students under consideration) की बाबत दरियाफ़्त करना अभी उचित नहीं है। कल परसों तक शायद सूचना दी जाये।

प्रारब्ध और काल प्रत्येक व्यक्ति के हाथ बाँधे ग़ुलाम (दास) हैं। इसमें संशय करना ही अज्ञान है।

आपका राम

——:०:——

चेतन में फुरने (स्फुरण) का अभाव

संबोधन पूर्वोक्त, (११०६) १७ मार्च, १८९९

आनंद, आनंद,

कूटस्थ चेतन या साक्षी चेतन में फुरने या ख़याल का नाममात्र भी नहीं। उससे गिरकर अर्थात् उस अवस्था से उतर कर ही मनुष्य के दिल में फुरणा भासता है।

जैसा जी (चित्त) चाहे सरनामा लिखो, सब मंगलमय, आनंद-रूप, शुद्धस्वरूप ही है।

मिल गया माल तो क्या परवाह।
उतर गयी खाल तो क्या परवाह।

आपका राम

ॐ श्री

महानन्द आपका स्वरूप है

श्रीमहाराजजी, (११०७) ८ जुलाई, १८९९

महात्मा तो आनन्दघन होते ही हैं। महानन्द आपका स्वरूप है। वहाँ फ़िक्र और कदूरत अर्थात् चिन्ता और मलिनता का क्या काम ?

सूरज में अहर्निश का नाश।
अहं प्रकाश, प्रकाश, प्रकाश ॥
कहूँ क्या हाल इस दिल का कि शादी मौज मारे है।
है इक उमड़ा हुआ दरिया, अहाहाहा-अहाहाहा ॥

आपका राम

——:०:——

पत्र न लिखने का कारण

(११०८) २२ नवंबर, १८९९

पीतम पत्तियाँ तब लिखूँ, जब तुम होव बिदेश ;
तन में, मन में, नैन में, वाको क्या संदेश* ?

——:०:——

राम सर्वत्र

(११०९) २९ नवंबर, १८९९

मनम ख़ुदाए-बबाँगे-बलन्द मे गोयम।
हराँ कि परतौ दिहद मिहरो-माह रा ओयम ॥

भावार्थः—'मैं ब्रह्म हूँ,' यह गरज कर मैं कहता हूँ। और जो इस सूर्य और चन्द्र को प्रकाश देता है, वह प्रकाशस्वरूप परमात्मा मैं हूँ।

——:०:——

* इस पत्र में केवल यह पंक्ति ही लिखी हुई थी, इससे अतिरिक्त और कुछ नहीं।

ईशावास्योपनिषद् के मंत्र ८ में ज्ञानवान् की उपमा में वेद ऐसे कहता है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्धमपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ।

भावार्थ—(१) है मुहीतो-मनज़्ज़हो - बे अबदाँ ।
रगो-पै है कहाँ, हमः बीं, हमः दाँ ॥
(२) वह बरी है गुनाहों से रिंदे-ज़माँ ।
बदो-नेक का उसमें नहीं है निशाँ ॥
(३) वह बज़ुर्गे-बज़ुर्गां है राहते-जाँ ।
वह है बाला से बाला, व नूरे-जहाँ ॥
(४) वही खुद है ज़ुनाँ व ब्रूँ ज़िबियाँ ।
दिये उसने अज़ल में हैं रँगतो-शाँ ॥
(५) यही राम है दीदों में सबके निहाँ ।
यही राम है बहर में बर में अयाँ ॥

मन हमानं मन हमानं मन हमाँ ।
हर कुजा चशमत फ़ितद ज़ुज़ मन मदाँ ॥

भावार्थ—मैं वही हूँ, मैं वही हूँ, मैं वही हूँ, और जहाँ भी तेरी दृष्टि पड़े उसे तू मेरे से भिन्न मत समझ ।

राम

——:o:——

(१११०) १ दिसंबर, १८९९

बिगड़े तौ जे होय कुछ बिगड़नवाली शय ।
अकाल अछेद्य अशोष्य को कौन शख़्स को भय ॥

——:o:——

परमहंस स्वामी रामतीर्थ

लखनऊ (संन्यासाश्रम की पहली फोटो) १९०२



SWAMI RAMA TIRTHA

(First photo as Sannyasin)

Lucknow 1902

सन् १९०० ईसवी

(इस वर्ष के आरंभ में गुसाईं तीर्थरामजी की आयु २६½ वर्ष के लगभग थी।)

(११११) ४ जनवरी, १९००

ॐ नारायण,

ॐ आनन्द ॐ आनन्द ॐ आनन्द

राम

——:०:——

आनन्द प्रेस का खुलना और मासिक पत्र अलिफ़ का प्रकाशित होना

(१११२) ६ जनवरी, १९००

ॐ नारायण,

शांतं, शिवं, अद्वैतं, ॐ शांति, शांति, शांति,

आनन्द, आनन्द,

भगवन्, वेतन अभी नहीं मिला। जब मिलेगा, कुछ अर्ज़ (भेंट) हो जायेगी। *लोग यहाँ रात को उपनिषदें पढ़ने आया करते थे। उन्होंने

* नारायण और बाबू हरलाल डिस्टिक्ट नाजर, लाहौर, दोनों गुसाईं तीर्थरामजी के पास रात्रि को उपनिषदें पढ़ने जाया करते थे। थोड़े ही मास पढ़ने के पश्चात् गुसाईंजी की आज्ञा पर आनन्द प्रेस खोला गया था और उसमें एक मासिक पत्र अलिफ़ नाम का प्रकाशित किया गया था, जिस समस्त कार्य का प्रबन्ध-कर्त्ता नारायण नियत हुआ था। इस पत्र के केवल ३ नम्बर निकाले जाने के बाद गुसाईंजी वानप्रस्थाश्रमी होकर वनों में चल दिये। और तत्पश्चात् इसी वर्ष के अन्त में वह संन्यासाश्रम में प्रविष्ट हुए।

एक प्रेस (छापाख़ाना) खोला है, केवल इस नीयत (निश्चय) से कि जो कुछ यहाँ से पढ़ें, वह छपवा दें। साथ इसके यह रिसाला (मासिक पत्र) बल्कि रसूल (अलिफ़ नाम का) प्रकाशित किया गया है। आपकी सेवा में तीन कापियाँ भेजी जाती हैं। एक आपके लिये, दो जिस-जिस को आप उचित समझें दे दें। विज्ञापन भी साथ भेजे गये हैं, सत्संगियों में बटवा देने। यह आपका अपना काम है। आनन्द आनन्द।

बस कर जी, हुन बस कर जी।
काई गल्ल असाँ नाल हस कर जी॥

——:o:——

* सन १९०६ इसवी

(१११३) सितंबर, १९०६

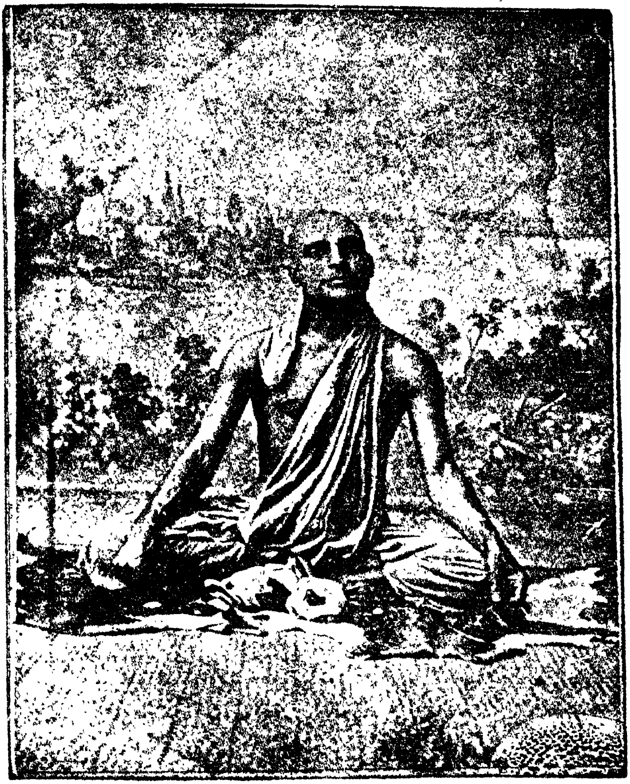
(पूर्णसिंहजी के द्वारा भेजा हुआ पत्र)

भे, भेद ते भर्म दी माड़ियाँ ते।
हल वाह सुहागड़ा फेर दित्ता॥
फ़र्ज़ कर्ज़ ते ग़र्ज़ दे बेलड़े नूँ।
अग्ग ला के शेर नूँ घेर लित्ता॥
विना राम दे नाम भी होरदा सी।
सुरंग कढ पलीतड़ा गेर दित्ता॥

* गृहस्थाश्रम छोड़ने के पश्चात् अर्थात् सन् १९०० के पीछे स्वामीजी का पत्र-व्यवहार पूर्व आश्रम सम्बन्धी पुरुषों से नितान्त बन्द रहा था, इसलिये भगतजी को इन ६ वर्षों के भीतर-भीतर कोई पत्र नहीं भेजा गया। अगस्त सन् १९०६ में स्वामीजी के प्रिय भक्त सरदार पूर्णसिंहजी लाहौर से जंगलों में केवल दर्शनार्थ आये थे, और भगत धन्नारामजी से मुखाग्र संदेशा भी लाये थे, जिसके उत्तर में स्वामीजी ने यह पत्र लिखकर उसी (सरदार पूर्णसिंहजी) के हाथ से भेज दिया। यह पत्र स्वामीजी के शरीर-त्याग से केवल एक दो मास ही पहिले भेजा गया था।

परमहंस स्वामी रामतीर्थ

लखनऊ (ध्यानावस्था में) १६०५



SWAMI RAMA TIRTHA

(in Meditation mood)

Lucknow 1905

अज नूरदा शूकदा हढ़ आया।
दशों दिशा आनन्द खज़ेर दित्ता॥

भावार्थः—द्वैत दृष्टि अथवा भाव को हमने ज्ञानरूपी हल से नितान्त मिटा दिया है। सर्व प्रकार के ऋणों की नौका को ज्ञानाग्नि से जला दिया है, और उस नौका के अन्दर जो सिंह (अभिमान इत्यादि) था, उसे वश में कर लिया है। और जो कुछ ब्रह्मभाव से अतिरिक्त दृष्टि में आता था उसे ज्ञान की ज्वाला से नितान्त नाश कर दिया है। अब आनन्द और प्रकाश की धारा उमड़ उमड़ कर अन्दर से बह रही है, और चारों ओर आनन्द बिखड़ रहा है।

अज़ मुक़ाम (स्थान):—हज़ूरका दिल (आपका हृदय)

भल्ला भल्ला जानियाँ मौजाँ लुट्टियाँ ज्ञानियाँ।
ख़ुशी रहना कार है, सोग सोगयाँ द्वार है॥

——:o:——

(निम्नलिखित पत्रों की असल कापी नहीं मिलती, पर निवीन गुजराँवाला से प्रकाशित उर्दू-आवृत्ति में ये छपे हुए हैं, अतएव उन्हें अंत में दे दिया है)

संबोधन पूर्वोक्त, (१११४) लाहौर, २८ मई, १८८८

जनाब श्रीभगतजी महाराज, दाम अल्ताफ़हू, मत्था टेकना, मैं रविवार प्रातः को यहाँ पहुँच गया हूँ, और आपकी कृपा का अति आकांक्षी हूँ। और आप आने की ख़बर दें कि यहाँ कब तशरीफ़ लाओगे। लाला अयोध्यादास यहाँ पहुँच गया है और मकान की बाबत आपका क्या इरादा है। नित्य मुझपर दया दृष्टि रखा करो। इति।

आपका दास तीर्थराम, लाहौर मिशन कालिज

——:o:——

स्वामी राम की आज्ञा पर नारायण स्वामी का पत्र भगत धन्नारामजी के नाम

संबोधन पूर्वोक्त, (१११५) देवप्रयाग, ३ जनवरी, १९०६

ॐ जय, जय, आनंद ! आनंद !!

भगवन्,

स्वामी रामतीर्थजी महाराज (मुरालीवाले के) जो आजकल हिमालय में एकांत सेवनार्थ आये हुए हैं। उन्होंने वार्तालाप में कई एक बार आपको याद फ़रमाया था और आपके साथ अपने प्रेम व भक्ति की दास्तानें (कथा व वृत्तांत) हम लोगों को सुनाई थीं, जिस पर आज्ञा हुई कि कोई याददाश्त (स्मृति, यादगार) आपकी सेवा में भेजी जाय। अतएव आपकी सेवा में दो रिसालों का एक पैकट (जिसमें स्वामीजी महाराज के लैक्चर छपे हैं) बहुत प्रेम व सत्कार (प्रतिष्ठा) के साथ भेजा है। भविष्य के रिसाले नंबर भी शायद आपकी सेवा में पहुँचते रहेंगे, क्योंकि संपादक महोदय को आपके लिए लिख दिया है। और सबको ॐ आनंद, ॐ आनंद। आज टेहिरी को हम लोग जाने लगे हैं।*

आपका अपना

नारायण स्वामी

शिष्य स्वामी रामतीर्थजी महाराज

डाकघर देवप्रयाग, ज़िला गढ़वाल (हिमालय)

---

* अमरिका आदि विदेशों का भ्रमण करने के बाद जब राम नवम्बर, १९०५ में हिमालय में देवप्रयाग के समीप व्यासचट्टी के सामने 'वां' के जंगल में एकांत निवास करने गये, तो उन दिनों वहाँ नारायण स्वामी उनके साथ उनकी सेवा में था। वार्तालाप में कई एक बार भगत धन्नारामजी का चर्चा आया था, जिस पर नारायण को पत्र लिखने की आज्ञा हुई और नारायण ने उपर्युक्त पत्र भेजा।

श्रीरामतीर्थ-पब्लिकेशन लीग के ग्रंथ—हिंदी में

नं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
१.	श्रीरामतीर्थ-ग्रंथावली २८ भागों में, पूरा सेट ...	१०)	१५)
	फुटकर भाग ...	।)	।।)
२.	उक्त ग्रंथावली की संशोधित आवृत्ति के पहले १८ भाग छः जिल्दों में। प्रति जिल्द	१)	१।)
३.	दशादेश (राम बादशाह के १० हुक्मनामे)		१)
४.	राम-वर्षा भाग १-२ एक जिल्द में ...	१)	१।)
५.	खुम-खाना-ए-राम (कुल्लियाते-राम) जिल्द प्रथम (जिसमें रिसाला अलफ़ के पहले १२ नंबर हैं)	१)	१।)
६.	बृहत् राम-जीवनी (उर्दू कुल्लियाते-राम, जिल्द दूसरी का हिंदी-अनुवाद) पृष्ठ ६७२	२।)	३)
७.	श्रीमद्भगवद्गीता, श्री० आर० एस० नारायण स्वामी-कृत व्याख्या-सहित, दो जिल्दों में, पृष्ठ लगभग २०००	४)	६)
	प्रति जिल्द ...	२)	३)

आत्मदर्शी बाबा नगीनासिंह वेदी-कृत

नं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
८.	वेदानुवचन, प्रथम आवृत्ति, पृष्ठ लगभग ५५०	१।)	१।।)
	,, द्वितीय आवृत्ति, पृष्ठ लगभग ७१५	२।)	३)
९.	आत्मसाक्षात्कार की कसौटी, पृष्ठ १७२ ...	।)	।।)
१०.	रिसाला अजायबुल-इल्म अर्थात् भगवत्-ज्ञान के विचित्र रहस्य, पृष्ठ १६०	।)	।।)

उर्दू में

नं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
१.	कुल्लियाते-राम जिल्द १ (रिसाला अलिफ़ के एक वर्ष के १२ अंक), पृष्ठ लगभग ५०० ...	१।)	२)
२.	कुल्लियाते-राम जिल्द २ (अर्थात् स्वामी राम की सविस्तर जीवनी), पृष्ठ लगभग ५०० ...	१।)	२)
३.	कुल्लियाते राम जिल्द ३ (अर्थात् राम बादशाह के १२ हुक्मनामे) पृष्ठ लगभग ४००	१।)	२)
४.	राम-वर्षा, दोनों भाग एक जिल्द में, पृष्ठ लगभग ५२५	१)	१।)
५.	ख़तूते-राम (गुरु जी के नाम राम के पत्र) पृष्ठ २०८	।)	।।)
६.	संक्षिप्त राम-जीवनी, साइज़ छोटा, पृष्ठ लगभग ३३०	।।)	१)

नं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
	आत्मदर्शी बाबा नगीनासिंह वेदी-कृत		
७.	वेदानुवचन (वेदों का सार), पृष्ठ लगभग ५२०	१॥)	२)
८.	मियारुल मिकाशफ़ा, पृष्ठ लगभग १७० ...	॥)	१)
९.	रिसाला अ़जायबुल-इल्म, पृष्ठ लगभग १२० ...	।=)	॥।)
१०.	जगजीत-प्रश्न (ईशावास्योपनिषद् की शांकर-भाष्यानुसार व्याख्या) पृष्ठ लगभग १०० ...	।=)	॥।)

अँगरेज़ी में

नं०	नाम पुस्तक	सा० सं०	वि० सं०
१.	स्वामी राम के समग्र अँगरेज़ी उपदेश व लेख, आठ जिल्दों में, पूरा सेट विना कमीशन	७)	१४)
	” प्रति जिल्द ...	१)	२)
२.	पैरेबल्स आफ़ राम (उक्त उपदेशों में स्वामी राम से वर्णित समग्र कहानियाँ), पृष्ठ लगभग ५००	२)	३)
३.	स्वामी राम की नोटबुक्स, दो जिल्दों में	२)	४)
	प्रति जिल्द ...	१।)	३)
४.	सरदार पूर्णसिंह-कृत स्टोरी आफ़ स्वामी राम द्वितीयावृत्ति, पृष्ठ लगभग ३२५ ...	२॥)	३)
५.	पं० ब्रजनाथ शर्मा-कृत स्वामी राम की सविस्तर जीवनी और उपदेश-सार, पृष्ठ ७५० के ऊपर ...	३)	३॥)
६.	हार्ट आफ़ राम	।)	
७.	पोइम्स आफ़ राम	।)	॥)
८.	संक्षिप्त राम-जीवनी सहित गणित पर के व्याख्यान के		।=)
९.	प्रैक्टिकल गीता (बा० नारायणस्वरूप-कृत)....		।)

स्वामी राम के छपे चित्र भिन्न-भिन आकृति में

प्रति चित्र सादा)॥, तिरंगा बड़ा =), छोटा -)

राम कैलेंडर (जिसमें अति सुंदर तिरंगा चित्र छपा हुआ है), प्रति कापी सहित तारीख के =)

मैनेजर—श्रीरामतीर्थ-पब्लिकेशन लीग, लखनऊ.